ग़ज़ल गायकी के मसीहा

उस्ताद मेहदी हसन

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

की पीएच.डी. (संगीत) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

(कला-संकाय)

शोध निर्देशक

डॉ. रौशन भारती

वरिष्ठ व्याख्याता-संगीत विभाग

जा.दे.ब.राज. कन्या महाविद्यालय, कोटा

शोधार्थी

दीपेश कुमार विश्नावत

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

Date ……

CERTIFICATE

It is to certify that:

i. **The thesis entitled "Ghazal Gayki Ke Masiha : Ustad Mehdi Hassan" submitted by Mr. Dipesh Kumar Vishnawat" is one original piece of research work carried out under my supervision.**

ii. **Literary presentation is satisfactory and the thesis is in a form for publication.**

iii. **Work evidence the capacity of the candidate for critical examination and independent judgment.**

iv. **Candidate has put in at least 200 days of attendance every year.**

SUPERVISIOR

Dr. ROSHAN BHARTI

Sr. Lecturer in Music

Janki Devi Bajaj Kanya Mahavidhyalaya,

Kota (Rajasthan)

प्राक्कथन

भारत एक ऐसा देश है जहां पर गुरु को सबसे बड़ा स्थान दिया गया है। यहां पर सभी कलाओं का सम्माान हुआ है और होता रहेगा। चाहे वे मूर्तिकला, चित्रकला या संगीत कला हो। भारत में राजस्थान एक ऐसा राज्य है जहां पर बहुत बड़े–बड़े कला मर्मज्ञ पैदा हुए है। हमारे यहां पर संगीत विषय को भगवान से जोड़ा गया है। जैसे शिव के हाथ में डमरू, सरस्वती माँ के हाथ में वीणा तथा नारद के हाथ में इकतारा। संगीत को भगवान की आराधना का सबसे उत्तम मार्ग बताया है। संगीत ही ईश्वर है। संगीत ही जीवन है और संगीत से ही मोक्ष प्राप्ति हो सकती है। कला मानव का अभिन्न अंग है। सभी कलाओं में संगीत कला को सबसे उत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

राजस्थान में ऐसे महान् कलाकार पैदा हुए है जिन्होनें अपनी गायकी से पूरे विश्व में नाम किया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन की अनेक शैलियाँ है, जैसे ख़्याल, ध्रुपद, धमार, चतुरंग और टप्पा आदि। इसी तरह उप शास्त्रीय संगीत की भी अनेक शैलियाँ है जैसे ठुमरी, भजन और ग़ज़ल। ग़ज़ल गायन उप शास्त्रीय संगीत का ही भाग है। ग़ज़ल गायन को सबसे ज्यादा जिसने प्रचलित किया, ऐसी शख़्सियत का नाम है मेहदी हसन सा.। जिन्हें शहँशाह–ए–ग़ज़ल कहा जाता है और इस शोध के बाद उन्हें ग़ज़ल का मसीहा कहा जायेगा। मसीहा क्यां कहा जाए? उसके सारे कारण इस शोध में वर्णित है।

मैंने इस शोध में सात अध्याय बनाये है और खान साहब के ग़ज़ल के प्रति समर्पण को देखते हुए इन सातों ही अध्यायों के नाम संगीत के सातों स्वरों पर रखे गये है (1) षडज (2) रिषभ (3) गंधार (4) मध्यम (5) पंचम् (6) धैवत (7) निषाद आदि।

षड़ज अध्याय में मैंने ग़ज़ल शब्द की उत्पत्ति से लेकर उसके आवश्यक तत्वों तक का वर्णन किया है। किन–किन तत्वों से ग़ज़ल की इमारत खड़ी होती है। बहर का ग़ज़ल में क्या महत्व है। बहर कितने/कार की है और कौन–कौन सी बहर प्रमुख है।

रिषभ में मेहदी हसन सा. का जीवन परिचय दिया है। आपका बचपन किस तरह बीता और आपने बचपन में किन–किन कठिनाईयों का सामना करते हुए अपने रियाज़ को निरन्त रखा। आपने खेल से ज्यादा रियाज़ को महत्व दिया और परिवार में किन–किन से संगीत की शिक्षा ली आदि जानकारी इस अध्याय में वर्णित है।

गंधार अध्याय आपके घराने का उद्‌गम कहाँ से है तथा घराने का परिचय भी इस अध्याय में है। घराने का अर्थ क्या होता है। यह सभी आवश्यक बातें इस अध्याय में प्रस्तुत है।

मध्यम अध्याय में मेहदी हसन सा. के व्यक्तित्व के बारे में बताया गया है तथा आप किस तरह अपने साथ वालों से बोलते है, आपकी धर्म प्रवृत्ति आदि। आपके बारे में महान् कलाकार, अभिनेता, अभिनेत्रियां एवं आमजन क्या बोलते है। ये सब इस अध्याय में वर्णित किया है।

पंचम् अध्याय में खान सा. ने कहाँ–कहाँ कार्यक्रम किये तथा उन्होनें पहला कार्यक्रम कब और कहां दिया। आपके कार्यक्रम किस तरह सफल हुए और आपने किस तरह की शायरी प्रयोग में ली। आपने विभाजन के बाद बम्बई में पहला कार्यक्रम किस स्थान पर किया और वहां पर कौन कौन आये? यह सब इस अध्याय में प्रस्तुत है।

धैवत अध्याय में ग़ज़ल गायकी में ख़्याल की झलक मिलती है। यह कैसे मिलती है? ग़ज़ल में ऐसा क्या प्रस्तुत करते की वह ख़्याल जैसे लगने लगती है। यह सारा वर्णन इस अध्याय में प्रस्तुत है।

सबसे अंतिम अध्याय निषाद है। इस अध्याय में मैंने गुरु–शिष्य परम्परा का वर्णन किया है। किसी भी गायक को सुन के हम यह बता सकते है कि यह कलाकार किस घराने का है? गुरु और शिष्य का संबंध कैसा होता है? यह सभी इस अध्याय में प्रस्तुत है।

इस प्रकार इन सातों ही अध्यायों में मैंने ग़ज़ल गायकी के मसीहा उस्ताद मेहदी हसन सा. ने जो सराहनीय कार्य किया उन सबका वर्णन किया है।

इस शोध में प्रयुक्त की गई किताबों, समाचार पत्रों तथा शोध प्रबन्ध का विवरण प्रस्तुत है।

शोध के अन्त में परिशिष्ठ में मेहदी हसन सा. व उनसे जुड़े उनके शिष्य, दोस्त, परिवार वालों के फाईल छाया चित्र प्रस्तुत है।

इस तरह इन सातों ही अध्यायों के माध्यम से शोध प्रबन्ध के ज़रिए यह प्रयत्न किया है कि विषय से सम्बन्धित सभी पक्षों को कुशलता के साथ समाहित कर सकूं।

इस शोध कार्य में जिन गुणी गुरुजनों का और मेरे परिवार का तथा मेरे दोस्तों का योगदान रहा है मैं उनका हमेशा आभारी रहूंगा। इन सभी के मार्ग दर्शन बिना यह प्रबन्ध पूरा नहीं हो सकता था।

अन्त में उन सभी लेखकों का भी धन्यवाद अर्पित करता हूं, जिनके आलेखों और पुस्तकों से मैंने परोक्ष या अपरोक्ष रूप से इस शोध प्रबन्ध की तैयारी में सहयोग लिया। जिनका नाम नहीं आ सका उनका भी मैं शुक्रिया अदा करता हूं।

शोधार्थी

दीपेश कुमार विश्नावत

अनुक्रमणिका

अध्याय	विवरण	पृष्ठांक
षड़ज	ग़ज़ल एक अध्ययन	01
	ग़ज़ल में बहर	32
रिषभ	उस्ताद मेहदी हसन : एक परिचय	50
	पारिवारिक पृष्ठ भूमि	
	सामान्य शिक्षा	
गंधार	घराने का परिचय	86
	घराने का उद्‌गम	98
मध्यम	खान साहब का व्यक्तित्व	113
	महान् कलाकारों, अभिनेताओं, अभिनेत्रियों एवं आमजन की खान सा. के बारे में राय	124
पंचम्	सांगीतिक प्रस्तुतियाँ एवं संस्मरण	148
धैवत	ग़ज़ल गायकी में ख़्याल गायकी की झलक	162
निषाद	शिष्य परम्परा	181
	उपसंहार	
	परिशिष्ठ	
	संदर्भ ग्रंथ सूची	

ग़ज़ल गायकी के मसीहा

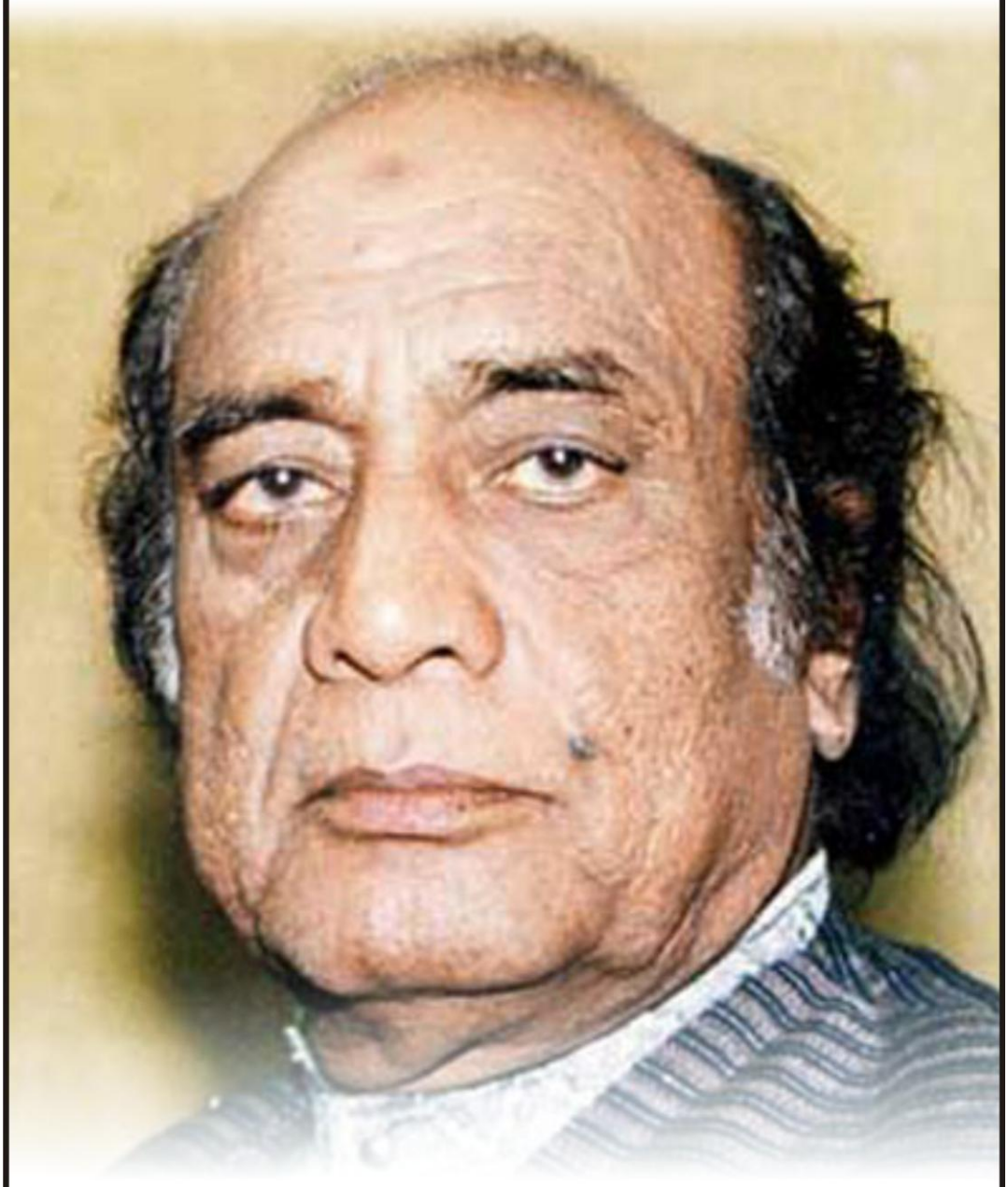

उस्ताद मेहदी हसन सा.

षड्ज

ग़ज़ल एक अध्ययन

(एक विस्तृत अध्ययन काव्य एवं गायन के संदर्भ में)

भारत वर्ष सदा से ही कला एवं कला को जीवंत रखने वाले कलाकारों से परिपूर्ण रहा है और रहेगा। भारतीय संगीत तो हमारी धरोहर है ही, परन्तु यह एक संगीतकार की धरोहर है, संगीत शास्त्र, स्वर विज्ञान एवं संगीत प्रदर्शन। (इन सबका महत्व जानना बहुत आवश्यक है) कला से ही देश की संस्कृति को जीवित रखा जा सकता है।

[1]''जीवन में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है, सांस्कृति आदान प्रदान से ही एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से प्रगाढ़ मैत्री स्थापित करता है।''[1]

संगीत को मोटे तौर पर दो भागों में विभक्त किया है (1) शास्त्रीय संगीत (2) उपशास्त्रीय संगीत।

शास्त्रीय संगीतः-

जिसके अन्तर्गत सभी रचनाएं नियम पर आधारित होती है, उसमें किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ नहीं की जा रही है। वह पूर्ण रूप से शुद्ध होती है।

उपशास्त्रीय संगीतः-

इसके अन्तर्गत ग़ज़ल गायन शैली आती है। जिसका इस दौर में बहुत प्रचलन बढ़ रहा है। ग़ज़ल गायकी का भारतीय साहित्य और संगीत की परम्पराओं में महत्वपूर्ण स्थान है।

[2]संगीत के क्षेत्र में ग़ज़ल की दुनियां अपने आप में एक अलग मुकाम रखती है। अरबी साहित्य से शुरू हुई यह काव्य विधा समय के साथ फारसी, उर्दू और हिन्दी साहित्य में भी काफी लोकप्रिय हुई। यूं तो आमतौर पर ग़ज़ल में जुदाई और कुछ खोने का दर्द होता है, लेकिन बावजूद इसके इसमें प्यार की रूमानियत होती है। एक

ऐसी काव्यात्मक अभिव्यक्ति जो किसी न किसी मोड़ पर हमारे दिल को छू जाती है और हमें सुकून देती है।[2]

[3]भारतीय संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को देखने पर पता चलता है कि यह अत्यन्त प्राचीन है। यह तो सभी जानते है कि भारतीय संगीत की वर्तमान छवि हिन्दू मुस्लिम संस्कृतियों का सुन्दर मेल है। भारतीय संगीत की सभी विधाओं अर्थात् गायन, वादन, नृत्य में हिन्दू संस्कृति तथा मुस्लिम संस्कृतियों का साफ–साफ सम्मिश्रण दृष्टिगत (परिलक्षित) होता है। चूंकि भारत के साथ अरब के व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध बहुत ही प्राचीन समय से रहे है और यही वजह है कि भारत के संगीत में अरब के संगीत का और अरब के संगीत में भारत के संगीत का अतिसुन्दर समन्वय हुआ है।[3]

[4]भारतीय काव्य जगत तथा संगीत जगत को जिसने सबसे ज्यादा प्रभावित किया है वह रचना ''ग़ज़ल'' है।

ग़ज़ल को सबसे ज्यादा जिसने प्रसारित किया वो है ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती।

जब आपकी उम्र महज़ 14 साल की थी, जब आपके वालिद का साया सिर से उठ गया। 18 दिसम्बर 1149 को आपकी तालीम 'खरासन' में हुई और आपने वहीं ''कुरान पाक'' को पूरा मुंह ज़बानी याद किया। इसके बाद आपने सन्जर में इस्लामी तालीमात हासिल की। ग़रीब नवाज़ हिन्दूसान में पहली बार 1165 में लाहौर पहुंचे। आपने यहां हज़रत दाता गंज बख्श की मज़ार पर हाज़री देकर अपने पाक मिशन की शुरूआत की।[4]

- [5]ग़ज़ल की उत्पत्ति फारस के लोक संगीत से हुई है।[5]

- [6]ग़ज़ल मूलतः फ़ारसी भाषा की काव्यगत शैली है तथा इसके अन्तर्गत प्रणय प्रधान गीतों का समावेश होता है और मुहोब्बत के अहसासों की अभिव्यक्ति भी होती है।

ग़ज़ल शब्द की उत्पत्ति ''ग़ज़ाल'' शब्द से हुई है और जिसका अर्थ 'हरिण' और अपने महबूब की खूबसूरती का वर्णन करना है।[6]

- [7]ग़ज़ल मूल रूप से फारसी भाषा की विधा है। उर्दू, फारसी और हिन्दवी की पुत्री है। उर्दू का अपना एक काव्य शास्त्र है जो कुछ मुश्किल है, हिन्दी गज़ल शिल्प विधान की दृष्टि से थोड़ी कमजोर होने के कारण अभी संघर्ष के दौर से गुज़र रही है फिर भी हिन्दी में ग़ज़ल कहने की परम्परा बढ़ रही है और काफी लोग आ रहे है। ग़ज़ल में ज़रूरी नहीं है कि वह हुस्न और इश्क पर ही आधारित हो, उसमें ईश्वर के प्रति प्रेम, आस्था और अपने आस पास के वातावरण एवं देश प्रेम, विश्व प्रेम आदि का वर्णन होता है।[7]

- [8]ग़ज़ल अधिकतर उर्दू या फ़ारसी भाषा में होती है। ग़ज़ल में आशिक–माशूक की बातों का वर्णन पाया जाता है। इसी कारण यह शृंगार रस प्रधान गायकी है।[8]

- [9]ग़ज़ल ने अरबी साहित्य से फ़ारसी, फ़ारसी साहित्य से उर्दू साहित्य, उर्दू साहित्य से हिन्दी साहित्य तदुपरान्त अन्य भाषा साहित्य तक का सफर तय किया है। ग़ज़ल को सही मायने में उर्दू शायरी की आबरू कहा गया है। दिल को लुभाने और अपनी ओर खींचने की जो ताकत ग़ज़ल में है वह अन्य किसी भी विधा में नहीं है और न हो सकती है। पूरी ज़िन्दगी की कहानी को दो शेरों में बयां करने की शैली /विधा सिर्फ ग़ज़ल में है, वह अन्य किसी भी विधा में नहीं है।

प्रारम्भ में ग़ज़ल हुस्नो–इश्क तक ही सीमित थी। मगर अब धीरे–धीरे इसका दायरा बढ़ता गया और आजकल तो ग़ज़ल विश्व के अधिकतर मसाइल (अलग अलग विषय) की प्रवक्ता बनी हुई है।

हिन्दी के तमाम साहित्यकारों ने इसे खुले दिल से स्वीकार करते हुए ग़ज़ल का हक अदा करने का ईमानदाराना प्रयास किया है।

शायर भले ही अपनी शायरी के उद्देश्य को स्वान्तः सुखाय बताये, किन्तु शायरी कभी भी व्यक्तिगत हो ही नहीं सकती। जब तक वह शायरी है सबकी है। वह एक ऐसा मकान है जिस पर बनाने वाले तक का भी हक नहीं। उसे रच लेने के बाद

सर्जन भी उन तमाम लोगों में एक हो जाता है जो उसे पढ़ रहे होते है, सुन रहे होते है। ग़ज़ल गायकी का प्रचलन 12वीं शताब्दी से पूर्व भी था।[9]

[10]ज़माने का अक्स शायरी से देखना ही चाहिये, तभी वह सुनने और पढ़ने लायक होगा। ग़ज़ल को आधुनिक बनाने के नाम पर नये–नये अल्फ़ाज़ लाये गये, पर ऐसा भी हुआ कि उन लफ़्ज़ों में जान नहीं आ पाई। क्यों कि ग़ज़ल का अपना एक 'मिज़ाज' होता है, उसमें कोई बाहरी लफ़्ज़ बहुत धीरे–धीरे उतरता है। ठीक उसी प्रकार जैसे बारिश से छत या दीवार में नमीं उतरती है। फाख़्ता (चिड़िया) के पंख जैसी होती है, 'ग़ज़ल'। यदि भारी भरकम लफ़्ज़ों के पत्थर उसके पंखों पर बांध दिये जाए, तो उसका जल्द ही दम तोड़ देना स्वाभाविक है। शब्द के मिज़ाज को परख कर ही उसका उपयोग करना चाहिए।

लफ़्ज़ों के साथ साथ शायरी में भी ऐसी ख़ासियत होनी चाहिये, जिसे लम्बे समय तक लोग याद रखें। जो हर दौर में दिल–दिमाग को टच करें या स्पर्श करती रहे। वो ही सही मायनें में अच्छी शायरी है। जो लफ़्ज़ हमारी ज़िन्दगी में घुलमिल गये है, शायरी की ज़ुबान उन्हीं से बनती है। ज़ुबान जो मौजूदा वक़्त की परफेक्ट इमेज़ेज बनाए और जो हमारी ज़िन्दगी की परेशानियों को दुख–सुख को शायराना अंदाज़ में पेश करें।

ग़ज़ल हर दौर में अपने अंदाज़–ए–बयां, अपना रूख बदलती रही है, कहां तो वो जामो–मीना वाली महलों–हरमों की सेज पर अंगड़ाई लेती 'उनींदीं ग़ज़ल और कहां आज की खेत–खलिहानों' मजदूर–कारखानों से गुज़रती आम आदमी को बयां करती जिन्दगी के चौराहे पर उतरी खरी ग़ज़ल। बिना किसी शोर शराबे के ग़ज़ल महफिलों को छोड़ आज शहर, गांव, घर, परिवार, मिलन–वियोग आदि कुदरत के संग ताल से ताल मिला रही है।

कुछ लोग ग़ज़ल की पुरानी परम्पराओं और नई बदली हुई ज़ुबान को खूबसूरती से मिलाकर नई ग़ज़ल लिख रहे है। इससे नई ग़ज़ल की नई रूह सामने आ रही है। शायरी के अन्तर्गत ज़ुबां वही प्रभावित करती है, जो मौजूदा ज़िन्दगी की तस्वीर से जुड़ी होती है। जो हमारी बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होती है, जैसे रेल्वे

स्टेशन, घर का सामान, बस स्टेण्ड, पहनने के कपड़े, रेड़ियो, टीवी, कम्प्यूटर, कोर्ट–कचहरी दरबार, 1 सियासत, मयखाना..... कहने का मतलब आज हजारी ज़िन्दगी के आधे से ज्यादा जो शब्द है, वे सब अब हिंदी है, सब उर्दू भी है और अंग्रेजी भी है।

दुनियां कितनी भी बड़ी हो जाए उसकी सारी झलकियाँ ग़ज़ल में कहीं न कहीं मिलेगी। यहां तक कि भविष्य भी वहां है और अतीत थी।

ग़ज़ल उर्दू के बाद पंजाबी, गुजराती, हिन्दी, राजस्थानी, बंगाली और क्षेत्रिय भाषाओं में लिखी एवं सराही जा रहीहे। बिना किसी लाग लपेट के मन से निकलने वाली बात को ग़ज़ल में कहकर संतुष्टी का अनुभव प्राप्त होता है, मूल रूप से प्रेमिका से होने वाले वार्तालाप को ग़ज़ल कहा जाता है। आज के दौर में हर विषय पर ग़ज़ल कही जा रही है।[10]

[11]ग़ज़ल तो वैसे अरबी शब्द है और इसका अर्थ है –''सूत का ताना''। जब यह शब्द स्त्रियों के लिए प्रयुक्त होता है तब इसका अर्थ बदल जाता है और इसका अर्थ होता है स्त्रियों से प्रेम व मुहोब्बत (मोहब्बत) की बातें करना, उनके सौन्दर्य की प्रशंसा करना। इस प्रकार ग़ज़ल शब्द अरबी अवश्य है लेकिन काव्य प्रकार के रूप में प्रयुक्त नहीं है।[11]

[12]ग़ज़ल में महबूब की ओर संकेत होता है और महबूब तो प्रेमी भी हो सकता है और प्रेमिका भी हो सकती है तथा यही महबूब सर्वशक्तिमान ईश्वर भी हो सकता है, जिसकी रहमत से यह संसार चल रहा है, ग़ज़ल में रूप–सौन्दर्य, राष्ट्र प्रेम, विश्व–प्रेम, सुख–दुख, संयोग–वियोग, ईश्वर–प्रेम इन सभी की शक्ति के दर्शन होते है।

हमारे यहां पर कई भाषाओं में ग़ज़ल कही जा रही है। पाकिस्तान में उर्दू–पंजाबी में कही जा रही है, क्योंकि उर्दू वहां की मातृभाषा नहीं है, सरकारी जुबान है। वहां सिंध में सिंधी, गुजरात में गुजराती तो पंजाब में पंजाबी बोली जाती है। पेशावर से रंगून तक ग़ज़ल लिखी जा रही है जिसमें कई जुबाने है। दुनियां की ओर जुबानें भी ग़ज़ल कहना शुरू कर रही है। वर्तमान समय में देखा जाये तो ग़ज़ल का

कैनवास बहुत बड़ा हो चुका है। हर तबके का इन्सान इस विधा को पसन्द कर रहा है।[12]

[13]ग़ज़ल वो सिन्फ़े–सुख़न है जिसके शेर की तम्मील कूज़े में समन्दर समोने वाली होती है। इसी बात को हम यूं भी कह सकते है कि इस सिन्फ़ शायर के फ़िक्रो–ख़्याल, बुसअतो–अज़्मत ख़ूब निखरते और सँवरते है। ग़ज़ल ऐसी सन्फ़ है जो बड़ी रियाज़त मांगती है। ये फ़न तब ही निखर सकता है जब संजीदगी और लगन जितनी ज़ियादा बढ़ती है। वैसे भी यह काम शौक़िया या सरसरी नहीं किया जा सकता है और जो इस तरहां करते है वो अधर में ही लटके रह जाते है और वो ना इधर के रहते है और ना ही उधर के!

ग़ज़ल का मिज़ाज़ रूमानी ज़ियादा रहा है। मौजूदा अह्द में ग़ज़ल ने एक नई करवट ली है। मौजूआत बदलते है, इस्तआरे बदले है, फ़िक्रो–ख़्याल में एक नया इन्क़लाब आया है। इस प्रकार इन तमाम अस्त्री तक़ाजों का असर भी नई पीढ़ी के युवा शायरों की ग़ज़लों में नुमाया तौर पर महसूस किया जा सकता है।[13]

[14]ग़ज़ल गायन की शैली ने भारत के काव्य जागृत और संगीत–जगत को सबसे ज़्यादा प्रभावित किया है। ग़ज़ल के साहित्यिक पक्ष के संदर्भ में भिन्न– भिन्न परिभाषाएं दी है। सामान्यतः ग़ज़ल को हुस्न, इश्क़ और जवानी का हाल बयां करने की अभिव्यक्ति का माध्यम कहा जाता रहा है। भारतीय साहित्य और संगीत की परम्पराओं में ग़ज़ल गायकी का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। ग़ज़ल का प्रादुर्भाव यद्यपि इरान में हुआ, किन्तु उसके विकास और उत्कर्ष की पृष्ठभूमि में भारत का ही योगदान रहा है। ग़ज़ल को प्रेयसी (माशूक) या महबूबा से बातचीत करने एवं उसके नख–शिख का वर्णन करने का साधन भी कहा जाता रहा है।

हिन्दुस्तानी संगीत की जितनी भी शैलियां है, जैसे ध्रुपद, धमार, ख़्याल, तराना, भजन, क़व्वाली, ठुमरी और ग़ज़ल इन सभी में ग़ज़ल गायन की शैली का हर दौर में हर धर्म में हर वर्ग में प्रचार प्रसार हुआ है। और सभी संगीत प्रेमियों, बड़े–बड़े उस्तादों, संगीतज्ञों और विद्वानों में लोकप्रिय हुई है। बड़े–बड़े कलाकरों ने भी अपने जीवन में एक न एक (या एक) बार तो ग़ज़ल ज़रूर गाई होगी। इस शैली के

अन्तर्गत हर शेर में दुनिया के नये पुराने रंग नज़र आते है। हर दृश्य को अपने अन्तर्मन में देखा जा सकता है और उसको महसूस किया जा सकता है।[14]

[15]ग़ज़ल की इन तमाम चर्चाओं के बाद जब हम ग़ज़ल के इतिहास पर भी नज़र डालें तो यह प्रतीत होता है कि अरबी भाषा में ''क़सीदा'' काव्य की एक विधा थी जो किसी की प्रशंसा से संबंधित काव्य रचना होती थी। क़सीदे के आरम्भ में चार या पांच शेर कहे जाते थे, जिसे 'नसीब' या 'तशकीब' कहते थे। क़सीदे की यह 'तशबीब' आरम्भ में ग़ज़ल के रूप में स्वीकार की जाती थी। ग़ज़ल का स्वतंत्र स्थान साहित्य में नहीं था। अरबी साहित्य से जब यह ग़ज़ल विधा फ़ारसी काव्य विधा में आई तो इसने अपना स्वतंत्र रूप ग्रहण किया। इसकी पुष्टि हमें नीचे दिये गये कथन से ज़रूर स्पष्ट हो जायेगी–

''फ़ारसी में ग़ज़ल का प्रथम प्रमुख शायर ''रोदकी'' था। जिसने ग़ज़ल पर ख़ास ध्यान दिया और आज से लगभग एक हज़ार वर्ष पूर्व इरान में ग़ज़ल को एक गौरवशाली स्थान दिलवाया।''[15]

[16]प्रारम्भ से ही ग़ज़ल के वे शायर जिन्होनें ग़ज़ल के विकास में प्रमुख भूमिका निभाई, उन्होनें ग़ज़ल में सिर्फ हुस्न–इश्क की वारदात का बयां ही नहीं किया, वरन अपने आस पास के वातावरण में घटने वाली तमाम घटनाओं का भी अपनी ग़ज़लों में प्रतीकों का सहारा लेकर समावेश किया है। उपरोक्त कथन की सच्चाई को शायर वली दकनी के शेर से ज़रूर दर्शाया जा सकता है–क्योंकि निम्न शेर भारतीय उर्दू ग़ज़ल के प्रारम्भिक युगीन शायरों के है–

'' मुफ़िलसी सब बहार खोती है, मर्द का एतबार खोती है।''

''चली वो सिम्त ग़ैब से इक हवा के चमन सरूर का जल गया। मगर एक शाख़ै निहाले ग़म जिसे दिन कहे सो हरी रही।।''

''शाम से कुछ बुझा सा रहता है, दिल हुआ है चराग़ मुफ़िलस का।''[16]

[17]ग़ज़ल को नया आयाम देने में निदा फ़ाज़ली ग़ालिब, फ़रहत शहज़ाद ''साहब'', रोदकी, मोमीन, दाग़, फ़िराक, इकबाल, मीर, फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, अहमद

फ़राज़, आतिश, विमल कृष्ण अश्क, बशीर बद्र, दुष्यन्त कुमार, नासिर काज़मी, सूर्य भानु, युवा असरार जवासी आदि शायरों का काफ़ी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्हीं सब और ऐसे कई अन्य शायरों के प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप उर्दू–काव्य जगत में ग़ज़ल एक ऐसी शैली बनकर उभरी है जो अपने ढंग और स्वरूप में अन्य काव्य विधाओं से कहीं आगे और निराली नज़र आती है। इसका प्रभाव अनोखा एवं व्यापक दिखाई देता है।

तथ्यतः दो मिसरों में जीवन के किसी भी सत्य की गहराई तक आभास करा देने की क्षमता सिर्फ ग़ज़ल विधा में ही उपलब्ध है, अन्य विधाओं में नहीं

'फारसी' या उर्दू कविता में छन्द में बंधे हुए शब्दों को शेर कहते है, किन्तु एक ही छन्द में बंधे हुए कई शेरों से बनी रचना में जब गीतात्मकता का तत्व प्रकट हो जाता है तो वह ग़ज़ल कहलाती है।

ग़ज़ल में ही ज़िन्दगी के सम्पूर्ण रूप की तस्वीरें बिख़री हुई होती है। ग़ज़ल के हर शेर में एक नये ख़्याल और एक नये अहसास की तस्वीर होती है। इस प्रकार ग़ज़ल का हर शेर अपने आप में पूर्ण होता है और इसी कारण गुलुकार अपनी गायकी में हर शेर को एक नये अंदाज़ में पेश करता हे। जिसके कारण श्रोतागण ऊब महसूस नहीं करते। एक और ख़ास बात एक ख़्याल को व्यक्त करने में कवि को और गायक को गीत के माध्यम से क़रीब 15–20 पंक्तियों का सहारा लेना होता है। जबकि ग़ज़ल विधा में सिर्फ दो मिसरों में ही पूरी बात कर देने की क्षमता होती है।[17]

[18]भारत में लोदी काल (1414–1526ई.) में भी संगीत के क्षेत्र में बहुत विकास हुआ है। परन्तु यह सत्य है कि सिकन्दर लोदी अच्छा शासक था। लेकिन उसे संगीत का कुछ भी इल्म (ज्ञान) नहीं था। मगर वह विद्वानों का बहुत आदर करता था। अपने दरबार में वह विद्वानों को आश्रय व आदर देता था। इसके काल में ग़ज़ल गायकी का बहुत तीव्र गति से प्रचलन हुआ। इसी काल में ग़ज़ल शैली का प्रचार प्रसार व्यापक रूप से हुआ। वह खुद भी स्वयं कवि था। वह काव्य और साहित्य में बहुत रुचि रखता था, उसने हिन्दी कविताओ को फ़ारसी भाषा में लिखान

सिकन्दर लोदी के काल में ही भारतीय संगीत का विकास हुआ। ग़ज़ल और ख़्याल भी कई तादाद में बने। वह अच्छा शासक था।[18]

[19]''भारतीय ललित कलाओं का स्वर्णकाल 'मुग़लकाल' को कहा गया है। ललित कलाओं के इस स्वर्णयुग में ग़ज़ल शैली का भी निरन्तर विकास हुआ और उसका वर्चस्व भी काफ़ी बढ़ा है। बाबर के काल में कई संगीत सभाओं का आयोजन होता था और उसमें संगीत के विद्वानों द्वारा कार्यक्रम होता था।''

हिन्दू सभ्यता और संस्कृति ने इस्लाम को प्रभावित किया अथवा इस्लामी सभ्यता और संस्कृति ने हिन्दुत्व को प्रभावित किया। विद्वान श्री टाइटस ने लिखा है कि ''सब कुछ कहने के उपरान्त इस बात में संदेह नहीं रह जाता है कि इस्लाम ने हिन्दुत्व पर जितना प्रभाव डाला, उससे कहीं ज़्यादा परिवर्तन हिन्दुत्व ने इस्लाम में कर दिया। हिन्दुत्व जिस संतोष एवं विश्वास के साथ अपने मार्ग पर आज भी रहा है, वह आश्चर्यजनक है।''

इससे यह स्पष्ट है कि दोनों सांस्कृतिक समन्वय के फलस्वरूप एक नवीन मिली जुली संस्कृति का अभ्युदय हुआ। इस सांस्कृतिक समन्वय में नानक और कबीर जैसे धार्मिक नेताओं का अधिक योगदान रहा। जिन्होनें इस बात पर जोर दिया कि हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म एक ही लक्ष्य की ओर ले जाने वाले दो अलग–अलग मार्ग है। राम–रहीम, कृष्ण–करीम व अल्लाह और ईश्वर एक ही परमात्मा के विभिन्न नाम है। इस तरह ऐसे धार्मिक समाज सुधारकों से सांस्कृतिक समन्वय की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।[19]

[20]''भारत में मुग़ल सभ्यता एवं संस्कृति के समन्वय से यहां एक नवीन सभ्यता एवं संस्कृति का अभ्युदय हुआ। ईरानी कला और भारतीय कला के संगम ने कला को नया आयाम प्रदान किया तथा इरानी साहित्य के प्रभाव से यहां नवीन साहित्य का सृजन हुआ।''[20]

[21]ग़ज़ल गायन शैली को भी एक महत्वपूर्ण गायन शैली 12वीं शताब्दी में माना गया है। इस शताब्दी में कई ग़ज़ल गायक हुए है, जिन्होनें ग़ज़ल को बहुत तवज़्ज़ो दिया और भारतीय संगीत में उसको प्रतिष्ठित किया। यह शैली शृंगार प्रधान होती है।

काव्य प्रेमी तथा संगीत प्रेमी दोनों को इसमें रस की अनुभूति हुई है और हमेशा होती रहेगी।[21]

[22]''ग़ज़ल का विषय लौकिक प्रेम है, यदि ग़ज़ल के प्रेम पात्र को हम ईश्वर समझकर भक्ति भाव मग्न होकर गाया जाये, तो वही ''क़व्वाली' है।''[22]

ईरानी कवियों का ग़ज़ल में योगदान :-

[23]यूं तो फ़ारसी भाषा के कई कवियों द्वारा ग़ज़ल के स्वरूप को संवारा और निखारा है, किन्तु उनमें भी फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि रौदकी से लेकर ग़ज़ल के प्रथम उन्नायक कवि सादी शिराजी के बीच के कवियों का इसमें, प्रमुख योगदान रहा है। हाँ! किसी के यहां वह (ग़ज़ल) प्राथमिक रूप में किसी के यहां माध्यमिक रूप में और किसी के यहां उससे भी आगे मिलती है। किन्तु सादी के यहां हमें यह पूर्ण यौवन–रूप में मिलती है तथा प्रथम बार फ़ारसी कविता के संसार में ग़ज़ल सौन्दर्य और जमाल के साथ आती है। उदाहरणार्थ–

इसी क्रम में रौदकी की एक अर्थ सहित

''अय जान–ए–मन अज़ आरजू–ए तो पद्यमान,

बिनुभाय एकी रूप बि घणाय बरीं जान।।''

मेरी महबूब! मेरा दिल तेरी चाहत में बहुत दुःखी है, इस पर दया कर और केवल एक बार अपनी झलक दिखा जा।

दकीकी :

''गोयन्द सब्र कुल कि तोश सब्र बर दिहद,

आरी दिहद ब लेक ब उधरे दिगर दिहद।''

लोग कहते है सब्र से काम लो, सब्र का फल मीठा होता है,

हाँ होता होगा, लेकिन इस दुनियां में नहीं, दूसरी दुनियां में।

वाहिदी द्वारा रचित :-

खलके निशान–ए–दोस्त तलब

मी कुनन्द बाज़

अज़ दोस्त गाफ़िल अन्द ब चन्दीं

निशां कि हस्त।

लोग महबूब का पता पूछते है, और इतनी सारी निशानियों के बावजूद उस तक नहीं पहुंच पा रहे है।

निज़ामी द्वारा रचित रचना :-

सरज़निशम मकुन कि तू शीत्फातर

ज़ मन शवी

गर निगरी दर आईना रूय चूं

माह–ए–खीश रा।

महज़ इस बात पर मुझ सजा मत दो कि मैं तुम्हारा आशिक हूं। अगर तुम खुद भी अपना चांद सा मुखड़ा आईने में देखोगे तो खुद भी आशिक हो जाओगे।

'कमाल' की रचना :-

अज़–चश्म–ए–नीम ख़्वाब–एतो इमरौज़ खेशान अस्त

आं नासा हा कि दर गुम–ए–तो

दोश कर्दा ईम।

अजी तुम्हारी इन नीम ख़्वाबीदा आंखों से वे आहें झलक रही है; जो हमनें कल रात तक तुम्हारी याद में भरी थी।

'सादी' द्वारा रचित :-

हदीस–ए–इश्क़ चि दानद कसे कि दरहमा उम्र,

बसरन कोफ़्ता बाशद दर–ए–सराई रा।

प्यार और मुहब्बत का मज़ा वह क्या जाने जिसको ज़िन्दगी में कभी महबूब के आसताने से सिर टकराने का मौका ना मिला हो।

इन सभी से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस समय ग़ज़ल ने काव्य के क्षेत्र में पांव (कदम) रखा तो उस समय वह एक सुन्दर काव्य–प्रकार के स्तर को प्राप्त कर चुकी थी और उसके सामने ''सादी'' जैसे प्रतिष्ठित ग़ज़ल लिखने वाले शायर/कवि विद्यमान थे और उन्हें ग़ज़ल कहने में किसी कठिनाई का सामना न था।[23]

ग़ज़ल को भारत में लोकप्रिय बनाने के संदर्भ में :-

[24]वास्तविक अर्थ में हम देखें तो यह पता लगता है कि ग़ज़ल गायकी को फैलाने का श्रेय सूफ़ी–संतों को जाता है। सूफ़ियों द्वारा ईश्वर को याद करने के लिए ग़ज़ल गायन में विभिन्न धर्मो को एक मत होने के लिए उसमें प्रार्थना करना। सूफियों द्वारा सांगीतिक रूप में लोगों में दया, प्रेम, भाव को जाग्रत करना तथा ईश्वर आराधना की ओर सभी को अग्रसर करना।[24]

[25]भारत में ग़ज़ल और क़व्वाली को प्रचार में लाने का श्रेय ''हिन्दल वली गरीब नवाज़'' यानि ख़्वाजा–ए–ख़्वाजंगा हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती रहमतुल्लाहि को है। ''देखिये क्यों कर दिया। क़ब्ज़ा दिलों पर ख़ल्क़ के! देखिये! ख़्वाजा मोईनुद्दीन ने क्या–क्या कर दिया। ख़्वाजा साहब को आज पूरी दुनियाँ मानती है, आपकी मज़ार अजमेर में स्थित है। जहां पर सभी भक्तों की मुरादें पूरी होती है।

आपका (मुहम्मद सा.) जन्म (पैदाईश) 18 अप्रेल 1136 को इरान के शहर असफान के कस्बे सन्जरी में हुआ। आपके वालिद बुजुर्गवार का नाम ख़्वाजा ग्यासुद्दिन था। जो बड़े अल्लाह वाले बुजुर्ग थे। ख़्वाजा साहब की वालिदा का नाम बीवी उम्म अलवरा उरफे माहे नूर था।

आपका उर्स मुबारक 1 रजब से 6 रजब तक बड़ी धूमधाम और अकीदत और एहतराम से मनाया जाता है।

आपके साथ बड़ी संख्या में भक्तों की टोलियां चलती रहती एवं जहां रूकते वहीं पर क़व्वाली व ग़ज़ल गाने लग जाते। आपने इसको सबसे ज़्यादा फैलाया है।[25]

ग़ज़ल को लोकप्रिय बनाने में अमीर खुसरों की भूमिका :-

[26]अमीर खुसरों का वास्तविक नाम अबुल हसन था और इनके पिता का नाम अमीर सैफुद्दीन महमूद था और ये लाचीन निवासी तुर्क थे और वे सुल्तान शमशुद्दीन इल्तुतमिश (राज्य–काल 1210–39 ई.) और उसके उत्तराधिकारियों के समय उच्च पदों पर नियुक्त रहे। अमीर खुसरो के नाना, सुल्तान बलबल के राज्य के एक उच्च पदाधिकारी एमादुल्मुल्क थे, जो मूलतः हिन्दू थे, अतः अमीर खुसरो ने कहा है कि मेरी मातृभाषा हिन्दी है।[26]

[27]आपका जन्म 651 हि. (1253 ई.) में हुआ, आपके जन्म स्थान होने का गौरव उत्तर प्रदेश के एटा जिले में स्थित पटियाली ग्राम को प्राप्त है। इस प्रकार अमीर खुसरो पितृ–परम्परा से तो तुर्क और मातृ–परम्परा से ब्रजवासी हिन्दू (भारतीय) थे।[27]

[28]एक युद्ध के दौरान खुसरो के पिता मारे गये और बाद में खुसरों का लालन–पालन उनके नाना के परिवार में हुआ। बचपन से ही खुसरों का मन काव्य–रचना में अधिक लगता था। आठ वर्ष की उम्र में खुसरो ने काव्य रचना आरम्भ कर दी और बारह वर्ष की आयु में उनका काव्य अच्छी कोटि का होने लग गया था। अमीर खुसरो बाल्य काल में ही शेख निजामुद्दीन के मुरीद हो गये थे।

जो भी ग्रन्थ खुसरो लिखते, वे उसे निजामुद्दीन चिश्ती की सेवा में प्रस्तुत करते, और निजामुद्दीन भी उन पर यदा–कदा कहीं–कहीं असहमति भी प्रकट कर देते थे, जिसका तात्पर्य सुधार था।

''अमीर खुसरो ने फारसी के प्रमुख कवियों की रचनाओं का गहनतम अध्ययन किया और प्रत्येक कवि की शैली का अनुकरण करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होनें फारसी, तुर्की और अरबी के अतिरिक्त हिन्दी का भी अध्ययन किया था।''

''जलालुद्दीन खिलजी (राज्यकाल 1290–95 ई.) के युग में अमीर खुसरो की नियुक्ति बादशाही पुस्तकालय के अध्यक्ष के स्थान पर हुई, वे प्रतिदिन सुल्तान की महफिल में नई–नई ग़ज़लें प्रस्तुत करते थे।'' ''निजामुद्दीन के स्वर्गवास के पश्चात् 1325 ई. में अमीर खुसरो भी स्वर्गवासी हो गये।''[28]

[29]अमीर खुसरो ने 11वें बादशाहों के साथ ज़िन्दगी के उतार–चढ़ाव देखें।[29]

[30]खुसरो ने अन्य काव्य विधाओं के साथ–साथ ग़ज़ल की ओर भी ध्यान दिया और उसे पूर्णता की सीमा तक पहुँचाया। कहा जाता है कि जिस काव्य को 'सादी' ने पूरा नहीं किया था, उसे खुसरो ने पूरा कर दिखाया। 'शिबली' के शब्दों में, ''अमीर खुसरो की ग़ज़ल कोई दरअस्ल खुमरबाना–ए–सादी ही की शराब है जो दुबारा खींचकर तेजतर हो गई है।''

यही कारण है कि खुसरो की ग़ज़लों में सभी अर्थ लालित्य और आकार सौन्दर्य के गुण इकट्ठे है जो ग़ज़ल की तासीर को दोबाला करते है तथा ग़ज़ल को अन्य काव्य प्रकारों से अधिक आकर्षक भी बनाते है।

अमीर खुसरों ने किसी सुन्दर स्त्री से प्रेम किया हो, कोई ऐसी घटना उनके जीवन में हमें नहीं मिलती है। लेकिन कहा जाता है कि उन्हें सुन्दर मुख तरुण हसन देहलवी से बहुत प्रेम था। दोनों के प्रेम की कहानी ने महमूद और आयाज़ को भी मिटा दिया। इन दोनों को अलग करने के लिए खान शहीद ने बहुत प्रयत्न किया, यहां तक कि कोड़े लगवाये, किन्तु इन्हें अलग नहीं कर सका। इस अवसर पर खुसरो ने एक ग़ज़ल लिखी थी, जिसके कुछ शेर इस प्रकार है :–

हर शबम जां बर लब आयद:, हर रात जान होठों पर आती है।

नास ए ज़ार आव रद– और दिल से आहें निकलने लगती है।।

ताकुदा भी बाद बूए जां जलाकर : यह हवाएँ कब तक उस जालिम की।

आवुरद खुशबू मुझ तक पहुंचाती रहेगी।

रफ्त आं शौख ओ दिल–ए–खूं: वह चंचल चला गया और अपने साथ।

गश्ता रा बाखुद बिबुर्द मेरा लहुलुहान दिल भी ले गया।

आक़िबत रोज़ी हमां खुनस एक दिन आएगा जब यही लहू उसको।

गिरिफ्तार आवुरद मेरे पास पकड़कर लायेगा।

दोसतान मन नय हवस दारमः दोस्तो मुझे रोने धोने का कोई शौक।

बिना सीदन वले नहीं है, लेकिन क्या करूं?

दर्द चूं दर सीना बाशद नाला राः जब जिगर में दर्द होता है।

तो एक जार आबुरद आह सी निकल ही जाती है।।

जीं दिले खुद काम कारे मन बः इस मतलबी दिल ने मेरे मुआमले को।

रूसवाई कशीद–रूसवाई तक पहुंचा दिया।

खुसरवा! फरमाने दिल बुर्दनः ऐ खुसरो–दिल की बात मानने का।

हमीं बार आवुरद यही नतीजा होता है।

इससे स्पष्ट होता है कि खुसरो प्रेम के माधुर्य रस से भरपूर थे। उनके पास दर्द भरा दिल था, वे विरह की जलन को अच्छी तरह महसूस करते थे, जो एक प्रेम करने वाले मनुष्य के दिल में पैदा होता है। उनकी ग़ज़लों में तड़प है और इसमें एक सच्चे प्रेम की पुकार है।

सईद नफीस के द्वारा सम्पादित ''दीवान–ए–कामिल अमीर खुसरो'' में खुसरों की ग़ज़लों की कुल संख्या 1726 बताई गई है और प्रत्येक ग़ज़ल में उनके प्रेम भरे दिल की बीसियों (धड़कनें) छुपी हुई है। ऐसी स्थिति में यह असम्भव है कि हम उनकी ग़ज़लों के एक–एक शेर को लेकर उस पर तर्क करें और विशेषताएँ बताएं। उदाहरण स्वरूप एक इश्किया ग़ज़ल नीचे दी जाती है :–

जइश्क बेकराराम बा के गोयम (दर्द–ए–मुहब्बत ने मुझे बैचेन कर रखा है, किससे कहूं?)

ज़ हिज़रत ख्ब्बार ओ जारम बो के गोयम (तेरी जुदाई में मर रहा हूं, किससे कहूं)?

न भी मुरसी ज अहवालम कि चुनी (कभी तुम मुझसे पूछते तक नहीं कि तुम कैसे हो?)

परेशां रोज गारम बा के गोयम (रात दिन परेशान हूं, किससे कहूं?)

हमीं ख्वाहम बिफिरिस्तिम सलाम (दिल चाहता है कि तुम्हें सलाम भेजूं)

चूंपक मुहरम न दारम बा के गोयम (लेकिन मेरा कोई हमराज नहीं है, किससे कहूं?)

दिल बुर्दी ग़म कारम न खुर्दी : (दिल ले गए और मेरा खयाल तक न किया)

खराबस्त रोज़गारम बा के गोयम : (मेरी दुनियां वीरान है किससे कहूं)

नदारद जुज़ तमन्नाए तो खुसरो : (तुम्हारे अतिरिक्त खुसरों को और किसी की तमन्ना नहीं है)

जमालत दोस्त दारम बा के गोयम : (तुम्हारे सौन्दर्य का चाहने वाला हूं, किससे कहूँ)

इस प्रकार इन सभी ग़ज़लों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि उनमें दर्द भी है, ग़म भी है, तड़प भी है, बैचेनी और बेकरारी भी है और प्रत्येक में वे विशेषताएं विद्यमान है जो एक प्रेमी के ह्रदय में समय समय पर जन्म लेती है। यही इतना नहीं, प्रत्युत खुसरो की सभी ग़ज़लों में टूटे हुए ह्रदय की आवाज़ सुन सकते है और महसूस कर सकते है।

अमीर खुसरो की ग़ज़लों में प्यार और मुहब्बत की बातों के बाद जिस प्यारी वस्तु का उल्लेख बार बार आया है, वह है शराब! खुसरो जब भी शराब की मस्ती का उल्लेख करते है उसमें जान डाल देते है और पाठक झूम उठता है। उदाहरणार्थ :–

लबालब कुन कदह, साकी कि मस्तम।

ब मय दिह जुमलगी असबाब हसाम।

ऐ साकी! मदिरा छलकी, आज मैं मस्त हू, मेरी ज़िन्दगी के सभी साधन इसमें डुबो दे।

मरा कुन सुर्खरु अज़ जुर–ए–खानश

चिमी रानी कि पेश खाक पस्तम।

अपने हाथ से जाम दे और मुझे इज़्ज़त बख्श, मुझे हांककर तुझे क्या मिलेगा, मैं वैसे भी रूस्वा हूं।

अगर असहाब–ए–इशरत मैं पारस्तंद

बिया सकी कि मन साकी परस्तम

मेरे दोस्त महज़ इशरत के पुजारी है, साकी! तूं मेरे पास आ, मैं तेरा पुजारी हूं।

मरा गोयन्द दर मस्ती चि दीदी

कि मीगोई दिलंदर बादा बस्तम

दोस्त कहते है कि आखिर नशे में क्या रखा है, जो तुम कहते हो कि मैंने शराब से दिल लगा लिया है।

तआला अल्लाह अगीं बहतर चि बाशद

कसम खुदा की शराब से बेहतर दुनियां में और क्या चीज़ हो सकती है?

कि अजु नंग–ए–उजूद–ए–खुद बिरूरत्तम

उसने मुझे ज़िन्दगी की ज़िल्लतों से निजात दिला दी है।

मरा गोई कि अज़ कस बाज़ मस्ती

अज़ आं रोज़ कि बा खुसरो निशी रत्तम

पूछते हो कि यह नशे की आदत कब से पड़ी, यह नशे की आदम उस वक्त से पड़ी है जब से मैं खुसरो के साथ उठने बैठने लगा।

अमीर खुसरों की ग़ज़लों में केवल प्यार और मुहब्बत, श्रृंगार और मस्ती की बातें ही नहीं है, बल्कि अध्यात्म–ज्ञान के कई रहस्य भी पाये जाते है।

दिल अज़ तन बुर्दी व दर जानी हुनूज़

शरीर से प्राण निकाल लिया और जान ही में छुपे हुए हो।

दर्द हा दादी ब दरमानी हयूज़

तुमने बहुत दर्द दिये और उसकी दवा भी तुम ही हो।[30]

[31]अमीर खुसरो काव्य शास्त्र के अलावा संगीत शास्त्री की भी पूर्ण जानकारी रखते थे तथा कुशल ग़ज़ल गायक थे।[31]

[32]जलालुद्दीन खिलजी के युग में अमीर खुसरो रूपवती गायिकाओं और सुन्दर किशोरों की छवि का वर्णन अपनी ग़ज़लों में करते थे।[32]

[33]आशाकारा सीना अम बिशिगाफ्ती

हम चुनां दए सीना पिनहानी हनूज़।

तुमने खुले आम मेरा सीना चाक किया फिर इसी सीने में अपनी जगह भी बनाई।

हर दो आलम कीमत–ए–खुद गुफ्ताई

तुमने कहा था दोनों जहां दे दो और मुझे ले लो।

निर्ख बाला कुन की अर्जानी हनूंज़

अपना दाम बढ़ाओ क्योंकि तुम सस्ते मालूम होते हो।

माज़ गिरिया चूं तमक बिगुदास्तीम

तू ब खन्दा शकर सितानी हनूज़।

हम रो–रोकर नमक की तरह घुल गए और तुम हंस हंस कर मिश्री की डली बने जा रहे है।

पीरी जो शाहिद परस्ती नारखु

अस्त्त खुसरवाता कै परेशानी हनूज़।

अच्छी चीज़ नहीं है सुसरो, कब तक तुम इन उलझनों में पड़े रहोगे।

मा कि दर नाहे गम कदम ज़दा ईम।

बर खते आफियत क़लमज़द ईम।।

हमनें मुहब्बत की राह में कदम रखने के बाद आराम और आसाइश को त्याग दिया है।

मा ब तूफाने इश्क गर्काशुद्दीन

बर सरे नुह फलक क़लम ज़दाईम।

हम इश्क के तूफान में डूबकर नवें आसमान के सिर पर जा पहुंचे है।

क़दमें को बराहे इश्क शितापत।

दीदाबार राहे आँ कदम जदाईम।।

जो कदम इश्क की राह में पड़ चुका है, हम उसके रास्ते में आंखे बिछाते है।

चूंकि अन्दर वुजूद नस्त सबात।

दस्तदर नामा–ए–अदम जदाईम।

क्योंकि अस्तित्व कोई स्थिर नहीं है, हमनें लुप्तता का आश्रय लिया है।

अज़ सरे नीस्ती चु सुलतानी

हस्ती–ए–हरदो कौन कम ज़दाईस।

इस सृष्टि के निर्माण होने से पहले ही तुम स्वामी हो इसलिए हमनें कभी इस लोक को तुम्हारे सामने कोई महत्व नहीं दिया।

उपर्युक्त ग़ज़लों में खुसरों ने एक सूफी साधक के समान ''खुदा की पहचान'', ''सब कुछ वही है'' और ''संसार की अस्थिरता'', ''साधन का स्थान'', ''चिरंजीवित'' और ''विनाश का प्रश्न'', ''दो जगत की सत्यता'', ''अल्लाह बाकी हवस'' आदि जैसी अध्यात्मक की बातों को लेकर अपने विशेष ढंग में उन अनुभूतियों का अनुभव किया है और उनकी सूक्ष्मताओं को बताया है, यद्यपि हम उन्हें समझ नहीं सकते, किन्तु महसूस अवश्य कर सकते है।

खुसरो स्वयं चरित्र एवं सद्व्यवहार में उच्च स्थान रखते थे तो फिर उनकी कविता पर इसका प्रभाव स्वाभाविक ही माना जायेगा। फलतः खुसरो की ग़ज़लों में हितोपदेश, नीति–पाठ और उच्च कोटि के नीति मूल्यों के प्रतिबिम्ब स्थान–स्थान पर अवश्य मिलते हैं। उदाहरण स्वरूप एक ग़ज़ल प्रस्तुत है :–

यांरां कि बूदा अन्दन दानम कुजा शुदन्द

पता नहीं इतने सारे दोस्त कहां गए, ऐ खुदा।

या रब चि रोज बूंद कि अज़ ना जुदा शुदन्द

यह कौनसा दिन था कि जिस दिन ये सब हमसे जुदा हो गए।

अयगुल चू आमदी ज़ ज़मी गो चिगूना अन्द

आ रूए हा कि दर तह गोदे फाना शुदन्द।

फूलों तुम ज़मीन से आए हो, तुम ही बताओ कि वे सारी मूरतें, जो मिट्टी में मिल गई, कैसी है।

आं सरवरां कि ताजे सरे खल्म बूदा अन्द।

अननूं नज़ारा कुन कि हांनां ख़ा के़ पा शुदन्द।

वे सारे सरदार जो कल तक जनता के सिर के मुकुट बने हुए थे, आज देखो किस तरह पांव की धूल बने हुए है।

खुरशीद बूद अन्द कि रफ्तन्द जोर–ए–ख़ाक।

आं ज़र्राहा कि हर हमा अन्दर हवा शुदन्द।

क्या हुए वे कण, जो कल वायु मण्डल में उधर तक पहुंचे ये, सूरज बने या मिट्टी में मिल गए?

बाज़ीचा ईस्त तिफल फरेब ई मता–ए–दहर।

वे अकिल मदु मां कि बदीं मुवतिला शुदन्द।

वह सांसारिक धन सम्पत्ति बचब्रो को खुश करने वाला एक खेत है। मूर्ख है वे लोग जो इस खेल से धोखा खाते है।

इस ग़ज़ल में खुसरो ने ज़िन्दगी और मौत की सत्यता, सांसारिकता में लीन होने का परिणाम, मित्रों का धोखा, धर्म के नाम पर धोखा, सांसारिक ऐश्वर्य और संसार की क्षण भंगुरता, अच्छाई और बुराई का स्तर आदि नीति विषयक प्रश्नों पर प्रकाश डाला है। खुसरों की दृष्टि में वही व्यक्ति आदर के योग्य है जो शील का पक्का हो।

यद्यपि सादी तक अनेक कवियों ने ग़ज़लें लिखी है, किन्तु वास्तव में ग़ज़ल को भरपूर रूप देने का श्रेय 'सादी' को ही मिलता है, और खुसरों ने सादी से ही प्रेरणा प्राप्त की है।

खुसरो के बाद ग़ज़ल के क्षेत्र में हाफिज ने कदम रखा और अपने देवदत्त गुणों का इसमें प्रयोग किया तथा पूर्णत्व तक ग़ज़ल को पहुंचा दिया। कहा जाता है कि ग़ज़ल को हाफिज से और हाफिज को ग़ज़ल से जीवन मिला।

हाफिज के बाद डेढ सौ वर्ष तक ग़ज़ल काव्य के संसार में सन्नाटा सा छाया रहा। राजनीतिक उथल–पुथल ने कवियों के हृदय से जीवित रहने की शक्ति को छीन

लिया। इसके बाद 'सफवी–काल' में शांति और समृद्धि का बोलबाला हुआ तो कवियों के संसार में फिर से बसंत आया और बहुत से कवियों ने अन्य प्रकार के काव्य के साथ ग़ज़ल को भी लिखना शुरू किया। लेकिन उनका रंग कुछ विशेष धारणाओं के कारण पहले जैसा न था।[33]

[34]''अमीर खुसरो द्वारा ''नुह सिपेहर'' में भारतीय संगीत के बारे में लिखा हुआ है। भारत के संगीत की समानता संसार के किसी भी भाग के संगीत से नहीं की जा सकती है। भारत के संगीत में बहुत शक्ति है। यहां के संगीत में मानव को ही नहीं वरन् पशुओं को भी उत्तेजित कर देता है। मृग, संगीत से कृत्रिम निद्रा से ग्रसित हो जाते है और बिना धनुष बाण के शिकार हो जाते है।'' [34]

[35]अमीर खुसरो एक बहुत ही प्रसिद्ध ग़ज़ल लेखक व ग़ज़ल गायक हुए है, जिन्होनें ग़ज़ल को साहित्यिक व सांगीतिक दोनों ही दृष्टि से बहुत सजाया और संवारा था। अमीर खुसरों ने ग़ज़ल की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया किन्तु जब उन्हें लगा कि ग़ज़ल जन साधारण में लोकप्रिय है तो उन्होनें भी इस ओर ध्यान दिया और परिणाम स्वरूप उस समय के अच्छे शायर और ग़ज़ल गायकों में उनका नाम गिना जाने लगा।[35]

[36]अन्त में हम यह कह सकते है कि फारसी कविता ने तीन ही श्रेष्ठ ग़ज़ल रचयिताओं को जन्म दिया है, वे है सादी, खुसरो और हाफिज।

खुसरों का स्थान हमारे मन्तव्य में इसलिए भी ऊँचा है कि वे सौ प्रतिशत भारत भूमि की पैदावार थे और उस पर उन्हें गर्व भी था।[36]

[37]कई प्राचीन ग्रंथों एवं संदर्भो को देखने से ज्ञात होता है कि अरब में इस्लाम के उदय से पूर्व ही वहां के लोग भारतीय स्वर–विधि से परिचित थे। ''सिन्ध पर मोहम्मद बिन कासिम ने 712 ईस्वी में आक्रमण किया था और जीत के बाद उसने ब्राह्मणों को तथा श्रेष्ठ कही जाने वाली जातियों को राज कार्य के लिए उच्च पदों पर आसीत किया। अरब सैनिक भारत में बस गए तथा उन्होनें भारतीय नारियों से विवाह भी किए। इसका परिणाम यह निकला कि मनसूरा–कुजदार, कदावेल, वैजा, महफूजा और मुल्तान जैसी बस्तियाँ अरब और भारत के संगीत का संगम स्थल बन गई।

''हजरत मोहम्मद के जन्म से पूर्व के कुछ अरबी ग्रन्थ रामपुर के रज़ा पुस्तकालय में सुरक्षित है, जिनमें कुछ गीतों की विशिष्ट स्वर लिपि भी है जो सामगान करने वाले ब्राह्मणों की गान विधा से प्रभावित है।''

इस प्रकार भारत में बस जाने वाले मुस्लिम न तो अपने संगीत को भुला पाये और न ही वे भारतीय संगीत से दूर रह सके। एक परिवार में रह रहे पति पत्नी का संगीत भिन्न–भिन्न था। परिणाम स्वरूप उनसे जो संतानें पैदा हुई उनमें दोनों ही प्रकार के संगीत का समन्वय सामने आया। ''753 और 744 ई.के मध्य में अनेक भारतीय ग्रंथों को अरब में ले जाया गया और उनका अरबी में अनुवाद भी हुआ। 871 ई. में सिंध खलीफाओं के शासन से मुक्त हो गया तथा भारतीय अरबों ने स्वतंत्र शासक वंशों की स्थापना की। सिंध पर अरबों का जितना प्रभाव बढ़ता गया ब्राह्मणों का प्रभाव उतना ही घटता गया।''[37]

[38]868 ई. में जाहज नामक एक अरब के लेखक ने भारतीय संगीत की भूरि भूरि प्रशंसा की है और भारतीय वाद्य इकतारे की विशेष तौर पर चर्चा और प्रशंसा की है।

''स्पेन के एक इतिहासकार काज़ी साईद उदलस्मी ने 1070 ई. में लिखा है कि भारतीय संगीत ग्रन्थ हम तक पहुंच चुका है जिसमें राग और स्वरों का वर्णन है।''[38]

[39]अरब से जाने वाले मुसलमानों की संस्कृति एवं खैबर की घाटी से होकर भारत में आने वाले मुसलमानों की संस्कृति परस्पर भिन्न थी। मुसलमानों के इन दोनों वर्गो के धार्मिक संबंध एक हो सकते थे पर इनमें साहित्यिक संबंध बिलकुल नहीं थे। अरबी, अरब के मुसलमानों की मातृभाषा थी न कि गज़नवी और गौरी की। इस प्रकार ''मुल्तान पर अरब मुसलमानों के प्रभाव से जिन धुनों या रागों का जन्म हुआ वे उन धुनों या रागों की अपेक्षा पृथक स्वभाव के थे। जिनका जन्म अजमेर पर मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी ने अजमेर की भाषा और वहां की प्रचलित धुनों और छंदों में अपनी बात कहने के लिए अपने क़व्वालों को प्रेरित किया था। जबकि अरब मुसलमानों के सामने ऐसा कोई मिशन नहीं था।'' फारस की जीत के बाद जब वहां के रहने वाले

अरबों की गुलामी में आए तो उन्होनें तरह तरह के कसीदे और ग़ज़लें गाना प्रारम्भ किया।[39]

[40]यद्यपि ग़ज़ल गायकी का प्रचलन बारहवीं शताब्दी से पूर्व भी था। किन्तु ग़ज़ल गायन को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होने का गौरव बारहवीं शताब्दी में आकर ही मिल सका। इस काल में ग़ज़ल गायन शैली के कई गायक हुए जिन्होनें तत्कालीन सांगीतिक वातावरण में इस शैली को प्रतिष्ठित किया। सरल भाषा तथा संगीतमय होने के कारण इसने जन मानस से लेकर संगीत के मर्मज्ञों तक को प्रभावित किया। ग़ज़ल गायन शैली के प्रसार में सूफियों के महत्व को भी किसी कीमत पर कम नहीं आंका जा सकता। ग़ज़ल गायन शैली के बल पर सूफी संतों ने विभिन्न धर्मो के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। सूफियों द्वारा संगीत को आराधना के रूप में स्वीकार किया गया।

''सूफियों ने अपने प्रार्थना संगीत के लिए फारस की ग़ज़ल को अपनाया तथा उसे भारतीय संगीत की रागों और तालों में ढाल कर प्रस्तुत किया।''

बाबर और हुमायूँ के समय में ग़ज़ल गायन अपनी चरम सीमा पर था और बड़े–बड़े गायक ग़ज़ल गाते थे। ''हुमायूँ संगीत में बहुत रूचि रखता था। वह प्रति सोमवार और बुधवार विभिन्न गायन शैलियों का आनन्द लेता था।''[40]

[41]उसके शासन काल में क़व्वाली एवं ग़ज़ल जैसे फारसी गीतों को भी प्रश्रय दिया जाता था। सन् 1535 ई. में बेजू ने हुमायू जैसे फारसी गीतों को भी प्रश्रय दिया जाता था। सन् 1535 ई. में बेजू ने हुमायूँ को ग़ज़ल गाकर रिझाया था।[41]

[42]अकबर का संरक्षक बेराम खान ग़ज़लों को बहुत पसन्द करता था। अकबर का संरक्षक बेराम खान रामदास की ग़ज़ल गायन शैली पर गुग्ध था।[42]

[43]''अकबर संगीत और शायरी का रसिक था। उसके राज्यकाल में ग़ज़ल और क़व्वाली को पहले से अधिक प्रोत्साहन मिला। सम्राट की इच्छा पर ध्रुपद का विख्यात कलाकार बैजू भी ग़ज़लें गाता था।'[43]

[44]अबूल फज़ल कहता है कि अकबर संगीत प्रेमी ही नहीं वरन् स्वयं भी संगीतकार था।

अकबर का पुत्र जहांगीर मुगल साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। ये भी अपने पिता की भांति ही संगीत प्रेमी था। ध्रुपद और ग़ज़ल गायन शैली दोनों ही प्रकार की गायन विधाओं को उसने बराबर सम्मान दिया। जहांगीर को चूंकि श्रृंगार स अधिक पसन्द था। अतः इन्होनें श्रृंगारिक गीतों ग़ज़लों को ज्यादा बढ़ावा दिया। संसार में उसे कोई वस्तु प्रिय थी तो वह शांति और संगीत था।[44]

[45]जहांगीर के पश्चात् उसके पुत्र शाहजहाँ के काल में जहांगीर से भी अधिक संगीत का प्रचार हुआ। अपने पिता की परम्परा को आगे बढ़ाया तथा ध्रुपद और ग़ज़ल दोनों शैलियों को समान प्रश्रय दिया।[45]

[46]मंदिरों में जो नृत्य गायन चलता था उसमें भजनों का स्थान ग़ज़लों ने ले लिया और इन ग़ज़लों में भगवान की प्रेम क्रीड़ाओं का वर्णन होता था।

शाहजहाँ के काल में संगीत उच्च वर्ग के साथ–साथ निम्न और मध्यम वर्गीय लोगों में भी पहुंच गया था। इस काल में नई रागों का निर्माण हुआ। जिनमें अरबी और ईरानी धुनों का पुट दिया गया।[46]

[47]शाहजहाँ के पश्चात् 13 मई सन् 1659 ई. में औरंगजेब भारतीय मुग़ल साम्राज्य की राजगद्दी पर बैठा। औरंगजेब को संगीत से सख़्त नफ़रत थी। उसने अपने शासन से पहले जो संगीत का हाल देखा था, वह श्रृंगारिकता एवं विलासिता से पूर्ण था। अतः कट्टरपंथी होने के कारण उसे ऐसे संगीत के प्रति घृणा हो गई। संगीत का दूसरा पक्ष जो कि उच्च स्तरीय एवं अध्यात्म की भावना से ओत प्रोत था, उसके सम्मुख नहीं आ सका। चूंकि वह कठोर, नैतिक एवं धर्मपरायण पुरुष था। उसने संगीत पर पाबन्दी लगा दी।[47]

[48]1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु हो गई। औरंगजेब की एक पुत्री जिसका नाम दिलरस बानो था, जो जेबुन्निसा के नाम से अधिक जानी जाती थी, प्रसिद्ध संगीतज्ञा थी। वह संगीत और कविता की मर्मज्ञ थी और वह संगीतज्ञों का बड़ा

सम्मान करती थी। उसके महल में साहित्य और संगीत का पुस्तकालय था। उसका कंठ बड़ा मधुर था। वह ग़ज़ल अधिक लिखती थ। उस समय उसकी ग़ज़लों का प्रचार सर्व साधारण में अधिक हो रहा था।[48]

[49]औरंगजेब के बाद मोहम्मद शाह रंगीले मुगल साम्राज्य के बादशाह हुए। इनका काल भारत में ग़ज़ल और ठुमरी का उत्कर्ष काल रहा है। तत्कालीन समय में दिल्ली, रामपुर, लखनऊ, हैदराबाद आदि ग़ज़ल गायन शैली के प्रमुख स्थान रहे। इस काल में बड़े बड़े गायक भी अपने शिष्यों को ग़ज़ल गायकी की शिक्षा देने लगे।[49]

[50]मोहम्मद शाह रंगीले के पश्चात् कुछ ऐसे मुगल सम्राट भी रहे जिन्होनें अल्प समय तक शासन किया। उनके बाद बहादुर शाह ज़फ़र सन् 1837 ई. में मुगल साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। बहादुर शाह जफ़र स्वयं एक अच्छा शायर था, अतएव ग़ज़ल की साहित्यिक एवं सांगीतिक उन्नति उनके समय में चरमोत्कर्ष पर थी। बहादुर शाह जफर जौक का शागिर्द था और मोमिन तथा 'गालिब' जैसे मशहूर शायर इसी दौर में हुए। इसी समय में डोमनी प्रसिद्ध ग़ज़ल गायिका थी। मौलाबख़्श (1839–1896) जो शास्त्रीय संगीत के उत्कृष्ट गायक थे और ग़ज़ल भी गाते थे। 1862 ई. में बहादुर शाह जफ़र का स्वर्गवास हो गया। और इसके बाद अंग्रेजों के शासन काल में ग़ज़ल ने अपना मुकाम नहीं छोड़ा। फैयाज़ खान जैसे शास्त्रीय गायक भी अपने आपको ग़ज़ल गाने से नहीं रोक पाये। आप शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम करते हुए श्रोतागणों के आग्रह पर ग़ज़लें सुनाते थे। उस्ताद की ग़ज़ल सुनकर श्रोतागण आश्चर्यचकित हो जाते थे तथा सोचते थे कि शास्त्रीय संगीत की उपासना करने वाला यह गायक ग़ज़ल भी किस खूबी से गाता है।[50]

[51]ग़ज़ल की संरचना के प्रमुख तत्व क्या–क्या होते है, ग़ज़ल की संरचना के प्रमुख तत्वों का विस्तृत वर्णन :–

ग़ज़ल की स्वरूपगत व्याख्या की संरचना के बारे में विचार करना भी ग़ज़ल की विधा को समझने की दृष्टि से बहुत अनिवार्य है और ग़ज़ल की संरचना निम्न तत्वों से पूर्ण होती है :–

(1) कलमा और कलाम (2) शेर (3) शेर के अज्जा (4) शायर (5) मिसरा (6) बहर (वज़न) (7)काफ़िया (8) रदीफ़ (9) मतला (10) तख़ल्लुस (11) मक़्ता (12) दीवान (13) कुलियात (14) गुलदस्ता (15) रेख़्ती (16) उस्ताद और शागिर्द–तलमीह, अलामत, तशबीह और पैकर।[51]

1. [52]कलमा और कलाम :– जिस लफ्ज़ (शब्द) के कुछ अर्थ होते है, उसे कलमा कहते है और कलमे के ऐसे समूह को जिससे पूरी बात समझ में आ जाये उसे।कलाम कहते है।

2. शेर :– लुगत (शब्द कोष) में शेर शब्द का अर्थ होता है 'जानना' या किसी चीज़ से वाकिफ़ होना। शेर का दूसरा नाम बेंत भी है।

3. शेर के अज्जा :– शेर में दो पंक्तियाँ होती है। एक पंक्ति को मिसरा कहते है और दो मिसरे को मिलाने पर शेर बनता है। पहले मिसरे को मिसरा–ए–अव्वल और दूसरे को मिसरा–ए–सानी कहते है। हर मिसरे के तीन हिस्से होते है।

4. शायर :–इसका अर्थ जानने वाला, क्योंकि शायर जिस बात को जानता है उसे कलमबद्ध करता है, ''अतः शेर लिखने वाले को शायर कहते है।''

5. मिसरा :– शेर के दो भाग होते है, और हर भाग को मिसरा कहते है। किसी भी एक मिसरे को शेर नहीं कहा जा सकता है। शेर के दोनों मिसरों में रब्त (संबंध) का होना बहुत ही ज़रूरी है।[52]

6. [53]बहर (वज़न) :– शेर के नापने और तोलने के जो पैमाने बनाये है उन्हें बहर या वज़न कहते है और जो कलाम किसी बहर में नहीं होता उसे 'नसर' कहा जाता है।

7. काफ़िया :– ''काफ़िया वो हम–वज़न अल्फ़ाज है जो शेर के अख़िर में रदीफ़ से पहले होता है।''[53]

[54]बिना काफ़िये के ग़ज़ल नहीं होती है परन्तु कभी कभी शायर बगैर रदीफ के ग़ज़ल कहते है, ऐसी हालत में कई बार काफ़िया मिसरे के आख़िर में आता है। बिना रदीफ़ के प्रयोग के उदाहरणार्थ निम्न गज़लें प्रस्तुत है :–

दफ़अतन दिल में किसी ने ली अंगड़ाई।

इस ख़राबे में ये दीवार कहां से आई।

यूं तो हर शख़्स अकेला है भरी दुनियां में।

फिर भी हर दिल के मुक्क़दर में नहीं तन्हाई।।

रात भर जागते रहते हो भला क्यूं 'नासीर'।

तुमने ये दौलतें बेदार कहाँ से पाई।।

इन तीनों ही ग़ज़ल के शेरो में रदीफ़ नहीं है। इसमें मिसरे के आख़िर में अंगड़ाई, आई, तन्हाई और पाई हम वज़न काफ़िये है।[54]

8. [55]रदीफ़ :– ''शायरी में हुस्न और जैबाईश (सजावट) के अलावा विचारों में फैलाव और रंगीनी में रदीफ़ की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रदीफ़ जितनी खुशगवार और अछूती होती है ग़ज़ल में उतना ही तरन्नुम और सांगीतिकता होती है। रदीफ़ काफ़िये के बाद आती है।[55]

उदाहरणार्थ निम्न ग़ज़ल के कुछ शेर प्रस्तुत है :–

[56]अजब जुनुने मुसाफ़त में घर से निकला था।

ख़बर नहीं है के सूरज किधर से निकला था।।

ये कौन फिर से इन्हीं रास्तों में छोड़ गया।

अभी अभी तो अज़ाबे सफर से निकला था।।

वो क़ैस अब जिसे मजनू पुकारते है 'फराज़'।

तेरी तरहा कोई दीवाना घर से निकला था।।

उपरोक्त ग़ज़ल के हर शेर के अन्त में 'से निकला था' आया है। जो रद़ीफ है और 'घर', 'किधर', 'सफ़र' काफ़िये है।[56]

9. [57]मतला :–'जिस शेर के दोनों मिसरों में काफ़िया होता है, उसे मतला कहते है।' ग़ज़ल की शुरूआत मतले से ही होती है। मतला ही ग़ज़ल की रदीफ़ काफ़िया और बहर को निर्धारित करता है।[57]

उदाहरण के लिए ग़ज़ल का मतला प्रस्तुत है :–

[58]''तीर बन कर कमान से निकला, हर्फ़ जो भी ज़बान से निकला।''

उपरोक्त ग़ज़ल में 'से निकला' रदीफ़ है और 'कमान तथा जबान' काफ़िया है।

10. [59]तख़ल्लुस :–''वह नाम जो शायर शेर में लाने के लिए रखते है।''

तख़ल्लुस : हिन्दी में इसे उपनाम कहते है। ''गालिब का नाम असद उल्ला खान था और तख़ल्लुस 'गालिब'।''

11. मक़्ता :– 'वो शेर जिसमें शायर अपना तख़ल्लुस प्रयोग में लाता है, मक़्ता कहलाता है और यह ग़ज़ल का आख़री शेर होता है।'[59]

उदाहरण के लिए निम्न शेर प्रस्तुत है :–

[60]'असरार' तेरा दर्द–ए–दिल तस्वीर बन गई।

ग़मो के हार हरदम पिरोता रहा हूं मैं।।

उपरोक्त ग़ज़ल का आख़री शेर है और इस मक़्ते में शायर ने अपने उपनाम 'असरार' का प्रयोग किया है।[60]

एक और शेर प्रस्तुत है कृष्णा कुमारी कमसिन का –

[61]''कमसिन' उनके सितम नहीं रूकते। अपनी भी खुदसरी नहीं जाती।

यह शेर ग़ज़ल का आख़री शेर है ओर इस मक़्ते में शायर ने अपने उपनाम 'कमसिन' का प्रयोग किया है।[61]

12. [62]दीवान :–''किसी शायर की ग़ज़लों के मजमुए (संग्रह) को दीवान कहते है।''

13. कुलियात :– ''किसी शायर के हर क़िस्म के कलाम के संग्रह को कुलियात कहते है।''

14. गुलदस्ता :– ''कई शायरों के कलाम के मजमुए को गुलदस्ता कहते है।''

15. रेख़्ती :– ''ग़ज़ल को रेख़्ती भी कहा जाता है। वो ग़ज़ल जिसमें ख़्यालात और ज़ज़्बात का इज़हार औरतों की तरफ़ से हो, औरतों की ज़बान में ही हो, उसे रेख़्ती कहा जाता है।[62]

16. [63]उस्ताद और शागिर्द :– जब कोई शख़्स शायरी शुरू करता है तो वह किसी उस्ताद का शागिर्द हो जाता है। उस्ताद शेर के वज़न और ज़बान की गलतियाँ बतलाता है जिससे शेर कहने का सलीक़ा आ जाता है।''[63]

इसी प्रकार ग़ज़ल में और भी सूक्ष्म तत्व जो ग़ज़ल में महत्वपूर्ण स्थान रखते है :–

1. [64]तलमीह :– ''तलमीह का शाब्दिक अर्थ किसी चीज़ की तरफ संकेत करना होता है। शेर में किसी क़िस्से कहानी या कहावत की तरफ इशारा किया जाता है।''

हुआ है काट के चादर को नागहा ग़ायब।

अगर ये ज़ानुए नल पर रखे दमन तकिया।।

ग़ालिब के उपरोक्त शेर में नल–दमयन्ती की कथा की ओर इशारा किया गया है।[64]

2. [65]अलामत, तशबीह और पैकर :– तलमीह के अतिरिक्त ग़ज़ल में अलामतो (प्रतीकों) का प्रयोग भी खूब होता है। प्रतीकों के दायरे में ही तशबीह (उपमा) और पैकर (बिम्ब) का प्रयोग भी ग़ज़लों में अधिकता से पाया जाता है। इसे ग़ालिब के एक शेर से समझा जा सकता है। शेर यूं है :–

''कोई वीरानी सी वीरानी है, दश्त देखकर घर याद आया।''

उपरोक्त शेर के दूसरे मिसरे में बतौर इशारे के 'डर' मालूम हुआ, के स्थान पर 'घर याद आया' कहा गया है। क्योंकि जंगल में डर मालूम होने पर घर याद आना जरूरी होता है। यानि इस शेर का यह अर्थ निकलता है कि हमारा घर इस क़दर वीरान है कि जंगल को देखकर घर की याद आती है।[65]

[66]जिस प्रकार पांच तत्वों से मिलकर मानव शरीर की रचना होती है, तो उसी तरह ग़ज़ल में इन सभी तत्वों का होना आवश्यक होता है।

एक अच्छी ग़ज़ल के लिए काव्य–दोषों से बचना और काव्य गुणों को अपनान बेहद जरूरी है।

गागर में सागर – थोड़ शब्द अधिक अर्थ, ग़ज़ल की कसौटी है। अलंकारों का प्रयोग यदि करना पड़े तो वह ऐसा हो कि दृष्टि स्वाभाविक सौन्दर्य की ओर जाये, गहनों की तरफ नहीं, जैसे फूल पर ओस की बूंद या सरोसर में कमल। कला पक्ष की जानकारी और कल्पना की उड़ान ग़ज़ल के सौपान है। गेयता, ताज़गी, नवीनता–ग़ज़ल के महत्वपूर्ण एवं विशेष उपकरण है और जहां तक प्रस्तुत करने वाले के अन्दाज़े बयां का प्रश्न है, उसे तो ऐसा होना चाहिए कि लगे कि बातचीत हो रही है। इस प्रकार ग़ज़ल में काव्य गुण और काव्य दोष दोनों पाये जाते है। वस्तुतः दोष रहित और गुणों से पूर्ण होगी, वही ग़ज़ल उत्तम की श्रेणी में आयेगी।

1. षड़ज

ग़ज़ल में बहर का महत्व :–

प्राचीन काल से ही विश्व के मनीषियों ने अपने गहने अनुभवों से प्राप्त किया, कालान्तर में उसी के अनुकरणीय सूक्ति का रूप धारण कर लिया। जिस प्रकार हिन्दी कविताओं में छन्द होते है, उसी प्रकार उर्दू शायरी 'बहर' के वज़न पर आधारित है।[66]

[67]''साहित्य की पद्य विधा में प्रत्येक पंक्ति का सामान्यतया लयबद्ध होना जरूरी होता है। लयबद्ध होने से तात्पर्य यह है कि प्रत्येक पंक्ति में एक ही वज़न के अर्थात् एक ही गति के शब्द होने चाहिये। इसी संदर्भ में ग़ज़ल की साहित्यिक संरचना करते समय कुछ तत्वों को रखना आवश्यक होता है। उन तत्वों में से एक बहुत ही प्रमुख तत्व है, 'बहर' (छंद)।''[67]

[68]ग़ज़ल में कोमल–कान्त पदावली का प्रयोग अच्छा समझा जाता है। कोमल और मधुर ध्वनि वाले शब्दों से काव्य–सौन्दर्य बढ़ जाता है। एक अच्छी ग़ज़ल के लिए यह बहुत जरूरी है कि उसके शब्द और भाव सरल तो है ही, प्रभावशाली भी हो। ग़ज़ल का अच्छा शेर वही है जो ध्वनि प्रवाह और अर्थ की दृष्टि (नज़र) से परिपूर्ण हो तथा उसमें भरती के या भारी भरकम शब्द न हो। भारी भरकम शब्दों से ग़ज़ल की सुन्दरता कम हो जायेगी। इसलिए ग़ज़ल में जितना कोमल–कान्त पदावली का प्रयोग होगा, वह उतना ही निखर के सामने आयेगी।''[68]

[69]ग़ज़ल की रचना में सबसे महत्वपूर्ण अवयव तत्व है, वो है 'बहर' (छन्द)। बिना बहर क यह रचना पूर्ण नहीं हो सकती है।

'बहर' का शब्द कोष में जो अर्थ बताया गया है, वह है, 'महासमुद्र', 'समुद्र' और 'छन्द'।[69]

[70]उन विशेष शब्दों के गठन को 'बहर' कहते है कि जिन पर शेर में तोला और जांचा जाता है कि शेर का वज़न ठीक है अथवा नहीं।[70]

[71]निश्चित बहर (छन्द) से किसी मिसरे का गिर जाना अथवा अलग वज़न के मिसरों का एक साथ आ जाना छन्द–दोष है जो बहरों की सम्यक जानकारी के अभाव में पैदा हो जाता है।[71]

[72]संगीत के महत्वपूर्ण तत्व ताल और लय के निर्वाह के लिए भी ग़ज़ल का बहर में होना बहुत ही जरूरी है क्योंकि ग़ज़ल के प्रत्येक मिसरे की बहर अलग अलग होगी तो उस ग़ज़ल को एक ही ताल में तथा एक ही लय में गाया जाना सम्भव नहीं होगा। जिस प्रकार ताल मात्राएं अलग अलग भागों में बंटे रहते है। ताल की तरह ही ग़ज़ल की प्रत्येक बहर की एक निश्चित लय होती है।

जैसे हिन्दी की कविता सामान्य रूप से छन्द पर ही आधारित होती है उसी प्रकार से उर्दू ग़ज़ल भी बहर (छंद) पर ही आश्रित होती है, जिसको बहर कहते है।

अरबी, हिन्दी और फ़ारसी इन तीनों भाषाओं में कुछ छंद (बहरे) समान होते है तथा कुछ में समानता नहीं होती है। जैसे दो बहरे तीन भाषाओं में प्रचलित है, बहरे मुतकारिब और बहरे सरीअ, अरबी, फारसी और हिन्दी तीनों ही भाषाओं में प्रचलित है।[72]

[73]मुतक़ारिब को हिन्दी में भुजंग प्रयात कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है 'सांप की चाल' और 'बहरे सरीअ' को हिन्दी में चौपाई कहा जाता है।[73]

[74]बहर को इज़ाद करने वाला मशहूर विद्वान ख़लील बिन अहमद को माना जाता है जो 731 ईस्वी में पैदा हुआ और वह बसरा में रहता था तथा 787 में उसका इंतकाल हुआ। उसी ने 15 बहरें बनाई तथा सबके नाम दिये और उसके बाद में कई विद्वानों ने और बहरें बनाई।[74]

[75]जिस प्रकर हिन्दी कविताओं में छन्द होते है, उसी प्रकार शायरी 'बहर' के वजन पर आधारित है। इस संबंध में सबसे पहले 'अमीर खुसरो' ने 'एज़ाज़े–ख़ुसरवी' नाम की पुस्तक तीन भागों में लिखी, उसके बाद उसी के आधार पर अनेक पुस्तकें लिखी गई, जिनमें 'शिज्र तुल् अरुज', 'क़वाइदुल अरुज' 'अरुजे सैफी', 'उर्दू का अरुज' इत्यादि है। उर्दू में मूल बहरों की संख्या उन्नीस है, जिनमें से बारह बहरें

लोकप्रिय और प्रचलित है। इन बहरों के अन्तर्गत अनेक बहरें आती है, जिनकी संख्या सैंतीस है और जो प्रचलित है। प्रचलित बारह बहरों के नाम इस प्रकार है :–

(1) मुतकारिब (तकारुब) (2) मुतदारिक (3) हज़ज (4) रजज़ (5) रमल (6) कामिल (7) मुज़ारिअ (8) मुक्तज़िब (9) मुज्तस (10) मुंसरीह (11) सरीअ और (12) ख़फ़ीफ़।

शेष सात बहरों के नाम इस प्रकार है :– (1) वाफ़िर (2) तवील (3) मदीद (4) बसीत (5) क़रीब (6) जदीद और (7) मुशाकिल।

'रूबाई' की बहर इनसे भिन्न है, जो चौबीस बहरों पर आधारित है। जिन विशेष शब्दों से बहरें बनती है, उनको 'अर्कान' कहते है, वे दस है '– (1) फऊलन् (2) फाइलन (3) मुस्तफइलन (4) मफाईलन् (5) फाइलातन् (6) मुतफाइलन् (7) मफाइलतन् (8) फअलातन् (9) मफ्ऊलात् और (10) मुसतफ्अलन्।

प्रथम चरण के पहले रूक्न को 'सदर' और अंतिम रूक्न को 'अरुज़', दूसरे चरण के पहले रूक्न को 'इब्तिदा' और अंतिम रुक्न को 'ज़रब' तथा मध्य में आने वाले अर्कान को 'हुशू' कहते है।

अर्कान में जो परिवर्तन होता है उसको 'ज़िहाफ़' कहते है, जैसे 'फाइलातन्' से 'मफ्उलन्' से 'फऊलान्' इत्यादि। ग्रंथों में ज़िहाफ़ के 53 प्रकार लिखे गये है।

शेर के टुकड़े (विभाग) करके बहर के अर्कान के अनुसार करने को 'तक्तीअ' कहते है। उदाहरणार्थ निम्नलिखित शेर की तक्तीअ देखिये :–

कहाँ है दारे–फना में क़रार की सूरत, नम्र दे उम्र है, बर्क़ो शरार की सूरत।

कहांहैदा, रेफ़नामें,करारकी, सूरत,

मफाइनल्, फइलातन् मफाइलन्, फ्अनल्,

नमूदेउम्र, रहै बर्क़ो, शरार की, सूरत।

मफाइलन, फ्इलातन्, मफाइलन् फ्अलन्

इसी प्रकार पर 'मआदनुल–मूसीकी' में बहरों से ताल बनाकर दिखाये गये है। अब सैंतीस प्रचलित बहरों का विवरण दिया जाता है :–

(अ) बहर मुतक़ारिब (तक़ारूब) :– इस बहर में आठ फऊलन् है :–

पहला प्रकार :–

फऊलन्फऊलन्फऊलन्फऊलन्

इधरमी करमऐ नसीमे बहारों

फऊलन्फऊलन्फऊलन्फऊलन्

तरसता हेफूलों को मद्फ़न किसी का

दूसरा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'फऊलन्' और एक 'फऊल्' आता है।

तीसरा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'फअलन्' दो–दो बार आता है।

चौथा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में पहले तीन बार 'फअलन्' और चौथी बार 'फाअ्' आता है।

पांचवा प्रकार :–

इसी बहर के सौलह 'रुक्न' भी होते है, जिनमें प्रत्येक चरण में आठ–आठ 'फऊनल' आते है।

छठा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'फऊलु फऊलन्' चार–चार बार आता है।

सातवां प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'फअलन्–फऊलन्' चार–चार बार आता है।

(आ) बहर मुतदारिक :– इस बहर में आठ 'फाइलन्' है :–

पहला प्रकार :–

फाइलन् फाइलन् फाइलन्फाइलन्

ख़ाजए दो जहाँ मर्हबा मर्हबा।

दूसरा प्रकार :–

इसमें प्रत्येक चरण में तीन 'फाइलन' और एक 'फअ्' आता है।

तीसरा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में चार–चार 'फइलन्' आते है।

चौथा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में चार–चार 'फअलन' आते है।

पांचवा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में पहले तीन 'फाइलन' और एक 'फअ्' इसके बाद फिर तीन 'फाइलन' और एक 'फअ्' आता है। इस प्रकार इसमें सौलह 'रूक्न' होते है।

छठा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में आठ–आठ 'फअलन्' आते है।

सातवां प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में सात 'फअलन्' और एक 'फअ्' आता है।

आठवाँ प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में आठ–आठ 'फइलन्' आते है।

(इ) बहरे हज़ज़ :– इस बहर के प्रत्येक चरण में चार–चार 'मफाईलन्' है।

पहला प्रकार :–

मफाईलन् मफाईलन् मफाईलन्
मफाईलन्

वफ़ीकीहम नेबुन्यादआ जज़ेरआ
समांरखदी

दूसरा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'मफऊलु मफाईलन' दो–दो बार आता है।

तीसरा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'मफउलु मफाईलु मफाईलु फऊनल्' आता है।

चौथा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में चार–चार 'मफाईलन्' आते है।

पांचवा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में दों 'मफाईलन्' और एक 'फऊलन्' आता है। यह छह रूक्नी बहर है।

छठा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'मफउलु मफाइलन् फउलन्' आता है।

(ई) बहरे – रजज़ : इस बहर के प्रत्येक चरण में चार–चार 'मुस्तफइलन' है।

पहला प्रकार :–

मुस्तफइलन्	मुस्तफइलन्	मुस्तफइलन्	मुस्तफइलन्
जिससिक्तकर	ताहूँनज़र	दिलदार आ	ताहैनज़र

दूसरा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में चार–चार 'मुफ्त इलम्' आते है।

तीसरा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'मुफ्तइलन् मफाइलन्' दो–दो बार आता है।

(उ) बहर रमल :– इस बहर के प्रत्येक चरण में तीन 'फाइलातन्' और एक 'फाइलन्' है।

पहला प्रकार :–

फाइलातन्	फाइलातन्	फाइलातन्	फाइलन्
ख़तबढ़ाजुल्	फ़ेंबढ़ीका	कुलबढींगे	सूबढ़े।

दूसरा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'फाइलातन् फइलातन् फइलातन् फइलन्' आता है।

तीसरा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'फइलानु फाइलातन्' दो दो बार आता है।

चौथा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में दो 'फाइलातन्' और एक 'फाइलन्' आता है। यह छह–रूक्नी बहर है।

पांचवा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'फाइलातन् फइलातन् फअलन्' आता है।

(ऊ) बहरे–कामिल :– इस बहर के प्रत्येक चरण में चार 'मुतफाइलन' आते है। उदाहरणार्थ :–

मुतफाइलन् मुतफाइलन् मुतफाइलन् मुतफाइलन्

मेरे दिलको शौ क़े फग़ां नहीं मेरे लब तक आ ती दुआ नहीं

(ए) बहर मुज़ारिअ :– इस बहर के प्रत्येक चरण में 'मफऊलु–फाइलातन्' दो दो बार आता है।

पहला प्रकार :–

मफऊलु फाइलातन् मफऊलु फाइलातन्

आँख उसको खोलनी भी दुश्वार हो गई है।

दूसरा प्रकार :–

इसके प्रत्येक चरण में 'मफऊलु फअलातन् मफाईलु फअलन्' आता है।

(ऐ) बहर मुक़्ताज़िब :– इस बहर के प्रत्येक चरण में 'फाइलातु मफऊलन्' दो दो बार आता है। उदाहरणार्थ :–

फाइलातु मफऊलन् फाइलातु मफऊलन्

खूं किया हु आदेखा गुम किया हु आ पाया।

(ओ) बहर मुज्तस :– इस बहर के प्रत्येक चरण में मफाईलन्, फाईलातन, मफाईलातन्, मफाईलन् फईलन् आता है। उदाहरणार्थ :–

मफाइलन् फाईलातन् मफाइलन् फइलन्

गुज़िरतख़ा क़नशीनो कीयादगा रहूंमैं

(औ) बहर मुंसरीह :– इसके प्रत्येक चरण में मुफ़्तइलन् फाइलन् दो दो बार आता है। उदाहरणार्थ :–

मुफ़्तइलन् फाइलन् मुफ्तइलन् फाइलन्

क़ाफिलए लख़्ते दिल अश्क़ों में है यूँ खौं

(अं) बहर सरीअ :– इसके प्रत्येक चरण में दो 'मुफ्तइलन्' और एक 'फाइलन्' आता है। यह छह रूक्नी बहर है। इसका उदाहरण निम्नलिखित :–

मुफ़्तइलन् मुफ्तइलन् फाइलन्

बैठे बिठा ए तुम्हें क्या हो गया।

(अः) बहर ख़फ़ीफ़ :– इसके प्रत्येक चरण में 'फाइलातन् मफाइलन् फइलन् आता है। यह छह रूक्नी बहर है। इसका उदाहरण निम्नलिखित है :'

फाइलातन् मफाइलन् फइलन्

कामजाने हस् बेमुददुआ न हुआ

इस प्रकार बारह मूल बहरों से सैंतीस प्रकार बनते है, जो उर्दू–शायरी में प्रचलित है।

बहरों की श्रेणियाँ :–

इन बहरों का पता लगाने के लिए इनको छह श्रेणियों में बांट दिया गया है। पहली श्रेणी में बहर मुज्तस क्र. 1, बहर रमल, क्र. 2 बहर मुज़ारिअ क्र. 2 और बहर हज़ज क्र. 3 है। दूसरी श्रेणी में बहर हज़ज क्र. 1 और बहर रमल क्रं. 1 है, तीसरी श्रेणी में बहर मुतकारिब क्र. 1 व क्र. 2 बहर हज़ज क्र. 6 व 7, बहर रमल क्र. 4 और बहर ख़फ़ीफ़ क्र. 1 है, चौथी श्रेणी में वज़न रूबाई, बहर रमल क्र. 5 और बहर सरीअ क्र. 1 है तथा 5वीं श्रेणी में बहर मुतक़ारिब क्र. 6 और बहर कामिल क्र. 1 है।

इनके अतिरिक्त शेष बहरें छठी श्रेणी में आती है। इन श्रेणियों से किसी भी शेर की बहर सरलता से समझ में आ जाती है।[75]

[76]रूक्न एवं चिन्ह

(1)	फ़अल	(2)	फ़ा	(3)	फ़ाइलात	(4)	फ़ाइलातुन
	।।।		ऽ		ऽ।ऽ।		ऽ।ऽ।।
(5)	फ़ाइलुन	(6)	फ़इलात	(7)	फ़इलातुन	(8)	फ़इलुन
	ऽ।।।		।।ऽ।		।।ऽ।।		।।।।
(9)	फ़ऊ	(10)	फ़ऊल	(11)	फ़ऊलान	(12)	फ़ऊ लुन
	।ऽ		।ऽ।		।ऽऽ।		।ऽ।।
(13)	फ़ेल (फ़ाल)	(14)	फ़ेलान	(15)	फ़ेलुन	(16)	मफ़्ऊल
	ऽ। (ऽ।)		ऽऽ।		ऽ।।		।। ऽ।
(17)	मफ़ ऊलात्	(18)	मफ़् ऊ ला तुन	(19)	मफ़ऊलुन	(20)	मफ़ाइलतुन
	।।ऽऽ।		।। ऽऽ।।		।। ऽ।।		। ऽ।।।।
(21)	मफ़ा इलातुन	(22)	मफ़ाइलान	(23)	मफ़ा इलुन	(24)	मफ़ाईल
	। ऽ।ऽ।।		।ऽ।ऽ।		। ऽ।।।		। ऽ ऽ।
(25)	मफ़ाईलान	(26)	मफ़ा ईलुन	(27)	मुतफ़ा इलुन	(28)	मुफ़् तइलुन
	। ऽऽऽ।		। ऽऽ।।		।।ऽ।।।		।।।।।।
(29)	मुस्त फ़इलान	(30)	मुस् तफ़् इलुन[76]				
	।।।।ऽ।		।।।।।।।				

निष्कर्ष–इस प्रकार इस अध्याय में मैनें ग़ज़ल के वास्तुशिल्प को समझाया है, कि किस प्रकार एक ग़ज़ल की इमारत खड़ी होती है और इस इमारत को गढ़ने में किन–किन सहायक तत्वों का योगदान रहता है। ग़ज़ल के अन्तर्गत बहर का कितना योगदान है और कौन–कौन सी बहरें प्रचलित है। यह सब मैंनें इस अध्याय में समझाया है।

किताबें, समाचार पत्र–पत्रिकाएं और शोधग्रन्थ :–

1. संगीत विशारद–वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 2002, 204101 पृष्ठ 234

2. रविवारीय पत्रिका–स्वप्नल–सोनल, 23 जून 2012

3. आचार्य बृहस्पति : मुसलमान और भारतीय संगीत, 1982, पृष्ठ 24 (शोध प्रबंध बेग़म अख़्त :व्यक्तित्व और कृतित्व –डॉ. रोशन भारती)

4. मुसलमान और भारतीय संगीत–आचार्य बृहस्पति, 1982 पृ. 83)

5. संगीत विशारत–बसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 2002, 204101 पृ. 237

6. संगीत ग़ज़ल अंक–डॉ. श.श्री परांजये, 1978 पृ. 7, 8

7. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी–डॉ. प्रेम भण्डारी–हिन्दी ग्रन्थकार, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 1

8. संगीत विशारद–वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 2002, पृ. 237

9. दर्द की लकीरें–विष्णुदत्त–विकल बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ.5

10. सृजन विश्व रविवारीय पत्रिका–साधना सोलंकी, बशीर बद्र, 23 नवम्बर 2008

11. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 2

12. सृजन विश्व रविवारीय पत्रिका–साधना सोलंकी, बशीर बद्र, 23 नवम्बर 2008

13. तो हम क्या करें–कृष्णा कुमार 'कमसिन' पंकज बुक्स–दिल्ली पृ. 1

14. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 1

15. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 15

16. उर्दू ग़ज़ल–डॉ. युसूफ हुसैन खानः 1974, पृ. 410, 11, 25, हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी

17. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 3, 4

18. गार्ली ओबिन्स–इण्डियन म्यूजिक, पृ. 45 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, पृ. 23)

19. मध्यकालीन भारत का इतिहास–डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ. प्रकाश व्यास, साहिल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 151

20. मध्यकालीन भारत का इतिहास–डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ. प्रकाश व्यास, साहिल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 192

21. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 22

22. आचार्य बृहस्पति–संगीत चिंतामणी, 1976 पृ. 75 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी–1992)

23. डॉ. मलिक मोहम्मद–अमीर खुसरो भावात्मक एकता के अग्रदूत, 1974, पृ. 140 से 141, (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी–1992)

24. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, पृ. 22

25. हिन्दलवली ग़रीब नवाल–मुन्शी अब्दुल हमीद बिहारी–बुक डिपो, छतरी गेट, दरगाह शरीफ, अजमेर पृ. 11, 1998

26. सुलोचना बृहस्पति : खुसरो, तानसेन तथा अन्य कलाकार, 1976, पृ. 89 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी–1992)

27. शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी–पृ. 35

28. सुलोचना बृहस्पति : खुसरो, तानसेन तथा अन्य कलाकार, 1976, पृ. 90, 91 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी–1992)

29. सोहनपाल सुमनाक्षर : खुसरो, व्यक्तित्व और कवि पृ. 18, (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

30. शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992 पृ. 87 व 88

31. रामनरेश त्रिपाठी : कविता कौमुदी, पृ. 124 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

32. आचार्य बृहस्पति : संगीत चिंतावणी, पृ. 74, 1976 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

33. डॉ. मलिक मोहम्मद : अमीर खुसरो भावनात्मक एकता के अग्रदूत, 1975, पृ. 141 से 145 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

34. मध्यकालीन भारत का इतिहास–डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ. प्रकाश व्यास, साहिल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 147

35. डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 9 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

36. डॉ. मलिक मोहम्मद : अमीर खुसरो भावनात्मक एकता के अग्रदूत, 1975, पृ. 147 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

37. आचार्य बृहस्पति : संगीत चिंतावणी, पृ. 71, 1976 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

38. सैयद सुलैमान नदवी : अरब और चिंतामणि, 1976, पृ. 72, (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

39. आचार्य बृहस्पति : संगीत चिंतावणी, पृ. 72, 1976 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

40. डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 8 व 9 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

41. आजकल, अगस्त 196, पृ. 5, (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

42. मुतख़बुत्तवारीख खण्ड 2, पृ. 105 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

43. डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 9 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

44. भगवती शरण शर्मा : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. 87 और 92 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

45. डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 9 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

46. भगवती शरण शर्मा : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. 96 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

47. ए शॉर्ट हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ म्यूजिक ऑफ अपर इण्डिया (हिन्दी अनुवाद) पृ. 38 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

48. भगवती शरण शर्मा : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. 100 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

49. डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 10 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

50. हमारे संगीत रत्न, पृ. 223 डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 9 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

51. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 5

52. अख़लाक हुसैन : फ़ने शायरी 1986, पृ. 23 व 24 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

53. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 45 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

54. नासिर काज़मी : दीवान–ग़ज़ल संग्रह, 1984, पृ. 39 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

55. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 44 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

56. अहमद फ़राज़ : जानाँ–जाना–ग़ज़ल संग्रह, पृष्ठ 80 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

57. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 43 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

58. क़तील शिफाई : अमोख्ता–ग़ज़ल संग्रह 1984, पृ. 10 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

59. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 44 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

60. असरार जवासी : दीवाना, 2011, पृ. 10 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

61. तो हम क्या करें : कृष्णा कुमारी 'कमसिन' पंकज बुक्स, दिल्ली पृ. 16

62. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 57 व 48 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

63. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 44 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

64. महमूद नियाज़ी : तल्मीहाते ग़ालिब, 1972, पृ. 5 व 36 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

65. अख़्तर अंसार : ग़ज़ल की सरगुजश्त, 1985, पृ. 52, (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

66. ग़ज़ल के बहाने : डॉ. दरवेश भारती, शिव मार्केट, न्यू चन्द्रावत, दिल्ली पृ. 8 व 3

67. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दी ग्रन्थागार, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 44

68. ग़ज़ल के बहाने : डॉ. दरवेश भारती, शिव मार्केट, न्यू चन्द्रावत, दिल्ली पृ. 8

69. बशीर अहमद कुरैशी : स्टेण्डर्ड ट्वंटीपथ सेन्च्यूरी डिक्शनरी, उर्दू इंग्लिश 1981, पृ. 102 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

70. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 26 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

71. ग़ज़ल के बहाने : डॉ. दरवेश भारती, शिव मार्केट, न्यू चन्द्रावत, दिल्ली पृ. 8

72. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दी ग्रन्थागार, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 44

73. मौलवी नज़मुल गनी खान : बहमुल फ़साहत, 1927, पृ. 127 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

74. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दी ग्रन्थागार, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 44

75. गुलाम रसूलः संगीत ग़ज़ल अंक जनवरी 1967, पृ. 23 से 26 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

76. ग़ज़ल के बहाने : डॉ. दरवेश भारती, शिव मार्केट, न्यू चन्द्रावत, दिल्ली 2008, पृ. 9

ऋषभ

उस्ताद मेहदी हसन : एक परिचय (जीवन परिचय)

कला के लिए धैर्य, एकाग्रता, तपस्या, नियमित अभ्यास व गुरु भक्ति होना अति आवश्यक है, संगीत के प्रति ईश्वर तुल्य निष्ठा होना, संगीत वह कला है, जो कि मानव जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक जुड़ी हुई है। जीवन का कोई भी कार्य इसके बिना अधूरा ही है। एक कला के रूप में ही नहीं वरन् विद्या के रूप में भी संगीत समाज का अंग है।

[1]धैर्य साहस और दृढ़ता का सूचक है। सामर्थ्यवान ही धैर्य रख सकता है। धैर्य, शांति का पर्याय है। धैर्य का अर्थ है पूर्ण नियंत्रित रूप में धारण किये रहना। संतुलन को, भावनात्मक संतुलन को हर स्थिति में बनाये रखना धैर्य का विरोधी स्वभाव चंचलता ही है, जो कि अज्ञान की सूचक है। धैर्य शांति का मार्ग भी है, धैर्य वहीं पर होगा, जहां यथार्थ दृष्टि होती है। धैर्य का अर्थ है समय के अनुरूप धारण करना विपरीत परिस्थितियों में आशान्वित बने रहना। कर्म की गति को निरन्तर बनाये रखना।[1]

भारत एक ऐसा देश है, जहां कई वर्षो से कई जातियाँ आती–जाती रही है, और इन विभिन्न जातियों का जब विलय होता है, तो यह निश्चित है कि इस विलय की प्रक्रिया में एक दूसरे की संस्कृति का आदान–प्रदान भी होता है। भारत जैसे कला प्रेमी देश में सर्व धर्म समभाव की संस्कृति झलकती है। भारत में सभी कलाओं को सहृदय सम्मान मिलता है। चाहे वे कलाएँ किसी भी प्रकार की हो।

हमारे यहाँ कला को भगवान के तुल्य समझा जाता है और उसका तहेदिल से आदर सम्मान किया जाता है। इन कलाओं में संगीत कला भी मानव जीवन पर अपना पूरा पूरा असर छोड़ती है। मनुष्य के पैदा होने से लेकर मृत्यु तक में संगीत कला का महत्व है। ''संगीत को सभी कलाओं का सरताज माना गया है।''

[2]संगीत से केवल आनन्दानुभूति ही नहीं होती। ध्वनियाँ मानसिक स्थितियों की भी सूचक होती है। साथ ही ये हमारे मनोभावों को भी प्रभावित करती है। संगीत

हमारी आत्मा में भक्तिमय अनुभूतियां भर देता है। भक्ति भी एक प्रकार का आवेग है, जो हमारी आत्मा को प्रभावित करता है। प्राचीन ग्रन्थों में संगीत को ईश्वर प्रदत्त बताया है, जैसे भगवान शंकर के हाथों में डमरू, सरस्वती माँ के हाथों में वीणा, नारद के हाथों में इकतारा, कृष्ण के हाथों में बांसुरी और ब्रह्मा के हाथों में खड़ताल। यानि हमारे यहां संगीत और कला जीवन का सार है। इसलिए जीवन में संगीत होना चाहिए।

भारतवर्ष सदा से ही कला एवं कला को जीवंत रखने वाले कलाकारों से परिपूर्ण रहा। कला से ही देश की संस्कृति जीवित रहती है या ऐसा भी कहा जा सकता है कि संस्कृति का प्रादुर्भाव कला से ही हुआ है।[2]

पृथ्वी का ह्रदय है भारत! क्योंकि भारत की संस्कृति सभी देशों से भिन्न है एवं संसार भर में ईश्वर ने अवतार लिया है तो केवल भारत भूमि पर ही लिया है। भारत धरा तीर्थ है और इसी भारत धरा के सुर पुत्र है–'उस्ताद मेहदी हसन खान साहब''

जिस तरह भारत भूमि पर देवी देवताओं ने अवतार लिया है, वैसे ही 'मेहदी हसन सा. ने भी सिर्फ ग़ज़ल विधा के लिए ही अवतार लिया है। संगीत में भी अलग–अलग शैलियाँ है, जैसे ध्रुपद, धमार, ठुमरी, ख़्याल, चतुरंग, भजन, गीत, क़व्वाली और ग़ज़ल। इसी तरह ग़ज़ल गायकी के क्षेत्र में ऐसी ही एक महान् शख़्सियत जिन्हें ग़ज़ल गायकी के 'शहँशाह–ए–ग़ज़ल' कहा जाता है उस्ताद मेहदी हसन साहब।

आपका नाम सीधे जुबां से लेना बहुत मुश्किल होता है। आपने जो ग़ज़ल की ख़िदमत की वैसी ख़िदमत कोई नहीं कर सकता है। और वैसी ही ख़िदमत करने की कोई कोशिश करेगा तो वह सिर्फ आपके ''बाबर–खानदान'' का ही वंशज करेगा।

आपका जन्म भारत के सबसे सुरीले राज्य राजस्थान में हुआ। राजस्थान के झुन्झुनू जिले से महज़ 17 किमी दूर लूणां गांव में 18 जुलाई सन् 1927 को हुआ। आपका गौत्र बाबर है और कहा जाता है कि इस बाबर गौत्र के कलाकारों का आज तक कोई सानी नहीं है। इसी बाबर खानदान के एक अन्य मशहूर ग़ज़ल गायक स्व.

श्री जगजीत सिंह साहब जो कि उस्ताद जमाल खान साहब (बाबर खानदान) के शिष्य रहे।

हर माता–पिता अपने बच्चों को बड़े होकर कुछ ख़ास बनाना चाहते है, परन्तु खान साहब ने तो ये कमाल महज़ 8 वर्ष की उम्र में ही पूरा कर दिया था और राजस्थानी कहावत भी है कि–*''पूत का पग पालणा में ही निज़र आ जावे''*। कुछ बच्चों पर प्रभु की छत्र–छाया बहुत ही ज्यादा होती है, जिसका परिणाम मेहदी हसन सा. जैसी शख़्सियत में देखने को मिलता है। एक उदाहरण देकर मैं इस बात की पुष्टि करूंगा।

[3]खान साहब जब मात्र 8 वर्ष के थे तब उन्होनें बड़ौदा के महाराज के सामने बसंत राग गाया। जिसे सुनकर सभी श्रोता और महाराजा बहुत खुश हुए और उन्होनें खान साहब को बहुत सम्मान और धन दिया।

विलक्षण प्रतिभा रखने वाले कम उम्र के नन्हें से उस्ताद अपना रियाज़ कभी नहीं छोड़ते थे। वैसे 18 वर्ष से कम उम्र के ऐसे बच्चे जो संगीत, चित्रकला या अन्य विधा में अपनी उम्र के मुकाबले बहुत अधिक जानकारी रखते है। ऐसे बच्चे जन्म से ही बेहद प्रतिभाशाली होते है। कुछ बच्चे अपनी कुशलता का प्रदर्शन कर पाते है, जिसमें उनके आस–पास का माहौल और परिवार अहम् भूमिका निभाता है। इसी प्रकार खान सा. को भी घर में संगीत का बहुत अच्छा माहौल मिला था।

उन्होनें बचपन में खेलकूद, रियाज़ कसरत और पहलवानी ख़ूब की। अपने बचपन के मित्रों के साथ गिल्ली डण्डा खेलना, माचिस की डिब्बी के धागा बांधकर संवाद करना तथा खेतों में जाकर मित्रों के साथ ख़ूब मस्ती करना।

उन्होनें बचपन में कितना रियाज़ किया था। इस बात का मुझे तब पता लगा, जब मैं और मेरे एक जूनियर साथी रघुवर दयाल हम दोनों गर्मी में दिनांक 25.03.08 को लूणां गांव में गये। वहां पर हमें अर्जुन जी खाती ने बताया कि खान साहब रात–रात भर गाते थे। अर्जुन जी उनके घर अक्सर आते जाते थे। अर्जुन जी और नारायण सिंह जी ये दोनों खान सा. के परम मित्र रहे है। इनमें से अर्जुन सिंह जी का देहान्त हो गया है। उन्हीं से मुझे यह जानकारी मिली है।

झुन्झुनु पहले तहसील था, बाद में यह जिला बना। राजस्थान में देशी रियासतें बहुत थी, और इन सब में कला के सभी रूपों को प्रश्रय मिलता था। खान साहब का बचपन बहुत ही सुखदायी और रईसमयी रहा। क्योंकि आपके वालिद साहब और दादा दरबार के यहां गायन व वादन की प्रस्तुतियाँ देते रहते थे, तो आपके घर का पालन पोषण नवलगढ़ व मण्डावा दरबार के यहां से होता था। आपको शुरू से ही घर में अच्छी तालीम मिली और आपका परिवार बहुत ही रईस था। घर में किसी भी प्रकार की कोई कमीं नहीं थी। घर, जमीन, जायदाद सब कुछ था। आपके वालिद साहब को अगर पान खाने की ईच्छा होती तो वह लूणा से झुन्झुनू पान खाने जाते थे।

मेहदी हसन साहब जब तक लूणा में रहे, तब तक आपको कोई कष्ट या मुसीबत का सामना नहीं करना पड़ा। आपके घर में घोड़े, ऊंट, गाये, बकरियाँ और भैसें थी तथा दरबार द्वारा गांव में दी गई 20 बीघा जमीन। आपके घर में अन्न और धन की कमी नहीं थी। आप जब दो वर्ष के थे तब आपकी वालिदा का स्वर्गवास हो गया। आपके एक बड़े भाई और थे, पं. गुलाम कादिर! आप दोनों को बचपन में ही वालिदा छोड़कर संसार से रूख़सत हो गई। आपके वालिद ने दूसरा निकाह किया जिससे दो संतान पैदा हुई। एक तो अम्तुबाई और एक निसार हुसैन।

खान साहब चार भाई बहिन थे। खान सा. के वालिद कार्यक्रमों की वजह से अक्सर बाहर ही रहते थे। इसी कारण खान सा. अपने दादा उस्ताद इमाम खान सा. के पास ही रहते थे और अपने चाचा इस्माईल खान से संगीत सीखते थे। आपके चाचा बहुत इल्मी थे, आपके चाचा उर्दू, फारसी, अरबी, संस्कृत और अंग्रेजी के अच्छे जानकार थे। चाचाजी पहलवानी भी करते थे। इन्होनें एक पैर में कड़ा पहन रखा था। इस्माईल खान सा. ने मेहदी हसन साहब को संगीत की तालीम के साथ–साथ उर्दू की भी तालीम दी। इन्होनें मेहदी हसन साहब को ढेर सारे ख़्याल, ध्रुपद, ठुमरी और दादरा सिखाये और खान साहब ने भी बहुत मेहनत की और अपने मित्रों के साथ खेल खेल में ध्रुपद की लयकारी भी करते रहते थे।

खान साहब के वालिद अच्छे गायक के साथ साथ एक अच्छे हारमोनियम वादक भी थे। उनका वादन गांव के जिन लोगों ने देखा उनमें उनके ही घरानें के

शागिर्द ठा. नारायणसिंह जी शेखावत, अर्जुनलाल जी खाती, मुराद खान, शोकरण खाती, जगन जी, कुशाराम जी आदि है।

जब अज़ीम खान साहब हारमोनियम बजाते थे तो हाथ में 10 किलो की जंजीर बांध के बजाते थे। क्योंकि बिना जंजीर के उनका हाथ थमता ही नहीं था और हारमोनियम पर ऊंगलिया नजर ही नहीं आती थी। अपने हाथ को नियंत्रित करने के लिए हाथ में जंजीर बांधते थे।

मेहदी हसन सा. अधिकतर दादाजी व चाचाजी के पास ही रहते थे। बाद में दो वर्ष के लिए अज़ीम खान उन्हें अपने साथ ले गये और शास्त्रीय संगीत की अच्छी तालीम दी।

नवलगढ़ के दरबार ''श्री इन्द्रसिंह जी'' एवं मण्डावा के दरबार ''श्री देवीसिंह जी'' आप दोनों को संगीत का बहुत शौक था। अतः आपके दरबार में इमाम खान सा., अज़ीम खान सा. के द्वारा आये दिन कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते थे। इमाम खान सा., दरबार में सारंगी वादक थे और उस्ताद अज़ीम खान सा. गायक थे।

मेहदी हसन सा. बचपन में बहुत ही शरारती और नटखट थे। इसको एक उदाहरण से स्पष्ट करूंगा–

इनके चाचा गांव के बीमार लोगों का अपनी गायकी से इलाज किया करते थे। मेहदी हसन सा. अपने चाचा जी के इस गुर को चित्त लगाकर देखते थे। एक दिन की बात है कोई महिला।अपने बच्चे को गोद में लेकर खान सा. के घर आई और रोने लगी। इस्माईल खान सा. घर पर नहीं थे। मेहदी हसन सा. ने पूछा क्या बात है? क्यों रो रही हो? उस महिला ने मेहदी हसन सा. को बताया कि उसके बच्चे को तीन दिन से बुखार है, उतर नहीं रहा है, न कुछ खा रहा है, न पी रहा है। मेहदी हसन सा. ने देखा, अच्छा मौका है, एक हाथ इस पर भी आजमा लिया जाए। उन्होनें उस महिला से कहा.....फिक्र न करो, आप बच्चे को लेकर मेरे सामने बैठो, मैं इसे गाकर ठीक किए देता हूं। बस क्या था, वे अपना सुर लगान लगे। कुछ ही देर में चाचा आ गए, दृश्य देखते ही उन्हें समझने में देर न लगी कि वहां क्या चल रहा था। उन्होनें मेहदी हसन के कान पकड़े, दो–चार तेज थप्पड़ लगाए और फिर कहा कि..... यह अल्लाह की

नीमते उज़्मा है, इसकी कद्र समझो, इसे खेल न समझो.....पहले अपने अंदर असर पैदा करो, इन चीज़ो के लिए, फिर आज़माओ....। उसी दिन उन्होनें मेहदी हसन जी को संगीत में भी पांच रोज़ो की अहमियत समझाई, आँख,नाक, कान, जुबान और चरित्र पर नियंत्रण से ही गाने वाले की गायकी में असर पैदा होता है। मेहदी हसन सा. ने अपने चाचा की उस सीख को अपने अन्दर सीप के मोती की तरह बिठा लिया।

राजस्थान में देशी रियासतें बहुत थी और इन सबमें कला के सभी रूपों को प्रश्रय मिलता था। मेहदी हसन सा. के परिवार का पुश्तैनी काम राज परिवार के लोगों को संगीत की शिक्षा देना था। बदले में इन्हें पूर्ण राजाश्रय प्राप्त होता था। इसी कारण वे कलावंतों की परम्परा में माने जाते है। कहते हैं जब मेहदी हसन सा. ने आठ वर्ष की आयु में राग बसंत का ख़याल बड़ौदा महाराज को सुनाया तो उन्होनें खुश होकर खान सा. को राज गायक बना दिया।

आपके दादा इमाम खान सा. ने आपको खूब सारे ध्रुपद, धमार बता रखे थे। आप अपने समय के बहुत ही उच्च कोटि के संगीतज्ञ हुए है। आप सारंगी वादन में बहुत ही उच्च कोटि के कलाकार थे। इमाम खान साहब का सभी रियासतों में नाम था। इमाम खान साहब को दूसरी रियासतों से आकर उनके दरबार में गाने के निमंत्रण मिलने लगे। उन्होनें राजा जयपुर से इसकी इज़ाजत मांगी, पर राजा ने यह कहते हुए मना कर दिया कि हमारे कलावंत किसी और के दरबार में गाएं, यह उनकी तौहीन होगी। मेहदी हसन साहब बताते हैं कि जयपुर के राजा जो राठौड़ राजपूत थे, उन्हें यह लगा कि उनके कलावंत दूसरे के दरबार में जाकर वहां के राजा से यदि कुछ पाते हैं, तो उससे उनका अपयश होगा।

उन्होनें इमाम खान साहब से कहा कि उन्हें जो भी चाहिए, वे इसी दरबार से लें, उनकी सारी ज़रूरतें पूरी होती रही है और होती रहेगी। इमाम खान सा. ने राजा को समझाया कि यदि मैं दूसरी रियासतों में जाकर गाता और बजाता हूं और वहां के राजा, वहां के गवैयों में मेरा गाना बजाना पसंद होता है, तो जयपुर रियासत का नाम होगा। इमाम खान सा. के इस तर्क से राजा जयपुर सहमत हुए और उन्होनें दूसरी रियासतों में जाकर गाने बजाने की इज़ाजत दे दी।

इमाम खान सा. ने बड़ौदा, इन्दौर और नेपाल की रियासतों में गाकर खूब नाम कमाया। इन राज परिवारों के भी गुरु हुए उस्ताद इमाम खान साहब।

बाद में इमाम खान साहब के दो बेटों अज़ीम खान और इस्माईल खान ने उत्तर प्रदेश, जो तब युनाईटेड प्रॉविंस था और मध्य प्रदेश जो तब सेंट्रल प्रॉविंस था की तमाम छोटी बड़ी रियासतों–मनकापुर, बस्ती, महसूर, छतरपुर, पन्ना, बीजावर आदि में अपनी गायकी का परचम फहराया। जैसे बिल्ली अपने बच्चों को अपने सारे ठिकाने अपने साथ ले जाकर दिखाती है, वैसे ही गवैये भी अपने बच्चों को छुटपन से ही महफ़िलों में ले जाकर, उन्हें सब लिहाज से तैयार करते है। मेहदी हसन साहब इसी तरह महाराज बड़ौदा के सामने गा आये। उस दौर में वहां गायन प्रस्तुत करने के लिए बड़े बड़े गायक लालायित रहते थे। मेहदी हसन का नाम भी धीरे–धीरे संगीत की महफ़िलों में खूब होने लगा।

छोटी उम्र होने पर भी उनमें बड़े बुजुर्गो सी गंभीरता थी। मेहदी हसन साहब याद करते हुए बताते है कि आठ–दस साल की उम्र में उनके लंगोटिये दोस्त थे खान साहब मम्मू खान जो पचपन साल के थे, मास्टर अब्दुल रहमान जो पचास वर्ष के थे, करीमबख़्स जो पैंतीस–चालीस साल के थे उनका उठना बैठना इस उम्र के लोगों से ही था। ये सब संगीत की अलग–अलग विधाओं में पारंगत थे और रियासत का संरक्षण उन्हें प्राप्त था। इसका एक कारण शायद यह भी था कि मेहदी हसन साहब की माँ का देहान्त मेहदी हसन साहब जब 2 वर्ष के थे, तभी हो गया था। मेहदी हसन साहब के बालसखा श्री नारायण सिंह जी द्वारा लिखे गये कुछ दोहे :–

हित में चित्त में मत में, खत में है प्रचार।

लूणा गांव में जन्मियो है, दुनियां करती प्यार।।21।।

माँ छोड़गी जन्म दे, सुरगा मांहि सिधारी।

दादा की तालीम बनी है, ग़ज़ल राग अब न्यारी।।16।।

बचपन में सुर साधवो, दादो करतो सार।

लूणा में ही जन्मियो, जाण समुन्दर पार।।15।।

मेहदी हसन तेरा नाम है, मेहदी जैसा रंग लाया।

मेहदी लगाते ही माँ गई, सुहागण छोड़ी काया।।7।।

आप बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि वाले थे। आपने 10–12 वर्ष की आयु में लकड़ी के टुकड़ों से तानपुरा बना दिया था। आपको तालों के बोल भी बहुत याद थे। आपको गंवारफली की सब्जी बहुत पसन्द थी। आप बचपन में सभी मित्रों के साथ खूब हंसी मजाक किया करते थे। जिनमें सबसे ज्यादा मजाक अर्जुन जी खाती से करते थे।

ग़ज़ल गायकी में जितने भी गायक हुए है, उनमें से मेहदी हसन सा. ने अपने अंदाज़ से ग़ज़ल को सजाया और सँवारा है। यूं तो स्वतंत्रता के पश्चात् कई ग़ज़ल गायक एवं गायिकाएँ उभर कर सामने आये। मगर उनमें खान सा. की गायकी के सामने सब फीके लगते थे।

यूं तो एशिया में कई उस्ताद ग़ज़ल गायको ने अपनी मौसिकी से ग़ज़ल की ख़िदमत की, किन्तु इन सभी में जो स्थान मेहदी हसन खान सा. का है, वह किसी भी ग़ज़ल गायक को मयस्सर (प्राप्त) नहीं है। ग़ज़ल व मेहदी हसन सा. यह दोनों एक दूसरे के पर्याय है –

– फूल अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहदी हसन खान सा.' उस फूल की 'महक'

– 'सूरज' अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहदी हसन खान सा.' उस सूरज की 'किरण'

– चाँद अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहदी हसन खान सा.' चाँद की 'चाँदनी'

– पक्षी अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहदी हसन खान सा.' पक्षी की 'उड़ान'

– आकाश अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहदी हसन खान सा.' 'पृथ्वी'

जब वो लूणां गांव में आये थे तब ये सारी बातें तारी खान सा. ने मुझे बताई।

मेरी नज़र में इन सब बातों का एक ही आशय है–ग़ज़ल सिर्फ मेहदी हसन साहब के लिए बनी है और मेहदी हसन साहब ग़ज़ल के लिए।

जिस तरह से सुर–सम्राट 'तानसेन' जी जैसा गायक अब हो नहीं सकता। वैसे ही खान साहब जैसा कोई नहीं बन सकता। इस तथ्य को नारायण सिंह के दोहे से भी समझा जा सकता है–

मेहदी हसन की ग़ज़ल है, तानसेन का राग।

कोण लघु कोण दीर्घ है, गुणा करो या भाग।।

जैसे स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर, संगीतकार ए.आर. रहमान, मिलेनियम स्टार श्री अमिताभ बच्चन, मशहूर क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर इन सभी पर प्रभु की असीम कृपा रही है। इन सबको बहुत मिला है और ये सब प्रभु का ही तोहफा है। इसके लिए एक शब्द जो परफेक्ट है–''ळवक ळपजि''

''सुर की सीमा नहीं होती, इस साधारण से कथन के असाधारण भाव की मिसाल है मेहदी हसन सा.।''

आपको बचपन से ही गाने का बहुत शौक था, आप अपने बचपन के दोस्तों के साथ खेलते वक़्त भी संगीत की ही बाते करते थे। जिस तरह से माचिस की डिब्बी से संवाद करते तो एक तरफ अर्जुन जी, मुराद खान जी, शोकरण जी खाती तथा इनके एक और बड़े भाई स्व. कुशलाराम जी को खड़ा कर देते तथा दूसरी तरफ आप माचिस की डिब्बी को लेकर बात करते करते रागों के आलाप गाकर इन सभी से बारी–बारी से पूछते कि यह राग कौनसा है?

शोकरण जी भी अच्छा गाते थे। इनके बचपन के जितने भी दोस्त थे और जो अब है वो सब संगीत के किसी न किसी क्षेत्र से इनके दादाजी के और इनके चाचाजी के शागिर्द है। खान साहब को बचपन में मिट्टी की रेल बनाने का खेल भी प्रिय था। रेल बनाकर फिर दोनों हाथों से सिटी बजाते थे।

आपको बचपन में खूब प्यार मिला, घर वालों का और गाँव वालों का। इस 'प्यार' को देखने का मौका मुझे भी हासिल हुआ था। जब मैं पहली बार (25.03.2008) को लूणां गांव में गया। उस वक्त गांव के सभी लोग मेरे चारों तरफ जमा हो गये। और कई लोगों को लगने लगा कि 'खान साहब' इस गांव में आ रहे है और भी कई तरह के सवाल लोगों के दिलों में आ रहे थे कि आख़िर ये कौन है और खान साहब के बारे में क्यों पूछ रहे है और क्यों आया है?

जब मैनें उनको बताया कि मैं खान साहब पर किताब लिख रहा हूं, तब जाकर उनकी जिज्ञासा खत्म हुई और मैनें उनके दोस्तों से पूछा तो गांव के लोग और दोस्त रो रहे थे। मैनें गांव के नारायणसिंह जी, अर्जुन जी, शोकरण जी एवं मुराद खान जी को 'मेहदी हसन' सा. के लिए रोता देखा है।

जब मैं गांव गया तो वहां के लोगों ने मुझे एक कार दिलवाई और कहा कि जहां जहां तुम्हें जाना है वहां सब जगह ये तुम्हारे साथ है। वो कार सुबह 11 बजे से शाम की 6 बजे तक मेरे साथ रही। जब मैं वहां से जाने लगा तो मैनें ड्राईवर साहब को कहा कि कितने पैसे हुए तो वो बोला कि 'खान साहब' की जन्म भूमि पर आये हो तो कभी पैसे की बात मत करना, और जब भी आओ, तो हमें ज़रूर याद करना। हम हर समय तुम्हारे लिए तैयार है।

शौकरण जी खाती और मेहदी हसन सा. दोनों बचपन में कुश्ती लड़ते थे और कबड्डी भी साथ खेला करते थे। इनके घर पर खान सा. का बहुत आना जाना थ। क्योंकि शौकरण जी भी गाते थे और इनके बड़े भाई कुशलाराम जी भी संगीत के मर्मज्ञ थे। उन्होनें खान साहब के दादाजी उस्ताद इमाम खान से गायन की तालीम ली थी और उन्हीं के शागिर्द भी थे। कुशलाराम जी गायन के साथ साथ हारमोनियम, तबला और ढ़ोलक भी बजाते थे।

खान साहब जब भी इनके घर आते, ये तीनों गाने बजाने लग जाते। खान साहब सबसे ज्यादा संगीत से प्यार करते थे और उनको इसमें इतनी रुचि थी कि कब दिन हुआ और कब रात! खान साहब का अधिकतर समय गाने में और फिर कुछ बचा समय खेलकूद में बीता करता था।

खान साहब के दादाजी उस्ताद इमाम खान साहब और खान साहब की वालिदा की मजार लूणां गांव में सरकारी स्कूल में स्थित है।

खान साहब ने लूणां गांव में अपना बचपन बिताया। उनको क्या पता था कि जितने आराम और शाही ठाठ से वे यहां रहे उसके बाद उनका समय कैसा आयेगा?

समय बड़ा बलवान होता है और जो हर समय के साथ चलता है उसे ही इंसान कहते है। अच्छा और बुरा समय जीवन के दो पहलू है, जैसे दिन के बाद रात आती है, और रात के बाद दिन।

हिन्दुस्तान संगीत के इस नायाब नाम (खान साहब) के लिए तैयार हो ही रहा था कि देश के बंटवारे का फैसला हो गया। सारा हिसाब मज़्हब के नाम पर होने लगा। नई सरहद के दोनों तरफ दंगे फैलने लग गये। दो क़ौम की सरहद दो मज़्हब के बीच की सरहद हो रही थी। दंगों की ख़बर उस ज़माने में जब संचार के मशीनी साधन नहीं के बराबर थे, कैसे बिजली की रफ्तार फैली, आज की पीढ़ी के लिए कुतूहल का विषय हो सकता है। यह भी हो सकता है कि वर्षो से मज़्हबी आधार पर जो राजनीति हो रही थी, समाज को मानसिक रूप से टूटने के लिए जो तैयार किया जा रहा था, वह बस मौका मिलते ही दंगों की शक्ल अख़्तियार कर गया।

जिन बदकिस्मत परिवारों को अपना घरबार छोड़कर सरहद की दूसरी तरफ शरण लेनी पड़ी, उनमें से एक परिवार मेहदी हसन सां का भी था। पर, वास्तव में मेहदी हसन सा. का परिवार विभाजन की वजह से पाकिस्तान में नहीं बसा, यह तो सिर्फ एक संयोग था।

ईश्वर ने सभी मानव जाति की किस्मत लिखी है, किसको कितना सुख और किसी को कितना दुःख। यह सिर्फ ईश्वर जानता है।

सन् 1946 की बात है। मेहदी हसन जी के पिता अज़ीम खान सा. के लिए जयपुर की रियासत में एक निमंत्रण आया। वर्तमान पंजाब के पाक पत्तन शरीफ के एक महंत गिरधारीलाल दास का। वे गुणज्ञ थे और संगीत के मर्मज्ञ भी थे। उनके दरबार में उस्ताद प्यारे खान नाम के बड़े गुणी संगीतकार थे। उनका लंगर पूरे पंजाब

में प्रसिद्ध था। उन्होनें महंत गिरधारीलाल दास को अज़ीम खान की गायकी के बारे में बताया था। जब यह निमंत्रण पहुंचा तब अज़ीम खान नेपाल के महाराज के यहां गए हुए थे। मेहदी हसन सा. भी उनके साथ थे। वहां से वापस आकर अज़ीम खान सा. अपने बेटों, गुलाम, कादिर और मेहदी हसन के साथ महंत के निमंत्रण पर पंजाब के पाक पत्तन आ गये।

डेरा ग़ाजी खान और डेरा इस्माल खान को जोड़ने वाला सतलज नदी के तट पर स्थित पाक पत्तन सूफी खानकाहों का केन्द्र रहा है। सामरिक और राजनीतिक महत्व का यह पाक पत्तन शरीफ बाबा फरीद की गतिविधियों के लिए इतिहास में अधिक प्रसिद्ध रहा। यहीं बाबा फरीद की मजार भी है, जिसका निर्माण ख़्वाजा निजामुद्दीन औलिया ने सन् 1276 में करवाया था। इस मज़ार पर अपनी श्रद्धा निवेदित करने गुरुनानक, वारिस शाह और जलालुद्दीन अकबर जैसी हस्तियाँ आई। इसका पाक पत्तन नाम अकबर का दिया हुआ है, उससे पहले इसे 'अजूधन' नाम से जाना जाता था। विभाजन के पहले तक यह शहर राम रहीम की साक्षी विरासत का केन्द्र बना रहा। आज भी यह शहर मध्ययुगीन पहचान और चरित्र के लिए हुए है और यहां सूफ़ी गतिविधियां भी कम नहीं हुई है।

उधर पाक पत्तन शरीफ़ में संगीत की बैठकें हो रही थी, सुरों की महफिल सज रही थी, तभी देश में साम्प्रदायिक दंगे फैल गये। राजस्थान भी अछूता न था। अज़ीम खान साहब को परिवार की चिंता हुई। उन्होनें मेहदी हसन एवं गुलाम क़ादिर को अपनी बहन, जो चीचावतनी में ब्याही थी, के पास छोड़ दिया और परिवार के बाकी सदस्यों को लाने राजस्थान चले आये। उन्होनें वहां से बस परिवार के सदस्यों को साथ लिया, गहने–जेवर और जो नगदी थी, वह सब लेकर वापस चीचावतनी आ गये। मेहदी हसन सा. बताते है कि उनके वालिद ने यह नहीं सोचा कि वे कभी वापस राजस्थान नहीं आ पायेंगे। उन्होनें बस यह सोचा कि जब दंगे थम जायेंगे, हालात सामान्य हो जायेंगे, वे वापस अपनी रियासत में चले जायेंगे।

दुर्भाग्यवश, जैसा अज़ीम खान ने सोचा था, वैसा हुआ नहीं। उन्हें ख़बर मिली कि दंगों में उनका घर, सामान, सब खत्म हो गया। ऐसी नियति की उम्मीद उनके परिवार को नहीं थी, पर जितने ज़ेवरात लाये थे, जितनी नगदी थी, उससे एक साल

सब कुछ सामान्य चलता रहा। रियाज़ चलता रहा, उसके साथ–साथ वर्जिश और पहलवानी भी चलती रही। खानपान का हिसाब कुछ ऐसा था कि मेहदी हसन सा. छः सेर दूध सीधे बाल्टी से ही एक सांस में पी जाते, खाने में हर दिन लगभग तीन पाव घी, उतना ही गोश्त और लगभग आधा पाव बादाम खा जाते। इसी अनुपात में उनके वालिद और उनके बड़े भाई की भी खुराक थी। ज़ाहिर है, साल भर में सारे ज़ेवरात बिकने ही थे, सो बिक गये।

चीचावतनी पाकिस्तान पंजाब के जिला साहिवाल में ग्रेंड ट्रंक रोड़ के किनारे एक छोटा सा शहर है। चीचावतनी वही शहर है जहां पर खान साहब के खानदान के उस्ताद जमाल खान साहब भी उस समय रहे और जमाल खान साहब के शागिर्द उस्ताद यासीन खान सा. (जमाल खान सा. के पुत्र) और स्व. जगजीत सिंह साहब। कई लोगों को तो पता भी नहीं कि जमाल खान रिश्ते में मेहदी हसन सा. के चाचा लगते थे।

खान साहब के बाद यही (डॉ. रौशन भारती जी) वह नाम है जो ग़ज़ल को उसी तरह अमर करके रखेंगे, जिस तरह की खान सा. ने किया। खान साहब शब्द और स्वर के साथ न्याय करते थे। वैसे ही भारती जी भी करते है।

इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आपने अपने वालिद उस्ताद यासीन खान सा. से संगीत की विधिवत शिक्षा ली और आपने संगीत, गायन में एम.ए. पास किया और गोल्ड मेडलिस्ट रहे है। साथ ही साथ आपको उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, गुजराती तथा राजस्थानी भाषा का बहुत ही इल्म है। आपको हिन्दी, उर्दू की गहनतम जानकारी है, बहर पर आपका विशेष ध्यान आदि।

आपके वालिद सा. और वालिदा.....ने आपको योग्य बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। भारती जी खुद कहते है कि संगीत ही ऐसी कला है जिसका कोई मज़हब नहीं होता है। और ये संगीत ही है जिससे प्रेम का भाव, आदर का भाव, सेवा का भाव प्रकट होता है।

आप ट्रेक्टर की डिलेवरी करने जाते थे तो उस समय भी आप रियाज़ करते हुए ही जाते, एक हाथ से स्टेयरिंग और दूसरे हाथ से अपने सीने पर ताल देते हुए

गाते जाते थे। आपने जब साईकिल व मोटर साईकिल के पंचर के समय भी रियाज़ नहीं छोड़ा तो ट्रेक्टरों की डिलेवरी तक के सफर में भी क्यों छोड़ेंगे। जिस तरह से आपके साईकिल से ट्रेक्टर तक का सफर जारी रहा उसी तरह रियाज़ का भी सफर जारी रहा। उसका कारण, आपको संगीत से अथाह प्रेम था।

वो रियाज़ और वो प्रेम आपकी गायकी में साफ झलकता है। उस दौर में फर्गुसन ट्रेक्टर कम्पनी बहुत नामचीन कम्पनी थी। आप हर कार्य को दिल से और मेहनत से करते थे और अपने कार्य को संगीत से जोड़कर करते थे। वे जब ईंजन सेट करते थे तो उस ईंजन की आवाज़ में अपना सुर भी लगाने लग जाते थे। इससे उन्हें मानसिक शांति तो मिलती ही थी, साथ ही साथ उन्हें थकान भी महसूस नहीं होती थी।

आपने सुर को ईश्वर माना है और आप सर्वधर्म समभाव वाले ईंसान रहे है। आप दयालु एवं नरम स्वभाव के थे। आप संगीत की समस्त विधाओं के कलाकारों, गुणीजनों और कला मर्मज्ञों से प्यार करने वाले थे। इसी संदर्भ में मैं एक किस्सा बताना चाहूंगा जिससे उनका प्रेम और संगीत के प्रति आदर प्रकट होता है.....

यह किस्सा मुझे राज बोहरा जी ने बताया। वोहरा जी खान साहब के ख़ास रहे है या ऐसा भी कहा जा सकता है कि खान साहब ने उनको अपना बेटा बना रखा था। मेरी मुलाकात इनसे 16.08.2008 में जोधपुर में हुई। उस वक्त मेरे साथ मेरे साथी अविनाश शर्मा (पत्रकार) जो शाहपुरा से है वो और मेरे छोटे भाई विक्रम बामणिया थे। हम राज साहब से उनके जोधपुर वाले बंगले पर मिले और उन्होनें मुझे खान साहब के बारे में बताया कि जब खान साहब पाकिस्तान रेडियो में और फिल्मों में सिंगिंग करते तो वहां के एक संगीतकार (अनाम) ने कहा कि ये मेहदी हसन कौन है इसे मेरे स्टूडियो में बुलाओ! मैं इससे एक धुन तैयार करवाना चाहता हूं। तो उस संगीतकार के पी.ए. ने खान साहब को बताया कि आपसे हमारे संगीतकार मिलना चाहते है। तो खान साहब सीधे सरल व्यक्ति थे। उन्होनें हाँ भर दी, और स्टूडियो में चले गये। वो संगीतकार सा. साफा पहनते थे और वो सरदार जी थे जो धुन उन्होनें बनाई उसकी नोटेशन उन्होनें उर्दू में तैयार कर रखी थी, वो नोटेशन उन्होनें खान साहब को थमा दिया।

खान साहब ने नोटेशन देखा तो उन्हें भी चक्कर आ गये, क्योंकि नोटेशन बहुत ही कठिन था। खान साहब ने राज भाई को कहा कि बेटा वो नोटेशन देखकर मुझे ईश्वर याद आ गये। पर मैनें (खान साहब ने) हिम्मत न हारी और तीन चार बार में उसको परफेक्ट गा दिया। मेरे पसीने छूट गये उस नोटेशन को देखकर परन्तु जैसे तैसे करके मैनें नोटेशन गा दिया और मैं अपने घर आ गया।

लेकिन बार–बार मेरे दिमाग में वो नोटेशन आ रही थी तो मैनें वो नोटेशन घर पर आकर भी गाई और मुझे वो धुन अच्छी भी लगी कि ऐसी हाई कम्पोजिशन बनाने वाला सामान्य संगीतकार नहीं हो सकता। मैं रात को इस बात को सोचते–सोचते सो गया। मुझे कब नींद आई, मुझे खुद को पता भी न चला।

रात के एक बज रहे थे, दरवाजे पर खटखटाने की आवाज़ ने मेरी नींद तोड़ी। मैं सुनकर दरवाजे के पास गया और दरवाजा खोला तो वो संगीतकार जी मेरी आंखों के सामने....! एक बार तो लगा कि कहीं सपना तो नहीं , फिर मैनें उन्हें अन्दर तशरीफ लाने को कहा (पधारो सा!)। खान साहब भले ही पाकिस्तान में रहने लगे थे, परन्तु उनका बोलचाल का लहजा नहीं बदला था। हर आने जाने वाले की मनुहार वो अपनी राजस्थानी भाषा में ही करते थे। (पधारो सा)

वो अन्दर आये, मैनें उनके पैर छुये और उन्हें कुर्सी पर बिठाया। मैनें पूछा, कि इतनी रात गये आप यहां? संगीतकार सा. रोने लगे और कहा कि वाह यार मेहदी! तू मेरी धुन को गा गया और उन्होनें अपना साफा मेहदी हसन साहब को पहनाया और कहा कि असली सुरा दा वारिस तू है यार! खान साहब ने दोबारा उनके पैर छुए और कहा कि नहीं उस्ताद जी, मैं तो आपका बच्चा हूं, और मुझ पर आपकी कृपा और आशीर्वाद बनाये रखें।

यह किस्सा खान साहब की उदारता और आदर भाव प्रकट करता है। यह अदब ही ख़ानदानी कलाकारों की पहचान है। खान साहब अपने साथी कलाकारों से भी बहुत प्यार करते थे।

खान साहब को अपनी सरज़मीं (लूणा) से बहुत प्यार था। मरुभूमि में बहुधा बहुत चटखट रंग फूल खिलते है। मेहदी हसन सा. की गायकी भी ऐसी ही थी। जब

वह बात करते थे तो एक शाइस्ता राजस्थानी आदमी का बोलचाल का लहजा दिखता था। पाकिस्तान में बसने के छः दशक बाद भी पंजाबी के वर्चस्व ने उनके व्यक्तित्व के किसी भी हिस्से को प्रभावित नहीं किया था न तलफ़्फ़ुज को, न लहजे को और न वेशभूषा को ही। रहते भी वह कराची में थे, जहां आम तौर पर मुहाजिर रहते आये है। ध्रुपदिये पुरख़ों के साथ साथ मरुभूमि के विराट विस्तार में फैलता पधारो म्हारे देश में मांड का दुर्निर्वार स्वर उन्हें बार–बार अपनी जन्म भूमि की ओर खींचता था। क्लासिकल के साथ–साथ लोक की राग–रागिनियां भी उनकी गायकी के अहसास में शामिल रही। उनके दादा इमाम खान साहब संगीत के बहुत ही जानकार थे। ये सब दरबारी गायक वादक थे। कलावंतों की 15 पीढ़ियों से संगीत चला आ रहा था और मेहदी हसन साहब खुद अपने घरानें की 16वीं पीढ़ी के कलाकार थे। आपके पूर्वजों ने कई ध्रुपद और धमारों की रचनाएं की एवं उनको अपने घराने में और शिष्यों में फैलाया। खान साहब की तमन्ना खत्म होती ग़ज़ल की ख़ायत को आम आदमी तक पहुंचाने और उसे दोबारा जिन्दा करने की थी। वो चाहते तो ध्रुपद गायकी की अपनी खानदानी परम्परा से खुश और संतुष्ट रह सकते थे, लेकिन उन्हें तो अच्छी शायरी लिखने वालों से और उनकी शायरी से बहुत मुहब्बत थी। शायरी से मुहब्बत और ग़ज़ल को नई ज़िन्दगी बख़्शने की चाहत उन्हें ग़ज़ल की दुनियां में ले आई।

खान साहब को कम्पोजीशन बनाने में उनके बड़े भाई पं. गुलाम कादिर साहब भी मदद करते थे और खान साहब जो भी धुने बनाते थे तो उनको पहले वह बड़े भाई को सुनाते थे और उसमें कोई फेर बदल करना होता तो पण्डित जी उन्हें बता देते कि इसमें क्या करना है और क्या नहीं। खान साहब ग़ज़ल के प्रति बहुत समर्पित थे।

खान साहब बहावलपुर में अपने काम के साथ संगीत से भी जुड़े रहे और खान साहब ने ईंजन का काम सीखान उसमें उनको बहुत मुनाफा हुआ और वे ईंजन के बहुत बड़े मैकेनिक बन गये। उस पूरे ईलाके में खान साहब का नाम हो गया। उन्होने अब अपने पास कई मैकेनिक नौकरी पर रख लिये थे। उन्होनें अब लाहौर जाकर संगीत के माहौल का जायजा लेना चाहा। सन् 1949–50 की बात है, उन्होंने अपने मैकेनिकों को काम समझाकर लाहौर का रूख किया। ये उनकी लाहौर की पहली

यात्रा थी। वहां पर जल्द ही उनके बड़े चाहने वालों की लाईन लग गई। वे लाहौर में अय्यूब साहब के बंगले पर रहने लग गये।

लाहौर हॉकी खेलने वालों का केन्द्र होता था। मेहदी हसन सा. की उन खिलाड़ियों से अच्छी दोस्ती हो गई। खान साहब गायक तो थे ही, पहलवान भी थे, और दौड़ में, वर्जिश में भी उनका कोई मुक़ाबिल नहीं था। शहज़ादा ख़ुर्रम और शाहरुख़ उस ज़माने के बहुत ही मशहूर खिलाड़ी रहे वे भी खान साहब के अच्छे दोस्त बन गए। अब तो उनके लाहौर में कई ठिकाने हो गए, जहां वे अपनी ग़ज़लों की महफिल सजाते और लोग उन्हें घंटो सुनते। खान सा. का गायन इतना प्रभावशाली था कि श्रोता मंत्रमुग्ध होकर आपको सुनते ही रहते। उनकी ज्यादातर महफिलें चूना मंडी में सजती। शाम के समय अपनी दमदार गाड़ी पर सवार हो लाहौर किले पहुंचना उनकी आदत में शुमार हो गया था। वहां पर भी शास्त्रीय संगीत सुनने वालों की कमीं नहीं थी। वहां भी संगीत के चाहने वाले बहुत थे। जल्दी ही खान साहब वहां की संगीत महफिलों के अंजुमन आरा हो गये। वे इन महफिलों में ख़्याल, ग़ज़ल, ठुमरी एवं बुल्लेशाह की पंजाबी सूफी रचनाएं गाने लगे। लाहौर के गाने बजाने वालों में उनका नाम हो गया, पर अभी तक फिल्म, रेड़ियो आदि जहां तक मेहदी हसन साहब अपनी आवाज़ पहुंचाना चाहते थे, के लिए हालात अनुकूल नहीं हुए थे। मेहदी हसन साहब को लग गया कि अभी लाहौर में रूकने से कोई लाभ नहीं है, उन्हें वापस अपनी मैकेनिक की दुनियां में लौटना होगा। उनके वालिद साहब ने भी उन्हें बताया था कि संगीत के अनुकूल समय बनने में वक़्त लगेगा।

इसी दौर में वहां उनकी जान पहचान शेख मुहम्मद युसूफ़ से हो गई। वे मेहदी हसन सा. की बहुत कद्र करते थे, पर उन्हें गाना बजाना पसंद नहीं था। मेहदी हसन सा. के शब्दों में वे जरा इस्लामी तौर तरीक़े के थे। वे खान साहब से कहते—गाने बजाने की लाईन अच्छी नहीं है, कुछ अच्छा काम करो, तुम्हें ऊपर वाले ने इतना हुनर दिया है। मेहदी हसन सा. कहते संगीत तो किस्मत वालों को मिलता है, इसमें बुरा क्या है।

दरअसल, युसूफ साहब चाहते थे कि खान साहब उनसे जुड़ जाए। विभाजन के पश्चात् पाकिस्तान में बंजर ज़मीन को उपजाऊ बनाने का काम बड़े जोर शोर से

शुरू हुआ था। इसके लिए पाकिस्तान की सरकार और ट्रेक्टर कम्पनियों ने कई योजनाएं भी निकालीं और दूसरा युसूफ़ साहब ने भी उस समय में 'सरगोधा' में कई एकड़ बंजर भूमि खरीद रखी थी, परन्तु वे उस ज़मीन को खेती के लायक नहीं बना पा रहे थे। उन पर कर्ज़ बहुत बढ़ता जा रहा था। उन्हें पता था कि मेहदी हसन सा. फर्गुसन ट्रेक्टर और ईंजन के मास्टर है और उनका यह हुनर उनके काम आ सकता है।

वे उनके बार बार आग्रह करने पर दोस्ती के नाते उनके साथ सरगोधा चले गये। वहां जिस बंजर जमीन को खेती लायक बनाने के लिए फर्गुसन कम्पनी तीन साल का समय लेती थी, उसे खान साहब ने दिन रात एक कर आठ महिने में ही खेती के लायक बना दिया और उसमें फसलें कतारों में सज गई। उनका यह काम देखकर फर्गुसन कम्पनी ने उन्हें बेस्ट मैकेनिक का एवार्ड भी दिया। युसूफ सा. पर जितनी किस्त बनती थी, उसके तीन गुणा से भी अधिक मुनाफ़ा कमाकर मेहदी हसन साहब ने उन्हें दिया। युसूफ़ साहब के दिन फिर गये, उनका कर्ज़ का बोझ उतर गया और मेहदी हसन सा. को भी अच्छा मेहनताना मिला और अब दोनों ही बहुत खुश थे, क्योंकि ये सब खान साहब की वज़ह से हुआ था।

उन मेहदी हसन सा. ने टूटे हुए दिलों को अपने सुरों का सहारा दिया, उन्हीं मेहदी हसन सा. ने मोटर ईंजनों को मक्खन जैसी चाल दी और बंजर ज़मीन को भी अपने हुनर से आबाद किया। दंगों में भागकर आए लोग अपने साथ भय, भूख और भाग्य के साथ बस मेहनतकश हाथ ही ला पाये थे। मेहदी हसन सा. को अपने उन हाथों पर पूरा भरोसा था और उनसे मेहनत कर उन्होनें तमाम बदकिस्मती को अपने रास्ते में कभी फटकने नहीं दिया।

1952 में कराची रेड़ियो के प्रोड्यूसर सलीम गिलानी ने सबसे पहले मौका दिया। सबसे पहले सीमाब अकबर बादी की ग़ज़ल 'आया मेरी महफिल में' कंपोज़ की गिलानी सा. ने संगीत की दुनियां की चालबाजियों और बदमाशियों के बीच एक सूफी मलंग फ़कीराना मिज़ाज के मेहदी हसन जी को एक नई दिशा दी। शुरू से ही खान साहब ने कुछ बातों का ख़ास ख़्याल रखान खान सा. ने हमेशा उम्दा अशआर चुने। ये ज़रूरी नहीं था कि नामचीन शायरों को ही गाये। अपने एक इन्टरव्यू में बार बार

कहते रहे कि दुनियां की सबसे बड़ी सच्चाई है सुर। वे ग़ज़लों को राग में इसलिए बांधते है, ताकि लम्बे समय तक वे सुनने वालों की पसंद बनी रहे।

जवान गायक साईकिल के टायर और ट्रेक्टर के मैकेनिक बनने को वे अभिशप्त हो चले थे। भारत और पाकिस्तान बंटवारे का यह दर्द मंदों के चिराग को तो निगलग गया मगर मेहदी हसन खान ने चलते है तो चमन को चलिये वाली जिंदादिली का मुज़ाहिरा किया। रेड़ियो पाकिस्तान ने 1953 में उनके चाचा इस्माइल खान सा. के कहने पर उन्हें ठुमरी गाने का मौका फराहम कराया। उनके चाचा वहां पर संगीत निर्देशक थे।

बात 1953 की है। कराची पहुंचकर मेहदी हसन खान साहब ने रफ़ीक साहब की फिल्म 'शिकार' के लिए गाने गाए, गाने के बोल, 'मेरे ख़्याल–ओ–ख़्वाब की दुनियां के लिए हुए' पहला गाना गाया। परन्तु यह फिल्म 1956 में जाकर के रिलीज हुई, पर उनकी गायकी ने उन्हें मशहूर कर दिया। इसके बाद तो वे सरहद पार की फिल्मों की एक ज़रूरी आवाज़ बन गये। फिल्मी गायन उनके कैरियर का पेशेवर पहलू था और यह सफर नब्बे के दशक तक चला। नई आवाज़ों के लिए आज भी खान साहब ग़ज़ल का विद्यापीठ बनें रहेंगे। पाकिस्तान में उनके चाहने वालों की कमीं नहीं, लेकिन हिस्दुस्तान के संगीत प्रेमी उनकी महफिलों के लिए बेसब्र रहे। यह उनकी गायकी का ही जादू है।

कहना न होगा कि मेहदी हसन सा. का फिल्म संगीत से सम्पर्क स्थापित करने में रफ़ीक अनवर साहब का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होनें न सिर्फ अपनी फिल्म में गाने का मौका पहली बार दिया, बल्कि उन्होनें मेहदी हसन सा. को फिल्म संगीत की बारीकियों से भी परिचित कराया। आगे चलकर रेड़ियो संगीत के उनके संबंधों पर भी रफ़ीक अनवर सा. का प्रभाव रहा। कराची में संगीत से जुड़ी गतिविधियाँ बहुत थी। उनकी गायकी के चर्चे चारों तरफ होने लगे। उस नई आवाज़ को सबने बहुत पसंद किया। लाहौर के बाद कराची की महफ़िलों के भी हो गये, अंजुमन आरा मेहदी हसन सा.।

उन्हें भी अब महसूस होने लगा कि संघर्ष और दुःख के बादल छँटने लगे है और उनके सपनों का सवेरा होने को है। उनकी फ़िल्मों की रेकार्डिंग और महफ़िलों की गायकी ने उनका नाम कराची रेडियो तक पहुंचा दिया। बहुत मुमकिन है कि रफ़ीक साहब ने भी उनके नाम की सिफारिश वहां के अधिकारियों के पास की होगी। अब कामयाबी का एक नया दौर मेहदी हसन साहब को दस्तक देने को था।

उन्हीं दिनों में मेहदी हसन साहब के बड़े भाई पंडित गुलाम क़ादिर साहब का भी रेडियो कराची से सम्पर्क हुआ और वे वहाँ संगीत निर्देशक के पद पर काम करने लगे। वे लम्बे समय तक कराची रेड़ियो से ही जुड़े रहे।

अंतहीन संघर्ष के बावजूद मेहदी हसन सा. ने अपनी संगीत साधना जारी रखी। वे अपनी बदहाली के उस दौर में भी संगीत के लिए ही चिंतित रहते है। वे एक शहर से दूसरे शहर इसी आशा में उनकी संगीत साधना को कोई आधार मिल जाए, भटकते रहे।

पाकिस्तान में हिन्दुस्तान की तरह वैसे राजघराने नहीं थे, जहां उन्हें राज्याश्रय मिलता। जो संरक्षण थे वे भी उस तरफ, उनमें अधिकांश हिन्दू या सिख रईस थे, जिनमें से अधिकांश विभाजन के बाद हिन्दुस्तान आ गए।

तकिया और बैठक के रूप में जो शास्त्रीय संगीत की महफिलें थी। पंजाब के इलाके में, वे विभाजन के बाद प्रायः लुप्त हो गई। खान साहब जिस भी शहर में होते, उनका ध्यान बस इस बात पर लगा होता था कि कब संगीत के अनुकूल माहौल पाकिस्तान में बनें और वे अपनी मंज़िल की तरफ बढ़ें।

खान साहब को पाकिस्तान में संगीत के लिए तब एक ही मंच दिखता था–रेड़ियो। वे लाहौर जब भी आते, लाहौर रेड़ियो के सामने अक्सर हसरत भरी निगाहों से देखते हुए खड़े हो जाते। उस समय बरकत अली खान, रोशन आरा बैगम जैसे कलाकार रेड़ियो के माध्यम से बहुत लोकप्रिय थे पाकिस्तान में। यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि विभाजन के बाद पाकिस्तान के हिस्से में तीन रेडियो स्टेशन आए–लाहौर, पेशावर और ढाका। भारत के हिस्से में छः रेडियो स्टेशन आये थे। कराची में विभाजन के लगभग साल भर बाद नया स्टेशन आरम्भ हुआ। बंटवारे के

बाद पाकिस्तान रेडियो को ज़ेड.ए. बोख़ारी जैसे प्रख्यात ब्रॉडकास्टर का नेतृत्व मिला, बोख़ारी साहब विभाजन से पहले दिल्ली, बम्बई एवं पेशावर में ऑल इण्डिया रेडियो में ब्रॉडकास्टिंग में अपने प्रयोगों के लिए ख़्याति अर्जित कर चुके थे। इनके बड़े भाई ए. एस. बोख़ारी ऑल इण्डिया रेड़ियो के प्रथम महानिदेशक थे। यही पद विभाजन के बाद पाकिस्तान रेड़ियो में जेड.ए. बोखारी के मिला बड़े भाई विभाजन के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ में पाकिस्तान के स्थायी प्रतिनिधि बनकर गए। दोनों भाई बड़े कुशल ब्रॉड कास्टर थे और सक्षम प्रशासक भी। इन दोनों के व्यक्तिगत प्रयासों से संगीत, अभिनय एवं सिनेमा में कई सफल कलाकारों का नाम जुड़ा।

यहां उस संदर्भ को भी समझते हुए आगे बढ़ना उपयुक्त होगा कि ध्रुपद एवं ख़्याल के गायक मेहदी हसन जी आख़िर ग़ज़लों की ओर कैसे मुख़ातिब हुए। विभाजन के बाद पाकिस्तान रेडियो में संगीत के स्वरूप को लेकर काफी हलचल हुई, पाकिस्तान मुस्लिम राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ था, बोख़ारी साहब को इस्लाम के हिसाब से और नए क़ौम की नई पहचान के हिसाब से ब्रॉडकास्टिंग के मानदण्ड स्थापित करने के निर्देश हुए। बहुत सम्भव यह भी है कि बोख़ारी साहब स्वयं भी उसी मिज़ाज़ के रहे हो। सबसे पहली बात तो यह कि ध्रुपद जैसे अंग लगभग अस्पृश्य हो गए। पाकिस्तान रेड़ियो के लिए, क्योंकि नाम से लेकर कलेवर तक उसमें हिन्दुत्व की बू आती थी। सुखद आश्चर्य तब होता है जब हम खान साहब को कई बैठकों में ग़ज़ल गायकी के दौरान रागों की चर्चा करते हुए श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कई तरह के पारम्परिक उदाहरण देते हुए पाते है, जैसे ''यह शुद्धवत् है...शिवजी का जो प्रचार था राग के लिए.....,'' ''शास्त्रीय संगीत के चार मत है, शिवमत, हनुमत मत, भरत मत और कृष्ण मत.....'' आदि इत्यादि।

उर्दू ज़ुबान वहां की राष्ट्र भाषा बनी थी, लिहाज़ा तय यह भी हुआ कि उर्दू में लिखी चीज़े ज़्यादा गाई जाये, उसे तवज़्ज़ोह मिले। संयोगवश, पाकिस्तान में उर्दू के बड़े उम्दा शायर हुए। उस दौर में भी और बाद में भी। यही नहीं मीर, ग़ालिब, बहादुर शाह ज़फ़र आदि की ग़ज़लें भी दोबारा से महफ़िलों में सजने लगी। विडम्बना यह कि आज भी आधा से अधिक पाकिस्तान पंजाबी ज़ुबान बोलता है। परन्तु बोख़ारी साहब की तो तूती इतनी बोलती थी कि उन्होनें साज़िन्दों के साज़ बदल दिये रेड़ियो की

ज़रूरत के हिसाब से, गाने वालों की तो बात ही क्या थी! वीणा, सरोद, पखावण, सारंगी जैसे वाद्ययंत्र के लिए पाकिस्तान रेडियो में न तो नौकरी भी और न ही रेडियो ऑर्केस्ट्रा में उन साज़ो का प्रयोग होता था। ऐसे में इन साज़िन्दों के पास दो ही विकल्प थे, या तो साज़ बदलें या पेशा ही बदल दें। इन दोनों ही विकल्पों पर अमल हुआ, न जाने कितने सक्षम साज़िन्दों ने संगीत से अपना नाता तोड़कर कुछ और साधन आजीविका के लिए अपना लिया।

और यह सिर्फ साज़िन्दों के साथ ही नहीं हुआ, बल्कि गायकों की स्थिति और बदतर थी। गायकों के लिए रेड़ियो में स्थायी नौकरी की सम्भावना बहुत कम थी, अधिकांश गायक कैजुअल, आर्टिस्ट के तौर पर ही रेडियो से जुड़ सकते थे। उनमें भी जिन्होनें अपना सारा जीवन ध्रुपद अंग के गायन में लगा दिया था, उनके लिए ख़्याल में उतरना या ग़ज़ल–ठुमरी गाना शुरू करना बहुत आसान नहीं था। न जाने कितने ध्रुपद गायकों ने नये परिवेश की प्रतिकूलता में गाना ही छोड़ दिया और जिन्होनें नहीं भी छोड़ा, तो वे किसी भी तरह के संरक्षण के अभाव में धीरे–धीरे गुमनामी की दुनियां में चले गये। तलवंडी घराने में ध्रुपद जीवित रहा, पर बदले परिवेश में उस घराने में नया नाम जुड़ना लगभग बंद सा हो गया। तलवंडी घराने के मियां मेहर अली खान, मुहम्मद हफ़ीज़ खान, शाम चौरासी घराने के नियाज़ हुसैन शामी आदि पाकिस्तान के प्रसिद्ध ध्रुपद गायक हुए है। तलवंडी घराने की ऊर्जा भी इस बात पर अधिक व्यय हो रही है कि ध्रुपद का उत्स इस्लामी परम्परा है, हिन्दू परम्परा नहीं। शायद पाकिस्तान में अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे ध्रुपद के हित में यही हो। इस पूरे संदर्भ का प्रयोजन यह कि पाकिस्तान में संगीत का भविष्य कहीं न कहीं उर्दू से जुड़ गया था। इसलिए, हम देखते है कि विभाजन के बाद लगभग सभी बड़े पाकिस्तानी शास्त्रीय गायकों ने ग़ज़ल गायकी में भी अपने हाथ आजमाए। इसकी एक बहुत बड़ी वजह मेहदी हसन सा. की ग़ज़ल गायक के रूप में बढ़ती लोकप्रियता भी थी। जब मेहदी हसन सा. पाकिस्तान आए थे, तब वे और उनके बड़े भाई पंडित गुलाम क़ादिर बैठकों में ध्रुपद एवं ख़्याल गाते थे। परन्तु, उन्हें शीघ्र ही इस बात का अहसास हो गया कि भविष्य में संगीत की यह विधा उपेक्षित होगी। उन्होनें अपने शास्त्रीय संगीत को एक नया मोड़ दिया और रेड़ियो पर प्रसारित होने वाली ठुमरी, ग़ज़ल आदि के हिसाब से अपनी गायकी को सँवारने लगे।

मेहदी हसन साहब को ग़ज़ल सम्राट एवं शहँशाह–ए–ग़ज़ल माना गया है। बैग़म अख़्तर के बाद इस दुनियां में ग़ज़ल गायकी में अगले पायदान पर मेहदी हसन खान साहब का नाम है। यह संगीत की कला उनके खून में वंशानुगत चली आ रही है। खान साहब ने अपना व्यवसायिक जीवन एक रेड़ियो कलाकार के रूप में शुरू किया। वह अपनी शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुतियां देते रहे। बाद में ग़ज़ल गायकी की तरफ ध्यान लगाया। यही विधा उन्हें ले गई, ऐसी सफलता और प्रसिद्धि की ओर जिसका प्रमाण आज किसी के पास नहीं है और जल्द ही वे ग़ज़ल गायकी के सुल्तान और शहँशाह बन गये।

खान साहब की आवाज़ में एक गहरापन और गम्भीरता है जो ग़ज़ल गायन के लिए बड़ी ही उपयुक्त होती है। इनकी आवाज़ सुनते ही उनका रियाज़ उनकी गायकी में स्पष्ट झलकता है। आप बहुत ही सुरीला गाते है और आपके गाने में बहुत ही सुरीलापन है। स्वर लगाने का आपका अंदाज़ इस तरह का है कि श्रोता स्वरों के समन्दर की गहनतम गहराई में पहुंच जाते है। इनके स्वर लगाते ही श्रोताओं में असर होने लगता है। शब्द इनकी गायकी का सहारा पाकर अपने में छुपे भावों को खुद–ब–खुद प्रकट करने लगते है। खान साहब शब्दों को भावों का जामा पहनाने में खूब माहिर थे। वे शब्दों के उच्चारण को स्पष्ट रखते हुए शब्दों में स्वरों के माध्यम से ऐसा भाव भरते है कि शब्द का अर्थ तथा शब्द में निहित भाव स्पष्ट नज़र आने लगता है। एक ही शब्द को कई–कई स्वर संयोजनों के साथ गाने में उन्हें कमाल हासिल था।

शब्दों को कहां थोड़ा रूक कर बोलना है, कहां पर जोर से, कहां हल्का बोलना भी खूब जानते है। शब्दों के शुद्ध उच्चारण के साथ अपनी ग़ायकी द्वारा भाव प्रकट करने में बहुत ही माहिर थे। उनकी गायी ग़ज़लों में रागों की स्पष्ट झलक मिलती है।

खान साहब जब भी रेडियो पर रेकार्डिंग के लिए जाते और वहां पर कोई साज़िन्दा न होता तो वे ख़ुद साज़ को बजाने के लिए बैठ जाते।

खान साहब ने हर मुश्किल का सामना धैर्य के साथ किय। खान साहब को अपनी गायकी पर पूरा भरोसा था। वो तो रेडियो से जुड़ने के बाद हरदम यही सोचते कि मैं जहां भी जाऊं, वहां पर रेड़ियो में प्रस्तुति दूं। अपने शुरूआती दौर में वे एक रेडियो स्टेशन से दूसरे स्टेशन गाने के अवसर की तलाश में दौड़ते थे। इस तरह का संघर्ष जब चल रहा था। तभी उनका तआरुफ़ प्रसिद्ध लोक गायिका सुरैया ख़ानम से हुआ। सुरैया ख़ानम रेड़ियो की जानी मानी आर्टिस्ट थी, और लोक गीत बहुत ही कमाल के गाती थी। रेड़ियो लाहौर और रेड़ियो मुज़फ़्फ़राबाद पर इनके श्रोता बहुत थे, पर सबसे बड़े चाहने वालों में से मेहदी हसन सा. खुद एक थे। सुरैया ख़ानम मूलतः जलंधर की थी; पर बाद में उनका पूरा परिवार लाहौर में बस गया था।

आगे का किस्सा मेहदी हसन सा. के बेटे सज़्ज़ाद मेहदी जी कुछ यूं बयान करते है–''उन दिनों किसी पण्डित ने खान साहब का हाथ देखकर कहा कि इनकी किस्मत में दो शादियां है और इस शादी के बाद दूसरी बीबी की किस्मत से तुम्हारी क़िस्मत खुलेगी। क़िस्मत ने इन दोनों को मिलाया। इनकी मुलाक़ात जब मोहब्बत में तब्दील हो गई, तथा खान साहब ने अपने बड़े भाई पण्डित गुलाम क़ादिर साहब से शादी की इजाज़त मांगी और उन्होनें अपनी सहमति दे दी। फिर खान साहब ने उनकी उपस्थिति में सुरैया ख़ानम से 1960 में निकाह किया।

दूसरी शादी के बारे में खान साहब खुद बताते है कि 'ये महज़ इत्तिफाक था.... ...कोई लैला मजनू का काम नहीं था.....उनसे (सुरैया ख़ानम से) संगीत में बहुत मदद मिली.....उन्हें सुर की समझ थी, और वो खुद बहुत ही अच्छा गाती थी। जब भी मैं कोई तर्ज बनाता, उनसे मशविरा करता और उससे मुझे बहुत ही फायदा होता।'

परन्तु इस शादी का किसी को पता नहीं लगा। यहां तक कि खान साहब के रिश्तेदारों को भी भनक तक नहीं लगी। यह बात सिर्फ खान साहब और उनके बड़े भाई पं. गुलाम क़ादिर सा. को ही पता थी। अब तक खान साहब का परिवार चींचावतनी में ही रहा था। दूसरी शादी के बाद खान साहब लाहौर में रहने लगे। लाहौर में खान साहब, सुरैया ख़ानम के लाहौरी गेट वाले घर में आ गये। पहली बीवी शकीला बैग़म अपने दो बेटों तारिक हसन और आरिफ हसन के साथ चींचावतनी में ही रही।

बाद में खान साहब की पहली बीबी का परिवार कराची में बस गया और दूसरी बीबी का परिवार लाहौर में ही रहा। सुरैया ख़ानम जो कि रेडियो आर्टिस्ट थी, उनको अब घर से बाहर जाने की भी इजाज़त नहीं थी, और उनको बाहर गाने के लिए भी मना कर दिया था। यह सब शादी के बाद तय हो गया था कि बाहर गाना बजाना नहीं होगा। इस शादी के बाद खान साहब का सितारा चमका और जब तक खान साहब की बीबी सुरैया ख़ानम रही तब तक माशा अल्लाह उनका सितारा बुलंदियों पर ही रहा।

अक्टूबर 1999 में खान साहब की पहली बीबी शक़ीला बैग़म का कराची में इंतकाल हुआ था और खान सा. इससे बहुत दुःखी हुए। वह इस दुःख से बाहर आना चाहते थे पर ईश्वर की करनी को कोई नहीं टाल सकता। अगले वर्ष अक्टूबर 2000 में उनकी दूसरी बीबी सुरैया ख़ानम का भी इंतकाल हो गया। यह बात बहुत लोगों ने न सुनी होगी। खान साहब की दोनों बीबियां साल भर के अन्दर ही फ़ौत हो गई। यह क़िस्सा सज्जाद भाई ने अखिलेश झा सा. को बताया, ये खान साहब के बेटे है और लाहौर में रहते है। खान साहब को दोनों शादियों से 14 संतानें हुई।

पहली शादी से आपके छः बेटे और तीन बेटिया और दूसरी शादी से आपके तीन बेटे और दो बेटिया। कुल मिलाकर नो बेटे और पाँच बेटियां। खान साहब कार्यक्रम में अपने बच्चों को नम्बर के हिसाब से याद रखते थे और उसमें भी कभी कभी ग़लत फहमी हो जाती थी। मंच पर भी जब उनके बेटे उनके साथ संगत करने जाते, तो वहां भी श्रोताओं से वे उनका परिचय नम्बर तीन, चार से ही करते और उसमें भी कोई ग़लती होती तो बेटे सुधार देते। पहली शादी से छः बेटों में सभी संगीत से ही जुड़े है। दूसरी शादी से बस शहज़ाद भाई ही गायन के क्षेत्र से जुड़े हुए है। खान साहब की बेटियां भी बहुत सुर में गाती है, परन्तु उन्हें भी घर से बाहर गाने की अनुमति नहीं थी। इसका कारण खुद खान साहब बताते है कि कलावंतों में औरतों का घर के बाहर गाना अच्छा नहीं माना जाता था।

इसमें कोई संदेह नहीं कि ग़ज़ल सराई की एक मुकम्मल पहचान कायम हुई मेहदी हसन सा. की गायकी से। भारत में संस्कृत–गायन को एम.एस. शुभ लक्ष्मी ने संस्कृत भाषा के संस्कार कायम रखते हुए जितना लोकप्रिय किया, कुछ वैसा ही खान

साहब ने उर्दू शायरी के साथ किया। खान साहब ने उर्दू के गम्भीर शायरों की ग़ज़ले चुनी और उन ग़ज़लें की गम्भीरता मुकम्मल रखते हुए उन्हें प्रासंगिक रागों में निबद्ध कर उन्हें बेहद लोकप्रिय कर दिया। खान साहब विषय के हिसाब से ग़ज़लों के लिए राग चुनकर खान साहब ने हर मूड की ग़ज़ल की एक ही तरह से गाने का पारम्परिक तरीका बदल दिया। यह इनकी गायकी का ही असर था कि लोग मीर, ग़ालिब, फ़ैज़, अहमद फराज़ फ़रहत शहज़ाद आदि की ग़ज़लें गुनगुनाने लगे।

खान सा. अक्सर कहा करते थे कि आवारा गाना उन्हें पसन्द नहीं। इस बात से उनका मतलब यह था कि ठुमरी ठुमरी की तरह, गीत गीत की तरह और लोक लोक की तरह गया जाए और यह तरीका उन्हें ग़ज़ल के लिए भी मंजूर था। कहना न होगा कि ग़ज़लों को ग़ज़ल की तरह गाने का अलग सिलसिला मेहदी हसन खान साहब से शुरू हुआ।

खान साहब से पहले भी ग़ज़ल गायक हुए थे और जो ग़ज़ले पहले के दौर में गाई जाती थी वो ग़ज़लें अपनी पहचान बनाने में नाकाम रही, क्यों उस समय ग़ज़लों का गायन सपाट था। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मेहदी हसन खान ने ग़ज़ल गायकी को एक गम्भीर कला के रूप में भी स्थापित कर दिया।

ग़ज़ल गायकी में अपनी अलग पहचान बनाने से पहले खान सा. तलत महमूद सा. की ग़ज़लें सुनते और गाते थे। खान साहब जहां कहीं भी सार्वजनिक कार्यक्रम होते थे वहां वे शुरूआती दौर में तलत महमूद सा. की ही ग़ज़लें गाते थे। एक वाक़या जो खान साहब के बेटे शहजाद भाई ने बताया कि एक बार पिंडी में संगीत का कार्यक्रम था। लगभग दस हजार श्रोता थे। मेहदी हसन साहब ने तलत महमूद सा. की दो ग़ज़ले सुनाई –

'हुस्न वालों को न दिल दो, ये मिटा देते है' और 'एक मैं हूं और एक मेरी बेक़सी की शाम है।' उनकी गायकी से श्रोता इतने मुग्ध हो गये कि जब तक वे गाते रहे तब तक श्रोता उन्हें सुनते रहे और बिना आवाज़ के पूरा गायन सुनते रहे और जब खान साहब का गायन समाप्त हुआ तो इतनी तालियां और सीटियां बजी.....और तालियों सीटियों से भी ज्यादा इतने रुपये बरसे कि खान साहब खुद अवाक् रह गए।

खान साहब जितना पैसा इकट्ठा कर पाए, वह लगभग चौदह हजार रुपये के आस पास थे। यह उस समय की बात है, जब बड़े बड़े उस्तादों को कार्यक्रमों में सैकड़े में ही भुगतान होता था। यह वाक़या मेहदी हसन सा. ने तलत महमूद सा. को भी सुनाया था, जब वे उनसे मिलने गये। उस दिन भी शायद श्रोताओं को इस बात का इल्म न हुआ होगा कि आज किसी की नकल गाने वाला, कल असल में ग़ज़ल की दुनियां का शहंशाह होगा।

खान साहब को रेडियो पर जिस ग़ज़ल ने प्रसिद्धि दिलाई वो ग़ज़ल फ़ैज़ साहब की थी, वह थी– 'गुलों में रंग भरे बादे–नू बहारे चलें। सबसे बड़ी बात यह है कि इसको जो धुन दी वो है पं. गुलाम कादिर सा.। पं. ने इसे राग झिंझोटी में तैयार किया और खान साहब ने इसको अपने अन्तःकरण से इस तरह गाया कि ये श्रोताओं के दिलों दिमाग में छा गई। फ़ैज़ सा. के शब्द और मेहदी हसन सा. के स्वर की मुहोब्बत भी यहीं से शुरू हुई थी।

फ़ैज़ का फ़ैज़ भी वह न होता और होता भी तो सारी दुनियां में उतना न होता, जितना मेहदी हसन सा. के सुरों में ढ़ल जाने से हुआ। फ़ैज़ की फ़ैज़याबी में मेहदी हसन का नाम भी शामिल है।

ग़ज़लों में अरबी एवं फारसी के लफ़्ज़ बहुत है। उन्हें सुनकर श्रोता भी नहीं समझ पाते कि इनका क्या अर्थ है.....तो खान साहब गायकी के साथ साथ बड़े कायदे से उन शब्दों का सामान्य भाषा में अनुवाद कर संदर्भ स्पष्ट करने का प्रयास करते, यह करना श्रोताओं के हित में तो था ही, शायरी और शायर के हित में भी था। ऐसे ही कुछ लफ़्ज़ है–मस्लहत = अच्छे बुरे का ज्ञान, आबलापा=पांव के छाले, शनासाई=जान पहचान, कुव्वते गुफ़्तार=बोलने की शक्ति, कूब्कू=गली–गली आदि। कई लोगों को इन शब्दों का अर्थ नहीं आता, लेकिन खान साहब ने ऐसे शब्दों का अर्थ बताकर श्रोताओं को अच्छी जानकारी दी है।

खान साहब अपने अन्दर भरे शास्त्रीय संगीत को प्राईवेट महफिलों में ग़ज़ल के माध्यम से निकालते थे। इन महफिलों में ही अपने असली संगीत को बाहर निकालते थे। खान साहब प्राईवेट महफिलों के अन्दर फ़िल्मी ग़ज़लों में ऐसी शास्त्रीयता भरते

कि श्रोता उन्हें सुनकर आनन्द से सरोबार हो जाते थे। उनकी महफिलें लाहौर में होते थे।

खान साहब की महफिलों में श्रोता भी अच्छे जानकार होते थे, गायक, संगीतकार, संगीत समीक्षक, नामी शायर, पत्रकार, फिल्मी हस्तियाँ और ख़ास रईस लोग खान साहब की महफिलों में हो थे।

खान साहब ग़ज़ल से संबंधित सारी बाते बताते थे। यह ग़ज़ल किस राग में है और इस राग की क्या विशेषता है। यह सारी जानकारी ग़ज़ल गाते समय बीच–बीच में बताते रहते थे।

खान साहब की एक प्रसिद्ध ग़ज़ल है 'एक बस तू ही नहीं मुझसे ख़फ़ा हो बैठा, मैनें जो संग तराशा वो ख़ुदा हो बैठा'। यह कम्पोज खान साहब ने मियां की मल्हार में किया था। कार्यक्रम के दौरान वो बताते है कि 'मियां की मल्हार में जो गांधार है, वह न तीव्र है, न कोमल है.....आन्दोलन है.....वह तीव्र और कोमल के दरम्यान है, यह स्वर हारमोनियम में नहीं है.....। इसे श्रुतियों से लगाना पड़ता है, वरना ग़लत हो जाता है राग।'

वे स्वर एवं श्रुतियों का संबंध कितनी सहजता से समझा जाते है और संगीत के ग्रन्थों में भी स्वर और श्रुति का घनिष्ठ संबंध बताया है। स्वर को रंजक बनाने में श्रुतियों का होना आवश्यक है।

इसी प्रकार वे प्रस्तुति देते समय 'इक ख़लिश को हासिले.....' में वे डेढ़ कण की तान के बारे में भी बताते है.....एक तो कण, उस पर भी डेढ़ कण की तान को स्पष्ट करना.....गाकर बताना औरा ग़ज़ल गायकी का वही माहौल भी बनाये रखना, खान साहब जैसे गायक के लिए ही सम्भव था। खान साहब हमेशा अपने आपको गाने के लिए तैयार रखते थे। आपका गायन सुनकर श्रोता भाव विभोर हो जाते। सच्चे सुख की आनन्दानुभूति प्राप्त करते। खान साहब की आवाज़ में गहराई इस तरह से लगती थी, मानों स्वर कंठ से नहीं, रस से भरे हुए कुए से गूंजते हुए निकल रहा हो। अर्थात् उनकी जैसी सुरीली आवाज़ कहीं भी नहीं है। उनके गाने में उनका रियाज़ झलकता है। उनके द्वारा मन्द्र सप्तक में सुर लगाना बहुत ही कर्णप्रिय लगता है।

ग़ज़ल गायकी के लिए गले का बेस अच्छा होना चाहिए.....और खान साहब की आवाज़ में तो बहुत बेस है। ग़ज़ल के लिए शायद यही आवाज़ उपयुक्त है। खान साहब ने जो ग़ज़ल की ख़िदमत की और जो शहँशाह–ए– ग़ज़ल की उपाधि उन्हें मिली उसके लिए उन्होनें जो कुर्बानी दी है वह कम नहीं है। उन्होनें शास्त्रीय संगीत का पारम्परिक रिवाज़ छोड़ दिया, जिसकी उनके पूरे खानदान ने ख़िदमत की..... उसको खान साहब ने छोड़ ग़ज़ल को अपनाया।

लेकिन उनके घराने की बातें, ताने, आलाप आदि का भी उन्होनें ग़ज़ल में बख़ूबी प्रयोग किया है। एक ख़ास बात और आपको अपनी जन्म भूमि से इतना प्यार था कि मरते दम तक आपने राजस्थानी भाषा का ही प्रयोग किया। आपकी सभी संतानें आपको बाउजी कहकर बुलाती थी। आप अपने लोगों के बीच में राजस्थानी भाषा का ही प्रयोग करते थे। इस राजस्थान को ही नहीं पूरे हिन्दुस्तान को खान साहब पर गर्व है और हमेशा रहेगा। मैं और मेरे गुरु डॉ. रौशन भारती जी एवं मेरे दादा उस्ताद यासीन खान साहब का भी यही कहना है कि सुर की सीमा नहीं होती है और न ही सच्चे सुर वाले किसी सीमा में बंधे होते है। वो ईश्वर के सच्चे भक्त होते है और ईश्वर की कृपा सच्चे सुर साधक पर ज़रूर होती है।

खान साहब के बाल सखा नारायणसिंह जी के कुछ दोहे हैं जो कि खान साहब के जीवन पर पूर्ण रूप से चरितार्थ है।

1. जग में गायक बहुत है, ग़ज़ली और कव्वाल।
   लूणां गांव में जनमियां, जग का प्यारा लाल।।

2. दो देसां में सीर है जग में है विख़्यात।
   जन्मियों न कोई नहीं, जन्म सी मेहदी खान की रात।।

खान साहब को दोनों देशों में प्यार करने वालों की कमीं नहीं थी। कई लोग ऐसे भी है जिन्होनें खान साहब के दर्शन नहीं किये। उनमें मैं भी एक अभागा हूं।

खान साहब अच्छा ही नहीं वह बहुत अच्छा गाते थे। पूरे दिन भर की थकान को खान साहब का एक अलाप चूर–चूर कर देता था। इसका एक सच्चा वाक़िया मैं बताऊँगा। बात 05 दिसम्बर 2012 की है मुझे अखिलेश साहब का निमंत्रण आया ग़ज़ल कार्यक्रम के लिए, तो मैनें हाँ भर दी, और मैं अपने साथी कलाकार लोकेश कुमार को लेकर दिल्ली चला गया। मुझे पता भी नहीं था कि प्रोग्राम में कौन कौन है? और किस तरह की ग़ज़लें प्रस्तुत करनी है।

मैं वित्त मंत्रालय के एक होटल में रूका था और हारमोनियम लेकर खान साहब की ग़ज़ल 'शोला था जल बुझा हूं' गा रहा था तभी सुप्रसिद्ध शायर फ़रहत शहजाद़ साहब ने मेरा दरवाजा खटखटाया, जैसे ही लोकेश ने दरवाजा खोला, उन्होनें मुझे देखा और बोले कि ये ग़ज़ल तुम गा रहे थे, तो मैनें हामी भर दी.....इतने में मुस्कुराये और मुझे गले लगा लिया.....और बोले बेटा! मैं थकान की वज़ह से अपने रूम में सो रहा था.....कि अचानक ये ग़ज़ल मेरे कानों में पड़ी और मुझसे रहा न गया कि आख़िर ये कौन गा रहा है और मैं यहां आ गया। फ़रहत शहजाद़ साहब ने मुझे बहुत आशीर्वाद दिया..... और जब वो जाने लगे तब मैनें एक सवाल उनसे पूछने की हिम्मत की.....सर आप....? उन्होनें कहा मैं फ़रहत शहजाद़.....! मैनें इतने बड़े–बड़े शायरों के नाम सिर्फ किताबों में पढ़े थे, मुझ क्या पता कि असल ज़िन्दगी में भी मेरी मुलाक़ात ऐसी बड़ी शख़्सियत से हो पायेगी। और उसी शाम जब मेरा कार्यक्रम था तो उस महफ़िल के चीफ़ गेस्ट भी 'फरहत शहज़ाद सा.' थे। मेरे लिए इससे बड़ी और क्या बात हो सकती है कि जिन्होनें हमारे खान साहब के लिए कई ग़ज़लें लिखी वो मेरे कार्यक्रम में मेरे सामने बैठकर मुझ जैसे तुच्छ गायक को सुन रहे थे।

खान साहब इतना अच्छा गाते थे कि उनके गाने से कई लोग जलते थे। मगर जलने वालों को भी खान साहब की ग़ज़लों पर वाह–वाही करनी ही पड़ती थी। खान साहब अपने रियाज़ में ही मस्त रहते थे। वे किसी को भला बुरा नहीं कहते थे। उन्हें तो सिर्फ अपनी ग़ज़ल से प्यार था। वो हमेशा ग़ज़लों की धुन बनाने में और उन्हें अच्छे से अच्छा गाने में अपना ध्यान लगाते थे।

पाकिस्तान के मशहूर संगीत समीक्षक डॉ. मंजूर इज़ाज़ एक ऐसा ही वाक़िया बताते है लाहौर का। उस्ताद सलामत अली खान सा. का लाहौर के टाउन हॉल में

गायन का कार्यक्रम था। उस कार्यक्रम में पाकिस्तान के बड़े–बड़े संगीतज्ञ, संगीतकार, गीतकार, गायक, वादक सभी थे। उनमें मेहदी हसन सा. भी थे। सलामत अली खान साहब लम्बी एवं जटिल ताने लेनें के लिए प्रसिद्ध रहे है, उस दिन भी वे ताने ले रहे थे। हर ऐसी तान लेने के बाद वे थोड़ा रूकते और कहते कि–'खान साहब! ये आपके लिए!' खान साहब को इस तरह की चुटकियों और आलोचनाओं का सामना कई बार करना पड़ा। परन्तु वे बहुत धैर्य वाले थे। और उन्हें किसी से कोई शिकायत नहीं रही, वे हर लम्हे को अपने हिसाब से जीते थे।

बड़े बड़े गुणी गायक हुए है, ग़ज़ल गायन के लिए। परन्तु जिन्हें दुनियां का कोहीनूर माना है वो है शहंशाह–ए– ग़ज़ल मेहदी हसन खान साहब! आपकी जन्म भूमि का आज चहुँ दिशाओं में नाम है तो सिर्फ आपकी वज़ह से। आज ''लूणा'' गांव का नाम आते ही दिमाग में सिर्फ खान साहब का चेहरा घूमने लग जाता है।

ग़ज़ल गायकों की दुनियां में कमी नहीं है लेकिन खान साहब ने रोप दी ग़ज़ल गान की फसल। ऐसी फसल जो गर्मी, सर्दी, बरसात तीनों ही मौसम में भी लहराती रहेगी। गर्मी में भी न झुलस पायेगी, सर्दी भी इस फसल का कुछ न बिगाड़ सकेगी और वर्षा भी इस फसल को गला न सकेगी। ऐसी ग़ज़ल की फसल खान साहब ने रोप दी।

खान साहब को कई कार्यक्रमों में चुटकियों और आलोचनाओं का सामना करना पड़ता था, परन्तु वे किसी भी बात को दिल से नहीं लेते थे। इसका मुख्य कारण सम्भवतः यह भी था कि पाकिस्तान में अधिकतर गायक पंजाब के विभिन्न घरानों के थे और इसलिए उनकी गायकी में पंजाब अंग का प्रभाव अधिक था, राजस्थान अंग के तो मेहदी हसन साहब, सम्भवतः अकेले ही थे। पंजाब के संगीत घरानों का ही पाकिस्तान में वर्चस्व रहा, परन्तु यह अलग बात है कि खान साहब अकेले होते हुए भी हर एक पर भारी पड़े लोकप्रियता के ख़्याल से।

तान जो जैसी भी लेता हो, संगीत में जो नाम और शोहरत खान साहब ने हासिल किया, वहां से सलामत अली खान साहब जैसे कई खान साहब मीलों पीछे रहे। खान साहब की टक्कर में पाकिस्तान के कई घरानेदार खान साहब ग़ज़ल

गायकी में हाथ आज़माने आये, पर जिन लोगों को मेहदी हसन साहब की लत हो गई थी, उसे कोई और क्या सुहाता! घरानेदार गायको में अमानत अली खान, नियाज़ हुसैन शामी, इम्तियाज़ अली खान, आशिक़ अली खान, पेशावर वाले, रियाज़ खान, हशमत अली खान पेशावर वाले आदि ने भी ग़ज़लें गाई थी, परन्तु वे अपनी कोई ख़ास पहचान ग़ज़ल सराई में न बना सके। शास्त्रीय संगीत में पकड़ अच्छी होने से ग़ज़ल अच्छी नहीं गाई जा सकती। वैसा भाव मन में पैदा करना पड़ता है, जिस भाव की ग़ज़ल है।

खान साहब ने संगीत को ईश्वर मानकर उसको हृदय की गहनतम गहराईयों से स्पर्श किया है। खान साहब को जो शहंशाह की उपाधि मिली उसका मुख्य कारण भगवान के प्रति विश्वास है और वे कभी ईश्वर से विमुख नहीं हुए। उनकी प्रसिद्धि और शौहरत का श्रेय कला के प्रति ध्यान और गहराई से आदर भाव है।

मेहदी हसन सा. आज इस संसार में निःसंदेह ही प्रसिद्ध और नामी ग़ज़ल गायकों में मुख्य रूप से एक है। खान साहब ने आज ग़ज़ल गायकी में ऊँचे स्तम्भ के समान मुक़ाम हासिल किया है। आज के सभी युवा कलाकारों के आप आदर्श है। आपका गायन इतना उम्दा होने का कारण आपका रियाज़ है। आपने ठुमरियां भी बहुत अच्छी गाई है। आपने दादरा भी कमाल के गाये है। इसका मुख्य कारण आपके बड़े भाई पं. गुलाम क़ादिर साहब ने इन सबकी आपको विधिवत शिक्षा दी तथा जहां भी कोई कमीं रहती तो वे उसको सुधारते। आपके सानिध्य में रहकर खान साहब को ठुमरी दादरा की बारीकियों का पता चला। खान साहब ने इन पर भी बहुत जबरदस्त पकड़ हासिल कर ली थी।

आपकी प्रसिद्ध ठुमरियों में उनकी गायी हुई देश राग में 'उमड़ घुमड़ घिर आयो से सजनी बदरा' इसमें विरह वेदना का भाव प्रकट हुआ है। खान साहब की एक और प्रसिद्ध ठुमरी 'नदिया किनारे मोरा गांव.....' ये ठुमरी पूरबी अंग की है। इसी तरह खान साहब ने और ठुमरियाँ भी गाई है। जैसे–'दुखवा मैं कासे कहूं मोरे सजनी' और 'चंदा रे, जा रे, देस पिया के' ये सब प्रसिद्ध ठुमरियां है। खान साहब ने ग़ज़ल को ग़ज़ल जैसे, ठुमरी को ठुमरी जैसे, लोकगीत को लोक गीत जैसे और दादरा को दादरा जैसे गाया है।

यह सारी बातें/खूबियां उनमें उनके बड़े भाई पं. गुलाम कादिर साहब की संगत में रहने के कारण आई थी। गुलाम क़ादिर साहब उन्हें हर विधा की बारीकियां सिखाते थे। कादिर साहब का अक्सर लखनऊ और बनारस के घरानेदार गायकों के साथ उठना बैठना होता था और पं. गुलाम क़ादिर साहब संगीत के बहुत ही प्रकाण्ड विद्वान थे। पं. गुलाम क़ादिर सा. को पंडित की उपाधि लखनऊ के भातखंडे संगीत विद्यालय द्वारा प्रदान की गई थी। लखनऊ के भातखंडे संगीत विद्यालय में आपकी (गुलाम कादिर सा.) की कुर्सी लगती थी। गुलाम क़ादिर सा. बहुत ही उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे।

मेहदी हसन खान साहब के नाम के पीछे पं. गुलाम क़ादिर सा. का बड़ा योगदान रहा। मेहदी हसन सा. जब भी कोई नई धुन बनाते तो अपने बड़े भाई पं. गुलाम क़ादिर सा. को ज़रूर बताते। फिर उस धुन में कोई कमीं पेशी होती तो गुलाम क़ादिर सा. उसे सुधारते।

मेहदी हसन खान साहब की कई ग़ज़लें जो फ़िल्मों में सुपर हिट रही हो या प्राईवेट महफ़िलों में हिट रही हो, उनमें अधिकतर ग़ज़लों की धुन पं. गुलाम क़ादिर सा. ने ही बनाई थी या मेहदी हसन सा. ने खुद ख़ासकर रागों में निबद्ध ग़ज़लें, फिल्मों में भी खान साहब खुद की बनाई हुई धुनों पर ही ग़ज़ल गाते थे।

खान साहब ने कुछ ग़ज़लें तो ऐसे रागों में भी बनाई जो हमारे उत्तरी भारतीय दस थाटों में नहीं है। उनकी एक मशहूर ग़ज़ल 'गो ज़रा सी बात पर बरसों के याराने गये....' को गाते थे तो ऐसा लगता है जैसे ख़याल गा रहे है' ग़ज़ल का पहला अलाप ऐसा शुरू करते थे कि कानों में राग का स्वर विस्तार चल रहा हो। आपने कभी भी किसी राग में जो कम्पोजिशन किया उसमें ऐसे स्वरों का प्रयोग नहीं किया जो उस राग में नहीं लगते हो। उसको सुन्दर बनाने के लिए उसमें विवादी स्वरों का कभी भी प्रयोग नहीं किया। आज हम खान साहब की कोई भी ग़ज़ल सुनते है तो ऐसा प्रतीत होता है मानों कोई राग ही चल रहा है। आपने राग के स्वरूप को नहीं बिगाड़ा, क्योंकि आप में इतनी क्षमता थी कि आप एक ही ग़ज़ल को घण्टों तक गा सकते थे। आप में यह योग्यता और खूबी थी। आप ग़ज़ल के मर्म को हृदय की गहनतम्

गहराईयों से स्पर्श/महसूस करते थे। आपकी आखों में भी ग़ज़ल का खुमार चढ़ा रहता था।

खान साहब के साथ तबला नवाज़ उस्ताद पीर बख़्श सा. ने भी खूब तबला बजाया था। आप खान साहब के साथ खूब रहे। खान साहब उस्ताद पीर बख़्श साहब को बहुत प्यार करते थे। खान साहब के साथ एक हारमोनियम वादक, तबला वादक और सारंगी वादक हुआ करते थे।

खान साहब के साथ तबला जिन जिन उस्तादों ने बजाया उनमें एक तो उस्ताद पीर बख़्श साहब, उस्ताद तारी खान साहब और आपके ही बेटे आरिफ़ हसन।

खान साहब के साथ 26–27 साल तक 30 उस्ताद पीर बख्श साहब ने तबला बजाया था। खान साहब के साथ हारमोनियम की संगत के लिए ख़लीफ़ा मुहम्मद हुसैन साहब थे, जिन्होनें खान साहब के साथ लगभग 42–43 साल तक हारमोनियम बजाया। इन दोनों ने ही खान सा. का संघर्ष देखा था।

निष्कर्ष–मेहदी हसन साहब नें किस तरह संगीत साधना की और कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने रियाज़ को बरकरार रखा। आपने रागदारी की परंपरा को कभी खत्म नहीं होने दिया। राग में रहकर बहुत सारा काम किया। यह सब वर्णन मैंनें इस अध्याय में बताया है।

किताबें और समाचार पत्र–पत्रिकाएं :–

1. रविवारीय पत्रिका –गुलाब कोठारी, पृ. 2 – 4 जुलाई 2010
2. संगीत विशारद–वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101–2002
3. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 36–37
4. यश बावनी–नारायणसिंह शेखावत, म्यूजिक कमेटी, नई दिल्ली, 2012 110062, 2012 पृ. 3
5. यश बावनी–नारायणसिंह शेखावत, म्यूजिक कमेटी, नई दिल्ली, 2012, 110062, 2012 पृ. 11
6. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 13
7. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 41–43
8. रविवारीय पत्रिका–युधिष्ठिर पारीक, नौहर, श्री गंगानगर, 18.07.2014, पृ. 2
9. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 46–47
10. रविवारीय पत्रिका–युधिष्ठिर पारीक, नौहर, श्री गंगानगर, 18.07.2014, पृ. 2
11. इण्डिया टूडे–स्मृति, फ्रैंक हुजूर, स्वतंत्र लेखक, 2012, पृ. 58
12. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 51

13. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 49

14. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 53 से 55

15. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी–डॉ. प्रेम भण्डारी, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर, 1993 पृ. 154 व 144

16. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 58–59

17. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 63 व 64

18. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 69

19. यश बावनी–नारायणसिंह शेखावत, म्यूजिक कमेटी, नई दिल्ली, 2012 110062, 2012 पृ. 12

20. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 69–70

21. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 72

गंधार

घराने का परिचयः—सर्वप्रथम हमें घराने का अर्थ समझना होगा आखिर घराना है क्या ? प्राचीन भारतीय गायकों में कुछ ऐसे प्रसिद्ध गायक हो गये है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा से विशेष प्रकार की गायन शैली को जन्म देकर उसे अपने पुत्रों तथा षिष्यों को सिखाकर प्रचलित किया। उनकी उस शैली का अनुकरण उनके शिष्यगण तथा कुटुम्बी अब तक करते चले आ रहे है। उन गायन शैलियों को ही घराने का नाम दिया जाता है।

खान साहब स्वयं इस घराने की सोलहवी पीढ़ी के कलाकार थे और आपकी पन्द्रह पीढ़ियों से संगीत चला आ रहा है। आपके परदादाजी उस्ताद कलाम बख्शु खान साहब उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे। ये गायक और वादक (सांरगी वादक) थे। आप ज्यादातर ख़याल गाते थे। आपके जो सन्तान पैदा हुई वह भी संगीत में रूचि वाली हुई और उन्होने इस परम्परा को बरकरार रखा। वे सभी एक के बाद एक इस संगीत परम्परा में रमते गये और आज उसी का नतीजा है कि खान साहब जैसे दिग्गज गायक ग़ज़ल गायकी के फन से दुनिया कों मोहित किये हुए है। आप बचपन में ध्रुपद और ख्याल गाते थें। इसी वजह से जब आप गाते है तो वह पूर्णरूप से शास्त्रीय संगीत की झलक दिखाती है। क्योंकि आपकी अधिकतर रचनाएँ राग पर ही आधारित है। आपकी शास्त्रीय संगीत में काफी रूचि रही। आपके चाचा उस्ताद इस्माइल खान साहब ने आपको कई ध्रुपद और खयाल सिखाये थे।

बाबर वंश (लूणा) इसी बाबर घराने की एक और शाखा पल्लवित हो रही है उसका भी में इसी अध्याय में जिक्र करूंगा।

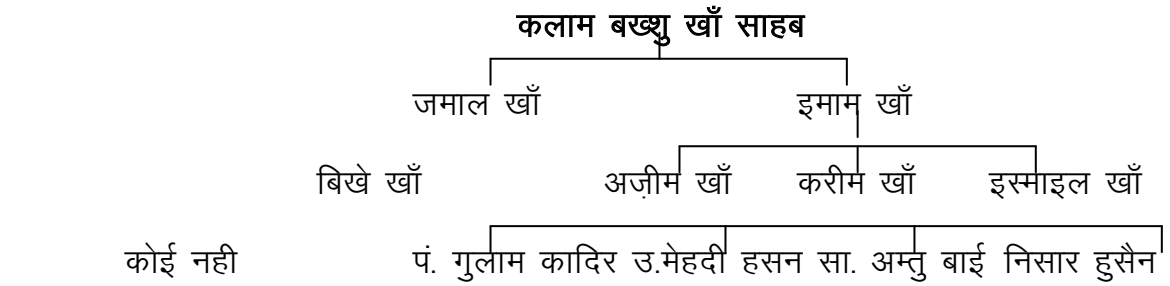

वैसे 'घराना' शब्द स्वयं में अति गहनता भरा व हिन्दुस्तान की संगीत से गहरा सम्बन्ध रखने वाला एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है। घराना शब्द स्वयं में परम्पराओं से घिरा हुआ, विकसित शब्द है अर्थात् घराने का या घराने शब्द का अस्तित्व ही परम्परा को माना जाता है। भारत देश एक ऐसा सुदृढ़, सुसंस्कृत व व्यवस्थित देश है, जिसका विकास संस्कृति पर आधारित होता चला आया है, परन्तु इस संस्कृति को कायम रखने हेतु, जिसे सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया, वही परम्परा है।

हर देश की अपनी–अपनी संस्कृति और अपनी–अपनी परम्पराएँ हैं। हमारे देश में कई कलाओं का जन्म हुआ और वे कलाएँ अपने चरमोत्कर्ष को छू पाई, कारण उनका परम्परामय रूप में बद्ध होना या करना है। इन्हीं अन्य विकसित कलाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली 'संगीत–कला' को आखिरकार हम कैसे भूल सकते है।

संगीत अपने आप में ईश्वर है। संगीत मानव जाति ही नहीं अपितु देवी देवता भी संगीत के भक्त है। संगीत तो सही मायने में जीवन का आधार है, ये ही वह शक्ति है जो हमें व हमारी भावनाओं को विभिन्न प्रकार से व्यक्त कर सकती है। इसके द्वारा मनुष्य के भावों की स्थिरता न होकर, गतिशीलता कायम रहती है। इसी संगीत को विगत 300 वर्षों में विकसित करने का श्रेय घरानों को ही जाता है। वास्तविक बात भी यही है कि जब भी हिन्दुस्तानी संगीत की बात चली, तो घराना शब्द अत्यन्त घनिष्ठ तरीकें से जुडा हुआ है।

वर्तमान समय में संगीत यानि भारतीय संगीत का जो कुछ भी रूप हम देखते है, वह सब वास्तव में घरानों एवं उनकी परम्पराओं के कारण ही सार्थक हुआ है, इन्ही घरानों ने कला के विकास में समृद्धता, विविधता और रचनात्मकता के साथ साथ विविध प्रकार के आयाम देने का महत्वपूर्ण कार्य किया है, जो प्रमाणतः आज हमारे नेत्रों के समक्ष है। साधारणतः घराना शब्द के अनेक अर्थ है, जैसे– घर, कुटुम्ब, परिवार सम्प्रदाय, वंश, परम्परा आदि।

घराने की बात पर यहां एक महत्वपूर्ण बात बताना बहुत जरूरी है –

ये खान साहब के ही परिवार का एक हिस्सा है जिसे हम यूं भी कह सकते हैं कि एक घराना लूणा में संगीत की परवरिश कर रहा था और दूसरा घराना भडूंदा

(झुन्झुनू) में। संगीत की यह बेला लूणा और भडूंदा में संगीत के स्वरों को बिखेर रही थी।

यहां पर खान सा. के ही परिवार का जिक्र होना जरूरी हैं क्योंकि इसी परिवार और इस परिवार के शागिर्दो ने दुनिया में नाम और काम किया है।

बाबर वंश की एक और बेलः–यह बेल उस समय से ही भडूंदा में पल्लवित हो रही थी –

वंश

खुमारी नियामत–पीरा (पीरू खा)

हुसैन खाँ–इमाम बख्श अहमद बख्श

जमाल खाँ–शकूर खाँ

यासीन खाँ

डॉ. रौशन भारती, रजब अली, रईस भारती

अमीर खाँ और नजीर खाँ सा. भी इसी घराने के विद्धान गायक हुए है। गायकी के साथ–साथ ये संस्कृत, फारसी, उर्दू और अरबी के भी प्रकाण्ड विद्धान हुए है और इस घराने की एक बहुत ही प्रसिद्ध रचना जो राग ललित में निबद्ध है इस रचना के बोल से ही स्पष्ट है कि उनको शब्द कोष की बहुत गहनतम जानकारी थी –

बंदिश –

ललिन लाल लल.....ललिता लरजे लाज लिये लरे लूम लष्करले

लकां जीत लेय लर कैया तू – अमीर खाँ सा.

इसमें अनुप्रास अलंकार है –

अमीर खाँ सा. बनारस के महाराजा के उस्ताद थे और ये पण्डितों की तरह ही रहते थे। सिर मुण्डवा कर और भगवा वस्त्र पहन कर। ये इसी भडूंदा घराने की बंदिश है और ये बंदिश खुद मेहदी हसन साहब गाते थे। ये बात मुझे अर्जुन जी खाती ने बताई जब मैं उनसे मिला। इन बातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि उस्ताद

मेहदी हसन सा. और उस्ताद यासीन खाँ सा. का परिवार एक ही है (वही बाबर खानदान)। और ललित राग की यह बंदिश इस परिवार के अलावा इस परिवार के शागिर्दों को ही पता है और आने वाले समय में इस बंदिश को हिन्दुस्तान के हर कोने में सुना जा सकेगा।

दोनों ही घरानों का परिचय उपर दिया जा चुका है। घराना तो एक ही है बस जगह परिवर्तन है। दोनों ही परिवारों का एक ही घराना है। एक परिवार लूणा में और एक परिवार भडूंदा में पला बढ़ा। बाद में दोनों ही परिवार अलग–अलग जाकर बस गए। इनमें मेहदी हसन सा. का परिवार तो पाकिस्तान में जाकर बस गया। यह उस समय की परिस्थितियों को देखते हुए हुआ और दूसरा परिवार कोटा शहर में बस गया। दोनों ही परिवारों के वंषज बहुत ही सुरीला गाते हैं।

विभिन्न संगीतज्ञों के मतानुसार 'घराने' शब्द का तात्पर्य –

1. डॉ देशपाण्डे :– आपके अनुसार ''घराना अर्थात निशानी या पहचान वाली, लेकिन उसमें प्रत्येक गायक के साथ नई–नई बातों को समाहित करने वाली तथा इस प्रकार के सिलसिले को बनाए रखने वाली परम्परा ही घराने के नाम से पुकारी जाती है।''

डॉ. कृष्णराव पण्डितः–पण्डित जी के अनुसार ''शताब्दियों या बहुत वर्षो की परम्पराओं उच्च कोटि के गुरू और कई पीढ़ियों की गुरू–शिष्य परम्पराओं आदि के मिश्रण से एक घराने का निर्माण हुआ करता है।'' घराने में घराने की विशेष बातें आती है।

- आज भी जब हम घराना शब्द का उच्चारण करते हैं तो मन में एक बार तो कल्पना आती है कि अवश्य ही उस गायकी में कोई न कोई कुलीन आचरण की मर्यादा होगी।
- हिन्दुस्तानी संगीत की प्रमुख विशेषता घरानेदार गायकी को ही माना है। जहाँ गायक अपने कृतित्व या अपने परिवार के नाम से नहीं, बल्कि वह अपने स्वर लगाने के ढ़ंग एवं गायकी के गुणों से पहचाना जाता है।
- घराना भारतीय गायकी के संवर्द्धन के लिए एक श्रेष्ठ एवं उच्च्कोटि का संगीत विद्यालय साबित हुआ है।

- अलचर्ड पोल–के अनुसार ''संगीत के क्षेत्र में घरानों की नींव इस संकीर्ण मनोवृति के फलस्वरूप ही पड़ी।

जहां पर घराने का नाम आता है वहां पर परम्पराओं का सन्दर्भ स्वतः ही चित्त में पनप उठता है, कयोंकि यह पूर्णतः सत्य है कि घराना परम्परा हिन्दुस्तानी संगीत की अद्वितीय परम्परा है और हम इस वास्तविकता से भी कदापि विमुख नहीं हो सकते हैं कि विश्व के संगीत के इतिहास में इस प्रकार की घराना परम्परा कहीं भी नहीं मिलती है। यह परम्परा सिर्फ हिन्दुस्तान में ही मिलेगी। संगीत के विकास में घरानों का बहुत योगदान रहा है।

घराने का अर्थ घर का कुल से ही लगाया जाता है, जिसके अनुसार घराने का सम्बन्ध केवल संगीत में ही नहीं, यह मानव के दैनिक जीवन से भी सम्बन्ध रखता है।

- संगीत कला को समृद्ध करने का श्रेय घराने को ही जाता है इन्हीं की वजह से आज हमारे बीच संगीत की महानतम् निधि सुरक्षित है और हम उसकी सुखद अनुभूति कर रहें है।
- संगीत की संस्कृति की रक्षा भी घराने की ही देन है और कला के रक्षक का उत्तरदायित्व भी घराने ने ही निभाया है।
- अगर घराने नहीं होते तो आज संगीत की परम्परागत विद्या जरूर मध्ययुग और अंग्रेजो के युग में समाप्त हो गई होती।
- उस अन्धकार भरे गुण में, इन्ही घरानेदार संगीतज्ञों ने अपनी कड़ी मेहनत, साधना, असीम गुरूभक्ति और तालीम से संगीत को जिन्दा रखा।

बाबू भाई बैंकर के अनुसारः– '' प्राचीन परम्पराओं व कई पीढ़ियों की गुरू शिष्य परम्परा और उच्च कोटि के गुरूओं की परम्परा का मिश्रित रूप ही घराने के नाम से जाना जाता है।

श्री कृष्णराय पण्डित के अनुसार :–'' भिन्न–भिन्न शैलियों के निर्माताओं ने अपनी कठिन साधना और प्रतिभा से एक विशिष्ट शैली का निर्माण किया जिसकों घराना कहा गया।''

जब गायक कलाकार अपनी विशेष गायकी से अन्य गायकों के समक्ष स्वयं को विशिष्टता की श्रेणी में लाता है तथा अन्य कलाकारों से स्वतन्त्र प्रतिभा रखता है, जिसका अनुसरण उसके शिष्यगण भी उसी तरह से करते है और यही परम्परा जब पीढ़ी दर पीढ़ी में चलती रहती है, तो घराने के नाम से जानी जाती है।

घराना परम्परा बहुत ही प्राचीन है। घराना परम्परा जो मध्यकाल से शुरू होकर ब्रिटिश काल तक अपने यौवन पर रही और आजकल भी इन्ही रीति नीतियों को भली भांति निभा भी रही है। घराना गायन वादन नृत्य तीनों ही विधाओं की शैलियों का सूचक माना गया है।

ये शैलियां जिन कलाकारों के द्वारा प्रवर्तित होती है वही उसके संस्थापक माने जाते है और उन्ही के नाम से इन घरानों का नामकरण होता है। प्रत्येक घराना दूसरे घराने से अपना अलग अस्तित्व रखता है, जिसका मुख्य कारण घराने की परस्पर शैलियों में विलक्षणता का होना ही इसे या प्रत्येक घराने को आपस में अलग दिखलाता है और इसी के परिणाम स्वरूप घराने का सूत्रपात होता है।

न्यूमेंन के अनुसारः–

इस लाइन से यही भाव प्रकट होता है कि घराना शब्द वंशात्मक रूप से बना संगीतज्ञों का एक क्रम है। वैसे भी एक ही परिवार को कम से कम तीन पीढ़ियों के बिना घराना नहीं बनता है। डॉ. बी.के. अग्रवाल के मतानुसार ''Gharanas in classical musinAre just like beds, if different varicties of flowers inA garden, which give different fragrance. Gharanas in music may like be seenAs perfumed with different eassences of musial flowAnd fragrance

घराने के कुछ नियम

- हर घराने का अपना एक स्टाइल होता है। हर घराने के अपने मुख्य राग होते है और बंदिशें जिन्हें उस घराने का गायक ही प्रचलित करता है।
- प्रत्येक घराने के शागिर्द अपने गुरू की आवाज़ और गायन शैली का अनुकरण करें यह आवश्यक है। जब तक वह संगीत की (शिक्षा) तालीम लेते है। तब तक उन्हें दूसरों का संगीत नहीं सुनने देते है।

- घराने की मूल गायिकी और गायिकी के मुख्य सिद्धान्तों का पालन भी होना आवश्यक है।
- घराने के निर्माण में कम से कम तीन पीढ़ियो की आवश्यकता होती है। घराने में गुरू शिष्य परम्परा के अनुसार किसी भी योग्य शिष्य को उसकी क्षमता के अनुसार अपने घराने में शामिल करना तथा अपने ही पुत्र पौत्राणी कुटुम्बियों को पीढ़ी दर पीढ़ी संगीत में शिक्षित करना और अपनी परम्परा के अनुसार उसे ढलना यह दोनों ही आते है।
- स्वर, संस्कारिता धैर्य आनुवंशिकता प्रामाण्य ये कुछ ऐसे तत्व हैं जिनका कम व अधिक प्रयोग ही विभिन्न घरानों की गायकी की पहचान के रूप में परिलक्षित होता है।
- हमारे यहां पर चाहे कितने भी परिवर्तन हुए हो बावजूद इसके भारतीय संगीत की परम्परा अपने घराने के मूल और मूल्यों से सदैव जुड़ी रहेगी और इसी के आधार पर संगीत कला में समृद्धता का जन्म हुआ और यह पूर्णतः सत्य भी है कि घरानों के रूप में आज संगीत की महानतम् निधि आज संगीत जगत् को प्राप्त हुई। आज भी घरानों का महत्व है।[1]
- [2].हिन्दुस्तान पर जब अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया था तो हिन्दुस्तान के सामाजिक परिवेष में पुनः परिवर्तन हुआ परन्तु संगीत घरानों के माध्यम से परिपोषित होता रहा। इस नजर से संगीत के क्रियात्मक पक्ष की साधना निस्सन्देह महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। प्राचीन समय में संगीत कला को आध्यात्मिकता के जिस धरातल पर स्थित किया गया था उसे ही एक प्रकार से घरानेदार संगीतज्ञों ने महत्व दिया घराने बनने के कारणों पर दृष्टिपात करने से यह तो निशिचित रूप से स्पष्ट हो जाता है कि यह घरानेदार संगीतज्ञ सम्भवतः राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियों के कारण ही संकुचित मनोवृति वाले हो गये थे जिनके अनेकानेक वर्ग बन जाने के कारण स्वार्थपरता, संकीर्णता, ईर्ष्या, अशिक्षा आदि उनके व्यक्तित्व में प्रवेश कर गई थी परन्तु फिर भी घरानों की वजह से यों भी कह सकतें है कि घरानों के माध्यम से संगीत की सिंचित धन राशि सुरक्षित रह सकी यह बहुत ही प्रशंसनीय है लेकिन इसके पीछे कुछ सीमा तक राज्याश्रयों द्वारा की गई सुविधाएँ भी सराहनीय रही थी जिनके

कारण राज्याश्रित संगीतज्ञ निश्चित होकर संगीत साधना में लीन रहते थे। राजा महाराजाओं द्वारा उनको किसी भी बात की कमी नहीं होती थी। जो भी संगीतज्ञों को जरूरत होती वो सब उन्हें राज दरबार से प्राप्त होता था। संगीतज्ञ सिर्फ अपनी गायकी में तल्लीन रहते थे।

दूसरी ओर एकान्तवासी संगीतज्ञ भी प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने सभी प्रकार की सुख सुविधाओं को छोड़कर जंगल में गुरूकुल बनाकर संगीत की साधना की। फिर भी घरानेदार शिक्षण पद्धति में घरानों के अस्तित्व के मूल कारणों के अन्तर्गत कुछ प्रमुख कारणों का पुनः उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है।

1. संगीत की शिक्षा में संयम, धैर्य तथा अपने गुरू के प्रति आस्था होना।

2. गुरू शिष्य के बीच बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। गुरू शिष्य के मध्य पिता पुत्र

जैसा प्यार विश्वास और श्रद्धा का सम्बन्ध होना।

3. शिष्य की कठिन परीक्षा लेकर उसकी योग्यता का अनुमान लगाकर ही उसको संगीत

की शिक्षा देना।

4. अपने घराने के नियमों, परम्पराओं, कायदों, आचरण, अनुशासन व व्यवहार को अपनी

वंश परम्पराओं के समान सम्मान देना।

5. साधना व लगन से बनाई हुई अपनी गायकी को सीना–ब–सीना तालीम के माध्यम से

शिष्य के कंठ में उतारने के लिए प्रयत्नषील होना।

इन सभी गुणों के कारण ही आज सम्भवतः घरानों ने अपनी जड़े इतनी गहरी जमायी कि आज सामाजिक परिवेश परिवर्तित हो जाने शिक्षा की सुविधाए बढ़ जाने तथा पाश्चात्य सभ्यता से प्रेरित मानसिक विचारधाराओं के होते हुए भी किसी संगीतज्ञ का नाम किसी घराने के साथ जुड़े होने पर स्वतः उसके महान् संगीतज्ञ होने का भाव मन में सामान्यतः उत्पन्न हो जाता है। घराना परम्परा की शिक्षा मौखिक ही थी। इस शिक्षा प्रणाली के गुण तो स्वयं सिद्ध ही है। परन्तु जो दोष इस पद्धति में थे उनकी विवेचना भी करना अति आवष्यक है।

किसी गुरू की गायकी की विशेषताओं तथा आवाज़ की प्रकृति से युक्त सभी विशेषताओं से युक्त गायन की शैली को उस गुरू के शिष्य और प्रशिष्य घराने के प्रति समर्पण के कारण आस्था के कारण एवं श्रद्धा के कारण तथा विशिष्ट अनुशासन, रीतियों व कायदों का पालन करने की मनोवृति के कारण ज्यों का त्यों अनुकृत करने की चेष्टा करने के फलस्वरूप जहां वह उस गायकी के गुणों को आत्मसात करते जाते थे वहीं कठ दोषों व किन्ही शारीरिक दोषों को ग्रहण करने से भी नहीं हिचकिचाते थे।

और इन सब में भी वह गर्व का अनुभव करते थे और अपनी आवाज़ मघुर व कोमल होते हुए भी उसे गुरू की कंठ ध्वनि (चाहे गुरू की आवाज़/ध्वनि में दोष हो जैसे खरखरी, मोटी या नाक से हो) के अनुरूप बनाने की चेष्टा करते थे और उस कंठध्वनि की विशेषता को गायकी का ही विशिष्ट अंग मान लेते थे।

अर्थात गुरू की हू–ब–हू नकल करते थे। चाहे गुरू की आवाज़ में कितने भी विकार हो परन्तु शिष्य उसे श्रद्धा से करते थे। यह सब करने शिष्य अपने गुरू और घराने के प्रति आदर भाव प्रकट करते थे।

आवाज़ प्रभु की देन है और सुर–ताल जन्म के साथ ही आते है। मुझे यह लगता है कि सुर–ताल के साथ गाना बजाना उनको मिलता है जिन्होने पहले खूब दान किया हो और खूब सुर की साधना की हो। यह पूरा तथ्य इस बात को भी स्पष्ट करता है कि हम पहले भी इन्सान थे और आज भी इन्सान है मेरे विचार से।

घराने में निहित संकीर्णता के कारण संगीत की शिक्षा प्रमुख व योग्य शिष्यों को एकांत स्थान पर दी जाती थी तथा उसको मना किया जाता था कि वह यह शिक्षा किसी अन्य को न दे इस बात का वचन लिया जाता था।

शिष्य की कंठध्वनि को संस्कारित व शास्त्रीय संगीत के अनुकूल चमकदार व असरदार बनाने में गुरू व शिष्य का अधिक समय व्यतीत हो जाता था और साधना पक्ष निश्चित रूप से प्रबल हो जाता था, परन्तु बहुर्मुखी प्रतिभा वाला विद्यार्थी भी एकांगी होकर रह जाता था और उस समय के नियम भी थोड़े सख्त थे जैसे गुरू अपने शिष्य को अपनी ही प्रति कृति बनाने के प्रयत्न में उसे तालीम पूरी होने तक न

तो अपना संगीत किसी दूसरे को सुनाने का अवसर देता था, न ही किसी दूसरे गायक के संगीत को सुनने की आज्ञा देता था। [2]

इन सबके लिए कुछ सीमा तक तो यातायात के साधनों का अभाव तथा वैज्ञानिक संयन्त्रों का अभाव भी उत्तरदायी था।

[3] **उस्ताद मुश्ताक हुसैन खाँ जीः–** के मतानुसार संगीत विद्या एक घराने में नहीं मिल पाती है। यदि हमें अलग रंग चाहिए तो जिन उस्तादों के पास वो रंग है तो वहॉ भी जाना चाहिए। अलग–अलग गुरूओं के पास सीखना चाहिए।

मुण्डकोपनिषद् के अनुसार :– स्वर शब्द का संगीत मूलक अर्थ ब्राहमण काल में ही विकसित हो चुका था। ब्राह्मण काल में सामगान का व्यवस्थित रूप देखने को मिलता है। उस समय गुरूकुल हुआ करते थे। वहॉ पर शिष्य गुरूओं की सेवा करते थे तथा संगीत की आराधना में लीन रहते थे। इन आश्रमों में/गुरूकुल में साम गान की शिक्षा मौखिक रूप में ही दी जाती थी जिसके परिणामस्वरूप वेद को अनुश्रव भी कहा गया।

गुरूमुखादनुश्रुयते इत्यनुश्रवोवेदः– गुरू के मुख से जो भी ध्वनि निकलती उसे शिष्य सुनकर याद कर लेता था और वैसा का वैसा ही गा देता था। वेदों के पश्चात अनेक गीतियां व जातियां प्रचलित हुई और बाद में प्रबन्ध का आगमन हुआ। प्रबन्ध के तीन विभाग थे।

(1) सूड़(2) आलि (3) विप्रकीर्ण।

इनके प्रत्येक के अनेक उपविभाग थे। प्रबन्ध के पश्चात ध्रुपद का आविर्भाव हुआ। ध्रुपद के पश्चात् जब ख्याल का आगमन हुआ, तो इसमें वर्ग या घराने बन गए।

राजाओं को प्रसन्न करने के लिए दरबारी प्रतियोगिताओं जीतने के लिए विभिन्न प्रकार के नये–नये चमत्कारिक स्वरों के प्रयोग हेतु संगीत जीव व संगीतोपासक वर्गों के द्वारा विकसित संगीत में गान शैलियों की विविधता के परिणामस्वरूप घरानों का जन्म हुआ।

डॉ. सुमति मुटाटकर के अनुसार :– '' जब मध्य काल की समाप्ति पर दरबार के संगीतज्ञ विभिन्न रियासतों में नियुक्त हो गये उन्हें दरबारी संगीतज्ञ कहा गया। यहां पर संगीतज्ञों ने संगीत की बहुत साधना की। साधना करना ही उनका मुख्य कार्य

था। खाने–पीने की कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वे दरबार में रहते थे। परन्तु ये संगीतज्ञ अशिक्षित थे इसी कारण ये संगीत के प्रति वैज्ञानिक व उदार दृष्टिकोण न अपना सके और दूसरे गायकों के प्रति ईर्ष्या भाव बनाकर इन्होनें स्वयं को सबसे श्रेष्ठ समझा। ये अपने शिष्यों को भी अपनी कला स्वयं तक सीमित रखने का आदेष दिया करते थे। इस प्रकार संगीतज्ञों के शिष्यों, प्रशिष्यों के रूप में विभिन्न घराने स्थापित हो गए।''

घराने की मुख्य विशेषता यह है कि इनके विकास क्रम के अन्तर्गत शताब्दी से चलती हुई परम्परा, उच्च कोटि के गुरू व शिष्य, स्नेह, श्रद्धा, विश्वास उनके व्यक्तिगत सम्बन्ध शैक्षणिक मर्यादाएं एवं सीमाएं आदि का सम्मिलित रूप ही घराने को सार्थक करते है। [3]

[4]संगीत की शिक्षा का मुख्य कार्य संस्कृति एवं सभ्यता को सुरक्षित रखना है। संगीत का मानव जीवन में भी बहुत महत्व हैं। संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियां और सांगीतिक सांस्कृतिक परम्पराओं का मूर्तिमान प्रतीक है। संगीत अपनी संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुॅचाता है। मानव जीवन में संगीत का बहुत योगदान है। कला संस्कृति का आइना है और संस्कृति कला की प्रेरणा। संगीत व संस्कृति दोनां ही एक दूसरे के बिना अधूरे है। संगीत और संस्कृति का विकास एक–दूसरे पर निर्भर रहता है।

घरानागत परम्परा विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा, संगीत सेवी संस्थान और गुरूकुल में दी जाने वाली संगीत शिक्षा आदि सभी में वैयक्तिक अथवा सामूहिक रूप में अपनी–अपनी विशेषताऍ, निहित होती है। ये सब किसी न किसी रूप में संगीत का व्यापक प्रसार करते है।

भारत जेसे देश में वेदों के काल से ही संगीत शिक्षा गुरू मुख से दी जाती थी। इस काल में शिष्य को गुरूकुल में रहकर गुरूमुख से निःसृत वाणी को कठोर अनुशासन नियमित एवं संयत जीवन व्यतीत करते हुए निरन्तर रूप से ग्रहण करते जाना ही शिक्षा का एक मात्र साधन था। देखा जाये तो संगीत की दृष्टि से इस प्रकार की शिक्षा उचित है क्योंकि संगीत एक ऐसी कला है जो मष्तिष्क द्वारा कम तथा हृदय

द्वारा अधिक ग्रहण योग्य है वैदिक काल से ही संगीत शिक्षा में उनके आध्यात्मिक धरातल को अत्यन्त महत्व दिया गया। [4]

मेहदी हसन साहब के घराने का परिचय :– आप स्वयं इस घराने की सोलहवी पीढ़ी के कलाकार है और आपकी पन्द्रह पीढ़ियों से संगीत चला आ रहा है। आपके परदादाजी उस्ताद कलाम बख्शु खाँ साहब भी उच्चकोटि के संगीतज्ञ थे। आपको गाने में और सारंगी बजाने में महारत हासिल थी। आपका गाना बजाना नवलगढ़ दरबार और मण्डावा दरबार में होता था। आपको संगीत का बहुत इल्म था। आपके जो भी सन्तान पैदा हुई वह भी संगीत में रूचि वाली हुई और उन्होने इस परम्परा को बरकरार रखा। वे सभी एक के बाद एक इसमें रमते गये और आज उसी का नतीजा है कि खाँ साहब जैसे दिग्गज गायक ग़ज़ल गायकी के फन से दुनिया को मोहित किये हुए हैं।

आपने बचपन में शास्त्रीय संगीत की तालीम अपने चाचा,वालिद एवं दादाजी से ली थी। इसी कारण जब भी आप गाते हैं तो वह पूर्णरूप से शास्त्रीय संगीत की झलक दिखाती है क्योंकि आपकी अधिकतर रचनाएँ राग पर आधारित है। आपकी बचपन से ही शास्त्रीय संगीत में काफी रूचि रही। आपके चाचा ने आपको कई ध्रुपद और ख्याल सिखायें थे। इसका कारण यह था कि मेहदी हसन सा. के दादा उस्ताद इमाम खाँ सा.खुद ध्रुपद धमार एवं ख्याल सीखाये और उन बेटों ने अपनी अगली पीढ़ी के बेटों को भी वही तालीम दी। पीढ़ी दर पीढ़ी ध्रुपद धमार और खयाल का वर्चस्व बढ़ता रहा। शास्त्रीय संगीत इन पन्द्रह पीढियों ने संवार के रखा। खाँ साहब ने (जो इस घराने की सोलहवी पीढ़ी के कलाकार है) भी इस परम्परा को खूब निभाया और खाँ सा. ने शुरूआती दिनों में ठुमरी, ख़याल, दादरा और ध्रुपद ही गाये थे। परन्तु प्रभु की लीला को कौन समझ सकता है –

प्रभु ने तो पहले ही तय कर रखा था कि मेहदी हसन सा. का जन्म तो सिर्फ ग़ज़ल के लिए हुआ है। आप और ग़ज़ल दोनों एक दूसरे के लिए बने है तभी तो पाकिस्तान की नूरजहां ने कहा कि– ''मुझे तो हैरत होती है कि कैसे कोई ऐसे गा सकता है। सौ दो सौ साल तो कोई दूसरा मेहदी हसन पैदा नहीं हो सकता'' नूरजहां जो खुद स्वर माधुर्य की साम्राज्ञी। उस्ताद यासीन भारती कहते है ऐसा सुर अभी तक

नहीं सुना है। खान सा. ने बरसों से चली आ रही शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद, धमार, टप्पा, ठुमरी और खयाल की घरानेदार परम्परा को छोड़कर ग़ज़ल का दामन थामा।

आपके चाचा व वालिद उस्ताद अज़ीम खान सा. का ध्रुपद गायन उस समय बहुत प्रसिद्ध था। इसी वजह से खान सा. को संगीत का संस्कार जन्म से ही प्राप्त था।

घराने का उद्‌गम और उसकी विशेषता :– आपके घराने का उद्‌गम राजस्थान के झुन्झुनू जिले के लूणा गांव से ही हुआ है। क्योंकि आपकी सभी पीढ़ियां इसी गांव में रही और आपने बाद में पाकिस्तान की नागरिकता धारण कर ली। परन्तु आपके गाने में राजस्थान की महक आज भी आती है और हमेशा आती रहेगी क्योंकि आपका राजस्थान की मिट्‌टी से आत्मा से लगाव था। साथ ही साथ यहॉ से (राजस्थान से) दूर होने का अहसास उनकी गाई हुई तमाम चीजों में था।

आपके घराने को अगर ''हसन घराना'' कहा जाये तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

विषेष :–(1) 2009, में मैने आरिफ हसन जी से बात की और उनसे कहा कि मेंरी खान सा. से बात करवा दीजिए तो उन्होंने मेरी बात खान सा. से करवाई.....
....

मैंने खान सा. से दुआ–सलाम की और ये पूछा कि खान सा. आपके घराने को हसन घराना कहें तो इसमें कोई प्रोब्लम है क्या.....तो खान सा. ने कहा नहीं नहीं.....शुक्रिया।

(2) सुलतान खान साहब (सारंगी नवाज) :– मैने सुल्तान खान साहबसे मुलाकात की और खान सा. के बारे में कई बातें की। मैने सुल्तान खान सा. से भी पूछा कि मेहदी हसन साहब के घराने का नाम हसन घराना होना चाहिए या नहीं। तो सुल्तान खान सा. ने कहा बेशक हसन घराना ही होना चाहिए– और

मेहदी हसन खान सा. ने ही ग़ज़ल की सच्चाई को दुनिया से रूबरू करवाया है।

(3) उस्ताद पूरण चन्द वड़ाली (सूफी गायक, पंजाब) :– आपने भी खान सा. के घराने को हसन घराना कहा है। आप भी इनके मुरीद है। आप इनको बहुत चाहते है –

(4) उस्ताद यासीन खान :– आप स्वयं सेनिया घराने के वंशज है और साथ ही बाबर गौत्र के हिसाब से मेहदी हसन साहब के छोटे भाई भी है। आप खुद यह कहते है कि मेहदी हसन साहब ने एक फूल की खुशबू की तरह अपने पूर्वजों को खुशबू में भिगो दिया – अर्थात सभी पूर्वजों का नाम कर दिया। अपने फन से पूरी दुनियां में नाम कर दिया। यह बाबर गौत्र और हसन घराने का कमाल है। मेहदी हसन भाई साहब का घराना हसन घराना ही कहलाना चाहिए।

उस्ताद तारी खान साहब :– आप भी खान साहब के शागिर्द है। आप से जब मेंरी बात हुई तो आपने भी यही बात कही कि इस घराने का नाम हसन घराना ही है। आप खान सा. के साथ वर्षो तक रहे और खान सा. के साथ कार्यक्रमों में तबला वादन किया।

श्री अखिलेष झा :–आपके मतानुसार खान सा. ने ही इस ग़ज़ल की परम्परा को बढ़ावा दिया है तथा खान सा. ने अपने पूर्वजों की ध्रुपद धमार एवं ख़्याल की परम्परा को छोड़ कर ग़ज़ल गायकी को चुना एवं आपका घराना हसन घराना ही है। इसका पूरा श्रैय खान सा. को है।

श्री राज वोहरा :– राज वोहरा जी को खुद खान सा. ने कहा कि राज, मेरी यह ईच्छा है कि मेरे घराने को लोग हसन घराने के नाम से जानें। राज वोहरा जी मुम्बई में रहते है। खान सा. के बहुत करीबी है। खान सा. ने इनको अपना बेटा बना रखा है।

चन्दन दास (ग़ज़ल–गायक) :– आप भी खान साहब के चाहने वालों में से एक है। आप खान के बारे में बताते है कि उन्होंने ना तो किसी की नकल की और ना ही किसी की गायकी का अनुकरण किया। वे सिर्फ अपने दिल में उपजी बातों को गाते थे और ग़ज़ल गायकी में जो उन्होंने अपना काम दिखाया वो किसी के वष का नहीं है। ये उनके अपने घराने का काम था और उनका घराना हसन घराना कहलाये तो इसमें कोई शक नहीं।

राजकुमार रीजवी :– आप खान सा. के शागिर्द है। मेरी जब रीजवी जी से बात हुई तो उन्होंने कहा कि खान साहब की गायकी ने इस घराने का नाम रोशन किया है अतः इसे हसन घराने के नाम से ही जाना जायेगा।

नारायण सिंह ठाकुरः–ये खान सा. के परम् एवं घनिष्ठ मित्र हैं और साथ ही साथ ये इमाम खान साहब के भी शागिर्द रहें है। ये वो शख्स है जिन्होंने मेहदी हसन सा. के साथ अपना बचपन बिताया। आपने उनके रियाज़ को सुना है, देखा हैं। आपने खान साहब के बारें में निम्न दोहे प्रस्तुत किये जो खान साहब पर सटीक बैठते है –

[5]मेहदी हसन प्यारों कयॉ, जन्मियों गवैया ठान में।

दूर निशान जब लगै, करामात हो कमान में।।

मेहदी हसन जब गाता है राग, जल जाते हैं चिराग।

मरूभूमि में जाया है, जगत में नाम पाया है।।

गाने का घराना था, इसको सदा ही गाया।

आया मेहदी हसन ग़ज़ल गायक, जग में नाम कमाया।।

ग़ज़ल गुणी जग में घणा, गाते रोज जुरूर।

'लूणा' घरा में ऊफनिया, भारत का कोहिनूर।।[5]

इन सभी दोहों में खान सा. के घराने की उद्‌गम स्थली एवं उनकी यश गाथा प्रकट हो रही है। इन सभी से यही प्रकट होता है कि खान सा. ने ही ग़ज़ल को चोटी पर पहुंचाया है। नारायण सिंह जी भी बताते है कि आपका घराना हसन घराना है। इनके घर में सभी ध्रुपद धमार गाते थे ठुमरी गाते थे परन्तु ग़ज़ल तो सिर्फ मेहदी हसन साहब ने ही गाई है।

डॉ.प्रेम भण्डारी :– आपके अनुसार ग़ज़ल को सही रूप में खान सा. ने ही प्रस्तुत किया। आपने भी कईं किताबें लिखी हैं और लिख रहे हैं। आपने अपनी पुस्तक हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी में भी हसन घराने का जिक्र किया। आपने यह किताब सन् 1993 में लिखी। आपने भी कई अनुभवों के पश्चात् खान सा. के घराने का नाम हसन घराना बातया है। आपने खान सा. को ग़ज़ल गायकी का हीरा बताया है।

अनुप जलोटा जी :–ये घराना हसन घराना ही कहलाना चाहिए क्योंकि आपने ग़ज़ल गायकी में जो स्वरों के रंग भरे वे काबिल–ए–तारीफ है। हसन घराना आने वाली पीढ़ियों के लिए ग़ज़ल गायकी में एक सुमार्ग का कार्य करेगा क्योंकि आपने राग को

राग ही रखा। एक ही राग में सारा प्रस्तुतिकरण किया फिर चाहे उस राग की ग़ज़ल को आपने एक दो घण्टें भी गाया तो उसमें अन्य रागों का मिश्रण नहीं किया।

हँसराज हँसः– आप कहतें है कि खान सा. को ग़ज़ल की जितनी उपाधियां दी जाये वो भी कम है। आप हसन घराने के स्वयं आविष्कर्ता है। जो आपने ग़ज़ल की ख़िदमत की उसे सारा संसार जानता है। आपके घराने का नाम 'हसन घराना' उपयुक्त है। आपकी गायकी को सुन सुन के सभी ग़ज़ल गायक आपकी स्टाईल को ही फोलो कर रहे है। उसका कारण यह भी रहा है कि आपने कभी किसी को फोलो नहीं किया। आपकी जो गाने की स्टाइल है वह स्वयं आपकी है। आपने कभी किसी की नकल नहीं की। आप हसन घराने के निर्माता है।

ग़ज़ल गायकी के नया मोड़ नया रूप देने वाले मेहदी हसन खान साहब ही है। इन्होंने किसी का भी अनुसरण नहीं किया जो कुछ भी इन्होनें सीखा वो अपने चाचा उस्ताद इस्माइल खान सा. एवं वालिद उस्ताद अज़ीम खान सा. से सीखा उसी को ग़ज़ल में प्रयोग किया। खान साहब ही क्यों सभी ग़ज़ल गायकों में सर्वश्रेष्ठ है, इसका पता हमें इस प्रकार चलता है –

ग़ज़लों के गायक,ग़ज़लों के हज़ारों हज़ार श्रोता कई–कई साक्षात्कारों, शायरों, ग़ज़ल गायन की महफिलों और ग़ज़ल गायकी के विश्लेषण के सन्दर्भों में पुरजोर शब्दों में यह कहते लिखते सुने पढ़े जा सकते है कि हिन्दुस्तानी उप महाद्वीप की ग़ज़ल गायकी में मेहदी हसन खान साहब एक बेजोड़ नाम है। खान साहब ने ग़ज़ल गायकी में अच्छी शायरी, अच्छे राग, सरल तालें, अच्छे, शब्द, आलापों का प्रयोग, भाव और रस की उत्पत्ति के लिए आवाज़ और स्वर संयोजनो का प्रयोग आदि ऐसी कई विशेषताओं का संगम है जिनका उनके बाद के कई ग़ज़ल गायक अनुसरण कर रहें है।

[6]वर्तमान में जो ग़ज़ल गायन की शैली प्रचलित है उस शैली का जन्मदाता खान साहब को ही माना जाता है। आज के दौर में जितने भी ग़ज़ल गायक हैं उनके गाने में कहीं न कहीं मेहदी हसन सा. है। ग़ज़ल गायन शैली में उनका रंग साफ नजर आता है। आपकी ग़ज़ल महफिलों को लोग बरसों तक नहीं भूल पाते है। ये आपकी गायकी का असर हैं। इसी क्रम में मैं एक और विशेष बात बताना चाहूंगा। मेहदी

हसन साहब की महफिल का रंग लोगों के ज़हन से कई कई दिनों तक नहीं निकलता है। उसका कारण राग में रहकर ग़ज़ल को इस तरह बढ़ाते हैं मानो किसी राग के ख़याल का स्वर विस्तार चल रहा हो। यही इनके घराने की खास विशेषता है कि जो राग चल रहा है उसी में रहते हुए सारा काम दिखाना और यही कारण है कि खान सा. की ग़ज़ल महफिलों को लोग लम्बे समय तक याद रखते हैं।

वहीं दूसरी ओर गुलाम अली खान साहब– आपकी महफिल को लोग ज्यादा दिन तक अपने ज़हन में नहीं रख पाते उसका कारण गुलाम अली सा. अपने गायन में अनेक रागों का प्रयोग करते है। रंग उसी का रहता है जो उसी रंग में सबकों रंग दे। खान सा. ने अपने नाम को सार्थक किया–मेहदी की तरह पूरी ग़ज़ल को रंग दिया। खान साहब ने ग़ज़ल गायकी को एक नया रंग उस ज़माने में दिया जब ग़ज़ल गायकी पर ठुमरी, टप्पा और दादरा का प्रभाव नजर आता था। ऐसे में ग़ज़ल को ग़ज़ल की तरह ही गाने का अन्दाज आपने दिया तथा वो इतना अधिक कर्ण प्रिय एवं दिल को छूने वाला था कि आम इन्सान से लेकर संगीत जानने वाले उस्तादों ने भी उसे स्वीकार किया तथा इस शैली का आज भी हर ग़ज़ल गायक की ग़ज़ल गायकी पर प्रभाव नजर आता है। तभी तो खान साहब शहँषाह–ए–ग़ज़ल कहलाए।

मेहदी हसन साहब की आवाज़ में हल्का सा खरखरापन तथा ख़ुमारी लिए हुए है। गायकी में स्वरों की सच्चाई है। खान साहब ज्यादा ऊपर नहीं गाते थे। वे ज्यादातर मन्द्र सप्तक के पंचम और तार सप्तक के गंधार तक गाते थे। आपका गायन मध्यसप्तक में ही होता था। स्वरों को शुद्धता के साथ लगाने में आपकों महारत हासिल थी।

मेहदी हसन साहब की आवाज़ में एक गहराई और गम्भीरता थी जो ग़ज़ल गायन के लिए बड़ी ही उपयुक्त मानी जाती है। आपने बहुत रियाज़ किया था इसी वजह से आपकी आवाज़ में भारीपन था तथा आप बहुत ही सुरीली आवाज़ के धनी थे। आप जब स्वर लगाते थे तो ऐसा लगता है मानो तानपुरे की ध्वनि भी आपकी आवाज़ के साथ प्रवाहित हो रही है। खान साहब के स्वर लगाते ही सभी श्रोता स्वरों की गहराई में डूब जाते हैं और शब्द खान साहब की गायकी का सहारा पाकर अपने में छुपे भावों को स्वयं ही प्रकट करने लगते है। खान साहब शब्दों के सही उच्चारण

का बहुत ध्यान रखते थे। एक ही शब्द को कई स्वर संयोजनों के साथ गाने में उन्हे कमाल हासिल थी। आपने शब्दों और स्वरों के साथ न्याय किया।

सबसे बडी ख़ासियत आपकी यह है कि आप शब्दों की भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत करने में बेजोड़ है। कहां, किस शब्द पर रूकना है या जल्दी बोलना है या कहां हल्का एवं कहां जोर से बोलना है, ये आप खूब जानते थे शब्दों के शुद्ध उच्चारण पर आपकी विशेष पकड़ थी। शब्दों के शुद्ध उच्चारण के साथ अपना भाव प्रकट करने में भी आप बहुत माहिर थे। आपकी गायी हुई ग़ज़लों में रागों की स्पष्ट झलक मिलती है। आपने रागों में ही ज्यादा रचनाएँ बनाई थी।

1. ग़ज़ल की सांगीतिक बंदिश में वे ये ध्यान रखते थे कि राग का स्वरूप नहीं बिगड़े। आपने अपनी ग़ज़लों की बंदिशों में निम्न रागों को काम में लिया – यमन, गौड़ मल्हार, तोडी, काफी, किरवानी, मांड, अहिर भैरव, झिंझोटी, कलावती, पटदीप, भीमपलासी, खमाज, भूपाली, भैरवी, पहाड़ी, विभास आदि रागों का प्रयोग किया। आप रागों को बहुत ही सरलता से प्रस्तुत करते थे और रागों में ही रहकर उस ग़ज़ल को बहुत रोचक बना देते थे।

2.आपके गायन में शास्त्रीय संगीत की बारीकियां कूट–कूट कर भरी हुई थी। आप अपनी गायन शैली में आलाप और छोटी–छोटी तानों का प्रयोग जरूरत के अनुसार बड़ी खूबी से करते थे। ग़ज़ल के मतले और शेर में आलापों तानों का प्रयोग इतना भी नही करते थे कि उसका रूप ही बिगड़ जाये। जहां लगता था वहां पर ही वो प्रयोग करते थे। आपकी एक और खास बात आपकी ग़ज़लों में आलापों का प्रयोग शब्दों के साथ ही होता था,जिसे बोल आलाप भी कहा जा सकता है– उदाहरण के लिए खान सा. की ग़ज़ल गुंचा–ए–शौक लगा है खिलने में जो शेर है मैने हंसकर तेरी बाते की थी। इसमें खान सा. ने मैने हंसकर को बहुत अच्छे तरीके से लिया और यह शेर बोल आलाप का एहसास करवाता है। खान साहब ने अपनी गायकी में सरगम का प्रयोग न के बराबर किया था और जो इनकी गायकी की विशेषताएँ थी, वह इनके द्वारा गायी हुई ग़ज़लों में मुर्की, खटका, मींड तथा कण स्वरों का प्रयोग सबसे ज्यादा सुनने को मिलता है। आप शेर में से किसी एक शब्द को लेकर उसमें आलापचारी करते थे और उस शब्द के भाव को अपनी गायकी के माध्यम से प्रदर्शित करते थे। जिस राग में वह रचना बनाते थे उस राग के स्वरूप को कभी नष्ट नहीं होने देते थे

उसे पूर्णरूप से शुद्ध ही रखते थे। ये आपकी खास विशेषता थी। एक ही राग में इतना कुछ कर देते थे कि श्रोता अपने आप को वाह उस्ताद वाह कहने से रोक नहीं पाते। ये विशेषता सिर्फ खान सा. में ही है और ऐसा सामर्थ्य अन्य किसी ग़ज़ल गायक में नहीं है। यह सब आपके पूर्वजों का आशीर्वाद है जो खान सा. को विरासत में अच्छा गायन सीखने को मिला और आपने इसमें जो मेहनत की वो सबसे अहम् थी।

6

खान साहब अपनी गायकी और आवाज़ के माध्यम से सुख–दुःख, प्रेम, रोष, अधिकार, प्रेम, अनुनय, विनय, वियोग आदि भावों को बड़ी खूबी के साथ प्रदर्षित करते थे। प्रेम मोहब्बत की ग़ज़ल जैसे.....

ज़िन्दगी में तो सभी प्यार किया करते है।

मैं तो मरकर भी मेरी जान तुझे चाहूंगा।।

शायर क़तील शिफाई की ये ग़ज़ल प्यार को इंगित करती है। इसी तरह एक और ग़जल –

रफ्ता रफ्ता वो मेरी हस्ती का सामां हो गये।

पहले जां, फिर जाने जां, फिर जाने जाना हो गये।।

इसमें भी शायर तसलीम फ़ाज़ली ने धीरे धीरे मुहब्बत किस तरह बढ़ती गई, उसे प्रदर्षित किया है।

– अब के हम बिछड़े तो शायद कभी ख्वाबों में मिले।

जिस तरह सूखे हुए फूल किताबों में मिलें।।

फ़राज़ साहब की ये ग़ज़ल विरह वेदना को प्रकट कर रही है।

खान साहब ने शब्द के भावानुसार उसमें वो रस भरा है। जैसे दुःख है तो खान साहब ने उसी के अनुसार राग का चयन भी किया है। इसी तरह आपने जिन मुख्य तालों का प्रयोग किया है। उनमें दादरा,रूपक और कहरवा ताल प्रमुख है।

(1) तालों की जानकारी :– दादरा 7

6 मात्रा, 2 विभाग, 1 पर ताली, 4 पर खाली, प्रत्येक विभाग में 3–3 मात्राएँ आती है।

बोल –	धा	धिं	ना	धा	तिं	ना
ताल चिन्ह	X			0		
मात्राएँ–	1	2	3	4	5	6

<u>कहरवा ताल –</u>

8 मात्रा, 2 विभाग, प्रत्येक विभाग में 4–4 मात्राएँ आती है। 1 पर ताली, 5 पर खाली।

बोल –	धा	गे	न	ति	न	क	धि	न
ताल चिन्ह–	X				0			
मात्राएँ–	1	2	3	4	5	6	7	8

<u>रूपक ताल :–</u>

7 मात्रा, 3 विभाग, पहले विभाग में 3 मात्राएँ, दूसरे और तिसरे विभाग में 2–2 मात्राएँ आती है 1 पर खाली, 4 और 6 पर ताली आती है।

बोल –	तिं	तिं	ना	धीं	ना	धीं	ना	
ताल चिन्ह–	X			2		3		
मात्राएँ–	1	2	3	4	5	6	7	(7)

खान साहब की गायकी में अधिकांशतः ठेके का मूल रूप ही इस्तेमाल हुआ। कभी–कभी थोड़े से हेर–फेर के साथ भी ताल ठेकों का प्रयोग सुनने को मिलता है– जैसे आपकी ग़ज़ल अब के हम बिछड़े में तारी खान सा. ने अन्तराल में जो तबला बजा रखा है वो काम किसी से कम नहीं। स्थाई और अन्तरे के बीच में लग्गी लड़ी बजाने का काम जो तारी खान साहब ने किया वो काम अन्य तबला वादकों से भिन्न है। आपने ग़ज़ल गायकी में तबले को एक अलग पहचान दिलाई है और ग़ज़ल गायकी में तबले की संगत कैसी होनी चाहिए उसका परिचय पूरी दुनिया को करवाया है।

[8] मेहदी हसन साहब की गायी हुई ग़ज़लों की भाषा ज्यादा मुश्किल नहीं है। वैसे भी जो शब्द कठिन होता उसको वे बता भी देते थे। खान साहब अपनी महफिल में वाद्य यन्त्रों के नाम पर दो तो हारमोनियम और एक तबला रखते थे। एक हारमोनियम को

तो आप स्वयं बजाते थे। कुछ ग़ज़लों के रेकॉर्डस में इनकी गायकी के साथ कुछ अन्य वाद्यों का भी प्रयोग सुनने को मिलता है। जैसे की– बोर्ड बेस गिटार, वायलियन, पेड अकोर्डियन आदि का भी प्रयोग हुआ।[8]

खान साहब में बहुत सारी खूबियां थी वो कई वाद्य यन्त्रों को बजाना भी जानते थे जैसे तबला, ढोलक, सितार तथा वायलिन आदि।

इन तमाम खूबियों से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि आपकी ग़ज़ल गायकी में उच्चारण पर विशेष बल दिया गया, सुरों का ठहराव, पक्की रागदारी (पूरी रचना राग में रंगी हुई), भावों की अभिव्यक्ति और ताल ठेकों का सीधा–सीधा प्रयोग इनकी गायकी में हुआ।

[9] आपकी ग़ज़ल गायकी की मुख्य विशेषता यह भी थी कि वह ग़ज़ल के अन्दर हिन्दुस्तानी संगीत की शास्त्रीयता का प्रयोग आवश्यकतानुसार उचित स्थानों पर करते थे। शब्दों को फैलाने का काम स्वर की उपज के माध्यम से करते थे। जिससे शब्द, स्वर और लय का सहारा प्राप्त करके अपने भावों में स्वतः ही मुखरित होता हुआ श्रोताओं के दिल और दिमाग तक बड़ी आसानी से पहुॅच जाता है।

आपने ग़ज़लों में रागों का भी ऐसा परिचय करवाया है कि नासमझ को भी वो राग समझ में आ जाता।

मेहदी हसन सा. की गायकी के बाद साहित्य एवं संगीत को जोड़ने का सबसे मजबूत कलात्मक माध्यम ग़ज़ल हो गया। आप ग़ज़ल को गाने से पहले उसे अन्तरात्मा से महसूस करते थे इसी कारण भावनात्मक स्तर पर वे अपनी गायकी के द्वारा श्रोताओं का सम्बन्ध स्थापित करने में हमेशा सफल रहते थे। श्रोता एवं उनकी गायकी के मध्य फासला न होता था। अच्छी शायरी का प्रयोग एवं गायन में हमेशा शास्त्रीय संगीत की बारीकियों से जुड़े रहना भी आपकी ख़ासियत थी। इससे संगीत के तमाम चाहने वाले भी उन्हें गंभीरता से सुनते। इसका एक और असर यह भी हुआ कि आम श्रोताओं की भी शास्त्रीय संगीत में रूची उत्पन्न हुई और उसमें आनन्द के साथ शास्त्रीय संगीत को जानने की इच्छा प्रबल हुई और ध्यान भी बढ़ा। आम श्रोताओं को भी धीरे–धीरे शास्त्रीय संगीत की बारीकियां समझ में आने लगी।

ग़ज़ल गायकी में मेहदी हसन साहब ने जिन शास्त्रीय तत्वों को अपनी ग़ज़लों में प्रयुक्त किया वो सब काबिल–ए–तारीफ हैं। खान सा. ने जमजमा, सूत, फिरत, लपक, बहलावे, झपक आदि तानों का प्रयोग भी किया था। जहां भी आपको लगता वे ख़याल ध्रुपद, से लेकर ठुमरी, दादरा और लोक संगीत के तत्व भी ग़ज़ल गायकी में सहजता से अनुस्यूत कर देते बल्कि ऐसा कहना बेहतर होगा कि ये तत्व उनकी गायकी के दौरान स्वतः ही आ जाते थे। ये सब घराने का असर था जिनकी पीढ़ियों ने ध्रुपद धमार, ख़याल, टप्पा, दादरा और ठुमरियां गा–गा के जगत को खूब रिझाया था आखिरकार वो असर कहां जायेगा। यह सब खून का असर है। साथ ही साथ प्रभु का भरपूर आशीर्वाद भी। अच्छे गुरू की छत्र छाया में संगीत की शिक्षा प्राप्त करना।

इन सारी विधाओं का उनका इतना रियाज़ था कि कब कहां कौन सा स्वर लगाना है किसका विस्तार करना..... यह सब अनायास ही हो जाता था। आपकी मुरकियों की बात क्या करें वो तो सबसे हठ के ही है। आप जो मुरकियां लेते थे उनमें किसी भी प्रकार का दिखावा नहीं होता था और ना ही झटका महसूस होता था। इन सबके साथ एक और काबिले–ए–गौर बात है कि वे संगीत की विधाओं में घालमेल नहीं करते थे। उन्होंने जो शास्त्रीय संगीत बचपन में सीखा था उसका उपयोग यथा स्थान करते थे। आपने संगीत के सभी कोमल एवं शास्त्रीय तत्त्वों को आवश्यकतानुसार ग़ज़ल सराई। गायकी में पिरो दिया। ये सभी तत्व दबे पांव आते है ओर दबे पांव निकल भी जाते है। आपकी ग़ज़लें सभी से भिन्न है क्योंकि आपको संगीत की शिक्षा अच्छे गुरूओं से मिली साथ ही साथ आपने बचपन में खेल से ज्यादा रियाज़ को महत्व दिया था। जिसका परिणाम यह हुआ कि ग़ज़ल गायन में उनका पूरा रियाज़ झलकता है। कैसे उन्होने अपने बचपन में इतनी कडी साधना की होगी।[9]

खान सा. जब भी किसी राग में निबद्ध महफिलों में सुनाते तो वे उस राग के महत्व उसके चलन आदि के बारे में श्रोताओं को बताते थ। इसी क्रम में वे आम श्रोताओं को संगीत के अत्यन्त सूक्ष्म तत्त्वों से भी परिचित कराने की कोशिश करते थे। आपकी गायकी की एक और खास बात यह थी कि आप हामोनियम में अधिकतर पहले काले से गाते थे और जो रचना आप गा रहे है तो उसमें राग के तकनीकी बिन्दुओं को इस प्रकार दर्शाते है कि वह राग तुरन्त श्रोताओं के समझ मे आ जाता हैं और श्रोता तुरन्त समझ जाते हैं कि यह राग कौनसा है।

इसी अध्याय में मैं कुछ ग़ज़लें भी बताऊँगा जो खान सा. ने रागों में बनाई है। उन रागों के नाम भी बताऊँगां।

ग़ज़ल की सांगीतिक बंदिशः– खान साहब ने जिन रागों में ग़ज़लें गाई है उनका वर्णन :

राग–पहाड़ी

बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी।

जैसी अब है तेरी महफिल कभी ऐसी तो न थी।

राग–खमाज

मुहोब्बत करने वाले कम न होंगे।

तेरी महफिल में लेकिन हम न होंगे।

राग–गौड़–मल्हार

भूली बिसरी चंद उम्मीदें चंद फ़साने याद आए।

तुम याद आए और तुम्हारे साथ ज़माने याद आए।

राग– केदार

फूल ही फूल खिल उठे मेरे पैमाने में।

आप क्या आये बहार आ गई मैखाने में।

राग – यमन

रंजिश ही सही दिल ही दुःखाने के लिए आ।

आ फिर से मुझे छोड़ के जाने के लिए आ।

राग – यमन

देख तो दिल के जां से उठता है।

ये धुआं सा कहां से उठता है।

राग – भीमपलासी

ज़िंदगी में तो सभी प्यार किया करते हैं।

मैं तो मरके भी मेंरी जान तुझे चाहूंगा।

राग–किरवानी

शोला था जल बुझा हूं हवाए मुझे न दो।

मैं कब का जा चुका हूँ सदाए मुझे न दो।

राग–काफी

रफ्ता–रफ्ता वो मेरी हस्ती का सामां हो गये।

पहले जां, फिर जाने जां, फिर जाने जाना हो गये।

राग–झिंझोटी

गुलों में रंग भरे बादे नौ बहार चले।

चले भी आओं के गुलशन का कारोबार चले।

राग–यमन

क्या टूटा है अन्दर–अन्दर क्यूं चेहरा कुम्लाया है।

तन्हा–तन्हा रोने वाले कौन तुझे याद आया है।

राग–अहीर–भैरव

हमें कोई ग़म नहीं था ग़मे आशक़ी से पहले।

न थी दुश्मनी किसी से तेरी दोस्ती से पहले।

राग–भैरवी

यारों किसी क़ातिल से कभी प्यार न मांगो।

अपने ही गले के लिए तलवार न मांगो।

राग–दरबारी

कूब्कू फैल गई बात शनासाई की।

उसने खुशबू की तरहां मेरी पजीराई की।।

राग–मियॉ की मल्हार

एक बस तू ही नहीं मुझसे ख़फा हो बैठा

मैनें जो संग तराशा वो खुदा हो बैठा।।

राग–भंखार

खुली जो आँख तो वो था, न वो ज़माना था।

दहकती आग थी, तन्हाई थी फ़साना था।।

राग–बिहाग

वो दिल नवाज़ तो है लेकिन नजर शनास नही।

मेंरा इलाज मेरे चारागर के पास नही।।

राग–मालकौंस

क्या भला मुझको परखने का नतीजा निकला

ज़ख्म–ए– दिल आपकी नजरों से भी गहरा निकला।।

राग–नट भैरव

जो चाहते हो सो कहते हो, चुप रहने की लज्ज़त क्या जानो

ये राज़–ए–मुहब्बत है प्यारे, तुम राज़–ए–मुहब्बत क्या जानो

राग–वाचस्पति

इक खलिश को हासिल–ए–उमर–ए–रंवा रहने दिया

जान कर हमने उन्हैं नामेहरबां रहने दिया

राग–किरवानी

गुँचा ए शौक लगा है खिलने

फिर तुझे याद किया है दिल ने

राग–बागेश्री

कैसे लोग हमारे जी को जलाने आ जाते है ।

अपने अपने ग़म के फ़साने हमें सुनाने आ जाते है।।

निष्कर्ष–प्राचीन समय में कुछ ऐसे प्रसिद्ध गायक कलाकार हुए हैं जिन्होंने अपनी प्रतिभा से एक विशिष्ट गायन शैली को जन्म देकर उसे अपने पुत्रों एवं शागिर्दों को सीखाकर प्रचलित किया। उनकी इस शैली का अनुकरण उनके शिष्यगण तथा कुटुम्बी अब तक करते चले आ रहे है। उन गायन शैलियों को ही घराने का नाम दिया। घराना अपने–आप में एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है।

पुस्तकें और इन्टरनेट द्वारा जानकारी-

1– यू. जी. सी. नेट ट्यूटर सीरीज – डॉ. शिखा स्नेही, आकांक्षा सारस्वत, अरिहन्त पब्लिकेशन्स,मेरठ (यू.पी.) 250002, 2008, पृ. 385 से 388 तक

2– संगीत मैनुअल– डॉ. मृत्युंजय शर्मा– एच.जी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 66 से 68 तक

3– यू. जी. सी. नेट ट्यूटर सीरीज – डॉ. शिखा स्नेही, आकांक्षा सारस्वत, अरिहन्त पब्लिकेशन्स, मेरठ (यू.पी.) 250002, 2008 पृ. 388

4– संगीत मैनुअल– डॉ. मृत्युंजय शर्मा– एच.जी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 63 से 64 तक

5– यश बावनी– ठा. नारायण सिंह शेखावत–म्यूजिक कमेटी नई दिल्ली,2012, पृ. 4

6– हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी–डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दी ग्रन्थागार, जोधपुर,1993, पृ.154 व 155

7– संगीत विशारद–वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस 204101, 2002 ,पृ.337 व 338

8– हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी–डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दी ग्रन्थागार, जोधपुर, 1993, पृ.155

9– मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा (आई0 ए0 एस0)–रेमाधव आज प्रा.लि. नई दिल्ली, 2009, पृ. 68

मध्यम

मेहदी हसन साहब का व्यक्तित्व–

आपके गाने मैं और आपके व्यवहार में कोई ही अवगुण नहीं था। व्यक्तित्व की जहां बात आती है तो पहले उस व्यक्ति के सद्‌गुण और अवगुण और अवगुण दोनों का बखान होना चाहिए। सद्‌गुण और अवगुख माता–पिता के संस्कारों से मिलते है। इन सबका श्रैय अपने पूर्वजों के संस्कारों को और खानदान को जाता है। मैं यहां पर दो बातों का जिक्र करूंगा, पहला खान सा. के लिए जितना कहें उतना ही कम है, दूसरा इनके चाचा सावल खान सा. का परिवार–सॉवल खां सा. के परिवार वाले भी उतने ही अच्छे है जितने कि मेहदी हसन जी के। ये दोनों ही परिवार एक ही है। खान सा. झुन्झुनू जिले के लूणा गांव में पैदा हुए। आपके परिवार में संगीतमय वातावरण था। आपको बचपन में ही सुर से लगाव हो गया। आप को भी आपके वालिद सा. जहां भी प्रोग्राम होते, वहां ले जाते थे। आपने अपने चाचा इस्माइल खान साहब से संगीत की शिक्षा ली थी। बचपन में ही आपकी मां ('जोया') का इंतकाल हो गया था। आपके बचपन के दोस्त नारायण सिंह जी, अर्जुन जी खाती, मुराद खान और शौकरण जी खाती थे। आपने बचपन में ही संगीत को सब कुछ मान लिया था और संगीत को ईश्वर मानकर उसकी पूजा–अर्चना शुरू कर दी।

आपने बिना मां के बचपन गुजारा। हालांकि आपकी वालिदा के इंतकाल के बाद आपके वालिद साहब ने दूसरी शादी कर ली थी। परन्तु खान साहब का ख़याल उनके दादा व चाचा ईस्माइल खान सा. ने रखा। इनके वालिद सा. तो बस्ती (उ.प्र.) चले गये थे वे तो ज्यादा समय बाहर ही रहते थे। खान सा. को बचपन में संगीत की शिक्षा घर में ही मिलने लग गयी। आपके चाचा ईस्माइल खान सा. ने आपको संगीत में सबक सीखाना शुरू कर दिया। घर का माहौल भी ऐसा था कि रात–दिन संगीतमय– वातावरण रहता था। खान सा. ने बचपन में सभी कार्यों में से संगीत को ज्यादा महत्त्व दिया। आप खेलने में भी आगे थे। आपको गिली–डण्डा, माचिस की डिबिया वाला (फोन) खेल, छिपन–छिपाई, गिलोल मारना आदि खेल बहुत पसन्द थे। आप अपने दोस्तों के साथ खेल–खेल में स्वंय सरदार बनते और सभी दोस्तों को आवाज़ देते, ''मेरे हुक्म की पालना करो''। खान सा. को बचपन में ही धैर्य की आदत हो गई थी। वह बहुत सहनशील थे। आपका बचपन बहुत राजा–शाही बीता आपने

बचपन में ही अपने आपको बहुत मजबूत बना लिया था। आपका बचपन जो बीता वो भी बिना मां के, तो आपने कैसे अपने आप को संभाला होगा? वो पल आपके लिये बहुत दुखदायी रहा होगा। वो आपसे बेहतर कोई नहीं जान सकता। आपके दोस्त बहुत ही अच्छे थे। आप दिन भर अपने दोस्तों के साथ खेलते थे। शाम को रोज रियाज़ करते थे। आप बचपन मे भी 7–8 घण्टे रियाज़ करते थे। आप हंसी–मजाक भी बहुत करते थे। बचपन में आपकी दोस्ती 60–60 वर्ष के बुजुर्गो से थी। आप उन लोगों के साथ बैठते थे। आप में बड़े लोगों के जैसे तजुर्बे भी थे। गांव में जब भी कोई किसी बिमारी से ग्रसित होता था तो वो इनके पास आता था। इस्माईल खान उनका इलाज करते थे। मेहदी हसन साहब उन्हें देखते थे, कि ये किस प्रकार से उनका ईलाज करते है। एक दिन उनके घर में एक औरत अपने बच्चे को लेकर आई और रोने लग गई। खान साहब ने पूछा क्या हुआ ? औरत बोली बच्चे को जोर से बुखार आ रही है। तब खान साहब ने कहा कि बच्चे को यहां लेटा दो। औरत ने बच्चे को लेटा दिया खान साहब आये और उन्होंने मेहदी हसन साहब का कान पकड़ा और बोले इस तरह का अपमान मुझे बर्दाश्त नहीं है। आज के बाद ऐसा किया तो फिर देख लेना। उसके बाद खान साहब ने कभी वो गलती दोबारा नहीं की।

बचपन में आप खूब घी,दूध व बादाम खाया करते थे। आपके घर में खाने–पीने की कोई कमी नहीं थी। नवलगढ़ व मण्डावा दरबार के यहॉ से आपके परिवार की देखरेख होती थी। बदले मे आपके घर वाले उनके यहॉ कार्यक्रम प्रस्तुत करते थे। आपके घर में पर्दा–प्रथा थी। आपके यहां औरतों का बाहर जाना मना था। आप स्कूल में पढ़ने भी नहीं गये। परन्तु आपको आपके चाचा ने उर्दू बोलना और लिखना सीखाया। नारायण सिंह जी बताते है कि बचपन में जब मेहदी हसन साहब के घर जाते तो खान साहब रियाज़ करते हुए ही मिलते थे। नारायण सिंह जी बताते है कि खान साहब रात–रातभर रियाज़ करते थे। उनको उनके चाचा रियाज़ करवाते थे। उनके चाचा बहुत ही सख्त थे। वे हिन्दी अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी और संस्कृत के बहुत बड़े ज्ञाता थे। खान साहब का बचपन बहुत अच्छा बीता। वो यहां अपने दोस्तो के साथ खूब खेलते थे और रियाज़ करते थे। दोस्त जो उनके घर आते थे, उनमें नारायण सिंह जी मुराद खान अर्जुन जी खाती और शौकरण जी खाती थे।आपको

बचपन से ही गाड़ी चलाने का बहुत शौक रहा। आपने बचपन में कोई भी दुःख नहीं सहा था। आपका बचपन बहुत ही सुखमय और रईस तरीके से निकला।

[1]आप बचपन से ही अपने पिता के साथ कार्यक्रमों में जाते रहते थे। आप जब 7–8 वर्ष के थे तब आपने बड़ौदा के महाराजा के सामने राग बसन्त में खयाल प्रस्तुत किया। महाराजा ने प्रसन्न होकर आपको खूब ईनाम दिया। खान साहब जयपुर के महाराजा के यहां भी बचपन में अपने पिता के साथ आते–जाते थे। आपको महाराजा की गाड़ियों से भी लगाव था आगे के समय के बारे में उन्हें कुछ भी अनुमान नहीं था। लेकिन समय बड़ा बलवान होता है।परिस्थितियां सब करवा देती है। आपके दादा उस्ताद इमाम खान साहब, धुपद–धमार के बहुत बड़े एवं नामी गवैया थे। वैसे भी उस ज़माने में खान साहब के ख़ानदान की गायकी सारी रियासतों में मशहूर थी। आपको उस जमाने में दूसरी रियासतों के भी निमंत्रण मिलने लग गये थे। उस समय राजस्थान में देशी रियासतें बहुत थी और इन सब में कलां के सभी रूपों को प्रश्रय मिलता था। खान साहब के परिवार का पुश्तैनी काम राजपरिवार के लोगों को संगीत की शिक्षा देना था। बदले में इन्हें पूर्ण राज्याश्रय प्राप्त होता था। इमाम खान साहब अपने बेटों को कार्यक्रमों में ले जाते थे। क्योंकि गवैये अपने बच्चों को छुटपन से ही महफिलों में ले जाकर, उन्हें सब लिहाज से तैयार करते है। इसी दौर में खान साहब का नाम भी धीरे–धीरे संगीत की महफिलों में खूब होने लगा। मेहदी हसन साहब में छोटी उम्र होने पर भी उनमें बड़े–बुजुर्गो सी गंभीरता थी। क्योंकि उनका उठना–बैठना बड़े बुजुर्गो में था। खान साहब अपने पिता उस्ताद अज़ीम खान की दूसरी और छोटी संतान थे। आपके बड़े भाई पं. गुलाम कादिर की कम उम्र में ही राज्याश्रय प्राप्त करने में सफल रहे थे। इन दोनों से छोटी एक बहन अम्तू भी थी। अज़ीम खान साहब को दूसरी शादी से भी दो बेटे और दो बेटियॉ थी। गाने से तआल्लुक पंडित गुलाम कादिर और मेहदी हसन जी का ही रहा।

1946 में अज़ीम खान साहब और मेहदी हसन साहब का पंजाब में कार्यक्रम था। वहां उनके साथ पं. गुलाम कादिर भी थे। पंजाब के पाकपत्तन में सुरों की महफिलें हो रही थी, इधर देश में साम्प्रदायिक दंगें फैल गये। इन दंगों में राजस्थान भी अछूता ना रहा। अज़ीम खान साहब को जब ये बात पता चली तो उन्हें परिवार की चिन्ता सताने लगी उस समय यह बात आग की तरह फैल गयी अज़ीम खान साहब

ने गुलाम कादिर साहब एवं मेहदी हसन साहब को बहिन के पास जो छिछावतनी में ब्याही थी। के पास छोड़ गये और परिवार के बाकी सदस्यों को लाने राजस्थान चले आये इस समय मेहदी हसन साहब 17–18 वर्ष के थे अज़ीम खान साहब राजस्थान में आये अपने बीबी बच्चों को लिया और घर में जो भी गहने व नगदी थी वो लेकर वापिस छिछावतनी आ गये। मेहदी हसन जी कहते है कि उनके पिता ने यह नहीं सोचा था कि वे कभी वापिस राजस्थान नहीं जा पायेगें। उन्होंने तो यह सोचा कि जब दंगे रूक जायेगें तब अपने घर जायेगें। परन्तु हुआ कुछ और ही था। दंगों में उनका घर,सामान सब खत्म हो गया। पर अब वो क्या कर सकते थे? आख़िर उन्हें पाकिस्तान में ही रहना पड़ा। अपनी बहिन के साथ छिछावतनी में ही रह गये। जो भी उनके पास जेवरात व नगदी थी, एक साल के अन्दर जेवरात बिकने ही थे सो बिक गये। उस समय भी खान साहब का रियाज़ चलता रहा। खाना खुराक भी चलती रही। एक दिन खान साहब को उनके वालिद साहब ने कहा कि देखो बेटा हमारे पास जो नकदी थी वो और जेवरात सब खत्म हो गया है। अब मेरे पास दस हजार रूपये बचे है। जो मैं ज़खीरे के अफसर को दे आया हूं ..... कुछ काम शुरू करना है। ज़िन्दगी का नये तरीक़े से आगाज़ करना है। खान साहब ने पूछा, क्या काम, किस लिए दस हजार रूपये दिये .....' अज़ीम खान साहब ने कहा –' लकड़ियों के लिए, एक टाल खोलनी है, रोज़ी–रोटी के लिए कुछ तो करना होगा .....'

खान। साहब बोले–' टाल ?, जी नहीं, ये काम तो ठीक नहीं है..... ये आप नहीं करेगें , सब आपको अज़ीम खान टालवाले बुलायेगें..... ये मुझे पसन्द नहीं है.....' अज़ीम खान साहब ने कहा इससे क्या फर्क पड़ता है, बुलाते हैं, तो बुलाने दो..... मेहदी हसन साहब ने कहा,' फर्क पड़ता है, आप पैसे वापस ले आओ.....' अज़ीम खान साहब बोले,–' बेटा में संगीत छोड़ने की थोड़े ही कह रहा हूं, जब तक माहौल सही नहीं हो जाता तब तक तुम रियाज़ करते रहो .....। मेहदी हसन जी बोले –' आप तो पैसे ले आईये, और मुझे थोड़े से पैसे दे दीजिए, व्यापार करने के लिए।' उनकी यह बात सुनकर अज़ीम खान साहब हॅस दिए और मजाक–मजाक में उन्हें दस रूपये दे दिये। खान साहब ने कहा मेरे लिये उस समय दस रूपये बहुत थे। सस्ती का ज़माना था। उन्हें छीछावतनी में सड़क के किनारे एक दुकान मिल गई, आपने वहां साईकिल व मोटरसाईकिल की मरम्मत की दुकान खोल ली, जहां वे पंचर

निकालने का काम करने लग गये। उस सड़क पर गाड़ियों का आना जाना लगा रहता था, तो दुकान भी अच्छी चलने लगी। एक –दो दिन के बाद उस दुकान में पैसे आने लग गये। दुकान में अब रोज की कमाई 12से 15 रूपये होने लग गयी। खान साहब ने उसमें से 5 रूपये लिये और अपने पिता के हाथ मे देकर बोले, मैं रोज आपको 5रूपये दूंगा, फिर तो घर चल जायेगा ना। अज़ीम खान साहब बोले –फिर तो मज़े से चलेगा। खान साहब ने जो अपना बचपन लूणा में इतने ऐशो आराम से बिताया था, वो यहां आकर उन्हें बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। खान साहब बहुत ही मेहनती थे। खान साहब ने अब मोटर ईंजन का काम सीखना शुरू कर दिया, अपनी दुकान बड़े भाई पंडित गुलाम कादिर साहब को दे दी और कहा कि इसको आप संभालो। खान साहब ने फर्गुसन ट्रेक्टर कंपनी में इंजन का काम सीखा, आपने एक साल मे तीन सौ से अधिक ईंजन उस इलाके में लगाये। इन सब परिस्थितियों के बीच में भी खान साहब का रियाज़ निरन्तर चलता रहा। आप सुबह की नमाज़ से पहले तीन घण्टे रियाज़ चुके होते थे, अब उन्होंने अपना रूख़ लाहौर की ओर किया। वहाँ पर वह अपनी बुलट गाड़ी से जाते थे और संगीत की छोटी–छोटी महफिले शुरू करने लग गये। किन्तु उस समय तक भी संगीत का माहौल इतना अच्छा नहीं था, जितना कि वे चाहते थे। खान साहब को ऐसा माहौल बनाने में भी काफ़ी वक़्त लगा। उनको आत्मविश्वास था कि जैसा माहौल होना चाहिए उसके लिये बहुत जल्द अच्छा वक़्त आयेगा। इसी आस के साथ वो रोज़ लाहौर में आते थे। धीरे–धीरे उनके यहाँ पर चाहने वाले हो गये, बहुत से दोस्त बन गये। आये दिन अब उनकी महफ़िल में श्रोताओं की संख्या बढ़ने लग गयी है, आपने धैर्य रखा और भरपूर मेहनत की।

काफ़ी संघर्षो के बाद भी खान साहब ने संगीत के प्रति वही रूचि रखी जो बचपन मे थी। इतने संघर्ष होते हुए भी आपने संगीत साधना को जारी रखा। वे पाकिस्तान के हर शहर में घूमे कि कहीं न कहीं तो संगीत का अनुकूल माहौल मिलेगा। किन्तु संगीत का ऐसा माहौल अभी तक नहीं बना था। हिन्दुस्तान में तो राजघराने बहुत थे, क्यों कि हिन्दुस्तान में देसी रियासतें खूब थी, पाकिस्तान में तो राजघराने नहीं थे, तो खान साहब वहाँ बहुत परेशान हुए। क्योंकि राजस्थान में तो उन्हें राज्याश्रय प्राप्त था। इसी संघर्ष के बीच उस्ताद अज़ीम खान साहब अपने हाथ

में एक तार और एक ख़त लेकर के आये जो मेहदी हसन साहब के लिये था। तार रफ़ीक साहब का था, जिन्होंने कईं फिल्मों में अभिनेता के रूप मे काम किया था। आप भी पाकिस्तान में फिल्म के निर्माता–निर्देशक थे। खान साहब खुद भी इनकी बनायी हुई फिल्मों के संगीत की प्रशंसा करते थे। रफ़ीक साहब ने खान साहब को कराची बुलाया था। अपनी फिल्म में गाने के लिए, साथ में साढ़े चार हजार रूपये का बैंक ड्राप्ट भी भेजा था। आपको इतने संघर्ष के बाद 1952 की फिल्म 'शिकार' में गाने का मौका मिला। यह फिल्म 1956 में रिलीज हुई। इस फिल्म के गानों ने उन्हें बहुत मशहूर कर दिया। रफीक अनवर साहब ने खान साहब को फिल्म में गाने तथा रेड़ियो की बारीकियों से भी परिचित कराया। रफ़ीक साहब ने ही खान साहब का फिल्मों में सम्पर्क स्थापित कराया था।

फिल्म में गाने के बाद फिर कभी भी पीछे मुड़कर देखना नहीं पड़ा। आपको इतनी कामयाबी मिली के आपके पास वक़्त ही नहीं रहा। आये दिन जगह–जगह पर खान साहब की महफिलें सजने लगी। जल्द ही पूरे पाकिस्तान में आपका नाम हो गया। आपके दिल की तमन्ना थी कि वो रेड़ियो पर भी गायें। कुछ समय पश्चात् आपका रेड़ियो पर स्वर परीक्षण हुआ। उस परीक्षण में खान साहब ने बहुत सी चीजें सुनाई सभी बहुत खुश हुए। खान साहब को प्रसिद्धि दिलाने में रेड़ियो का भी साथ रहा है। आपके बड़े भाई पण्डित गुलाम कादिर साहब रेड़ियो पर संगीत निर्देशक के पद पर थे। कईं लोगों को पता भी नहीं होगा कि खान साहब की कईं ग़ज़लों को तो पण्डित गुलाम कादिर साहब ने कम्पोज किया है। पण्डितजी कराची रेड़ियो में थे, वे काफी समय तक कराची रेड़ियो से जुड़े रहे। खान साहब का रेड़ियो में प्रवेश भी फिल्मों से ही हुआ है आपको रेड़ियो से पहली बार 1955 में निमत्रण मिला, खान साहब को जिस ग़ज़ल ने सबसे पहले प्रसिद्धि दिलाई, वह थी 'गुलों में रंग भरे बादे–नू–बहार चले'। यह ग़ज़ल सन् 1959 में पहली बार गाई। इस ग़ज़ल को फ़ैज़ साहब ने लिखा और इसकी धुन पण्डित गुलाम कादिर साहब ने राग झिंझोटी में बनायी। फ़ैज़ साहब के शब्द ओर मेहदी हसन साहब के स्वर का रोमांस भी यहीं से शुरू हुआ था। एक समय की बात है जब किसी पण्डित ने मेहदी हसन साहब का हाथ देखा और बोला कि तुम्हारी एक शादी और होगी, उसके बाद तुम्हारी किस्मत बहुत चमकेगी। उसी दौर में आपकी जान–पहचान रेड़ियो आर्टिस्ट सुरैया ख़ानम से

हुई। आप रेड़ियो पर लोकगीत गाती थी, इनके भी चाहने वाले श्रोता बहुत थे, पर सबसे बड़े चाहने वाले खुद मेहदी हसन साहब थे। सुरैया ख़ानम मूलतः जलंधर की थी पर बाद में उनका परिवार लाहौर में आकर बस गया था। आप दोनो में बहुत मोहब्बत थी। खान साहब जब भी किसी ग़ज़ल की धुन बनाते तो आप इन्हें वो धुन सुनाते और उनसे मशविरा करते। उससे खान साहब को बहुत फायदा होता था। सुरैया ख़ानम को सुर की समझ बहुत थी, अच्छा गाती थी।

खान साहब ने एक दिन अपने बड़े भाई पंडित गुलाम कादिर साहब को भी इस बारे में बताया था। पर इस शादी का ख़ुलासा न हुआ बरसों तक मेहदी हसन साहब के रिश्तेदारों में। अब तक मेहदी हसन साहब का परिवार छीछावती में ही रहता था। दूसरी शादी के बाद मेहदी हसन जी लाहौर आ गए सुरैया खानम के लाहौरी गेट वाले घर में। शादी 1960 में हुई और 2 अक्टूम्बर 1962 को सज्जाद भाई पैदा हुए। पहली बीबी ये झुन्झुनू जिले के कस्बे खेत्री से थी। शकीला बेगम अपने दो बेटों– तारिक हसन और आरिफ हसन के साथ छीछावतनी में ही रही। बाद में पहली बीबी का परिवार कराची में बस गया और दूसरी बीबी का परिवार लाहौर में ही रहा। इस बीच सुरैया ख़ानम का गाना बन्द हो गया। इसमें कोई संदेह नहीं कि ग़ज़ल सराई की एक मुकम्मल पहचान कायम हुई मेहदी हसन की गायकी से। आपने की गंभीरता मकम्मल रखते हुए उन्हें प्रासंगिक रागों में निर्बद्ध उर्दू के गम्भीर शायरों की ग़ज़लें चुनी और उन ग़ज़लों की गम्भीरता मुकम्मल रखते हुए उन्हें प्रासंगिक रागों में निबद्ध कर उन्हें बेहद लोकप्रिय कर दिया। विषय के हिसाब से ग़ज़लों के लिये राग चुनकर खान साहब ने हर मूड की ग़ज़ल को एक ही तरह से गाने का पारम्परिक तरीका बदल दिया। खान साहब से पहले ग़ज़लें गायी तो जाती थी पर वे अपनी अलग पहचान नहीं बना पायी और ग़ज़लों का गायन लगभग सपाट था। खान साहब ने ग़ज़ल गायकी को एक गंभीर कला के रूप में सत्यापित कर दिया। ग़ज़लों को ग़ज़ल की तरह गाने का अलग सिलसिला मेहदी हसन जी से शुरू हुआ। सबसे महत्वपूर्ण बात–खान साहब ने ग़ज़लों में रूचि लेना पाकिस्तान में आकर ही शुरू किया था। पर रेड़ियो से जुड़ने के बाद वे इसके प्रति और भी गंभीर हो गये। ग़ज़ल सराई की दुनिया में जो मुकाम खान साहब को हांसिल हुआ, इसमें उनके बड़े भाई पंडित गुलाम कादिर साहब का बहुत योगदान रहा। ध्रुपद हिन्दुस्तान में शास्त्रीय संगीत, ग़ज़ल,

भजन, ठुमरी, दादरा, टप्पा सभी प्रचलित है। किन्तु पाकिस्तान में उर्दु को ज्यादा महत्व है। इसी कारण खान साहब ने अपनी पुश्तैनी ध्रुपद–धमार को छोड़ा और ग़ज़ल को चुना। ग़ज़ल गायक की सारी खूबियां मेहदी हसन साहब की ग़ज़ल सराई मैं बखूबी उतरती है।

खान साहब की आवाज़ में गहराई ऐसी लगती थी। मानो स्वरः कंठ से नहीं, रस से भरे हुए कुएं से गुंजते हुए निकल रहा हो। खान साहब जल्द ही पाकिस्तान में सबसे मशहूर गायक बन गये। इसके लिए उन्होंने बहुत बड़ी कुर्बानी भी दी थी। शास्त्रीय संगीत का अपना पुश्त–दर–पुश्त का मुकाम छोड़ नई राह ग़ज़ल सराई पर चल पड़े थे वे।

1983 में नेपाल के नरेश विरेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव ने उन्हें निमंत्रण भेजा। खान साहब का वहाँ बहुत ही भव्य स्वागत हुआ। खान साहब ने वहाँ बहुत सी ग़ज़लें गायी। एक प्रसिद्ध ग़ज़ल 'ज़िन्दगी में तो सभी प्यार किया करते है' गा रहे थे, तो गाते–गाते कोई शेर वे बीच में भूल गये। नेपाल नरेश तुरंत खड़े हुए और वे शेर उनके सामने गाने लगे। किसी गायक के लिये वह यह बहुत बड़ा सम्मान था। खान साहब ने यहां दो नेपाली गीत भी गाये। अफगानिस्तान के राष्ट्रपति सरदार दाउद खां भी मेहदी हसन साहब की गायकी के कायल थे। खान साहब की गायकी के दीवाने सारी दुनिया में थे। खान साहब के साथ जिन्होंने अधिकांश कार्यक्रमों में तबले बजाये, वे है– उस्ताद पीरबख्श एवं हार्मोनियम जिन्होनें बजाया वे हैं– खलिफा मोहम्मद हुसैन। उस्ताद तारी खान साहब ने भी उनके साथ तबला बजाया। तारी खान साहब बजाने के साथ–साथ अच्छे ग़ज़ल गायक भी है। इन तीनों ही कलाकारों का जिक्र करना बेहद जरूरी है। पीरबख्श ने लगभग 27–28 वर्ष तक तबला बजाया और खलीफा मोहम्मद हुसैन ने लगभग 42 साल तक उनके साथ हार्मोनियम बजाया। खान साहब के बेटों ने भी खान साहब के साथ तबले पर संगत की। आरिफ हसन एवं ईमरान हसन ने भी कई कार्यक्रमों में खान साहब के साथ तबला बजाया। खान साहब के बेटे कामरान हसन ने भी आप के साथ की–बोर्ड की संगत की। पहले ग़ज़ल साहित्य की एक विधा थी, उसे संगीत की विधा बनाने का श्रेय तो मेहदी हसन साहब को ही जाता है। ग़ज़ल सराई को एक अलग और मुक्कमल सेली दी उन्होंने। आने वाले समय में खान साहब को ग़ज़ल शैली के पुरोधा आचार्य के रूप में जाना जाएगा।

खान साहब की पसन्दीदा ग़ज़ल, राग मधुवंती में–' तेरी खुशी से अगर ग़म में भी खुशी न हुयी.....' है। यह ग़ज़ल जिगर मुरादाबादी की लिखी हुयी है। यह बात खान साहब ने खुद 'अखिलेश जी झा'' को बताई। खान साहब की कई ग़ज़लें फिल्मों से लोकप्रिय हुई और ये ग़ज़लें जैसे–शिकवा न कर गिला न करें' फिल्म (जमीन),' गुलों में रंग भरें' फिल्म–(फ़रंगी), मुझे तुम नजर से गिरा तो रहे हो फिल्म (दोराहा),' दुनिया किसी के प्यार में जन्नत से कम नहीं'' फिल्म (जाग उठा इंसान)' बात करनी मुझे मुश्किल कभी' फिल्म (शरीक–ए–हयात),' अबके हम बिछड़े तो शायद, फिल्म (अंगारे),' प्यार भरे दो शर्मिले नैन' (चाहत)', ज़िन्दगी में तो सभी प्यार किया करते हैं' फिल्म (अज़मत),' रंजिश ही सही 'फिल्म (मोहब्बत),' हमें कोई ग़म नहीं था' फिल्म (शब–ए–ख़ेर),' आदि ग़ज़लें इन फिल्मों में थी। ये ग़ज़लें प्राईवेट महफिलों में भी खूब गायी गई। इसी दौर में खान साहब ने कई शिष्य बनाये। खान साहब को जो भी सुनता वो खान साहब का दिवाना हो जाता। खान साहब ने नूरजहां जी के साथ भी काफी युगल–गीत गाये। नूरजहां जी खुद बहुत ही अच्छा गाती थी। 'मल्लिका–ऐ–तरन्नुम' नूरजहां का असली नाम था अल्लाह वसाई। 'नूरजहां की खान साहब की बहुत कायल थी। अब तक के इस अध्याय में खान साहब ने त्याग किया, उसी त्याग का फल खान साहब को मिला (फिल्मों में गाना गाने का मौका, रेड़ियों में गाने का मौका)। खान साहब को इतना कुछ मिलने के बाद भी खान साहब ने चैन नहीं लिया वे हर रोज़ चारों तरफ दौड़ते रहते थे कि जब जहां जो मौका मिले, उस मौके को छोड़ना नहीं। यहीं वजह रही कि वो उनकी महफ़िलों के भी अंजुमनआरा हो गये। उन्होंने रियाज़ नहीं छोड़ा पूरे समय लगे रहते थे। आपने सभी कलाकारों का साथ दिया। आपकी एक ख़ासियत जहां भी जाते वे उनके अनुसार वे अपने आपको बना लेते। आप राजस्थान में अपने गांव लूणा आये तो अपनी भाषा में ही बात करने लग गये। उनको अपनी माटी से बहुत प्रेम था। वो इस माटी के लिए बहुत तरसते थे। आप जो हंसी मजाक बचपन के दोस्तों से करते थे, वही हंसी मजाक जब–जब राजस्थान आते थे, तो अपने दोस्तों के साथ करते थे। गांववाले उन्हें बहुत प्यार करते थे। खान साहब पाकिस्तान में बस गये। उसके बाद जब खान साहब पहली बार हिन्दुस्तान आये तो अपने गांव लूणा में गये जहां उनका स्वागत गाँववालों ने ऐसा किया, मानो उस जगह के महाराजा पधारे हो। खान साहब त्याग, समर्पण, प्रेम,

कृपालु, एवं मिलनसार की एक मूरत थे। आप सभी के दुःख दर्द को समझते थे। क्यों कि आपने खुद वह दुःख दर्द महसूस किया था। आप जब राजस्थान आये तब आपने सती मां के मंदिर में एक कार्यक्रम किया और वहाँ पर जो पैसा आया उसे मंदिर में ही विकास कार्य के लिये दे दिया। इससे आपकी धर्म प्रवृत्ति का पता चलता है कि आप सर्व धर्म समभाव की प्रकृति वाले थे। आप सभी धर्मो में विश्वास रखते थे। खान साहब को पूरा जगत इतना याद क्यों करता है, इसका एक कारण यह भी है कि आपने इस जगत में बहुत अच्छे कार्य किये थे। आपने कभी किसी से बैर–भाव नहीं रखा। जैसा आपका गाना था, वैसा ही आपका स्वभाव भी था। आप ग़ज़ल के शहंशाह होते हुऐ भी आप में घमण्ड नाम की चीज़ कतई नहीं थी। आप हमेशा हंसमुख रहे थे। आपने सारी परिस्थितियों का सामना हंसते हुए किया। आपने सभी कष्टों को सहन किया और अपने चेहरे पर कभी भी दुखः प्रकट नहीं होने दिया। आप हर कार्य धैर्य से करते थे। आप संगीत के प्रति हमेशा गंभीर रहे। संगीत को आपने ईश्वर माना और संगीत की ताउम्र सेवा की।

''कुछ व्यक्तियों का जन्म ईश्वर विलक्षणता की पराकाष्टा के लिये करता है, जहां व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए ऐसी धरोहर छोड़ जाता है जिससे आने वाली पीढ़ियां निरंतर प्रेरणा लेती रहती है। ऐसी व्यक्तियों को ईश्वर एक विशेष कार्य के लिये जन्म देता है और वे भी अपना सम्पूर्ण आपा उस विशेष कार्य की सिद्धि में लगा देते है। उन्हीं व्यक्तियों की पंक्ति में नाम लिया जा सकता है। जनाब मेहदी हसन खान साहब का जिन्होंने ग़ज़ल सराई में अपने मखमली गले के साथ संवेदनाओं के समन्दर को उड़ेल डाला। जिसने भी सुना अभिभूत हो गया। राग की शुद्धता के साथ ग़ज़लकार के शब्दों को भावों की ऐसी आँच दी की शायर भी इनका ऋणी हो गया।

स्वर साम्राज्ञी एवं भारत रत्न 'लता मंगेशकर', नौशाद साहब, महानायक अमिताभ बच्चन जी नायिका और गायिका रेखा जी, दिलीप कुमार साहब एवं पाकिस्तान की महान गायिका' मल्लिका–ए–तरन्नुम नूरजहां' जैसे अनेकों प्रतिभा सम्पन्न लोगों ने मेहदी हसन साहब का दिल से कृतज्ञता पूर्वक सम्मान किया।

आपने एक पिता के रूप में, एक अच्छे गायक के रूप में, एक अच्छे गुरू के रूप में, एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सभी में आपने अच्छे व्यक्तित्व की छाप छोड़ी है। इतने बड़े महान् ग़ज़ल गायक ने अपने फन से बहुत से अवार्ड अपने

नाम किये है। यह सारे अवार्ड अपनी गायकी के दम पर आपको मिले हैं। आपकी मेहनत बरसो बाद रंग लायी। कहते है कि परिश्रम का फल मीठा होता है। इसी तरह खान साहब ने जो पाकिस्तान मे बसने के बाद की कठिन परिस्थितियों का जो डटकर सामना किया यह उसी का परिणाम था। खान साहब की ज़िन्दगी में सबसे बड़ दुःख आया जब अक्टूबर 1999 आपकी पहली बीबी शकीला बैग़म का इंतकाल कराची में हो गया। तब खान साहब को बहुत दुःख हुआ। पहली बीबी राजस्थान की थी। झुन्झुनू जिले के कस्बे 'खेत्री' से थी। यह पल खान साहब के लिये बहुत दुःखदायी रहा। शकीला बैग़म की बरसी पर दूसरी बीबी सुरैया ख़ानम का अक्टूंबर 2000 में इंतकाल हो गया। एक साल में खान साहब की दोनों बीबियों का इंतकाल हो गया। सुरैया खानम के इंतकाल के दूसरे ही दिन खान साहब को फ़ालिज का दौरा पड़ा और खान साहब का गाना बजाना भी बंद हो गया। खानसाहब की किस्मत का सितारा सुरैया ख़ानम के आने से ही चमका और सुरैया ख़ानम के जाते ही उनकी हालत खराब हो गयी। खान साहब ने राज वोहरा जी को फोन पर बताया कि बेटा मेरे दोनों कंधे (शकीला बैगम और सुरैया खानम) टूट गये है। उनको ये दुःख हमेशा घेरे रहता था। किन्तु हिन्दुस्तान के मशहूर गायक–गायिकाओं, अभिनेताओं एवं राजनेताओं ने आपकी बहुत मदद की। आपकी मदद करने वालों में सर्व प्रथम' स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर जी' ने भी आपकी काफी मदद की। स्व. जगजीत सिंह जी एवं चित्रासिंह जी, हंसराज जी हंस साहब, पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, दिलीप कुमार जी व सायरा बानू जी, अखिलेश जी झा ने भी आपकी मदद की खान साहब के चाहने वालों ने जब–जब खान साहब पर मुसीबतें आयी तब–तब उन सभी ने खानसाहब की मदद की। 'लता जी' ने समय–समय पर खान साहब के हालचाल जाने। दिलीप कुमार जी भी उनकी तबीयत के बारे में पूंछते रहे। हंसराज जी हंस खुद दो बार उनसे मिलने पाकिस्तान गये। ऐसे ही अखिलेश जी झा साहब को 2008 मे मौका मिला पाकिस्तान जाने का। तब उन्होनें भी खान साहब की मदद की, झा साहब ने उस यात्रा में खान साहब से मिलने के बाद अपनी एक किताब लिखी' मेरे महदी हसन' झा साहब खान साहब को भगवान मानते है। मैंने स्वयं देखा है खान साहब के प्रति वह बहुत समर्पित है।

महान् कलाकारों, अभिनेत्रियों एवं आमजन की खान साहब के बारे मे राय–

उस्ताद यासीन खाँ भारती :–

सर्वप्रथम आपका नाम इसलिए जरूरी है– क्योंकि आप मेहदी हसन सा. के बड़े वालिद सा. के बेटे है और खान सा. का इनके घर आना–जाना रहा है। छोटा भड़ून्दा में उस्ताद यासीन खाँ सा. का जन्म 17 अप्रेल 1943 में हुआ था। आपके वालिद उस्ताद जमाल खाँ सा. थे, जो कि मशहूर ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह सा. के उस्ताद थे। जगजीत सिंह जी और उस्ताद यासीन खाँ सा. ने उस्ताद जमाल खाँ सा. से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। आप दोनों ने बचपन से युवावस्था तक जमाल खाँ सा. से संगीत की शिक्षा प्राप्त की और दोनों ही मुम्बई चले गये। छोटा भड़ून्दा झुन्झुनू जिले में है और मेहदी हसन सा. का पैतृक गांव लूणा भी झुन्झुनू जिले में है।

मैंने इस अध्याय में यासीन खाँ सा. का नाम सर्वप्रथम इसलिए लिखा क्योंकि रिश्ते में ये इनके भाई है और दूसरा ये दोनों परिवार बाबर खानदान की दो बेलें हैं। जो अब एक पाकिस्तान में बसी है और दूसरी हिन्दुस्तान में। पाकिस्तान में स्वयं मेहदी हसन सा. और हिन्दुस्तान में उस्ताद यासीन खाँ सा. एवं इनके सुपुत्र डॉ. रौशन भारती जी। यासीन खाँ सा. मेहदी हसन खाँ सा. की ग़ज़ल सुनकर ही भावुक हो जाते हैं और अपनी आँखों से आँसु रोक नहीं पाते हैं। आप अपने बड़े भाई मेहदी हसन जी से बहुत प्यार करते हैं। इसका एक किस्सा मैं बताना चाहूँगा –

मैं एक दिन यासीन खाँ सा. से मिलने उनके कोटा स्थित बंगले पर गया। वहाँ जब मैं खाँ सा. से मेहदी हसन सा. के बारे में बात कर रहा था तो वे बहुत भावुक हो गये। मैंने उनको मेहदी हसन सा. की पुरानी तस्वीरें बताई तो वो बहुत रोने लग गये और बोले– ''मेरे बड़े भाई जैसा कोई नहीं गा सकता, ऐसा सुर हजारों सालों के बाद पैदा होता है। उनमें सरस्वती का निवास है, आपने मेहदी हसन सा. को ग़ज़ल का अविष्कर्ता बताया है।

स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर जी :–

भारत रत्न लता जी भारत की सबसे अनमोल गायिका है। उनकी आवाज़ की दीवानी पूरी दुनिया है। पिछले छह दशकों से भारतीय सिनेमा को अपनी आवाज़ दे रही लता जी बेहद ही शांत स्वभाव एवं प्रतिभा की धनी है। आपका जन्म 28 सितम्बर 1929 को इन्दौर के मराठी परिवार में पण्डित दीनदयाल मंगेशकर के घर में हुआ। आपके पिताजी रंगमंच के कलाकार एवं गायक भी थे इसलिए संगीत इन्हें विरासत में मिला। लता जी का पहला नाम ''हेमा'' था, मगर जन्म के 5 साल बाद माता–पिता ने इनका नाम लता रख दिया। लता जी अपने सभी भाई–बहिनों में सबसे बड़ी है। मीना जी, आशा जी, उषा जी तथा हृदयनाथ जी उनसे छोटे हैं। आपके जन्म के कुछ दिनों बाद ही आपका परिवार महाराष्ट्र चला गया। आप स्वयं कहती है कि– '' मेरी सुबह खाँ सा. की ग़ज़लों से शुरू होती है।'' आपको जब कभी भी समय मिलता है तो आप खाँ सा. की ग़ज़ले ही सुनना पंसद करती हैं। मुझे इस बात की जानकारी खाँ सा. के शागिर्द राज वोहरा जी ने दी। जब–जब भी मेहदी हसन सा. मुम्बई आए तो राज वोहरा जी के यहाँ पर ही ठहरे। खाँ सा. और राज वोहरा जी जब लता जी के घर गये तो वोहरा जी ने लता जी से पूछा – '' आप किनको सुनते हैं, जबकि आपको तो पूरी दुनिया सुनती है।'' तब लता जी ने तपाक से उत्तर दिया कि मैं खुद खाँ सा. को सुनती हूँ। खाँ सा. जब मुम्बई आए तो उन्होंने लता जी को फोन किया कि मैं आपसे मिलने आ रहा हूँ, तो लता जी ने कहा कि – ''खाँ सा. मैं खुद आपसे मिलने आ रही हूँ।'' इस बात में लता जी का खाँ सा. के प्रति आदर–भाव स्पष्ट नजर आता है। खाँ सा. खुद लता जी के लिए कहते हैं कि –'' वो तो स्वरों की देवी है।''

लता जी ने पहली बार जब मेहदी हसन सा. को लन्दन के एक कार्यक्रम में सुना था, उन्हें सुनकर वे बहुत भावुक हो गई और बोली– ''गाना इसे कहते हैं''। आप खाँ सा. की बहुत बड़ी मुरीद है। खाँ सा. के लिए लता जी कहती हैं – ''इनको दोनों ही देशों का प्यार मिला है, खाँ सा. के चाहने वालों की कोई कमी नहीं हैं, आपको चाहने वाले बहुत है।'' जब–जब जरूरत पड़ी लता जी ने खाँ सा. की मदद की। आप आए दिन उनसे फोन पर उनके हालचाल जानती रहती थी।

लता जी आप किसी परिचय की मोहताज नहीं। आपके द्वारा गाया गया हुआ देश भक्ति गीत–''ऐ मेरे वतन के लोगों'' हर जुबां पर है। दिनांक 27.01.1963 को भारत–चीन युद्ध के समय देशवासियों के लिए यह देशभक्ति गीत गाया था।

ग़ज़ल सम्राट जगजीत सिंह सा. एवं चित्रासिंह :–

आप खुद खाँ सा. के चाहने वालों में से एक हैं। खाँ सा. जब भी मुम्बई आए आप हमेशा उनसे मिलने गए। एक बार जगजीत सिंह सा. का कार्यक्रम पाकिस्तान में था, तो आपने जो वहाँ पैसा कमाया वो आप खाँ सा. को नज़र कर आये। आपने खाँ सा. की बहुत खिदमत की। आपका यह करना जरूरी भी था, क्योंकि ये उसी बाबर खानदान की एक बेल थी जिसके तले आपने संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। उस खानदान के प्रति आपका समर्पण वाज़िब है। इससे यह प्रदर्शित होता है कि जिस घराने से आपने संगीत सीखा, वो उस घराने के सभी उस्तादों की इज्जत करते हैं और उन्हें आदर देते हैं।

ग़ज़ल की दुनिया के सम्राट जगजीत सिंह सा. अब हमारे बीच नहीं रहे। जगजीत सिंह सा. ने निश्चित तौर पर ग़ज़ल को नये आयाम दिये हैं। उनका रूझान कभी भी व्यावसायिक नहीं रहा है। निर्धनता में अपना बचपन बिताने वाले सिंह सा. को भरपूर दौलत और शौहरत मिली। प्रख्यात ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह जी ने अपनी मखमली आवाज़ के जरिए ग़ज़लों को नया जीवन दिया। वह अपने जीवन के 70 वें साल पर जश्न अनोखे ढ़ंग से मनाना चाहते थे। उनकी उस साल 70 वें संगीत समारोह में शिरकत करने की हसरत थी लेकिन इससे पूर्व ही उनका निधन हो गया। आपने उस्ताद जमाल खाँ सा. से संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। आपका अथक प्रयास, रियाज़ एवं धैर्य आपकी ग़ज़ल को सुनने के पश्चात महसूस होता है। एकाग्रता, चैनदारी, आवाज़ का मखमली होना आदि बातें आपने उस्ताद से सीखी है। हिन्दुस्तान में ग़ज़ल गायकी में आपका कोई सानी नहीं, इसका मुख्य कारण आप बाबर वंश के शागिर्द थे। दूसरा पाकिस्तान में भी मेहदी हसन सा. का कोई सानी नहीं, इसका मुख्य कारण भी यही बाबर खानदान रहा।

जगजीत सिंह सा. का ग़ज़ल एलबम ''ग़ज़ल का सफर'' में इन्होनें यह स्पष्ट किया कि हमारे इस ग़ज़ल के सफर में सबसे बेहतरीन फनकार वही (मेहदी भाई ही) है। हमेशा से ही उनके चहेतों को उनकी जादूभरी आवाज़ और कार्यक्रमों का निरन्तर इन्तजार रहता था। चित्रा सिंह जी भी मेहदी हसन सा. की मुरीद रही है।

उनकी सुबह–शाम खाँ सा. की ग़ज़ल से ही निकलती रही और उनकी गायकी की तारीफें करती हैं। वे कहती है – '' ऐसी आवाज़ मिलना ही मुश्किल है, ये कुदरत की देन थी जो खाँ सा. में इतनी खूबियाँ थी।''

उस्ताद गुलाम अली सा. :–

आपने बड़े गुलाम अली खाँ सा. से संगीत की शिक्षा ली। आपने बरकत अली खाँ से भी सीखाँ आप अपने युग के सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ल गायक रहे हैं। आपके गाने की तैयारी बहुत ही शानदार है। आप अच्छे तबला वादक भी हैं। आप बहुत रियाज़ी हैं। आपकी प्रसिद्ध ग़ज़लों में ''चुपके–चुपके रात दिन, हँगामा है क्यूं बरपा, मैं नज़र से पी रहा हूँ, अपनी धुन में रहता हूँ, हम तेरे शहर में आयें हैं मुसाफिर की तरहां'' आदि हैं। आपका गाना बहुत तैयार है, आपके गाने के साथ–साथ आपका हारमोनियम बजाना भी लाजवाब है। गाना और हारमोनियम बजाना दोनों ही काबिल–ए–तारीफ है।

आप मेहदी हसन सा. के बारे में कहते हैं कि – ''उनके गाने में जो वजन है, जो मिठास है वह बहुत मुश्किलों से मिलती है। खाँ सा. ने ग़ज़ल को और शायरी को जो लिबास पहनाया है वैसा किसी ने नहीं पहनाया। क्योंकि उन्होंने जिस राग में जो ग़ज़ल गाई है उसे उसी राग में गाकर के उसमें बहुत सा काम कर दिया। जिस शायर ने जो ग़ज़ल लिखी उसे इतना अच्छे तरीके से खाँ सा. ने रचनाबद्ध करके गाया है कि वह उस शायर की रचना ना रहकर खुद खाँ सा. की हो गई। खाँ सा. ने अच्छी शायरी का इस्तेमाल किया तथा शायरी के बोलों के अनुसार उस राग का चयन किया। मेहदी हसन सा.ग़ज़ल के पितामह है। आपने जिन रागों में जो ग़ज़लें गाई हैं वो ऐसी लगती है जैसे वह उन रागों की बंदिशे हैं। आपने ग़ज़ल गायकी में बहुत रंग भरें हैं। आपका गाना बहुत ही पैचदार था। आपने इस शैली को बहुत ही उत्कृष्ट रूप दिया।

भजन सम्राट अनुप जलोटा :–

ये खाँ सा. के बहुत ही करीब रहे हैं। आप खाँ सा. की कई ग़ज़ल महफिलों में बैठें हैं। आप उन्हें ग़ज़ल गायकी का सूरज मानते हैं। आपने भी ग़ज़ल एलबम निकाले हैं। जलोटा जी से मैंने जब बात की तो मुझे अहसास हुआ कि इतने बड़े

व्यक्ति इतने सरल स्वभाव के है। जलोटा जी ने मुझे फोन पर ही इतना प्यार दिया कि मैं उसे बयां नहीं कर सकता। इस प्यार के पीछे यह कारण रहा कि वो मेरे उस्ताद डॉ0 रौशन भारती जी को बहुत प्यार करते हैं। दूसरा मैं रौशन भारती जी का शागिर्द हूँ। आपने मेरी इस शोध कार्य में बहुत मदद की है। यहाँ तक कि मेरे द्वारा लिखित मेहदी हसन सा. की किताब को लता जी द्वारा विमोचन करवाने की बात भी की। इससे यह प्रदर्शित होता है कि आप खाँ सा. को बहुत प्यार करते हैं और उनकी इज्ज़त करते हैं। आप भी श्याम चौरासी घराने के कलाकार हैं। आप भी खाँ सा. को सुनते हैं तथ ग़ज़लों में अपना आदर्श मानते हैं। आपको 2012 में पद्म श्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। आपने भजनों से सभी को मंत्रमुग्ध कर रखा है। आपके भजनों में शुद्ध शब्दों के साथ–साथ शास्त्रीयता का भी प्रयोग हुआ। आपने भजनों को बहुत अच्छे मुकाम पर पहुंचाया है, आप बहुत ही सुरीले गायक हैं। आपने भजनों के साथ–साथ कई ग़ज़लें भी गाई है। आपके प्रसिद्ध भजनों में– मैली चादर ओढ़ के, झीनी रे झीनी, सखी बाजे बाजे आदि। आपकी ग़ज़लों में– बाहर से देखने से तो चलता पता नहीं, कितने दुःखों की भीड़ है इस आदमी के साथ। इसके शायर है 'बेताब'। इसी तरह एक और ग़ज़ल– ''कटेगी अब ज़िन्दगी रोते–रोते, यह कह के गई है खुशी रोते–रोते।'' यह ग़ज़ल बिलावल तोड़ी राग में है और इसकी धुन भी जलोटा सा. ने ही बनाई है। आपकी एक और ग़ज़ल– जब से गये हैं आप किसी अजनबी के साथ, सौ दर्द लग गये हैं मेरी ज़िन्दगी के साथ। यह पहाड़ी 'खमाज' राग में निबद्ध है।

चंदनदास :–

आपने 08 वर्ष की उम्र से ही उस्ताद मूसा खान से संगीत की शिक्षा ली। आपने हमेशा श्रोताओं को अच्छा संगीत दिया है। आपकी गायन शैली भी लाजवाब है। स्पष्ट शब्द और स्पष्ट उच्चारण से भरी आपकी गायन शैली है। आपने पहला एलबम 1982 में जारी किया। आपने कई टी.वी. धारावाहिकों और फिल्मों के लिए भी गाया। आप और आपकी पत्नी दोनों ही सहयोग की भावना अपने अर्न्तमन में रखते हैं।

आप खाँ सा. के बारे में कहते हैं कि – ''उनमे जो भी खूबियाँ है वो सब ऊपर वाले की देन है। खाँ सा. को रियाज़ करते–करते एक ज़माना हो गया और

गाते–गाते उनमें कई नई बातें भी विकसित हो गई। चन्दनदास जी कहते हैं कि मेहदी हसन सा. ग़ज़ल की एक रोशनी है जिससे उन्होंने पूरी दुनिया को रोशन किया। आपकी रोशनी से तमाम ग़ज़ल गायकों ने थोड़ा–थोड़ा सीखा है। खाँ सा. की शैली सभी ग़ज़ल गायकों से भिन्न है, क्योंकि आपने कभी किसी का अनुकरण नहीं किया। चन्दनदास जी कहते हैं कि खाँ सा. के अच्छे कर्मों का फल उनकी ग़ज़लों में दिखाई देता है। ज़रूर उन्होंने कुछ अच्छा किया होगा तभी तो उनमें वो सभी खूबियाँ है जो एक अच्छे ग़ज़ल गायक में होनी चाहिए। उन्हें ग़ज़ल गायकी का सूरज कहें तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। खाँ सा. ने ग़ज़ल को जितना सँवारा है, उतना शायद ही कोई सँवार सकता है। खाँ सा. एक ज्ञान की रोशनी है जिससे सारा संसार चमकता है। आप कहते हैं कि सभी ग़ज़ल गायक खाँ सा. का ही अनुकरण करते हैं। खाँ सा. ग़ज़लों में प्रयुक्त रागों का इस तरह से प्रयोग करते थे कि श्रोताओं को भी वह राग समझ में आ जाती थी। खाँ सा.का प्रस्तुतीकरण लाजवाब था। ग़ज़ल में पूरा शास्त्रीय झलकता है। खाँ सा. ज्यादातर तबला और हारमोनियम का ही प्रयोग करते थे। मुझे यह सारी जानकारी फोन पर स्वयं चंदनदास जी ने दी।

<u>आशा भोसले</u> –

आपने 1943 में अपना कॅरियर शुरू किया। आपने हज़ारों गाने बॉलीवुड फिल्मों में गाये हैं। कई कार्यक्रम हिन्दुस्तान में एवं विदेशों में भी कर चुकी है। आप अपनी आवाज़ की रेन्ज के लिए भी प्रसिद्ध है। आप जब ग़ज़ल गाती है तो ऐसा लगता है कि आप ग़ज़ल ही गा रही हैं, क्योंकि आप हर रंग में डूब जाती है। आप सभी तरह के गाने, चाहे फिल्मी गाने हो, ग़ज़ल हो, मराठी गाने हो या केब्रे गीत, पॉप सोंग सभी प्रकार की गायकी में दक्ष है। हिन्दी के अलावा आपने 20 से अधिक भारतीय और विदेशी भाषाओं में गाया है। आशा भोसले जी ने 12,000 से अधिक गाने गाये हैं। भारत सरकार द्वारा आपको 2000 में दादा साहेब फालके पुरस्कार तथा 2008 में पद्म विभुषण से सम्मानित किया। आपके प्रमुख गाने–'' उडे जब–जब जुल्फें तेरी, ओ हसीना जुल्फों वाली, ओ मेरे सोना रे सोना, ये मेरा दिल प्यार का दिवाना आदि हैं।''

आपको मेहदी हसन सा. की गायकी बहुत पसंद हैं। आप भी कहते हैं कि – '' खाँ सा. का प्रस्तुतीकरण उन्हें अन्य गायकों से भिन्न कर देता है और उनमें एक ही

ग़ज़ल को दो घण्टे तक गाने की क्षमता भी थी। वे ऐसे ग़ज़ल गायक थे जिन्होंने ग़ज़ल को किस तरह पेश किया जाता है, वो दुनिया को बताया है। ग़ज़ल की पूरी व्याकरण उन्हें आती थी। शब्दों को कहाँ तोड़ना है, कहाँ उनमें वजन रखना है, ये तमाम खूबियाँ उनके पास थी। शब्दों के अनुसार रागों का चयन करते थे। ग़ज़ल तो तो ऐसी गाते थे कि उनके बारे में मैं क्या कहूँ। उन पर प्रभु की कृपा थी।''

उस्ताद सुल्तान खान साहब –

आपका जन्म 15 अप्रैल 1940 को हुआ। आप जोधपुर में पैदा हुऐ। आपने अपने पिता उस्ताद गुलाब खान साहब से सारंगी सीखी। उन्होंने बहुत मेहनत की। आपने बीस वर्ष की उम्र में अपना केरियर शुरू किया, आपने पहले रेड़ियो पर ही वादन शुरू किया। राजकोट में रेड़ियो स्टेशन पर खूब बजाया। वहीं पर उन्हें लता मंगेशकर जी के साथ बजाने का मौका मिला। यह बहुत सुनहरा अवसर साबित हुआ। फिर उन्होंने मुम्बई की तरफ रूख किया। वहां बंबई रेड़ियो में भी बजाया। आपने पंडित रविशंकर जी के साथ भी कई कार्यक्रम किये एवं वर्ड टूर भी किया। आपको अमिर खान साहब, उस्ताद बड़े गुलाम अली खान साहब, पंडित ओमकारनाथ ठाकुर, उस्ताद नज़ाकत अली–सलामत अली खान जैसे सभी महान् कलाकारों के साथ रहने का सौभाग्य मिला है।

आप मेहदी हसन साहब के लिए रोते है– मैं उनसे जब मिला तो मुझे बोले कि जब तक कुछ सुनाओगे नही, तब तक मैं कुछ नही बताऊंगा। मैंने सुनाया उसके बाद उन्होंने काफी जानकारियां मुझे दी। आपने लन्दन में मेहदी हसन साहब के साथ बजाया था। वहां से दो केसेट्स निकले हैं। आप कहते हैं कि जब आपने मेहदी हसन साहब को धोक लगायी तो मेहदी हसन साहब बोले अरे नहीं यार तू मेरे दिल में है सुल्तान। आप खान साहब से बहुत प्यार करते थे।

ए. हरिहरन–

त्रिवेन्द्रम, केरल,दक्षिण भारत में आपका जन्म 3 अप्रैल 1955 को हुआ। आपने बचपन से ही संगीत की शिक्षा प्राप्त की। आपने पहले कर्नाटक संगीत सीखा फिर मुम्बई आकर भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखा। मुंबई में आपने गुलाम मुस्तफा साहब से

संगीत की शिक्षा प्राप्त की। आप जब केरल में थे तभी आपने मेहदी हसन साहब को सुना और उनके प्रति समर्पित होने का संकल्प किया। खान साहब को सुनने के बाद ही आप मुंबई भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखने आये। आपको ग़ज़ल का जुनून सवार हो गया। आप रोज 13–13 घण्टे रियाज करते। आपने मुंबई में विज्ञान और कानून में स्नातक की डिग्री ली है। आपने 1977 में 'ऑल इंडिया सुर सिंगर प्रतियोगिता'' में शीर्ष पुरस्कार जीता है। इसके बाद आपने फिल्मों में गाना शुरू किया। आप ए. आर. रहमान साहब के खासमखास है। आपने 500 से अधिक तमिल गीत और करीब200 हिन्दी गाने गाये है। आपने मलयालम, तेलगू, कन्नड़, मराठी, बंगाली भाषाओं में भी सैकड़ों गाने गाये है।

आपने ग़ज़ल गायकी के लगभग 30 से अधिक एलबम किये है। आपने एक एलबम 'लाहौर के रंग हरि के संग'' भी किया। आपके साथ जाकिर हुसैन जी ने भी तबला वादन किया। आप में उत्तरी भारत और दक्षिणी भारत की शैलियों का रस है।

आपने मेहदी हसन जी को ग़ज़ल की शान कहा है। आप कहते है कि इस पुरे फील्ड में जो खान साहब का स्थान है वह कोई नहीं ले सकता। उनका गाना बहुत विकट था। उनके द्वारा लगायी गई कण मुर्कियां किसी के बस की बात नहीं है। आपने भी खान साहब से संगीत सीखा है।

पंकज उदास :–

आपका पूरा परिवार संगीत से जुड़ा हुआ है। आपके बड़े भाई मनहर एक मंचीय कलाकार थे जिन्होंने आपको पहली बार मंच पर गाने का मौका दिया, आपने भारत–चीन युद्ध के दौरान अपना पहला प्रदर्शन किया था। जहाँ उन्होंने ''ए मेरे वतन के लोगों '' गाया था।

आपने अपने पहले ही कार्यक्रम में अपनी आवाज़ का दर्द श्रोताओं तक पहुँचा दिया था। आप खाँ सा. के लिए कहते हैं कि– '' उनकी आवाज़ बहुत डूबी हुई है, उनके गाने का अंदाज ही सबसे अलग है। उनकी आवाज़ में राजस्थान की खुशबू का अहसास होता है। उनका एक ही राग में रहकर इतना काम करना बहुत बड़ी बात है। आपका सुर लगाने का तरीका इतना अच्छा हैं कि तमाम श्रोता उन सुरों में ही डूब

जाते हैं। खाँ सा. को जितना प्यार मिला वो पूरी दुनिया में शायद ही किसी ग़ज़ल गायक को मिला।''

हँसराज हँस–

आप सूफी गायक है, आपने कई फिल्मों में तथा एलबमों में भी गाया है। आपके पिता सरदार अर्जुन सिंह और माता अजीत कौर हैं। आपको बचपन से ही संगीत का बहुत शौक रहा। आपको ''पद्म श्री '' भी मिल चुका है। आप खाँ सा. को बहुत चाहते हैं। आपने खाँ सा. की बहुत सेवा की। जब–जब खाँ सा. तकलीफ में थे तब–तब आपने उनकी तन–मन से मदद की। मेहदी हसन सा. की जब तबीयत खराब थी तो आप उनसे मिलने पाकिस्तान गये।

आपने खाँ सा. के साथ दो रातें बितायी। खाँ सा.जब जालन्धर में कार्यक्रम करने आए, तो उन्हें चलने में थोड़ी दिक्कत थी, तो हँसराज जी उन्हें मंच तक लेकर गये। पूरा कार्यक्रम समाप्त होने के बाद हँसराज जी उन्हें मंच पर लेने गये। उन्हें कुर्सी पर बैठाकर उनकी जुतियाँ पहनाई। खाँ सा. ने हँसराज जी को बहुत आशीर्वाद दिया और बोले कि– ''बेटा तू सूफी गायक ही नहीं, तू तो सूफी सन्त भी है।'' खाँ सा. ने इतना कहकर उन्हें गले लगा लिया और बोले आज तू मेरे साथ ही रात रूकना। हँसराज जी पूरी रात उनके साथ रहे और वहाँ रात भर गाना–बजाना चलता रहा। जब खाँ सा. सोये तो हंसराज जी उनके पैर दबाते रहे। हंसराज जी कहते है– ''जब खाँ सा. गाते हैं तो ग़ज़ल खुद–ब–खुद उनसे लिपट जाती है। ग़ज़ल खाँ सा. के लिए एवं खाँ सा. ग़ज़ल के लिए बने हैं। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे है।'' आपने मेहदी हसन सा. के शागिर्द उस्ताद तारी खाँ. सा. के साथ भी प्रस्तुतियाँ दी है। हँसराज जी कहते हैं कि– ''खाँ सा. को हर जुबान का ज्ञान था।

संगीत की छोटी–छोटी बारिकियाँ उनमें थी। राग को श्रोताओं तक कैसे पहुँचाना है, किस तकनिकी से राग में सुन्दरता आयेगी ये सारी खूबियाँ खाँ सा. में थी। गायकी के साथ–साथ आप अच्छे इंसान भी थे। आप अपने काम पर विश्वास करते थे एवं आप सरल स्वभाव के थे। आपकी गायकी को हर मुल्क का कलाकार सलाम करता है। आपकी यादें हमेशा सभी के दिलों में रहेगी क्योंकि आपने सभी के दिलों पर राज किया।

सोनू निगम–

आप बहुत ही सुरीले और रूहदार गायक हैं। आप भी खाँ सा. के बहुत कायल है। आपको खाँ सा. की ग़ज़लों में– ज़िन्दगी में तो सभी प्यार किया करते हैं, रंजिश ही सही, शोला था जल बुझा हूँ आदि पसन्द है। आप खाँ सा. के लिए कहते हैं कि– '' ऐसी आवाज़ घण्टों रियाज़ का और ईश्वर का प्रसाद है। खाँ सा. की आवाज़ से शहद टपकता है।

आपका जन्म फरिदाबाद में गायक अगम कुमार जी के घर में हुआ। आपके पिता दिल्ली के एक मशहूर मंचीय गायक रहे हैं। आप अपने पिता के साथ चार वर्ष की उम्र में ही गाने लगे। आपके पिता के मार्गदर्शन में ही आपने अपना केरियर आगे बढ़ाया। 12 वीं कक्षा तक दिल्ली में पढ़ने के बाद आपने आगे की पढ़ाई पत्राचार से की। दिल्ली के बाद आप मुम्बई आए और अपना कॅरियर बनाने की कोशिश की। यहाँ भी आपको कई कड़े इम्तिहानों से गुजरना पड़ा। शुरूआत में सोनू निगम ने कई शो में हिस्सा लेकर अपनी गायकी का लोहा मनवाया। एक समय ऐसा भी आया जब सोनू निगम को बतौर निर्णायक प्रतियोगी किसी भी संगीत शो में हिस्सा नहीं लेने दिया जा रहा था, क्योंकि हर बार वहीं जीतते थे। उसके बाद आपको बतौर निर्णायक या मेहमान कलाकार बुलाया जाने लगा। आपने पहली बार 18 वर्ष की उम्र में फिल्म आजा मेरी जान के लिए गाना गाया। दुर्भाग्यवश यह फिल्म कभी रिलीज ही नहीं हुई। इसके बावजूद आपने हिम्मत नहीं हारी और निरन्तर प्रयास करते रहे। आपको तभी टी.सीरीज के लिए गाना गाने हेतु सुनहरा मौका मिला। आपने ''रफी की यादें'' से अपने कॅरियर की शुरूआत की। उसके बाद फिल्म सनम बेवफा के गीत ''अच्छा सिला दिया तूने'' से आपको अपार सफलता मिली। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखाँ अपनी साधना को जारी रखा, आज उसी का परिणाम है कि सोनू निगम जी बॉलीवुड के सबसे डिमाण्डिग सिंगर है। आप अच्छे सुर साधक है।

गिरीश विश्वा–

आप भी खान साहब के बहुत बड़े प्रशंसक है। आप कहते है कि खान साहब के जैसा ग़ज़ल गायक अब होना मुश्किल है। एक ही राग में इतना काम करने की हिम्मत सिर्फ उनमें ही थी। उनके साथ तबले की संगत करने वाले उस्ताद तारी खान साहब

का भी कोई जवाब नहीं। ग़ज़ल गायकी में तबला कैसे बजाया जाता है, यह काम उन्होंने ही दुनिया को बताया हैं। इन दोनों ही उस्तादों के बीच जो तालमेल था वो काबिल–ए–तारीफ है। विश्वा जी कहते हैकि ये दोनों उम्दा कलाकार है, इनका कोई सानी नहीं है।

आपका जन्म 20 सितंबर 1964 को इन्दौर में हुआ। आपके पिता श्री बिहारी लाल जी बहुत ही उच्च कोटी के कलाकार थे। आपके परिवार में संगीत का माहौल शुरू से ही रहा। वर्तमान में आप मुम्बई में ही रह रहे है, आपने कई फिल्मों में ढोलक वादन का कार्य किया है। आपने प्रसिद्ध टीवी शो 'सा रे गा मा पा' में आप ढोलक वादन का कार्य कर रहे है। आज का युवा वर्ग आपको अपना आदर्श मानता है।

माणिक वर्मा (आकाशवाणी डायरेक्टर,उदयपुर):–

आप स्वयं भी संगीत घराने से ही है। आपकी माता जी प्रख्यात माण्ड गायिका मांगी बाई थी जो बहुत ही सुरीली माण्ड गायिका थी। आपको बचपन से ही संगीत से लगाव रहा उसका मुख्य कारण है कि आपके घर में बचपन से ही आप संगीत स्वर लहरियों को सुनते आये है। आप खुद मेहदी हसन साहब के कायल है। आपको उनकी गायकी सबसे अच्छी लगती है। आपकी सर्विस रेड़ियो में ही है। आप ज्यादा से ज्यादा खान साहब की ही ग़ज़ले चलवाते है। आप कहते है कि खान साहब का ग़ज़ल गाने का अन्दाज ही सबसे निराला था। आपके सुर लगाने का अन्दाज ही कुछ अलग था। खान साहब ने रागों को शुद्ध ही रखा उनमे। किसी प्रकार दूसरी रागों को सम्मिलित नहीं किया। आपकी मुर्कियों का तो जवाब ही नहीं था। छोटी–छोटी मुर्कियों का प्रयोग बहुत ही अच्छे ढंग से आपने ग़ज़लों में किया।

हेमेन्द्र सिंह (राजाधिराज,बनेड़ा)–

आप से मिलने के बाद पता चला कि आप कितने सुधि श्रोता है। आप जितना अच्छा सुनते है उतना अच्छा गाते भी है। आपके पास मेहदी खान साहब का और तमाम शास्त्रीय गायकों की केसेट्स का संग्रह आपके संग्राहलय में रखा हुआ है। आप जब कभी भी बाहर जाते है, तो मेहदी हसन साहब को सुनते हुये ही जाते है। आप

कहते हैं कि मुझे शास्त्रीय संगीत और ग़ज़ल सुनने का बहुत शौक है। आप खान साहब के लिए कुछ यूं बयां करते हैः–

जानबूझकर धोखा खाना, तेरे बस की बात नहीं
ये तो बस अपना अफसाना, तेरे बस की बात नहीं।।
महक चुराके गुल्दानों से,तू गुलशन कहलाती है।
कांटो से दामन उलझाना, तेरे बस की बात नहीं।।

आप संगीत को नाद ब्रहम मानते हैं तथा जो संगीत की उपासना करते है वह सब ईश्वर तुल्य है। उनमें भगवान निवास करता है। संगीत के बिना जीवन अधूरा है। ऐसे ही खान साहब को सुने बिना चैन नहीं मिलता है। आपने बहुत संघर्ष किया है। आप सबसे कम उम्र के सांसद भी रहे है। आप दो भाई है– बड़े आप व छोटे भाई श्री पराक्रमसिंह है। आप दोनों में प्रभु ने दया भाव कूट–कूट कर भरा है। स्वभाव से इतने विनम्र कि मैं क्या कोई भी कल्पना नहीं कर सकता। आपने इस शोध में मेरी बहुत मदद की।

<u>गुलजार साहब (शायर) :–</u>

आपका जन्म जगजीत सिंह साहब के ऐलबम 'तेरा बयॉ' के शुभारंभ के अवसर 18 अगस्त 1934 झेलम जिला पंजाब में हुआ। यह स्थान अब पाकिस्तान में है। आपके पिता माखन सिंह कालरा और माता का नाम सुजान कौर। आपका परिवार बटवारे के बाद भारत में बस गया। आपका पहले का नाम सम्पूरन सिंह कालरा था। बाद में आपने जो रचनाऐं की उनमें आपने अपना नाम गुलजार लिखा। आप ने फिल्म निर्देशक ,गीतकार , पटकथा, लेखक, निर्माता, कवि और लेखक का कार्य भी किया है। 1971 से 1999 तक (निर्देशक के रूप मे) (सेवा निवृत) और 1956 से वर्तमान तक गीतकार के रूप में कार्यरत है। इन्होंने 1963 में बनी फिल्म बंदिनी में एक गीतकार के रूप अपना केरियर शुरू किया। आर0 डी0 बर्मन, सलिल चौधरी, विशाल भारद्वाज, और ए.,आर. रहमान साहब सहित कई संगीत निर्देशकों के साथ काम किया। आपको पद्म भूषण से भी नवाजा जा चुका है। साहित्य अकादमी पुरस्कार और दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से भी आपको सम्मानित किया जा चुका है। इसके अलावा कई

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, 20 फिल्म फेयर पुरस्कार, एक अकादमी पुरस्कार, और एक ग्रेमी पुरस्कार भी जीता है।

आप किसी परिचय के मौहताज नहीं है आप मेहदी हसन साहब के मुरीद है। ग़ज़ल को सही दिशा मेहदी हसन साहब ने दी है और उनके गाने में दर्द है।

जावेद अख्तर साहबः—

खेराबाद, सीतापुर, उत्तरप्रदेश में आपका जन्म 17 जनवरी 1945 को हुआ। आपके दादा भी एक कवि थे। आपके दादा के बड़े भाई भी महान कवि थे। आपके पिता जान निसार अख्तर और माता साफिया अख्तर। यह गुण आपको विरासत में मिला। आपको पद्मश्री, पद्मभूषण भी मिल चुका है। साहित्य अकादमी पुरस्कार के साथ—साथ आपको तेरह फिल्म फेयर पुरस्कार मिल चुके हैं। आपने कई पट कथाऐं लिखी। आपने कई फिल्मों में गीत लिखे है और लिख रहै है। आपने केफी आजमी के साथ भी काम किया है। आपने शबाना आजमी से शादी की है। वो भी एक बहुत बड़ी थियेटर आर्टिस्ट है।

आप भी खान साहब के लिये कहते है कि उन्होंने हमेशा अच्छी शायरी को महत्व दिया। आपको लगता है कि जो ग़ज़ल गा रहे है अगर उसमें कोई शब्द ज्यादा कठिन है तो पहले उस शब्द का अर्थ अपने श्रोताओं को बताते। आपको शब्द किस तरह से पेश करना है यह कोई आपसे (खान साहब) सीखें। आप उर्दू के बहुत जानकार थे। उन्होंने कई मुशायरों के कार्यक्रम सुने और उन्हें वहीं से शब्दों का ज्ञान हुआ। किस शब्द को कैसे बोलना है, ये उन्हें बहुत ही अच्छे तरीके से आता था।
आपका खरज बहुत ही सधा हुआ था। जब आप खरज में गाते थे तो ऐसा लगता था जैसे कि ओम् की ध्वनि आ रही हों। तीनो सप्तकों पर आपकी पकड़ थी और अति मन्द्र सप्तक में भी आप आ जाते थे। ये सब आपकी बरसो की साधना का प्रतिफल था।

ए0 आर0 रहमान साहबः—

आपका नाम पहले दिलीप कुमार था बाद में आपने धर्म परिवर्तित कर लिया और आपका नाम अल्लाह रक्खा रहमान रखा। आपका जन्म मद्रास मे 6 जनवरी 1967

को हुआ। आपके पिता आर0 के0 शेखर भी तमिल और मलयालम फिल्मों में संगीत निर्देशक का कार्य करते थे।आपने बचपन में बहुत दुख देखा। आप जब 9 वर्ष के थे तो आपके पिता की मृत्यु हो गई आपको बचपन से ही संगीत में बहुत रूचि थी। आप मध्यम वर्गीय परिवार में पैदा हुए। आपके बचपन के दोस्त शिवामणि (ड्रमर), जॉन एंथोनी, सुरेश पीटर्स, जोजो रहे है। आपके पसंदीदा गायक– ए.हरिहरन एवं सुखविन्दर सिंह है। 1989 में आपका नाम ए.आर. रहमान रखा गया। आपने लंदन के ट्रिनीटी कॉलेज से छात्रवृति प्राप्त की एवं पश्चिमी शास्त्रीय संगीत में डिप्लोमा के साथ स्नातक किया। आपने संगीत में इतना अच्छा कार्य किया है कि आज फिल्म इंडस्ट्री में सबसे महंगे संगीतकार है। आपने बॉलीवुड और हॉलीवुड की ढ़ेरों फिल्मों में संगीत दिया है। आपको अपने कार्य के लिए गोल्डन ग्लोब और दो अकादमी पुरस्कार मिले है आपको सर्वश्रैष्ठ संगीतकार एशियाई फिल्म पुरस्कार के लिये नामांकन और आईफा पुरस्कार जीता।

दो ग्रेमी पुरस्कार, बाजटा पुरस्कार, चार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, पन्द्रह फिल्म फेयर पुरस्कार आपको मिल चुके है। आप अपना कमाया हुआ पैसा सामाजिक कार्यो में भी लगाते है। आप सभी धर्मो को मानते है। आप खान साहब के लिये बोलते हैं कि वो जो गाते है तो उनमें सरस्वती मां आकर बस जाती है। इतनी गंभीरता और चैनदारी के साथ गाना बहुत मुश्किल है। आजकल के गायकों मे इतना धैर्य नहीं है। स्वरों के साथ इतने प्यार से खेलना तो बस खान साहब को ही आता था।एक तो आपके गाने में इतनी गहराई है और दूसरा– इतना सुकून मिलता है कि आपको सुनने के बाद फिर किसी की इच्छा नहीं होती। आप जैसे उस्तादों का जन्म 500–700 वर्षो में एक ही बार होता है। आपने सुरों के सागर मे इतने गोते लगाये तब जाकर आपको ग़ज़ल गायकी में ये महारत हांसिल हुई। आप सच में गजल की दुनिया के सबसे उम्दा किस्म के ग़ज़ल गायक थे।

राशिद खान साहब–

आपका घराना रामपुर सहसबान है। आपने अपने नाना–चाचा उस्ताद निसार हुसैन साहब से संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा ली। आपका जन्म 1 जुलाई 1966 में बदायू, उत्तर प्रदेश में हुआ। आपके घराने के संस्थापक ईनायत हुसैन खान के आप

प्रपौत्र है। आपकी बचपन से ही संगीत में रूचि थी। आपने बहुत रियाज़ किया। आपके नाना–चाचा भी आपको सुबह 4 बजे उठाकर रियाज़ कराते थे। बाद में आपने गुलाम मुस्तफा खान साहब से भी सीखा। आपने मुंबई में रहकर मुस्तफा साहब से भी संगीत का प्रशिक्षण लिया आपको पद्मश्री एवं संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिल चुका है।

आप कहते हैं कि खान साहब ग़ज़ल की एक बहुत बड़ी पाठशाला थे। वैसे सुर तो सभी लगाते है मगर जो सुर खान साहब ने लगाये उनकी बात ही कुछ और थी। खान साहब की शास्त्रीय तथा उप शास्त्रीय दोनो ही विधाओं की प्रस्तुतियां बेहतरीन थी। खान साहब ने बहुत मुश्किलों से अपने आपको तैयार किया था। बहुत बुरे समय में भी उन्होंने अपनी महनत और रियाज़ नहीं छोड़ा। आपने अच्छे–अच्छे गायकों को पीछे छोड़ दिया। आपमें बहुत धैर्य, लगन और निष्ठा थी। आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की मन में प्रबल इच्छा रखते थे। लक्ष्य को प्राप्त करके ही दम लेते थे।

पण्डित जसराज–

आपका जन्म 28 जनवरी 1930 को हुआ। आप मेवाती घराने से है। आपके बड़े भाई मणिराम और मोतीराम थे। पण्डित जसराज जी जब 4 वर्ष के थे तब आपके बड़े भाई की मृत्यु हो गई। आपने अपने बड़े भाई मणिराम से संगीत प्रशिक्षण लिया। आप शास्त्रीय संगीत के बहुत ही गुणीजन है। आप भी किसी परिचय के मोहताज नहीं है। खान साहब बहुत बड़े विद्वान थे उनके गायन का सम्पूर्ण जगत पर प्रभाव था। वह प्रभाव जन मानस का उनके प्रति प्यार था। उन्हें सरहद के दोनों तरफ भरपूर प्यार मिला है। आप वाकई में ग़ज़ल के शहंशाह थे। राजस्थान की गायकी आपके कण्ठ में बसती थी। आपने जितना किया है वह काम हर किसी के वश का नहीं है। आप ग़ज़ल के कोहीनूर थे।

<u>पूरण चन्द वड़ालीः–</u>

आपने जीवन में बहुत संघर्ष किया है। आपने पहलवानी भी की है और आपने संगीत की शिक्षा पण्डित दुर्गादास और उस्ताद बड़े गुलाम अली खान साहब से ली

है। आप सूफी परंपरा से जुड़े है। आप शुरू से ही सूफी गाते है। आपके कई सूफी एलबम निकल चुके है, आपने फिल्मों में भी गाया है। आपके छोटे भाई प्यारे लाल जी भी आप ही के साथ गाते है। आप दोनों की जोड़ी को वड़ाली ब्रदर्स के नाम से जाना जाता है। आपने अपना पहला प्रदर्शन हरिवल्लभ मंदिर जलंधर में किया। आपको एक कार्यक्रम में ऑल इंडिया रेड़ियों जालंधर के एक कार्यक्रम अधिकारी नें देखा और रेड़ियो पर गाने के लिये निमंत्रण दिया। फिर इसके बाद आपने कभी भी पीछे मुड़ के नहीं देखा।

मैं जब आपसे मिलने गया तो मैंने आपसे पूछा कि आप खान साहब से मिले क्या? तो उन्होंने कहा–हां में मिला था। एक कार्यक्रम था जालंधर में तब मेरी मुलाकात हुई। मैं उन्हें भाई साहब कहकर बुलाता हूँ। आप कहते है कि ऐसा तैयार गाना मालिक किसी किसी को ही बख्शता है। आपने कहा (पूरण चंद जी) की मेरी इच्छा थी कि मैं उनके साथ गाऊं लेकिन ऐसा मौका कभी आया ही नहीं। मुझे इस बात का मलाल रहेगा कि मैं मेरे मेहदी भाई साहब के साथ नहीं गा पाया। खान साहब का कोई धर्म नहीं था। वो बुल्लेशाह के कलाम गाते थे। तो ऐसा लगता था कि चारो तरफ सूफी संतों का डेरा लग गया हो। आपने सभी को गले लगाया है।

आपके साक्षात्कार जिनके माध्यम से हुऐ है वो हैं– विष्णु सागर (करणपुर)। अगर विष्णुभाई नहीं होते तो मैं वड़ाली साहब से नहीं मिल पाता। क्योंकि आप वड़ाली साहब के शार्गिद है। आप लोक संगीत, भजन,कव्वाली एवं ग़ज़ल गाते हैं आप बहुत ही सुरीले और नेक दिल इंसान है। आपने वहां कई लोगों से मेरी मुलाकात करवाई।

अमिताभ बच्चन और जया बच्चनः–

आपको महानायक का दर्जा मिला हुआ है। आपने हर किरदार को बहुत अच्छी तरह से निभाया है। आपकी ऐक्टिंग इतनी अच्छी है कि आपने सम्पूर्ण विश्व में अपनी अलग ही पहचान बना रखी है। हिन्दुस्तान के अलावा भी आपको सभी देशो में पसंद करते है। आपका जन्म 11 अक्टूंबर 1942 मे ईलाहबाद मे हुआ। आपके पिता महान कवि हरिवंशराय बच्चन थे। आपकी माता का नाम तेजी बच्चन, आपकी पत्नी जया बच्चन मशहूर अभिनेत्री और सांसद है। आपके बेटे का नाम अभिषेक बच्चन और बहु ऐश्वर्या रॉय है। एक बेटी श्वेता बच्चन है। आपको आपके अच्छे प्रस्तुतिकरण की वजह

से 1984 में पद्म श्री से तथा 2001 में पद्मभूषण से व 2015 में पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया। आपको सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के रूप में तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, अर्न्तराष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और चौदह फिल्म फेयर पुरस्कार मिल चुके है। बॉलीवुड में आपका कोई सानी नहीं है। आपको बॉलीवुड में अपनी ऑन–स्क्रीन भूमिकाओं के लिए भारत के पहले 'एंग्री यंगमैंन'' करार दिया गया। आप हर किस्म के रोल कर लेते है। आप ऐक्टिंग के साथ–साथ संगीत में रूचि रखते है। आप भी ग़ज़ल सुनना पसंद करते है। दूसरी बात आप खान साहब की बहुत इज्ज़त करते है। आप खान साहब को दण्डवत प्रणाम करते है। महानायक का इस तरह से ईज्ज़त करना उनके प्रति श्रद्धा को प्रदर्शित करता है। आप भी खान साहब के बहुत बड़े फेन है। खान साहब जब मुंबई आये तो आप उनसे मिलने गये और आपके साथ जया बच्चन भी थी।

जया बच्चन जी का जन्म 9 अप्रैल 1948 को हुआ। आपने कई फिल्मों में काम किया। वर्तमान में आप सांसद है। मॉ का नाम इन्द्रा व पिता का नाम तरूण कुमार है। आपको 1992 में फिल्म फेयर लाईफ टाईम अचीवमेंट पुरस्कार और 2007 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। जया बच्चन जी का परिवार हिन्दू बंगाली परिवार है। आपने बचपन से ही फिल्मों में अभिनय शुरू कर दिया।आप भी खान साहब की ग़ज़लें सुनती है।

दिलीप कुमार और सायराबानोः–

आपका असली नाम मोहम्मद यूसुफ खान है। आपका जन्म 11 दिसम्बर 1922 को पेशावर (अब खैबर पख्तूनख्वा पाकिस्तान) में हुआ। आपने मशहूर अभिनेत्री साायरा बानो से शादी की। साायरा बानो का जन्म 23 अगस्त 1944 में हुआ। आपने फिल्मों में 16 वर्ष की उम्र से कार्य शुरू कर दिया था। आपने कथ्थक और भरत नाट्यम भी सीखा। आप दोनों ने भी कई पुरस्कार प्राप्त किये।

दिलीप कुमार जी को 1991 में पद्मभूषण और 1994 में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार तथा 2015 में पद्मविभूषण से सम्मानित किया जा चुका है।

आप दोनों ही खान साहब को बहुत प्यार करते है। जब–जब खान साहब मुंबई आये तो इनसे बिना मिले नहीं गये। आप दोनों भी खान साहब की ग़ज़लें सुनते है। जब कभी खान साहब मुंबई आये तो दिलीप साहब उन्हें लेने पहुंच जाते। जब

जब खान साहब में कोई तकलीफ आयी तो ये दोनों ही आगे आये। उनकी हर तरह से मदद की। आप दोनों ने खान साहब की बहुत सेवा की। आप दोनों कहते हैं कि उनके गाने की बात ही कुछ निराली है। जैसा मीठा वो गाते थे उतना ही वो खुद भी मीठे थे। वो बहुत साधारण थे। उन्होंने कभी भी किसी का दिल नहीं दुखाया था। वो संगीत के बहुत ही मर्मज्ञ थे। वे सब के लिये पूछा करते थे– कौन कैसा है, कहां है, काम कैसा चल रहा है..... आदि। सभी कलाकारों का सम्मान करते थे। उन्होंने कभी भी किसी की तोहीन नहीं की। हमेशा मुस्कुराते रहते थे। जो दर्द उनके दिल में था उसको भी किसी को नहीं बताते थे। जब कभी आपके पैतृक गाँव लूणा की बात आती तो वे बहुत भावुक हो जाते थे। उन्हें इतना काम आने के बाद भी उनमें घमण्ड नहीं था। सभी के लिये समर्पित थे। वे एक हरफन मोला थे। सभी को साथ लेकर चलने वाले थे। बहुत ही मिलनसार थे। आपको शत्–शत् नमन।

रेखा–

रेखा के पिता तमिल फिल्मो के स्टार जैमीनी, गणेशन और माता तेलुगू अभिनेत्री पुष्पवल्ली। आपके बचपन का नाम भानू रेखा गणेशन था। घर की स्थिति ठीक न होने के कारण आपको फिल्मों में अभिनय करना पड़ा। महज़ 12 वर्ष की उम्र से ही इन्होंने अभिनय की शुरूआत तेलुगू फिल्म ''रंगूला रतनाम'' से की थी। आपने 42 साल के केरियर में 180 फिल्मों में अभिनय किया। आप अच्छी नृत्यांगना भी है। संगीत की भी शौकीन है। फिल्म फेयर की तरफ से आपको सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का खिताब मिला। 2010 में आपको भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया।आप भी खान साहब की मुरीद है। आप खुद ग़ज़ल सुनने और गाने की शौकीन है, इसका उदाहरण एक कॉमेडी कार्यक्रम में रेखा जी ने मेहदी हसन साहब की प्रसिद्ध ग़ज़ल ''मुझे तुम नजर से गिरा तो रहे हो'' गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। आप बहुत सुर में गाती है। आप खुद खान साहब की ग़ज़ले सुनती है और जब–जब खान साहब के कार्यक्रम मुंबई में हुये होते तब–तब आप ने कार्यक्रम में जाकर उन्हें सुना है। आपको खान साहब की एक और ग़ज़ल पसंद है वो

'' बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी, जैसी अब है तेरी महफ़िल कभी ऐसी तो न थी।

आप खुद बहुत ही सुरीला गाती है और आप हारमोनियम बजाकर गाती है। आप खुद संगीत के बारे में जानती है क्योंकि बचपन मे आपने नृत्य भी सीखा था।

नूरजहांः–

आपका जन्म 21 सितम्बर 1926 को लाहौर के पास कसूर नामक स्थान में हुआ आपका असली नाम अल्लाह वसाई था। आपको बचपन से ही संगीत का बहुत शौक रहा। आपकी प्रतिभा को देखते हुऐ आपकी मां ने आपको उस्ताद बड़े गुलामअली खान साहब से तालीम लेने भेज दिया। आपकी तमन्ना थी फिल्मों में काम करने की। आपको ''ख़ानदान'' फिल्म में पहली बार नायिका का किरदार दिया गया। 23 दिसम्बर,2000 को आपका देहान्त हुआ। आप खान साहब के लिये कहती है कि – ''खान साहब के बारे में कुछ कहना सूरज को चिराग दिखाना है। जो लोग सुर में होते है इस दुनिया में ..... मैंने अपने बुर्जुगों से सुना है कि जो सुर में होते हैं उनके बाप–दादाओं ने उनकी नस्लों ने ..... पुरखों ने मोतीदान किये हों, तो फिर वो इस दुनिया में सुर में आता है। ..... मेहदी हसन खान साहब सुर में भीगकर गाते है..... मुझे तो हैरत होती है कि कैसे कोई ऐसे गा सकता है..... सो–दो सो साल तो कोई दूसरा मेहदी हसन पैदा नहीं हो सकता ''

नूरजहां जी जो स्वंय स्वर–माधुर्य की साम्राज्ञी मानी जाती थी। उनका किसी के लिए इस तरह प्रशंसा करना दोनों की महत्ता प्रदर्शित करता है। नूरजहां जी ने पान की दुकान पर रेड़ियो पर खान साहब की ग़ज़ल'' ये धुंआ– सा कहां से उठता है'' सुनी और उनसे मिलने के लिये बैचेन हो गई। उन्होंने खान साहब का पता ठिकाना मालूम किया उन्हें घर बुलाया और उसके बाद तो लगभग हर रात उनके घर मेहदी हसन साहब की आवाज़ गूंजती।

उस्ताद पूरणशाह कोटि एवं मास्टर सलीम :–

उस्ताद पूरणशाह जी भी सूफी गायक है। आप भी मेहदी हसन साहब की ग़ज़लें पसन्द करते है। मैं आपके पास जलंधर गया वहां मैंने आपसे मेहदी हसन साहब के बारे में बात की तो आप बहुत खुश हुए और मुझे अपने घर पर दो दिन तक रोका। आपके बेटे मास्टर सलीम जी ने भी मुझे बहुत प्यार दुलार दिया। मेरे साथ

उमेश पुंज और मुकेश गन्धर्व भी गये थे। पुरण शाह जी ने मुझे खान साहब के बारे में जानकारी दी। खान साहब का जलंधर में कार्यक्रम था तो वहां पूरणशाह जी और हंसराज जी हंस भी उस कार्यक्रम में थे। आप कहते है कि खान साहब का गाना सुनने के बाद उनका गाना काफी समय तक मन में चलता रहता है। वह गाना अपने मन से निकलता ही नहीं। आप में राग को प्रस्तुत करने की जो शैली है वह बहुत ही लाज़वाब है। आपकी ग़ज़ल गाने की शैली सबसे उत्कृष्ठ एवं उत्तम है।

शैल हाड़ा –

शैल भाई का जन्म राजस्थान के कोटा शहर में दिनांक 11.04.1975 में हुआ। आपने कई फिल्मों में गाया है। आप फिल्म इण्डस्ट्रीज में यंग प्ले बेक सिंगर है। आपके पिताजी संगीत के गुणीजन है। आपके घर में संगीत का माहौल हैं। आपने कई फिल्मों में गाया है। आप अभी फिल्मों में म्यूजिक डाईरेक्शन का कार्य भी कर रहे है।

शैल भाई कहते हैं कि– ''खाँ सा. जब गाते हैं तो वो नहीं गाते उनकी जगह खुदा/ईश्वर गाता है। इतना डूबा हुआ गाना बहुत मुश्किल है। महफिल का पूरा वातावरण इस तरह से कर देते थे कि 5–6 महीनों तक वो ही सुर कानों में गूंजते रहते हैं। ग़ज़ल तो सभी लोग गाते है पर मेहदी हसन सा. का जो गाने का अंदाज है वह सबसे बेहतरीन और लाजवाब है मेहदी हसन सा. ग़ज़ल गायकी के बहुत बड़े चमकते सितारे हैं। जो उनके देहान्त के बाद भी इस दुनिया रूपी आभा मण्डल में चमकते रहेंगे। ये नाम छोटा मोटा नहीं है, पूरी दुनिया का सबसे बड़ा नाम हैं।''

उस्ताद चिरंजी लाल –

आप किसी भी परिचय के मोहताज नहीं है। आपका नगमा वादन में भी कोई जवाब नहीं। माण्ड़ गायन के आप एक रत्न है। आपकी गायकी में मिठास है। आपके पास जितना गायन का खजाना है शायद ही किसी के पास हो। बहुत ही गुणी एवं उम्दा माण्ड़ गायक है। खाँ सा. के लिए आप कहते हैं कि– ''ऐसा गाना बहुत कठिन है। आपकी एक और खासियत यह है कि आप जो सुर लगाते हैं उससे इतना प्यार से लगाते हैं कि वह सीधा श्रोताओं के दिलों–दिमाग पर असर करता है। इनकी महफिलों के स्वर मासों–बरसों तक दिमाग से जाते ही नहीं है। पूरा वातावरण

संगीतमयी बना देते हैं। स्वर ऐसे छेड़तें है जैसे कि स्वयं गले में स्वर के साथ तानपुरा भी बज रहा हो खाँ सा. के स्वरों में इतनी मिठास लगती है कि शहद भी फीका लगता है।''

अहमद हुसैन मोहम्मद हुसैन–

आप दोनों भी राजस्थान के जयपुर शहर में पैदा हुए हैं। आप दोनों भजन, ठुमरी, ग़ज़ल गायक है। आपका पहला एलबम 'गुलदस्ता' 1980 में जारी हुआ था। ये दोनों भाई एक साथ जब ग़ज़ल गाते है तो इनका आपस में जो तालमेल एवं सामंजस्य है वो बहुत ही जबरदस्त है। आपने भजनों के एलबम भी किये हैं। आप दोनों की आवाज़ बेसदार है। आपका घराना मिश्रित घराना है।

ये दोनों भाई कहते हैं कि– '' राजस्थान में जन्मे मेहदी हसन जी ने न सिर्फ हिन्दुस्तान में बल्कि ग़ज़ल गायकी से पूरे विश्व में अपना नाम किया है। वैसे भी राजस्थान के गायकों की बात ही कुछ और है। खाँ सा. के गाने में राजस्थान की खुशबू महकती है। ग़ज़ल गायकी में अगर उनको 'मसीहा' कहा जाये तो उसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। जरूर उन्होंने पिछले जन्म में अच्छे पुण्य किये होंगे। इतना अच्छा सुरीला और रूहदार गाना किसी के भी बस की बात नहीं है। आपने बरसों से जो मेहनत की है, यह उसी का नतीजा है।

डॉ. ललित के. पंवार (आर.पी.एस.सी.चेयरमेन)–

आप स्वंय संगीत परिवार से जुड़े हुए है संगीत आपकी रगों में बसा हुआ है। संगीत के बिना आप अपने आपको अधूरा मानते है। आप कहते है कि संगीत के बिना जीवन अधूरा है। आप खान साहब के बारे मे कहते है कि खान साहब ने जो ग़ज़ल को उँचाईयां दी वैसी उंचाईयां किसी के बस की बात नहीं है।

खान साहब ने शास्त्रीय संगीत को बरकरार रखा। ग़ज़लों में शास्त्रीय संगीत को बहुत अच्छे तरीके से प्रस्तुत किया,आपको जो उपाधी मिली है ''शहंशाह –ए–ग़ज़ल'' वास्तव में आप उस उपाधि के सच्चे हकदार थे। आपको जितनी उपाधियां मिले, उतनी ही कम है। असल में आप जैसे गुणी कलाकार को गाने का हक है। आप सरस्वती के सच्चे पुत्र एवं साधक है।

अखिलेश झा (आई.ए. एस.) :–

आपका जन्म मिथिला में मधुबनी जिले के अन्तर्गत नाज़िरपुर गांव में 18 जुलाई को हुआ। आपने पटना विश्वविद्यालय से स्नातक और दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की उपाधी ली और 1996 में भारत की सिविल सेवा के लिए चयन हुआ। आप खान साहब के लिये कहते है कि – मेहदी हसन खान साहब ग़ज़ल की तरह ही एक मखमली रूमानी नाम। दिल शिकस्तों के लिए एक रूहानी नाम। एक नाम जिसे सुनकर न जाने कितनी यादे परत–दर– परत खुलने लगे, सीने में कहीं बेचैनी सी महसूस होने लगे। एक नाम जो बंद गांठों को हौले से खोलने लगे। खान साहब के लिये यह शेर–

'' क्या ज़िन्दगी तुम भी ऐ शहंशाह गुज़ार गए,
सुखनसराईको हस्बे दस्तूरे हुकूमत बना गए।
शिर्के जली का देखो लगा है इल्ज़ाम मुझ पर,
सज़्दा किधर करें,कहां न तुम बुत बना गए।
ज़िंदाबाद ऐ मसीहाए मोहब्बते दो दुनिया,
क्या रविश थी यहां और तुम क्या बना गए।
खान साहब जैसा गाना किसी के बस की बात नहीं है।

मुग्धा सिन्हा (आई. ए. एस.):–

आपके परिवार में भी संगीत का माहौल है और आपको संगीत बहुत पसन्द है। मुझे इसकी जानकारी स्वंय आपने दी है। आप खान साहब की ग़ज़लें सुनती है और आपकी माता जी गुरू मां कमला प्रेम जी भी संगीत की शौकीन है एवं खान साहब की ग़ज़लें सुनती है। आप जब बून्दी कलक्टर थी तब मेरी मुलाकात आप से हुई और मुझे यह सारी जानकारी प्राप्त हुई। जब–जब भी मेरे ग़ज़ल के कार्यक्रम हुये तो आप जरूर आई है।

आप संगीत के साधकों की मदद के लिये हमेशा तत्पर रहती है। आप अच्छी श्रोता के साथ–साथ आप अच्छी मददगार भी है।

आरती डोगरा (आई. ए. एस.)–

आप भी खान साहब को सुनती है आपको खान साहब की गायकी बहुत पसन्द है। आप बहुत व्यस्त रहते हुए भी खान साहब को सुनती है। आप सिविल सेवा में है। आप भी खान साहब की मुरीद है। जब–जब भी आपको समय मिलता है, आप खान साहब की ग़ज़लें सुनती है।

महेश कुमार पंवार (आर. ऐ. एस.) सचिव संगीत नाटक अकादमी जोधपुर –

आप खान साहब के लिये कहते है कि वह तो सुरों के सरताज है। दुनिया में भारतीय संगीत के राजदूत थे उन्होंने ग़ज़ल को एक नया आयाम दिया था। परवरदिगार ऐसे फनकार बहुत कम बनाते,है उनमें से एक हैं मेहदी हसन जी। उनके नक्शे कदम पर चलना भी बहुत मुश्किल है। आप को खान साहब की जो सबसे पसंदीदा जो ग़ज़ल लगती है वह है 'ज़िदगी में तो सभी प्यार किया करते है। पंवार जी कहते है कि खान साहब को सुनने से मुझे हर कार्य में सरलता लगती है। आप कहते हैं कि जब मैं पढ़ता था तब भी खान साहब को सुनके ही पढ़ता था। मैं अभी संगीत नाटक अकादमी जोधपुर में सचिव के पद पर हूॅ तो मुझे और खुशी होती है कि मैं ग़ज़ल से संबंधित कार्यक्रम करवाऊं और जो भी ग़ज़ल गायक आये वो मेहदी हसन साहब की ही ग़ज़ल गाये। जब भी उनके नाम का यहां पर कार्यक्रम होगा मैं उसमें जरूर जाऊंगा। मैं उनको अपनी आत्मा से मानता हूं खान साहब शायद संगीत के जिन्दा जादू थे उनकी आवाज़ जिसने भी सुनी है वह इस आवाज़ को भूल नहीं पायेगा।

स्वरूप सिंह पंवार (आई.ए.एस.)–

शहंशाह–ऐ–ग़ज़ल उस्ताद मेहदी हसन साहब एक उम्दा ग़ज़ल गायक थे। आपकी गायकी में एक उत्कृष्ठ अनुशासन था। आप शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता थे। आपका जन्म सिर्फ और सिर्फ ग़ज़ल गायकी के लिए ही हुआ। हसन साहब और ग़ज़ल एक दूसरे के लिये बने है।

–निष्कर्ष–

मेहदी हसन साहब बहुत ही सरल व नेक दिल इंसान थे आपके बारे में जितना कहो उतना ही कम है, आपका सादा सरल व्यक्तित्व सबके दिलों को छू लेने वाला है, आप संगीत साधना के प्रति गहरी रूचि रखते थे और साधना के प्रति इनका जुझारूपन देखते ही बनता है। आपके प्रति महान् कलाकार, अभिनेता, अभिनेत्रियां व आमजन सभी किस प्रकार नतमस्तक हैं। यह इस अध्याय में प्रस्तुत है।

किताब और साक्षात्कार –

1. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा (आई.ए.एस.) रेमाधव आर्ट प्रा.लि. नई दिल्ली, 2009 पृ. 38,39,40
2. मेरे मेहदी हसन.–अखिलेश झा (आई.ए.एस.) रेमाधव आर्ट प्रा.लि. नई दिल्ली, 2009, पृ.64
3. मेरे मेहदी हसन –अखिलेश झा (आई.ए.एस.) रेमाधव आर्ट प्रा.लि. नई दिल्ली, 2009, पृ.73,74
4. मेरे मेहदी हसन –अखिलेश झा (आई.ए.एस.) रेमाधव आर्ट प्रा.लि. नई दिल्ली, 2009, पृ.79
5. मेरे मेहदी हसन –अखिलेश झा (आई.ए.एस.) रेमाधव आर्ट प्रा.लि. नई दिल्ली, 2009, पृ.59

पंचम

सांगितिक प्रस्तुतियाँ एवं संस्मरण –

आप जब पांच वर्ष के थे तब से ही आप अपने पिताजी के साथ कार्यक्रमों में जाने लग गये थे। जब खान साहब 5–6 वर्ष के थे तब वो अपने पिता एवं भाई पं. गुलाम कादिर के साथ नेपाल गये थे। आप अपने परिवार वालों को देखकर और उन्हें सुनकर ही तल्लीन हो जाते थे। बचपन आपका बहुत अच्छे ढंग से गुज़रा। परिवार में पूरा माहौल संगीतमय रहता था।

[1]आपको आपके उस्ताद इस्माईल खान साहब तालीम देते थे। आपने बहुत सी रागें तैयार कर ली। आप बचपन में रियाज़ भी खूब करते थे। खान सा. के परिवार का पुश्तैनी काम राजपरिवार के लोगों को संगीत की शिक्षा देता था। उसके बदले में इन्हें पूर्व राज्याश्रय प्राप्त होता था। इसी कारण वे कलावंतों की परम्परा में माने जाते है। आपकी उम्र जब 8 वर्ष की थी, तब आपने वालिद एवं चाचा के साथ बड़ौदा गये और बड़ौदा के महाराज के सामने अपना राग बसंत गाया। बसंत में जो उन्होनें स्वर विस्तार करके ख़याल शुरू किया और उसमें आलाप ताने गाकर समाप्त किया तो महाराज ने खुद खड़े होकर तालियां बताई। खान जैसी विलक्षण प्रतिभा के लिए इससे बड़ी और क्या बात हो सकती है।

इस प्रस्तुति से यह सिद्ध होता है कि उनकी 8 वर्ष की उम्र में भी संगीत साधना कम नहीं रही होगी। यह दाद मिलना उनके अथाह रियाज़ का ही परिणाम था–जो कि स्वयं महाराज को उनके सामने खड़े होकर तालियां बजाने पर मजबूर होना ही पड़ा। खान साहब के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। फिर यह खबर सभी आस–पास की रियासतों में पहुंच गई। बड़ौदा के महाराज ने उन्हें जो भी सम्मान देना था, भेंट स्वरूप वो तो दिया ही, साथ ही साथ उनको राज दरबार के राजकीय गायक बना दिये गये। उस समय इनके ख़ानदान की गायकी का वर्चस्व तमाम रियासतों में था।[1]

आपके बचपन के दोस्त ठाकुर नारायण सिंह जी आपके लिए कहते है कि आप खेलकूद से ज्यादा रियाज़ को महत्व देते थे। आप बचपन में बहुत रियाज़ करते थे। वास्तव में जो मेहनत उन्होनें बचपन में की उसी का फल उनके गाने में मिलता है। आपके कार्यक्रमों का सिलसिला तो छोटी सी उम्र से ही शुरू हो गया। आप धीरे–धीरे महफिलों में हिस्सा लेने लगे। उसी समय आपके पिता और बड़े भाई पं. गुलाम कादिर सा. के साथ आप कार्यक्रम करने लगे थे। आपका आसपास के क्षेत्रों में नाम होने लग गया था।

[2]मेहदी हसन साहब के पिता अज़ीम खान साहब के लिए जयपुर की रियासत में एक निमंत्रण आया। वर्तमान पंजाब ''पाक पत्तन शरीफ'' के एक महंत गिरधारीलाल दास का। वे बहुत ही गुणी विद्वान और संगीतज्ञ थे। उन्हीं के दरबार में उस्ताद प्यारे खान नाम के बड़े गुणी संगीतज्ञ थे। इन्होनें जयपुर रियासत में आमंत्रण भेजा, मगर उस समय ये तीनों नेपाल के महाराज के यहां गए हुए थे। खान साहब के पिता और ये दोनों भाई नेपाल से आकर पंजाब पाक पत्तन चले गये।

पाक पत्तन में बाबा फरीद की मजार भी है, पाक पत्तन नाम अकबर का दिया हुआ है। उससे पहले इसे अजूधन नाम से जाना जाता था। विभाजन के पहले तक यह शहर राम–रहीम की साझी विरासत का केन्द्र बना रहा। यहां सूफी गतिविधियां भी कम नहीं हुई। ये तीनों ही पाक पत्तन में कार्यक्रम कर रहे थे, तभी देश में साम्प्रदायिक दंगे फैल गये। राजस्थान भी अछूता न था। अज़ीम खान साहब को अपने परिवार की चिंता हुई। अज़ीम खान सा. ने अपने दोनों बेटों को अपनी बहन, जो छीछावतनी में ब्याही थी, के पास छोड़ दिया और परिवार के बाकी सदस्यों को लाने राजस्थान चले आये। मेहदी हसन सा. की जिन्दगी का यह संस्मरण बहुत ही कष्टदायक रहा जो उनकी अन्तर्रात्मा में हमेशा उन्हें याद दिलाता रहा।[2]

[3]यह समय उनका पीड़ादायी रहा। जिन्होनें कभी भी कोई काम नहीं किया उन खान सा. को साईकिल पंचर की दुकान लगानी पड़ी। आपने पाकिस्तान में कई विषम परिस्थितियों का सामना किया। उन्होनें दिन–रात मेहनत की। विषम परिस्थितियां होने के बावजूद भी आपने अपने रियाज़ को बरकरार रखान 1949 में पहली बार उन्होनें लाहौर की यात्रा की। फिर वहां पर धीरे–धीरे संगीत की महफिलें करने लग गये।

वहां पर भी खान सा. की महफिलों के सब दीवाने हो गये। जिस किसी ने वो महफ़िल सुन ली, तो बस वो उनका हो जाता था। खान सा. खाना खाये बिना रह जाते थे, पर बिना गाने के वो नहीं रहते थे। उस समय तक पाकिस्तान में जो माहौल था, वह संगीत के अनुकूल नहीं था। खान साहब भी इंतजार कर रहे थे कि कब माहौल सही हो। उनके पिता ने भी बताया था कि संगीत के अनुकूल माहौल बनने में वक्त लगेगा। खान सा. कभी भी किसी मुश्किल से हार नहीं मानते थे वे तो उसके लिए हमेशा मुकाबला करते थे। वे चाहते थे कि कब यहां पर अच्छा माहौल बने और उन्हें अपनी मंजिल मिल जाए।

इसी दौरान उनकी मुलाकात रफ़ीक साहब से हुई, जो फिल्म डायरेक्टर थे। उन्होनें भी अपनी फिल्मों में खान साहब से कई गाने गवायें। रफ़ीक साहब की फ़िल्म 'शिकार' से खान साहब का फिल्मी गानों का सफर शुरू हुआ था। इसके बाद इस फिल्म के गानों से खान साहब का बहुत नाम हुआ। रफ़ीक साहब ने ही खान साहब को फ़िल्मी संगीत में बढ़ाया। इस समय तक खान साहब ध्रुपद, धमार, ख़्याल, ठुमरी गाते थे। परन्तु पाकिस्तान में उर्दू को ज्यादा महत्व था तो खान साहब ने ग़ज़ल विधा अपनाई। खान साहब ने अपने पारम्परिक ध्रुपद, धमार का बलिदान किया।

आपके बड़े भाई पं. गुलाम कादिर सा. भी रेड़ियो में संगीत निर्देशक के पद पर लग गये। कादिर सा. लम्बे समय तक कराची रेड़ियो से ही जुड़े रहे।[3]

[4]इसी समय खान साहब को रेड़ियो से ऑडिशन देने का निमंत्रण दिया। खान साहब ऑडिशन में गये वहां पर उन्होनें 5 वर्ष की उम्र से लेकर 25 वर्ष की उम्र तक जो सीखा, वो सब सुनाया। उनका ऑडिशन भी कम से कम पांच घण्टे तक चला। उस समय रेड़ियो के ब्रॉडकॉस्टर जेड.ए. बोखारी सा. थे, तो उन्हें समिति वालों ने बताया कि गाना तो अच्छा है, पर ग्रेड क्या दें..... ये बात हो रही है। तो उन्होनें कहा कि जो रेकॉर्ड किया वो मुझे सुनाओ। जैसे ही उन्होनें सुना, सुनते ही बोले–ए ग्रेड दे दो और फीस पैंतीस रुपये। खान साहब को रेड़ियो में मिले पैंतीस रुपये और फिल्म में गाने के लिए उनको रफ़ीक साहब ने साढ़े चार हजार रुपये दिये। चार पांच सालों में उनकी गायकी का असर पाकिस्तान रेड़ियो के श्रोताओं पर चढ़ने लगा।

सुरैया ख़ानम रेड़ियो आर्टिस्ट थी, लोक गीत गाती थी और इनके भी चाहने वाले बहुत से श्रोता थे। इनको जो सबसे ज्यादा चाहते थे, वो थे मेहदी हसन सा.। सुरैया ख़ानम मूलतः जलंधर की थी।

1960 में खान सा. ने सुरैया ख़ानम से शादी कर ली। शादी के 2 वर्ष बाद सज्जाद मेहदी का जन्म हुआ। पहली बीबी शकीला बेग़म कराची में रहने लगी।

यह बात बताना ज़रूरी है कि खान साहब के दोनों बीबियों से चौदह संतान है–नौ बेटे और पाँच बेटियाँ।

कार्यक्रम में जब उनके बेटे संगत करने बैठते थे तो खान सा. उन्हें नम्बर से पुकारते थे जैसे नम्बर तीन, नम्बर चार। उनमें भी गलती हो जाती थे उनके बेटे सुधार देते।[4]

खान साहब ने ही ग़ज़ल गायकी को एक गम्भीर कला के रूप में स्थापित किया।

कार्यक्रम का एक किस्सा :–

[5]एक बार पिंडी में ग़ज़ल कार्यक्रम था। कार्यक्रम में लगभग दस हजार श्रोता थे। मेहदी हसन सा. ने तलत महमूद की दो ग़ज़लें श्रोताओं को सुनाई, 'एक मैं हूं और एक मेरी बेक़सी की शाम है'' और ''हुस्न वालों को न दिल दो, ये मिटा देते है'' उनकी गायकी का इतना असर था कि इतनी बड़ी सभा में उनके पूरे गायन के दौरान कोई आवाज़ नहीं आई–सब मुग्ध। जब उनका गायन समाप्त हुआ तो इतनी सीटियाँ और तालियाँ बजी.....और सीटियों–तालियों से भी ज्यादा इतने पैसे बरसे कि मेहदी हसन सा. अवाक् रह गये। जितना पैसा वे एकत्र कर पाए, पह लगभग चौदह हजार रुपये थे, यह उस समय की बात है जब बड़े–बड़े स्थापित गायकों को कार्यक्रम में सैकड़े में ही भुगतान होता था। यह वाक़या मेहदी हसन सा. ने तलत महमूद सा. को भी सुनाया था, जब वो उनसे मिलने गये थे।

खान साहब की रेड़ियो पर जो पहली ग़ज़ल आई वह–''गुलों में रंग भरे बादे–नू बहार चलें'' उन्होनें यह ग़ज़ल 1959 में गाई थी। इसकी धुन पं. गुलाम

कादिर सा. ने राग झिंझोटी में तैयार की थी। फ़ैज़ सा. की लिखी यह ग़ज़ल बहुत प्रसिद्ध हुई।

मेहदी हसन सा. की गाई गई ग़ज़ल ''गुलों में रंग भरे'' प्राईवेट महफिलों में मशहूर होने के बाद फिल्म 'फ़रंगी' (1964) शामिल की गई।

खान सा. ने 1962 में बनी फिल्म ''क़ैदी'' में पहली बार नूरजहाँ के साथ गाना गाया।[5]

[6]लन्दन में एक कार्यक्रम था वहां पर मेहदी हसन सा. का ग़ज़ल कार्यक्रम था। उस कार्यक्रम में लता जी भी थी। लता जी ने उन्हें सुनकर कहा कि असली गाना तो इसे कहते है।

सन् 1977–78 की बात है, जब खान सा. का पहली बार हिन्दुस्तान में कार्यक्रम हुआ। वैसे तो सारी दुनिया बम्बई हिन्दी सिनेमा, उसके संगीत और उसके कलाकारों की दीवानी है, पर बम्बई हिन्दी सिनेमा का दिल जिस पर आया, वह मेहदी हसन सा. थे। क्या गायक, क्या संगीतकार, क्या अभिनेता, क्या निर्माता–निर्देशक.....सब इनके बड़े चाहने वाले। भारत में पहली बार बम्बई में उनका कार्यक्रम हुआ। यह कार्यक्रम बिड़ला मातेश्वरी हॉल में हुआ। यह बम्बई हॉस्पीटल के पास है। उस समय टिकिट की रेट 100/– रुपये थी। लेकिन उस समय टिकिट 1000/–रुपये में बिके। भीड़ इतनी पड़ी कि पैर रखने तक की जगह भी नहीं थी। यह कार्यक्रम भारत–पाकिस्तान के बंटवारे के बाद पहली बार जब खान सा. भारत आये तब हुआ। इस कार्यक्रम में म्यूजिक डायरेक्टर सा. नौशाद सा. ने खान सा. का परिचय कराया। टिकिट पर साफ लिखा हुआ था रिकॉर्डिंग नहीं करनी है। इस कार्यक्रम में संगीतकार कल्याण जी–आनन्द जी, शंकर–जयकिशन जी, शम्मी कपूर, यश चौपड़ा, शत्रुघ्न सिन्हा, राजकपूर, राजेन्द्र कुमार, धर्मेन्द्र, रेखा, अमिताभ बच्चन आदि और भी कई लोग आये। सभी ने खान सा. की बहुत प्रशंसा की। कार्यक्रम 8.30 पी.एम. से 1.30 पी.एम. तक चला।[6]

इसी कार्यक्रम में राज वोहरा जी ने उक्त कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग कर ली और खान सा. को जाकर बोले कि मैनें इस कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग कर ली है। तो खान

सा. के साथ जो थे उन्होनें कहा कि रिकॉर्डिंग की कैसेट तोड़ो तो खान सा. ने उनकी तरफ देखा फिर बोले–यह बच्चा इसको बेचेगा नही, यह इसे सुनेगा और उन्होनें उनसे नाम पूछा और कहा आज मेरे साथ ही रहो। वोहरा जी हसन सा. के साथ ही रहे और साथ में खाना खाया। फिर जब जब खान सा. बम्बई आये तो वोहरा जी के घर पर ही रूके।

खान सा. ने राज वोहरा जी को उनके घर पर बोला कि राज बेटा जब भी मैं यह ग़ज़ल ''अब के हम बिछड़े'' गाता हूं तो मेरी तबियत बिगड़ जाती है, इसलिए मैं इसको गाने के बाद तुरन्त दूसरी राग छेड़ देता हूँ।

सन् 1978 में जब खान सा. अपने पैतृक गांव लूणा में आये तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी उस समय विदेश मंत्री थे, उन्होनें खान सा. का वीजा बढ़ा दिया था। खान सा. के चाहने वालों में ये भी एक है।

सन् 1978 में खान सा. ने झुन्झुनू में रानी सती मां के मंदिर में कार्यक्रम किया। जो पैसा एकत्रित हुआ उसे मंदिर में ही चढ़ा दिया। गांव में सड़क बनवाई। स्कूल में दो कक्ष बनवाये और लूणा गांव में बिजली की व्यवस्था करवाई। खान सा. कलाकार के साथ नेक इन्सान भी थे।

सन् 1978 में आपने जलंधर के जिम खाने में भी कार्यक्रम किये। आपको जलंधर में के.एल. सहगल अवार्ड से भी नवाज़ा गया। जब आप लूणा गांव में गये तो आपने वहां आपके बाल सखा एवं अपने दादा के शागिर्द ठाकुर नारायण सिंह जी को प्रमाण पत्र भी दिया। इस प्रमाण पत्र में खान सा. ने हस्ताक्षर भी कर रखे है। उस प्रमाण पत्र में जो दिनांक है वह 29.04.1978 है। इसमें खान सा. ने नारायण सिंह जी को उनके घराने का शागिर्द बताया है।

सन् 1991 में खान .सा. का प्रोग्राम बम्बई में एस्सल वर्ल्ड के डायरेक्टर के यहां हुआ था। उस प्रोग्राम में संगीतकार कल्याणजी–आनन्दजी भी थे। प्रोग्राम के अंत में आप दोनों ने खान सा. को गले लगाया और बोले, खान सा. आपमें ईश्वर बसता है।

यादगार लम्हा.....

''सन् 2005 में खान सा. को व्हील चेयर पर देखकर लता जी अपने आंसू रोक न पाई। खुद खान सा. उन्हें देखकर रो पड़े।'' आपको लता जी ने घर पर आमंत्रित किया और साथ में बैठकर कई बातें की।

खान सा. जब रेड़ियो में गाने लग गये तब पाकिस्तान के एक बहुत बड़े गुणी संगीतकार को वहां के संगीत श्रोताओं ने कहा कि मेहदी हसन बहुत अच्छा गाते है, उनको सुनकर चैन मिलता है। तब संगीतकार सा. ने कहा कि उसे दो दिन बाद मेरे स्टूडियो में लेकर आना। खान सा. को श्रोताओं ने बता दिया कि आपके पंजाबी संगीतकार ने बुलाया है। खान सा. दो दिन बाद स्टूडियो पहुंचे उन्होने खान सा. को एक ऐसे गाने की नोटेशन दी कि, उसे खान सा. ने देखकर कहा–'मेरे मालिक मेरी लाज रखना। हकीकत तो यह थी कि वो धुन इतनी कठिन थी कि खान सा. को चक्कर आ गये। खान सा. ने जैसे तैसे करके वो धुन सुना दी और अपने घर आ गये। रात की 11.30 बजे वो पंजाबी संगीतकार खान सा. के घर आये, दरवाजा खटखटाया, खान. सा. से दरवाजा खोला, और बोले–पधारो सा! फिर पूछा इतनी रात के आप आये, मुझे बता दिया होता, मैं खुद आ जाता। संगीतकार सा. मेहदी हसन सा. को देखते ही रोने लग गये और अपनी पगड़ी खोल कर मेहदी हसन जी के पैरों में रखने लगे और बोले! 'यार मेहदी तू ने मेरी इतनी कठिन धुन को भी गा दिया।'

खान सा. ने उन्हें कहा कि उस्ताद ये ग़लत है आप हमारे बड़े बुजुर्ग है, और आप मेरे सामने झुके ये मुझे शोभा नहीं देता। मैं आपके चरण स्पर्श करूं तो चलता है। क्योंकि हमारे बुजुर्गो ने हमें यहीं सिखाया है कि गुणीजनों का सम्मान करो। आप तो मेरे पिता के समान है। ऐसा कहकर खान सा. ने उन्हें वापस पगड़ी पहनाई और कुर्सी पर बिठाया। खान सा. सभी को सम्मान देते थे।

कराची में हसन सा. का एक कार्यक्रम था, वहां खान सा. ने पहली बार खलीफा मुहम्मद हुसैन सा. को कार्यक्रम में हारमोनियम बजाने के लिए कहा, तब खलीफा सा. मेहदी सा. को जानते नहीं थे, तो उन्होनें कहा मैं आ जाऊंगा, लेकिन पैसे तो मैं .....इतने लूंगा। खान सा. ने कहा ले लेना, पर आप आओ तो सही!

जब खान सा. का कार्यक्रम शुरू हुआ, खलीफा सा. तो उठकर चल दिये, खान सा. ने उन्हें फिर बुलाया तो खलीफा सा. हाथ जोड़ने लग गये और बोले मुझसे ग़लती हो गई है। मैं हारमोनियम तब बजाऊंगा जब आप मुझे शागिर्द बनायेंगे। फिर आपने उन्हें शागिर्द बनाया। उसके बाद तो मोहम्मद हुसैन जी ने काफी वर्षों तक उनके साथ हारमोनियम बजाया था। मुहम्मद हुसैन सा. एवं तबला नवाज उस्ताद पीरबख्श सा. इन दोनों ने ही खान सा. के साथ खूब संगत की। ये दोनों ही इनकी महफिलों के तारे थे और खान सा. महफिल के चाँद!

खान सा. ने जो बचपन लूणा गांव में बिताया उसमें वो खेलते भी थे, परन्तु रियाज़ को ज्यादा महत्व देते थे। आपको गिल्ली–डण्डा खेलने का बहुत शौक था। आप माचिस की डिब्बी में धागा बांध कर बात किया करते थे अपने दोस्तों के साथ। आप जिन दोस्तों के साथ खेलते थे उनमें नारायणसिंह जी, शौकरण जी, मुराद खान और अर्जुन जी खाती थे। आपका बचपन बहुत ही रईस तरीके से बीता। आपको भी पता नहीं था कि आगे आने वाला समय इतना दुःखदायी होगा। इतनें दुःखों के बाद जो सुख आया वो भी किसी जन्नत से कम नहीं था।

आपको जब कभी भी समाचार पत्रों में समाचार आता, गांव वाले बहुत खुशियां मनाते और बोलते–''यो म्हांको मेहदी हसन है, अरे! मेहदी तो कमाल करग्यो।''

इस तरह से गांव वाले भी खान सा. को बहुत प्यार करते थे। इसका एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ :–

सन् 2011 में मैं और मेरे साथी सुरेन्द्र रावल और रघुवर दयाल लूणा गांव में गये। वहीं पर हम सड़क के किनारे खड़े थे तो गांव के कुछ व्यक्ति वहां बैठे हुए थे तो हमने खान सा. का नाम लेकर पूछा कि उनकी माँ की और दादाजी की मज़ार कहां है? गांव के एक व्यक्ति ने अपनी महिन्द्रा गाड़ी निकाली और बोला गाड़ी में बैठों मैं छोड़ देता हूं। फिर हम वहां गये। मज़ार स्कूल के अन्दर है। जब तक वहां रहे पूरा गांव एकत्रित हो गया और कोई हमारे लिए चाय ला रहा था तो कोई दूध। नारायण सिंह जी ने हमारे लिए उनके घर पर खाना बनावाया। नारायण सिंह जी पूरे गांव के ठाकुर भी है। उन्होनें हमें बहुत सी बातें बताई। गांव वाले हमें पूछ रहे थे कि हमारे

शहँशाह कैसे है और वो कब लूणा आयेंगे। मैनें वहां मज़ार के दर्शन किये, फूल चढ़ाये। उनके दादा की मज़ार तो सही थी। परन्तु उनकी माँ ''जोया'' की मज़ार थोड़ी सी टूट रही थी। मैनें वो मज़ार अगली बार जाकर सही करवाई। गांव वालों का खान सा. के प्रति इतना प्रेम काबिल–ए–तारीफ है। सच में खान सा. ने पूरी दुनियां में मुहब्बत के झण्डे गाड़े है।

किसी को पता नहीं कि आपकी माँ का नाम क्या है? परन्तु इनके परिवार वालों (रोशन भारती जी) की वजह से मुझे यह नाम पता चला। खान सा. का दुर्भाग्य कह लों कि उन्हें माँ का ज़्यादा प्यार नहीं मिला–एक पंजाबी भजन जो खान सा. के लिए भी है–''माँ तू सचमुच राणी माँ दिल भर जांदा जदो बचपन दी, आजांदी याद कहाणी माँ।'' यह भजन पंजाब के सुप्रसिद्ध भजन गायक मास्टर सलीम ने गाया है। ये खुद भी खान सा. को बहुत प्यार करते है, और उनकी ग़ज़लें सुनते हैं।

खान सा. जलंधर में कार्यक्रम करने गये तो वहां पर हँसराज जी हँस उनके पास आये और चरण स्पर्श किये। खान सा. ने उन्हें गले लगा लिया। हंसराज जी हंस एक बहुत बड़े सूफी गायक है। आप खान सा. को बहुत ही प्यार करते है। खान सा. के साथ रहे और खान सा. के हाथ अपने कंधे पर रखकर उनके साथ रहे, क्योंकि खान सा. को चलने में दिक्कत थी। कार्यक्रम खत्म होने के बाद हँसराज जी उन्हें लेने के लिए स्टेज पर गये और सहारा देकर लाये। उन्हें वहीं पर एक चेयर पर बैठा के उनके पांवों में जूते अपने हाथों से पहनाये, खान सा. ये देखकर बोले, बेटा तू सूफी तो गाता ही है, लेकिन मैं आज तेरे नाम के आगे सूफी संत और लगाता हूं। यह कहकर खान सा. ने उन्हें (हँसराज जी को) गले लगा लिया। हँसराज जी उनकी ये बातें सुनकर अपनी आंखों से आंसू रोक न पाये। खान सा. ने उन्हें बहुत आशीर्वाद दिया और कहा कि बेटा! आज रात तू मेरे साथ ही रूक। हँसराज जी पूरी रात खान सा. के पास ही रूके, उनकी सेवा की।

इस शोध में हँसराज जी का जिक्र करना बहुत जी ज़रूरी है क्योंकि पूरे पंजाब से आप एक ऐसे कलाकार है जो खान सा. की मदद के लिए एक बार इस्लामाबाद और एक बार लाहौर गये। मदद करना भी हर किसी के वश की बात नहीं है। इसलिए आपको सूफी संत कहा जाये तो इसमें कोई दो राय नहीं है।

खान सा. अपना चैक–अप करवाने दिल्ली आये तो आप वहां पर मनमीत सिंह जी के घर आ गये। क्योंकि ये आपके बड़े बेटे आरीफ हसन जी के दोस्त है। इनके घर आने के बाद खान सा. ने गाना बजाना किया, फिर मनमीत सिंह जी से कहा कि बेटा तेरी बेटी कहां है–उन्होनें कहा कि मैं लेकर आता है। वो अपनी बेटी मोहलीन कौर को लाये, फिर खान सा. ने कहा, कि मैं इसे मेरी शागिर्द बनाऊँगा और आपने उसे गंडा बांधा। खान सा. की यह सबसे कम उम्र की शागिर्द बनी। मोहलीन कौर उस समय सात माह की थी। जब खान सा. अप्रेल 2005 में आये थे। मोहलीन कौर 13 सितम्बर 2004 में पैदा हुई।

खान सा. दिल्ली अपने ईलाज के लिए आये थे। केरला की ही ब्रांच है जो दिल्ली में है, उस अस्पताल में उनका ईलाज 15 दिन चला, उसके बाद वे 20 दिन तक मनमीत सिंह जी के घर पर रूके। इससे पहले 2002 में भी खान सा. केरला में ईलाज करवाने गये थे।

खान सा. बहुत ही मूडी थे। जो धुन जब, जहां दिमाग में आ जाये, उसे वहीं की वहीं गाते थे। चाहे रात के 2 बजे या 3 बजे। ऐसा ही एक वाकिया है, जो मुझे तारी खान सा. ने बताया कि वो और मेहदी हसन सा. इस्लामाबाद में कार्यक्रम कर के आ रहे थे, तो खान सा. ने बीच रास्ते में ही गाड़ी रोक दी और कहा तारी तू तबला लेकर बाहर आ जा। मेरे दिमाग में एक धुन आई है। मैं तबला लेकर बाहर आया, खान सा. ने हारमोनियम पर वो धुन मुझे सुनाई और पूछा कैसे लगी बेटा? तो मुझे वो धुन बहुत अच्छी लगी और मैनें कहा खान सा. क्या बात है, मजा आ गया! फिर हम दोनों ने लगभग 2 घण्टे तक वहां गाना–बजाना किया।

सन् 2011 में मैनें अखिलेश सा. से कहा कि सर मैं खान सा. की अच्छी सेहत के लिए एक कार्यक्रम लूणा में करवाना चाहता हूं। झा सा. ने कहा जरूर करो। मैनें पूछा कि सर आप तारीख बताओ, जब आप फ्री रहो, तो झा सा. ने कहा कि खान सा. के लिए मैं हमेशा फ्री हूं। मैनें कहा ठीक है सर! एक घण्टे बाद झा सा. ने मुझे फोन करके कहा कि तारी खान सा. भी भारत आए हुए है। उन्हें भी फोन कर दो और झा सा. ने मुझे उनके नम्बर सेण्ड कर दिये। मैनें तारी खान सा. को कॉल किया और कहा कि मैं खान सा. की अच्छी सेहत के लिए एक कार्यक्रम कर रहा हूं, आप को भी

कार्यक्रम में आना है। क्या आपके पास समय है? तारी खान सा. ने तपाक् से उत्तर दिया मेरे पास जो भी समय है, वह सब उनका ही है। दीपेश तुम तो तारीख बताओ, बेटा मैं जरूर आऊँगा!

फिर मैं और मेरे मित्र लोकेश डडवाडिया और संजय ने मिलकर दो दिन पहले लूणा जाकर सारी व्यवस्थाएं की। कार्यक्रम में तारी खान सा., अखिलेश जी झा. सा. और प्रभजोत कौर आये। उस दिन तारी खान सा. ने आते ही खान सा. की माँ और दादा की मज़ार पर फूल चढाये और नारायणसिंह जी से गले मिलकर रोये और बोले ऐसा लग रहा है जैसे कि मैं मेहदी हसन सा. से मिल रहा हूं। तारी खान सा. मेहदी हसन सा. को बहुत मुहब्बत करते थे।

एक कार्यक्रम में तारी खान सा. ने कहा कि मुझे आपका शागिर्द बनाओ और जिद पर अड़ गये, तो खान सा. ने आपको गण्डा बंध शागिर्द बनाया। खान सा. को आप जितना हू–ब–हू आप गा सकते है, वैसा और कोई नहीं गा सकता है।

तारी खान सा. जैसे बड़े कलाकार मेरे एक छोटे से निवेदन पर लूणा गांव में आये। यह खान सा. के प्रति उनका आदर भाव एवं मुहब्बत।

सन् 2012 में खान सा. की तबीयत बहुत खराब थी तो उनकी अच्छी सेहत के लिए मैनें और मेरे मित्र लोकेश कुमार एवं उसके छोटे भाई गुड्डू (दिलीप कुमार) ने लूणा गांव में एक ग़ज़ल कार्यक्रम रखवाने की योजना बनाई और उसके बाद गांव जाकर सारी व्यवस्थाएं की। हमने कार्यक्रम 29 जनवरी 2012 में आयोजित किया। इस कार्यक्रम में मेहदी हसन सा. के शागिर्द एवं सुप्रसिद्ध तबला नवाज उस्ताद तारी खान सा. आये। उनके साथ उनकी शागिर्द प्रभजोत कौर भी आई थी। इस कार्यक्रम को देखने आस पास के सभी गांवों से खान सा. के चाहने वाले आये और कार्यक्रम के अन्त में सभी ने पूजा अर्चना की और उनकी तबीयत की सलामती की दुआ की।

03 अप्रेल 2007–08 में हरिहरन सा. ने अपने जन्मदिन पर खान सा. को बुलाया था। उस कार्यक्रम में खान सा. और उनके बेटे आरिफ हसन भी आये थे। इस कार्यक्रम में फिल्म इण्डस्ट्री से कई हस्तियाँ आई थी और महानायक अमिताभ बच्चन और जया बच्चन भी इस कार्यक्रम में मेहदी हसन सा. से मिलने आये थे और उन्होनें

खान सा. को दण्डवत् प्रणाम किया और अपनी पत्नी जया बच्चन को भी खान सा. से मिलाया और बोले कि खान सा. ये मेरी बीबी जया है। इस कार्यक्रम में और भी बहुत सी हस्तियां आई, जिनमें उस्ताद गुलाम मुस्तफ़ा खान सा. भी एक थे। मुम्बई में खान सा. के एक चाहने वाले शायर सा. ने कहा कि मेहदी हसन सा. मेरे घर आयें, चाहे कुछ भी हो जाये। उन शायर सा. ने एक कार्यक्रम रखा वहां पर राजकुमार जी को गाने के लिए बुलाया और खान सा. को चीफ गेस्ट बनाया। इस कार्यक्रम में खान सा. ने एक ग़ज़ल ''शोला था जल बुझा हूँ'' गाई और ऐसी गाई कि सब हैरान रह गये। क्योंकि उसमें उन्होनें जो बात लगाई वो इनके शागिर्द राजकुमार जी भी नहीं लगा पाए। मेरे पास इस कार्यक्रम का विडियो भी रखा हुआ है। यह कार्यक्रम रात में दो बजे तक चला। खान सा. वहां से रात की साढे तीन बजे राज वोहरा जी के साथ गये। वहां राज वोहरा जी ने पूछा कि खान सा. आपने जो बात लगाई वो उनको क्यों नहीं आई, तो खान सा. ने बोला कि उसे ध्यान से सुनना चाहिए था। कुछ भी गाने से पहले उसको अच्छे से सुनना ज़रूरी है। इस कार्यक्रम में खान सा. ने जो हरकते लगाई उन्हें सुनकर श्रोता दंग रह गये। खान सा. ने संगीत को ईश्वर मानकर उसकी पूजा की। तभी तो कहते है कि ''कार्य ही पूजा है।''

खान सा. दिल्ली में आये हुए थे। दिल्ली में उनके कार्यक्रम थे। अखबार में जब यह समाचार प्रकाशित हुआ तो यासीन खान सा. ने यह समाचार पढ़ा और अपने बड़े भाई से मिलने के लिए बेताब हो गये। अपने सुपुत्र रौशन भारती जी को लेकर वो दिल्ली रवाना हो गये। खान सा. उस समय होटल में ठहरे हुए थे। वहां जाकर उन्होनें दरवाजा खटखटाया तो वहां एक आदमी ने दरवाजा खोला और बोला कौन है आप? यासीन खान सा. ने बोला कि मैं खान सा. का छोटा भाई हूं और उनसे मिलने आया हूं, तो उस आदमी ने कहा, यहां तो बहुत से व्यक्ति आते है और अपने आपको खान सा. का रिश्तेदार बताते है। इतने में खान सा. नहाके बाहर आये और उन्होनें उस आदमी को फटकारा और कहा, ये मेरे छोटे भाई है। यह कहकर खान सा. ने उन्हें गले लगाया। खान सा. ने कहा यार यासीन भाई हम सब कितने दूर हो गये? हम कितने सालों बाद मिल रहे है? दोनों भाई आपस में गले लगकर खूब रोये।

उनके साथ उस समय तबले पर उस्ताद पीर बख्श सा. आये थे। फिर खान सा. ने पीर बख्श जी को कहा कि ये हमारे छोटे भाई है और इन्हें नज़राना दो भाई। फिर ग़ज़ल की महफिल चली। उस महफिल में खान सा. ने अपने भाई के लिए बहुत ग़ज़ले गाई। आप अपने परिवार को बहुत चाहते थे।

खान सा. ने परिवार, दोस्तों और कलाकारों की हमेशा दिल से इज़्ज़त की। खान सा. दिखावा नहीं करते थे। उन्हें यह सब संस्कार अपने परिवार में मिले थे। घर में जो भी कोई आता, तो वो उनका स्वागत राजस्थानी भाषा में ही करते थे, ''आओ सा....पधारो सा.....''। खान सा. को घर में सब बाऊजी कहकर ही पुकारते थे। आप घर में राजस्थानी ही बोलते थे।

गुलाम अली सा. का ग़ज़ल कार्यक्रम था, वहां राज वोहरा जी से गुलाम अली सा. की बात हुई तो राज वोहरा जी ने कहा कि–मैं खान सा. का शागिर्द हूं, तो गुलाम अली सा. ने दोनों कान पकड़े और कहा–माशा अल्लाह! उनका तो कोई जवाब ही नहीं है। खान सा. तो इस लाईन के सबसे माहिर कलाकार हैं।

–निष्कर्ष–

आपके कार्यक्रमों में किन–किन लोगों से आपको सहयोग मिलता था। आप कार्यक्रम की शुरूआत किस प्रकार करते थे तथा आपके कार्यक्रम की क्या ख़ास बात थी। कार्यक्रम में आप किन–किन बातों को ध्यान में रखते थे। इत्यादि बातें मैं इस अध्याय में स्पष्ट करूंगा।

किताब एवं साक्षात्कार :–

1. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 37

2. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 42

3. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 50

4. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 63

5. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 62

6. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 27

धैवत

ग़ज़ल गायकी में ख़याल गायकी की झलक

ग़ज़ल गायकी में ख़याल गायकी की झलक दर्शाने से पहले में 'ख़याल के बारे मे बताना चाहूंगा–

1. **ख़याल**–

ख़याल फारसी भाषा का शब्द है, ख़याल का अर्थ – विचार करना या कल्पना करना। राग के नियमों का पालन करते हुए अपनी ईच्छा या कल्पना से विविध आलाप तानो का विस्तार करते हुए एकताल, त्रिताल, आड़ा चौताल और झूमरा इत्यादि तालों मे गाते है। ख़याल के गीतों में श्रृंगार रस का प्रयोग अधिकाशं पाया जाता है। खयाल की गायकी में गिटकरी जलद तान का प्रयोग शोभा देता है और चमत्कार पैदा करने के लिए ख़यालों में तरह–तरह की तानें ली जाती है। ख़याल गायन में ध्रुवपद जैसी गंभीरता और भक्ति रस की शुद्धता नहीं पाई जाती है। ख़याल दो प्रकार के होते है। 1– बड़ा ख़याल 2– छोटा ख़याल

बडा ख़याल को विलम्बित ख़याल भी कहते है। जो विलंबित लय में गाए जाते है।

छोटा ख़याल– जो द्रुत लय में गाया जाये उसे छोटा ख़याल कहते है। छोटे बड़े ख़याल जब गायक एक स्थान पर एक समय गाता है। तो ये दोनों ही प्रायः किसी एक ही राग में हाते है। किन्तु बोल या कविता दोनों ख़यालो की अलग अलग होती है। मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीले (सन् 1719) के दरबार में प्रसिद्ध गायक सदारंग और अदारंग ने हज़ारों ख़याल रचकर अपने शिष्यों को सिखाए, किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि उन्होंने अपने वंशजों को एक भी ख़याल नहीं सिखाया और न गाने दिया। रामपुर के वजीर खान सदारंग के ही वंशज कौर मुहम्मद अली खान तानसेन के वंशज थे। वे दोनों ही ध्रुपद गायक थे, ख़याल गायक नहीं। आज सबसे ज्यादा ख़याल गायकी का ही प्रचलन है। ध्रुपद धमार बहुत कम गाये जाते है। [1].

शास्त्रीय संगीत की एक शैली है – ख़याल

ख़याल गायकी मे गायकी की वजह से काव्य का असर गौण हो जाता है जबकि ग़ज़ल काव्य प्रधान शैली है, अतएव काव्य के भावानुरूप राग का चयन कर उसके मर्म के साथ राग में रहते हुए न्याय करना आपकी एक ख़ासियत है।

आपकी गायकी पूर्णरूप से शास्त्रीय संगीत से भरी थी। आपने शास्त्रीय संगीत की विधिवत तरीके से शिक्षा ली थी। आपके चाचा ने भी आपको सीखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आपने ध्रुपद धमार, ख़याल, ठुमरी, टप्पा आदि अपने चाचा से सीखे थे। आपके गाने में राजस्थान की पूरी–पूरी महक आती है।

पूरा हिन्दुस्तान जानता है हमारे राजस्थान के स्वागत गीत ''केसरिया बालम आवोनी पधारो म्हारे देस'' को सभी कलाकारों ने अपने अपने हिसाब से गाया है, किन्तु खान सा. ने जो केसरिया बालम गाया, ऐसा गाना हर किसी के बस में नहीं। खान सा. जो राग पर आधारित रचना गाते थे उसमें वो राग की तमाम तकनीकी बिन्दुओं को इस प्रकार दर्शाते थे कि वह राग तुरन्त तमाम श्रोताओं के समझ में आ जाता और श्रोता तुरन्त समझ जाते हैं कि खान सा. ने जो ग़ज़ल गाई हैं वह किस राग में है। कई ग़ज़ल गायक एक ही राग में भिन्न भिन्न रागों की छाया दिखाते है, लेकिन खान सा. ने जिस राग में ग़ज़ल गाई, उसमें वो दूसरी रागों की छाया नहीं दिखाते थे।

आपने बहुत सी रागों में ग़ज़लें गाई है उनमें से कुछ ग़ज़लें इस अध्याय में बताऊँगा। इन ग़ज़लों को सुनकर ऐसा लगता है कि यह ख़याल की हू–ब– हू शक्ल है।

जिस तरह संगीत में स्वर शरीर है तो ताल उसकी आत्मा। उसी तरह खान सा. का शरीर ग़ज़ल है तो उनकी आत्मा ग़ज़ल का विश्वविद्यालय। ऐसा गाना किसी किसी को ही मिलता है। मेहदी हसन जी ने ख़याल गायकी को भी तवज्ज़ो दिया है। आपकी गायकी में शास्त्रीयता कूट–कूट कर भरी है। आपके गायन से श्रोताओं को चैन व सुकून का अहसास होता है। आपके स्वर लगाने का अंदाज ही बहुत सुकून देता है आपकी गायकी में गम्भीरता है और आपके गले में बहुत ही अच्छा बेस है, जो कि एक शास्त्रीय गायक के पास होना जरूरी है। गले द्वारा कौनसे शब्दों को वजन देना है और कौन से शब्दों को बिना वजन से बोलना है। यह कोई आपसे सीखे। यह

सारी विशेषताएं एक अच्छे गायक के गुण है ऐसी गायन शैली और गंभीरता किसी भी ग़ज़ल गायक के पास नहीं है।

मेहदी हसन सा. जो भी ग़ज़लें गाते थे उनमें वह पूरी तरह डूब जाते थे। ग़ज़ल गायकी के लिए बहुत गंभीर स्वर होना चाहिए जो कि खान सा. के पास था। आप गाते समय शब्दों को टूटने नहीं देते ओर जो शब्द बोल रहे है उस शब्द को उसी के भाव से बोलते थे। गायन में आलाप का विस्तार इस प्रकार करते थे कि इससे राग खुद–ब–खुद प्रकट हो जाता है और सुनने वाले उस राग को तुरन्त पहचान लेते है। खान साहब ने ग़ज़ल गायकी को उस दौर में नया रंग दिया जब ग़ज़ल गायकी पर दादरा, टप्पा, ठुमरी का प्रभाव नजर आता था। उस माहौल में ग़ज़ल को ग़ज़ल की तरह गाने का अन्दाज़ मेहदी हसन सा. ने ही दिया और ग़ज़ल को प्रस्तुत करने की जो उनकी शैली है, उसे अच्छे अच्छे उस्तादों ने माना हैं।

आप ग़ज़ल गायकी में शब्दों को लेकर मन्द्र और मध्य सप्तक के जो आलाप करते है ऐसा लगता है कि ये ख़याल में आलाप हो रहें है। शुरूआत में आलाप लगाने का ढंग इतना कर्ण प्रिय लगता कि जैसे राग ही शुरू किया हो। कण, मुर्किया लगाना तथा छोटी छोटी तानें आलापों का प्रयोग बहुत ही खूबी के साथ करते थे। आपकी गायकी में ठहराव के साथ मींड़ खटका का भी प्रयोग बाखूबी किया गया है। आपके गायन में ख़याल की झलक नजर आती है। ये सारे प्रयोग जो खान सा. ग़ज़ल में करते थे, वो सब ख़याल के अन्दर भी होते है। जब हम ख़याल शुरू करते है तो सबसे पहले सा लगाकर स्वर विस्तार करते है। फिर आलाप करते है और उसके पश्चात ख़याल गाते है। स्थाई के आलाप बोल आलाप फिर अन्तरे के। अन्तरे के आलाप के बाद स्थाई की तानें और फिर अन्तरे की तानें। आपने जो भी ग़ज़लें गाई उनमें ज्यादातर हारमोनियम, तानपुरा और तबले का प्रयोग हुआ। आपने राग में रहकर ही सारा काम किया है। राग को किस तरह प्रस्तुत करना चाहिए तथा राग की कौन–कौन सी मुख्य बातें और बिन्दु है, उनको खान सा. भलीभांति जानते थे। आपकी ग़ज़लों को सुनने के बाद यही अहसास होता है कि वह ग़ज़ल से ज्यादा ख़याल लगती है। उसका प्रमुख कारण जिस राग में वो जो ग़ज़ल गाते थे उसी राग में रहकर उसको पूरा दर्शाते थे और उसमें किसी भी तरह की मिलावट नहीं करते थे। उनकी गायकी में शब्दों की शुद्धता स्वरों का ठहराव, सच्ची रागदारी, भावों की

अभिव्यक्ति तथा ताल ठेकों का सीधा सीधा प्रयोग। आपने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रयोग ज़रूरत के अनुसार किया।.

[2]ग़ज़ल को अपने सांगीतिक रूप में शास्त्रीय संगीत एवं सरल संगीत के बीच का संगीत स्वीकारा जा सकता है। ग़ज़ल के सांगीतिक संयोजन यहाँ सरल संगीत के स्वरूप में संघटित होते है वही उसमें राग विशिष्ठ ताल–लय, आलाप तानें और उनमें शास्त्रीय संगीत के सूक्ष्म तत्वों यथा मीड, खटका, मुर्की, कण, गमक आदि का समावेश होता है। ऐसे में ग़ज़ल गायकी अपने प्रस्तुतिगत सरल सांगीतिक रूप में सहज रूप में श्रोताओं को शास्त्रीय संगीत के उन तत्वों का परिचय सहज में कराती है। जो शास्त्रीय संगीत ध्रुवपद,टप्पा,ख़याल इत्यादि शैलियां गायकी के संदर्भ में आम श्रोताओं की समझ के परे होती है। वैसे भी ग़ज़ल की जो धुन होती है वो किसी न किसी राग पर ही आधारित होती हैं।

हिन्दुस्तानी संगीत के विभिन्न रागों का परिचय ग़ज़ल गायन के जरिये ग़ज़ल गायक गायिकाएं नित्य प्रति आम आदमी को दे रहे है। कई श्रोता जो राग के बारे मे विशेष कुछ नहीं जानते, मेहदी हसन सा. की गाई ग़ज़ल ''रंजिश ही सही दिल ही दुःखाने के लिए आ'' सुनकर कभी श्री राग यमन की शास्त्रीय प्रस्तुति सुनते हैं तो वे बता देते है कि यह राग यमन है। इसका मुख्य कारण उनके दिलों दिमाग में यमन राग के स्वर ग़ज़ल ''रंजिश ही सही दिल ही दुःखाने के लिए आ'' सुनकर अपनी गहरी एवं खास पहचान बना चुके है। ग़ज़ल के माध्यम से श्रोता शास्त्रीय संगीत के रागों को पहचानने लग गये और यह पहचान करवाई मेहदी हसन सा. ने। ग़ज़ल गायकी को सुनने वालों की संख्या बढ़ी है। शास्त्रीय संगीत गाने वालों ने भी ग़ज़लें गाई है। [2.]

प्राइवेट महफिलों में जब मेहदी हसन गाते तो उसकी बात ही कुछ और होती थी। उनमें उन्हें अपने असली संगीत को बाहर निकालने का मौका मिलता। वे इन बैठकों में ग़ज़लों के अन्दर ऐसीं शास्त्रीयता भरते कि श्रोताओं को सुखद आश्चर्य होता उनकी प्राइवेट बैठके अक्सर लाहौर में होती, जिनमें श्रोता भी सुधी होते थे।

आप ग़ज़ल गायकी में ठुमरी, ख़याल, ध्रुपद, दादरा और लोक संगीत के तत्व भी समाहित करते थे। राजस्थान की लोक संगीत मेहदी हसन सा. के कण्ठ में बसा

हुआ था। शास्त्रीय संगीत में चतुरंग शैली गायन में गायक की पराकाष्ठा मानी जाती है। जो शब्द, लय, ताल और नृत्य इन सब विधाओं के लिए गायन में समाहार शाक्ति ला सके, वही चतुरंग गायक माना जाता है। पाकिस्तान में रोशन आरा बेगम के अलावा और किसी में यह क़ाबिलियत थी, तो वे मेहदी हसन साहब ही थे। उन्होंने अपनी गायकी में लय और ताल के साथ साथ शब्दों के भाव और उसके भावरंग पर भी उतना ही बल दिया। परन्तु खान सा. ने अपने इन गुणों का कभी प्रदर्शन नहीं किया, वे इनका बस यथा स्थान सहज रूप से प्रयोग करते थे। वे अंदर से भरे थे, गगरी तो वह उछलती है, जिसमें भराव कम हो, रस कम हो।

ग़ज़लों के बारे में आम तौर पर यही पारम्परिक धारणा रही हैं कि ये देस खमाज, भैरवी आदि रागों में ही गाई जा सकती है। मेहदी हसन सा. ने लगभग सभी थाटों के रागों में ग़ज़लें गाई। वे राग का चयन ग़ज़ल के विषय के आधार पर करते थे। कई बार एक ही ग़ज़ल में दो राग भी मिलाते है जैसे खान सा की गाई एक ग़ज़ल है जिसमें उन्होंने मालकोंस और सोहनी दोनों रागों को बखूबी मिलाया है – 'क्या भला मुझको परखने का नतीजा निकला,। मालकौंस भैरवी थाट का रात का राग और सोहनी मारवा थाट का सुबह का राग है। खान सा. खुद कहते थे कि इन दोनो रागों को मिलाना दिन और रात को मिलाने जैसा है, पर उन्होंने बड़ी खूब सूरती से इन दोनों रागों का प्रयोग एक साथ इस ग़ज़ल में कर दिखाया है।

[3.] खान सा. ने जिन ग़ज़लों को रागों में निबद्ध कर गाया वे मानों उन रागों की बंदिशे हो गई। राग पहाड़ी में बहादुर शाह जफर की बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी न थी' राग किरवानी में अहमद फराज़ की ग़ज़ल' शोला था जल बूझा हूं एवं इरफानी की गुंचा ए शौक लगा है खिलने, राग शिवरंजनी में मोमिन की ग़ज़ल वो जो हममे तुममें क़रार था क़तील शिफाई की ग़ज़ल 'ज़िन्दगी में तो सभी प्यार किया करते है' राग भीमपलासी में, राग कल्याण में अहमद फराज़ की रंजिश ही सही ' राग दरबारी में शाकिर की ' कूब्कू फैल गई बात शनासाई की' और जय जयवन्ती में अहमद मदनी की ताज़ा हवा बहार की' अपने–अपने रागों की ट्रेड मार्क बंदिशें हो गई।

खान सा. जिस सुकूनता से ग़ज़ल की शुरूआत करते थे उसी सुकूनता से उसे वे आख़िर तक लेकर जाते थे।

इसी तरह सलीम कौसर की मशहूर ग़ज़ल 'मैं ख़याल हूं किसी और का' को भैरवी में गाया है।

आपकी एक ख़ासियत यह भी थी कि उनकी शास्त्रीयता न तो ग़ज़लों को बोझिल बनाती थी और न ही वे अपनी किसी रागबद्ध ग़ज़ल में राग के चलन को अधूरा छोडतें। वे शास्त्रीय संगीत में अपनी पैठ को श्रोताओं को अचंभित करने के लिए प्रयोग में नहीं लाते थे। बेवजह और ऊबाऊ ताने भी कभी नहीं लेते थे.....

उनकी गायकी में करिश्मा करने का मकसद न होता था, पर असर इतना होता था कि जिसने सुना, वह उनका हो गया.....क्या आम, क्या ख़ास! नेपाल के तत्कालीन नरेश शाह वीरेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव भी उनके बहुत बड़े प्रशंसक थे।

मेहदी हसन सा. अपनी शास्त्रीय ग़ज़लों के लिए साज़ और साज़िन्दे भी अनुरूप ही चुनते थे। रचाव के लिए हारमोनियम वे जरूर प्रयोग करते थे, पर मुख्यतः वे तबला और सारंगी के साथ ही गाते थे।[3]

आप ग़ज़ल को पूरा पढते फिर उसके भाव को समझकर ही उसके अनुकूल राग का चयन करते थे। शब्दों को किस तरह बोलना है और कैसे बोलना। ये आप अच्छी तरह समझते थे। एक ग़ज़ल है उसके अन्तरें मे जों ''साँस'' शब्द आया है उस 'साँस' के 'साँ' को तार सप्तक के सां पर ऐसा बोला कि दोनों ही काम हो गये स्वर का भी और शब्द का भी। ऐसे ही एक ग़ज़ल है ''फूल ही फूल खिलते है ''में' बहार ' को इस तरह गाया जैसे कि बहार राग शुरू हो गई हो। आपमें इस तरह कि कई बातें थी जो आपको अन्य ग़ज़ल गायकों से भिन्न करती हैं।

यह सारी खूबियां आपमें कैसे आई ? यह सारी खूबियां खान सा. में अपने चाचा व बड़े भाई पं. गुलाम कादिर से आई। आपने इन्हीं के सानिध्य में संगीत की शिक्षा ली एवं किस तरह से शब्दों को बोला जाता है एवं किस तरह से ग़ज़लों की कम्पोजिशन होती है यह इल्म उन्हें अपने बड़े भाई व गुरू पं.गुलाम कादिर सा. से हुआ। आपके द्वारा गाई हुई ग़ज़लें ऐसी लगती है जैसे राग की बंदिश ही हो।

राग-झिंझोटी

4. शास्त्रीय परिचय-

यह खमाज थाट का राग है। इसमें शुद्ध और कोमल निषाद लगता है बाकि सभी स्वर शुद्ध लगते है। आरोह मे शुद्ध नी और अवरोह में कोमल नी लगता है। इसकी प्रकृति शुद्ध है इसमें ठुमरियां अधिकतर पाई जाती है। इसका वादी गंधार और संवादी धैवत है। गायन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसकी जाति सम्पूर्ण है।

आरोह :– सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह :– सां नि प म ग रे सा

पकड :– ध सा रे म गं, प म ग रे, सा नि ध प [4].

ग़ज़ल :– गुलों में रंग भरे, बाद–ए–नौ बहारे चले

चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले।

(1) क़फस उदास है यारों, सबा से कुछ तो कहो

कहीं तो बहर–ए–खुदा आज जिक्र–ए–यार चले।

(2) जो हम पे गुज़री सो गुजरी मगर शब–ए–हिज्राँ।

हमारे अश्क तेरे आक़बत सँवार चले।।

(3) कभी तो सुबह तेरे कुंज–ए–लब्ज़ हो आग़ाज़।

कभी तो शब सर–ए–काकुल से मुश्क–ए–बार चले।

(4) मक़ाम ,फैज़, कोई राह में जचा ही नहीं

जो कू–ए–यार से निकले तो सू–ए–दार चले।

(5) बड़ा है दर्द का रिश्ता, ये दिल ग़रीब सही

तुम्हारे नाम पे आयेंगे ग़म गुसार चले

[5]**राग काफी :–** यह राग काफी थाट का आश्रय राग है। इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते है और ग नी कोमल लगते है। इस राग में शुद्ध ग व नी लगाकर इस राग की सुन्दरता बढ़ाते है इसका वादी संवादी प और सा है। इसमें रे प और प ग की संगती बार–बार आती है जैसे रे प म प ग रे या म प ग रे । इसका गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। जाति सम्पूर्ण है''

आरोह – सा रे ग म प ध नी सां।

अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा।

पकड – सारेग सारेप म प ध प नि ध प सां नि ध प

मपधप – ग रे, रे ग रे म, रे सा, सासा रेरे गग मम प।[5.]

ग़ज़ल :– रफ्ता रफ्ता वो मेरी हस्ती का सामां हो गये

पहले जां फिर जाने जां फिर जाने जाना हो गये

(1) दि–ब–दिन बढ़ती गई, इस हुस्न की रानाईयां

पहले गुल फिर गुल बदन, फिर गुल बदामां हो गए।

(2) आप तो नज़दीक से नज़दीकतर आते गये

पहले दिल फिर दिलरूबा, फिर दिल के मेहमां हो गए।

(3) प्यार जब हद से बढ़ा सारे तक़ल्लुफ मिट गये।

आप से फिर तुम हुए, फिर तु का उनवा हो गये।

[6]राग किरवानी :–

यह कीरवानी मेल से उत्पन्न कर्नाटक पद्धति का राग है। सा वादी प संवादी और इसमें गंधार व धैवत कोमल लगते है। गायन समय सांयकाल का है जाति इसकी सम्पूर्ण है।

आरोह :– सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह :– सां नि ध प म ग रे सा ।

पकड :– रे ग म प ध प ग रे नि रे सा[6.]

ग़ज़ल :– शोला था जल बुझा हूँ हवायें मुझे ना दो

मैं कब का जा चुका हूं सदायें मुझे ना दो

(1) जो ज़हर पी चुका हूं तुम्ही ने मुझे दिया

अब तुम तो ज़िन्दगी की दुआएं मुझे ना दो।

(2) ऐसा कभी ना हो के पलट कर ना आ सकूं

हर बार दूर जा के सदायें मुझे ना दो।

(3) कब मुझको एतराफ–ए–मोहब्बत ना था, फ़राज़'

कब मैने ये कहा था सजाएं मुझे ना दो।

राग–यमन

[7]प्राचीन ग्रन्थों में केवल 'कल्याण' राग दिखता है ' यमन ' नहीं। आधुनिक ग्रन्थों में ' यमन एक सम्पूर्ण राग बताया है। इसमें कई बार पंचम का अल्प प्रयोग अवश्य किया जाता है। अब तो पंचम का महत्वपूर्ण स्थान है यमन राग में। इसकी जाति सम्पूर्ण है ओर वादी गंधार और संवादी निषाद स्वर है। समय रात्रि का प्रथम प्रहर है।

आरोह :– नि़ रे ग म' प ध नि सां।

अवरोह :– सां नि ध प म' ग रे सा ।

पकड़ :– नि़रेग, रेसा, पमगरेसा, नि़रेगरे, नि़रेसा।[7]

रंजिश ही सही दिल ही दुःखाने के लिए आ

आ फिर से मुझे छोड़ के जाने के लिए आ

(1) पहले से मरासिम न सही फिर भी कभी तो

रस्म–ओ–रह–ए–दुनिया ही निभाने के लिए आ

(2) किस–किस को बताएंगे जुदाई का सबब हम

तू मुझ से ख़फा है तो ज़माने के लिए आ।

(3) कुछ तो मेरे पिन्दार–ए–मुहब्बत का भरम रख

तू भी तो कभी मुझको मनाने के लिए आ।

राग–खमाज

[8]यह राग इसके नाम के ठाठ से ही उत्पन्न है। यह षाडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें सातों स्वर लगते है। इसके आरोह में रिषभ नहीं लगता है और अवरोह

में लगता है। इसका वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। गायन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। निषाद कोमल लगता हैं।

आरोह – सा, गम, प, धनि सां।

अवरोह – सां नि ध प, मग, रेसा।

पकड़ – गमधनिसां, निध, मपध, मग। **8.**

ग़ज़ल– मुहब्बत करने वाले कम ना होंगे

तेरी महफिल में लेंकिन हम न होंगे।

(1) ज़माने भर के ग़म या इक तेरा ग़म

यें गम होगा तो कितने गम ना होंगे।

(2) अगर तू इत्तफ़ाकन मिल भी जाये

तेरी फुरकत के सदमें कम न होंगे।

(3) दिलों की उलझनें बढ़ती रहेंगी

अगर कुछ मशवरे ब–हम ना होंगे

राग-भीमपलासी

[9]यह राग काफी थाट का है। वादी स्वर मध्यम संवादी स्वर षडज है। इस राग में गंधार और निषाद कोमल और शेष स्वर शुद्ध लगते है। आरोह में ऋषभ और धैवत वर्जित है। इसका अवरोह सम्पूर्ण हैं अतः इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। गायन समय दिन का तृतीय प्रहर है।

आरोह – नि सा ग म प नी सां।

अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा।

पकड – नि सा ग म प ग, म ग रे सा।[9]

ग़ज़ल–ज़िंदगी में तो सभी प्यार किया करते हैं

मै तो मरकर भी मेरी जान तूझे चाहूंगा।

(1) तू मिला है तो एहसास हुआ है मुझको

ये मेरी उम्र मुहोब्बत के लिए थोडी है

इक ज़रा सा ग़म–ए–दौरा का भी हक है जिस पर

मैने वो सांस भी तेरे लिए रख छोडी है।

तुझपे हो जाऊँगा कुरबान तुझे चाहूंगा

(2) अपने जज़्बात में नगमात रचाने के लिए

मैनें धड़कन की तरह दिल में बसाया है तुझे

मै तसव्वुर भी जुदाई का भला कैसे करूं

मैने किस्मत की लकीरों से चुराया है तुझे

प्यार का बन के निगेहबान तुझे चाहूंगा

राग–केदार

[10]यह राग कल्याण थाट का है। इसमें दोनों मध्यम लगते है और बाकि सभी स्वर शुद्ध लगते है। इसके आरोह में रिषभ और गांधार वर्जित होने से सीधे 'सा' से 'म' पर जाते है। कुछ लोग गांधार को आरोह में दुर्बल रख कर सा म ग प मपधप की भॉति गांधार को ले लेते है। मध्यम को मुक्त रूप से लेने से यह राग तुरन्त स्पष्ट होता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग केवल पंचम के साथ किया जाता है। जैसे–मंप धपम। वादी मध्यम और संवादी षडज है। गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है।[10]

ग़ज़ल– फूल ही फूल खिल उठे मेरे पैमाने में।

आप क्या आये बहार आ गई मयख़ाने में।।

(1) आप कुछ यूं मेरे आईना–ए–दिल में आये।

जिस तरह चांद उतर आया हो पैमाने में।।

(2) आप के नाम से ताबिन्दा है उनवान–ए–हयात

वरना कुछ बात नहीं थी मेरे अफ़साने में।।

राग-गौड मल्हार

[11]यह खमाज थाट का राग है, इसमें दोनों निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध लगते है ' शुद्ध मल्हार' का स्वरूप रे प, म प ध सां ध पम है तथा उसमें मप मग, रेग रेम गरे सा गौड सारंग का अंग जोड देने से इसकी रचना हो जाती है। वादी मध्यम व संवादी षडज है। मध्यम पर न्यास राग को अधिक मधुर बनाता है। इसमें आरोह में निषाद को अल्प रखते है। जाति संपूर्ण संपूर्ण है। गायन समय वर्षा ऋतु है।

आरोह – सा रे ग म, रे प , म प ध सां।

अवरोह– सां ध, नि प, मग मरे सा।

स्वरूप – रेग रेम गरे सा, म प ध सां, ध प म [11]

ग़ज़ल–भूली बिसरी चंद उम्मीदे, चंद फ़साने याद आये

तुम याद आये और तुम्हारे साथ ज़माने याद आये ।

(1) दिल का नगर शादाब था फिर भी ख़ाक सी उड़ती रहती थी

कैसे ज़माने ए ग़म–ए–जाना तेरे बहाने याद आये।

(2) ठंडी सर्द हवा के झोंके आग लगा कर छोड़ गये

फूल खिले शाखों पे नए और दर्द पुराने याद आये।

(3) हँसने वालों से डरते थे छुप–छुप कर रो लेते थे

गहरी–गहरी सोच में डूबे, दो दिवाने याद आये

राग-किरवानी

ग़ज़ल :– गुंचा ए शौक लगा है खिलने, फिर तुझे याद किया है दिल ने।

(1) दास्तान–ए है लब–ए–आलम पर

हम तो चुपचाप गये थे मिलने

(2) मैंने छुप कर तेरी बातें की थी

जाने जब जान लिया महफिल ने

(3) अन्जुमन अन्जुमन आराइश है

आज हर चाक लगा है सिलने।

राग–भैरवी

[12]इसमें रे ग ध नी कोमल तथा मध्यम शुद्ध है। वादी मध्यम तथा संवादी षडज है। जाति संपूर्ण–संपूर्ण है। यह भैरवी थाट का आश्रय राग है। गायन समय प्रातः काल का प्रथम प्रहर है। जब गुनी गायक इसमें शुद्ध रिषभ लगा देते है तो ये सिन्धु भैरवी हो जाती है। इसमें गुणकली, बिलासखानी तोडी और मालकोंस की छाया भी उत्पन्न होती है।[12]

यारों किसी क़ातिल से कभी प्यार ना मांगो

अपने ही गलें के लिए तलवार न मांगे

(1) गिर जाओंगे तुम अपने मसीहा की नजर से

मर कर भी इलाज–ए–दिल ए बिमार ना मांगो।

(2) खुल जायेगा इस तरह निगाहों का भरम भी

कांटो से कभी फूल की महकार ना मांगो।

(3) सच बात पे मिला है सदा ज़हर का प्याला

जीना है तो फिर जुर्रत–ए–इज़हार ना मांगो।

(4) उस चीज़ का जिक्र जो मुमकीन हीं नही है।

सेहरा में कभी साया–ए–दीवार ना मांगो।

राग– भंखार

[13]यह मारवा थाट का राग है और उतरांग प्रधान राग है इसका वादी पंचम संवादी षडज है। कोई कोई इसे ओडव संपूर्ण का मानकर आरोह में ऋषभ व धैवत वर्जित करते है इसमें रिषभ कोमल व दोनों मध्यम लगते है। समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है। दोनो मध्यमों के प्रयोग से यह अपने सम प्राकृतिक राग, विभास से और मुक्त मध्यम न होने के कारण भटियार राग से सहज ही अलग हो जाता है भटियार से अलग करने

के लिए इसमें ललित अंग का प्रयोग करते है। इसमें प ग व म ध ये स्वर संगतियों महत्वपूर्ण है।

आरोह – सा रे सा गम पग पग म' ध सां।

अवरोह – सांनि धप म' ध म'ग पग रे सा।[13]

ग़ज़ल– खुली जो आँख तो वो था, न वो ज़माना था।

दहकती आग थी, तन्हाई थी फ़साना था

(1) ग़मो ने बाँट लिया मुझे यूं आपस में।

कि जैसे मैं कोई लूटा हुआ ख़ज़ाना था।

(2) ये क्या कि चंद ही क़दमों में थक के बैठ गये।

तुम्हें तो साथ मेरा दूर तक निभाना था –

(3) मुझे जो मेरे लहू में डुबों के गुज़रा है –

वो कोई ग़ैर नहीं यार एक पुराना था

राग-अहीर भैरव

[14]यह सम्पूर्ण जाति का राग है और यह भैरव थाट से उत्पन्न है। वादी स्वर मध्यम और सम्वादी स्वर षडज है। इसमें पूर्वांग में भैरव और उत्तरांग में काफी का मिश्रण होता है। इसका गायन समय प्रातः काल है। इसमें मध्यम पर विश्रान्ति बहुत ही कर्ण प्रिय लगती है [14]

ग़ज़ल–हमें कोई ग़म नहीं था, ग़म–ए–आशिकी से पहले

न थी दुश्मनी किसी से तेरी दोस्ती से पहले।

(1) हैं ये मेरी बदनसीबी तेरा क्या कुसूर इस में।

तेरे ग़म ने मार डाला, मुझे ज़िन्दगी से पहले ।।

(2) मेरा प्यार जल रहा है, अरे चांद आज छुप जा।

कभी प्यार था हमें भी तेरी चांदनी से पहले।।

(3) मैं कभी न मुस्कुरता जो मुझे ये इल्म होता।

के हज़ार ग़म मिलेंगें मुझे इक खुशी से पहले।।

(4) ये अजीब इम्तिहान हैं के तुम्हीं को भूलना हैं

मिले कब थे इस तरह हम तुम्हें बेदिली से पहले।।

राग–पहाड़ी

[15]यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। आरोह में मध्यम व निषाद स्वर वर्जित है और अवरोह में भी अत्यंत दुर्बल है। भूपाली व देसकार राग के भी यही स्वर है उनसे बचाने के लिए इसमें बहुत थोडी मात्रा में मध्यय व निषाद का प्रयोग कर लेते है। और इस राग को मन्द्र सप्तक में ही गाते है। मध्यम को षडज मानने से मन्द्र सप्तक का घैवत गांधार बन जाता है, जो भूपाली का वही स्वर है। अतः मन्द्र सप्तक के धैवत पर की गई विश्रान्ति इसमें ऊंची लगती है। वादी सा संवादी पंचम है। यह सर्वकालिक राग है। इसमें भजन ठुमरियां, ग़ज़ल विशेष रूप से गाई जाती है। तीव्र म का प्रयोग भी करते है।[15]

ग़ज़ल–बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी

जैसी अब है तेरी महफिल कभी ऐसी तो न थी

(1) ले गया छिन के कौन आज तेरा सब्र–ओ–करार।

बेक़रारी तुझे ए दिल कभी ऐसी तो न थी।

(2) चश्म–ए–क़ातिल मेरी दुश्मन भी हमेशा लेकिन।

जैसे अब हो गई क़ातिल कभी ऐसी तो न थी।।

(3) उनकी ऑखो ने खुदा जाने किया क्या जादू

के तबीयत मेरी माइल कभी ऐसी तो न थी।

(4) क्या सबब तू जो बिगड़ता है ' ज़फर ' से हर बार

खू तेरी हर–ए–शमाइल कभी ऐसी तो न थी।

राग-कौशिकी ध्वनि -

[16]यह आसावरी थाट से उत्पन्न सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें निषाद व गांधार कोमल लगते है। मध्यम वादी और षडज सम्वादी है। समय मध्य रात्रि है। इसमें कानडा व मालकौंस का अंग रहता है। इस राग का दूसरा प्रकार काफी थाट वाला है, जिसे बागेश्री अंग से गाते है।

आरोह – सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प म ग रे सा[16]

ग़ज़ल–बेकरारी सी बेकरारी है– दिन भी भारी है रात भारी है।

(1) ज़िन्दगी के बिसात पर अक्सर, जीती बाजी भी हम ने हारी है –

(2) तोडो दिल मेरा शौक से तोडो, चीज़ मेरी नही तुम्हारी है –

इसकी कम्पोजिशन के बारे में वे कहते हैं कि ..... जिस शेर ने मजबूर किया इस ग़ज़ल की तर्ज़ बनाने के लिए, वह शेर है तोड़ो दिल मेरा शौक से तोड़ो, ये चीज़ मेरी नही तुम्हारी है।

बेकरारी–सी बेकरारी है। खान साहब शायरी को पढ़कर उसके मर्म तक पहुंचकर फिर उसकी कम्पोजिशन करते थे। वह उस शायरी के एक एक शब्द को ध्यान से पढ़कर समझकर ही उसके राग का चयन करते थे। खान सा. खुद कहते थे कि इन सबका इल्म उन्हें उनके बडे भाई और गुरू पंडित गुलाम कादिर साहब ने कराया था।

राग–दरबारी–

[17]यह आसावरी थाट का राग है। इसमें रिषभ एवं शेष स्वर कोमल लगते है अवरोह में धैवत को वर्जित कर देते है। अतः जाति संपूर्ण षाडव है। इस राग को मन्द्र सप्तक में रखा करते है। आरोह में गंधार व धैवत कुछ रूक कर जाने से राग तुरन्त स्पष्ट होता है। जैसे सारेग ऽ म प ध ऽ नि सां। मध्य सप्तक के ऋषभ से एकदम मन्द्र सप्तक के धैवत पर आने से भी राग शीघ्र ही स्पष्ट होता है। जैसे – म प ध ऽ नि सां। अवरोह में गांधार को वक्र रखते हैं अर्थात 'ग' रे सा, न कह कर गम रेसा कहते है वादी रिषभ संवादी पंचम है। गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

आरोह – सा रे म प ध ऽ नि सां।

अवरोह – सां ध ऽ नि प, मप, गम, रे ऽ सा।[17]

राग– मियॉ मल्हार –

[18]यह काफी थाट का राग है। इसमें दोनों निषाद और कोमल गांधार प्रयुक्त होते है। शेष स्वर शुद्व है। यह दरबारी और मल्हार को मिलाने से बनता है। दरबारी में शुद्ध धैवत लेकर। नि ध नि सा लगा दें और आरोह में रेम या रेप ले लें और गंधार को अवरोह में वक्र करने में गम रेसा की भांति ले लें यह राग तुरन्त स्पष्ट हो जाता है। मल्हार का अंग मरेप, गमरेसा नि ध नि सा को दरबारी में जोड दें, जैसे सा रे ग म प नि ध नि सां या म रे प निध निसां ले लें तो मियां मल्हार बन जाता है। बहार राग में भी नि ध नि सां लेते है। परन्तु बहार में यह स्वर समुदाय मध्यम से लिया जाता है और धैवत पर कुछ ठहरते है। जैसे म नि ध नि सा। जब कि मियां मल्हार मे इसे पंचम स्वर से लेतें है ओर शुद्ध नि पर कुछ टिकाव करते है। जैसे प नि ध नि सा। वादी मध्यम व संवादी षडज है। गायन समय वर्षा ऋतु है।[18]

एक बस तू ही नही मुझसे ख़फा हो बैठा।

मैनें जो संग तराशा वो खुदा हो बैठा।।

(1) उठ के मंज़िल ही अगर आये तो शायद कुछ हो

शौक–ए–मंज़िल तो मेरा आबला पा हो बैठा

(2) मसलेहत छीन गई कुव्वत–ए–गुफ्तार

कुछ न कहना ही मेरा मेरी सदा हो बैठा

(3) शुक्रिया ऐ मेरे कातिल ए–मसीहा मेरे

ज़्हर जो तुने दिया था वो दवा हो बैठा

(4) जान–ई–शहज़ाद को मिन–जुल्मा–इ–आदा पाकर ।

हूक वो उठी की जी तन से जुदा हो बैठा।

इन सब ग़ज़लों मे ख़याल गायकी की झलक स्पष्ट नजर आती है। जिन रागों में खान साहब ने ग़ज़ल बनाई वो उस राग कि ट्रेड मार्क बंदिश हो गई। इन ग़ज़लों को सुनने के बाद लगता है कि ये उन रागों के ख़याल हैं

निष्कर्ष–

कलाकार की नींव मजबूत करने के लिए बाल्यअवस्था से ही संगीत की शिक्षा शास्त्रीय संगीत पर आधारित होनी चाहिए। इससे कलाकार की नींव मजबूत हो जायेगी। जो शास्त्रीय संगीत की सीढ़ियों पर क्रम से चढते हैं उसे ही सफलता हासिल होती हैं। हसन साहब ने भी नींव को ध्यान में रखा जो कि उनकी ग़ज़लें सुनने से ही स्पष्ट होता है। आपकी ग़ज़ल गायकी में ख़याल की झलक स्पष्ट सुनने को मिलती हैं, यह सब इस अध्याय में प्रस्तुत है।

किताबें और इंटरनेट द्वारा ली गई जानकारी–

1– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–235

2– हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी–डॉ0 प्रेम भण्डारी–हिन्दी ग्रंथागार, सोजती गेट जोधपुर, 1993, पृ0 170

3– मेरे मेहदी हसन– अखिलेश झा (आई.ए.एस.)– रेमाधव आर्ट,प्रा.लि. नई दिल्ली, 2009, पृ. 75

4– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–288

5– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–274

6– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–275

7– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–313

8– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–277

9– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–304

10– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–275

11– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–280

12– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–306

13– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–305

14– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–271

15– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–297

16– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–276

17– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–289

18– संगीत विशारद– वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101,2002,पृष्ठ–311

निषाद

इस अध्याय में गुरू–शिष्य परंपरा का वर्णन किया गया है, आपसे कितने शिष्यों ने संगीत की शिक्षा ली और कौंन–कौंन हैं जो आपका अनुसरण कर रहे हैं। गुरू शब्द आते ही मन में कईं विचार उत्पन्न होते हैं। यह शब्द सिर्फ दो अक्षरों का है, किन्तु इन दो अक्षरों में अनन्त गहराई छुपी हुई हैं। यह दो अक्षर सुनने मात्र से हृदय के भीतर से जो भाव उठता हैं वह है– समर्पण। गुरू शब्द को मैं अपने हृदय के अंदर जिस तरह से महसुस करता हूं वो मैं इस अध्याय में बताउंगा। पूरी कायनात में सिर्फ भारत ही एसा देश है जहां पर गुरू को सबसे ऊंचा दर्जा दिया गया है । माता–पिता और यहां तक की भगवान से भी ऊपर गुरू को बताया गया है। गुरू शिष्य परंपरा भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रमुख आधार स्तम्भ है। गुरू ही तो है जो गोविन्द का पता बता सकता है। किसी भी कलाकार को सुनते ही प्रथम प्रश्न मन में सहज ही उठ पड़ता हैं कि, यह किस घराने का शिष्य है। खान साहब के तमाम शिष्यों में उनकी कुछ न कुछ खुशबू विद्यमान है। उनकी गमक, ठहराव, शब्द को कहने का ढंग शब्दों के मर्म के अनुसार स्वर का बर्ताव आदि अनेक विशेषताएं उनके लगभग सभी शिष्यों के गायन में परिलक्षित होती है। गुरू शिष्य परंपरा प्राचिल काल से चली आ रही है और चलती रहेगी। इसी क्रम में कबीरदास जी का यह पद–

गुरू बिन घोर अंधेरा रे संता
बिना दीपक मंदरियो रे सूनो
नहीं वस्तु का वेरा रे ।

अर्थात् जो अपने शिष्य को अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाता है वही गुरू है। बिना गुरू के शिक्षा अधूरी मानी जाती है इसलिये जीवन में गुरू का होना जरूरी है। गुरू के हर एक अंग का संगत के लिए महत्व–

गुरू	–	शिष्य
गुरू के नैन	–	हमारा चैन
गुरू का मस्तक	–	हमारे भाग्य की दस्तकत
गुरू का मुख	–	हमारा सुख
गुरू के कान	–	हमारा ध्यान
गुरू का दिल	–	हमारी मंज़िल

गुरू के हाथ	–	हमारे साथ
गुरू के चरण	–	हमारी शरण
गुरू की नाक	–	हमारी साख
गुरू का गला	–	हमारा भला
गुरू की आत्मा	–	हमारे दुःखों का खात्मा

इसी तरह शिष्यों की लाख गलतियों पर भी गुरू उसे शुभ आशीष ही देता है।

गलतियां करते है हम, सुधारता है वो (गुरू)
नादानियां करते हैं हम, संवारता है वो (गुरू)
भूल जाते हैं हम उसे, मगर याद हमे रखता है वो (गुरू)
वक़्त नहीं कह के, टालते हैं हम
मगर खुशीयां बरसाता है वो (गुरू)
क्या कहूं मेरे गुणी गुरू के बारे में
सब कुछ देखकर भी सबको
अपनी आशीष से नवाज़ता है वो (गुरू)

[1]गुरू सदैव वंदनीय है, क्योंकि वही शिष्य को सद्मार्ग दिखाता है।

गुरू को सच्ची दक्षिणा तभी मिलती है, जब शिष्य मन में सुविचार धारण करें। गुरू के बिना जीवन शुरू नहीं होता। हर व्यक्ति के जीवन में सच्चा गुरू होना जरूरी है। जिससे वह सही रास्ते पर चल सके। गुरू विनय एंव ज्ञान से परिपूर्ण होता है। गुरू शिष्य की दिशा को सही बोध देने वाला होता है। गुरू यानि अंधकार से ज्ञान की ओर ले जाने वाला मार्ग दर्शक। चाहे वह किताबों से मिला ज्ञान हो जीवन जीने का या संस्कारों का ज्ञान। जीवन की राह में मुश्किलों से लड़ना सीखाने वाला आगे बढ़ने का हौंसला दिखाने वाला भले ही वह छोटा ही क्यों न हो, गुरू का स्थान रखता है। जीवन में ऐसे लोग जिनकी सीख के कारण उनकी गुरू मूरत मन में बिठा देते है। आत्म कल्याण के लिए सद्गुरू का सानिध्य आवश्यक है। यह गुरू की निकटता से आलौकिक ज्ञान प्राप्त होता है। गुरू ही व्यक्ति को पुन्य कार्यों के लिये अग्रसर करते है। शिष्य को साधना का पथ दिखलाते है। इस जीव (शरीर रूपी) को चौरासी लाख योनि भुगतने के बाद यह मनुष्य शरीर मिला है। हे जीव, यदि अब इस जन्म में भी

मालिक (अकाल पुरूष) की भक्ति न की, तो फिर चौरासी में ही जाना पड़ेगा। आत्मा–अनात्मा के, जड़–चेतन के विचार द्वारा पवित्र–निर्मल आत्मज्ञान होता है। विवेकी शिष्य तत्त्ववेत्ता गुरू के द्वारा आत्मा–अनात्मा का, शरीर व स्वरूप का बोध प्राप्त करके स्वयं तत्त्ववेत्ता होकर शब्द जाल रूप शास्त्रों से परे हो जाता हैं[1]

[2] भारत की पावन एंव पून्य भूमि पर अनेक ऋषि–मुनि, संत–महात्मा, पीर–फकीर, दार्शनिक एंव विद्वान अवतरित हुए हैं, उन्होंने जो ज्ञान हमे दिया,अगर हम उसको जीवन में अपना लें, तो हमारा यह लोक भी सुखी होगा और परलोक भी आनन्ददायक होगा।[2]

गुरू का और मां का स्थान दुनिया में कोई नहीं ले सकता है। जितने भी साधु–संत, ऋषि–मुनि,पीर–फकीर इन सभी ने मां की गोद में ही अपना बचपन बिताया है। इसी को पंजाब के ख्यातनाम भजन गायक मास्टर सलीम ने प्रस्तुत किया है. और मां की ममता को श्रैष्ठ बताया है.....मां दिया गोदा दे विच ही सब साधु संत फकीर पले गुरूनानक ते दशमेष पिता गोदी विच भगत कबीर पले, मैं किण की और मिसाल दिया सच कह के गुरू वाणी मां .....

इसी तरह प्रसिद्ध कवि बालकृष्ण बीरा द्वारा बनाया हुआ भजन .....

आये सतगुरू शरण तिहारी, गुरूवर हम सब हैं संसारी ।
हैं दो अक्षर में शक्ति, वो है बड़ी पावन भक्ति
भव सागर को पार कराये, इसकी महिमा न्यारी।
संसो का नहीं विश्वास, राम नाम की हम को आस
चरण–शरण में आया बीरा,हो सब के हीतकारी
गुरूवर हम सब हैं संसारी ।

गुरू शिष्य परंपरा सनातन से भारत वर्ष में चली आ रही है। मनुष्य के जीवन में गुरू का स्थान सर्वोच्च हैं। गुरू किसी भी रूप शिष्य को ज्ञान प्रदान करता हैं जो उसके जीवन को सार्थक और सर्मथ बनाता है। शिष्य गुरू को अपना आदर्श मानकर गुरू द्वारा दिये ज्ञान से अपने जीवन को प्रकाशित कर आगे बढ़ता है। हर प्रकार की शिक्षा के लिए निष्णान्त गुरू होता है। संगीत स्वरों का महासागर है । स्वरों का, ताल का, लय का विधिवत् ज्ञान पाना और अभ्यास से आगे बढ़ाना ही महत्वपूर्ण बात है। गुरू शिष्य की अंगुली पकड़ उस मार्ग पर चलना सीखाता है। शिष्य अनुकरण और

अभ्यास द्वारा प्राप्त ज्ञान को स्थाई करता चलता है। शिष्य में गुरू के प्रति आस्था और ज्ञान पिपासा अति आवश्यक है। गुणी ज्ञानी गुरू सौभाग्य से मिलते हैं।

अनादि काल से ही मानव परम शांति, सुख व अमृत्व की खोज में लगा हुआ है। वह अपने सामर्थ के अनुसार प्रयत्य करता आ रहा है किंतु उसकी यह चाहत कभी पूर्ण नहीं हो पा रही है। ऐसा इसलिए है कि उसे इस चाहत को प्राप्त करने के मार्ग का पूर्ण ज्ञान नहीं है। बिना गुरू के कुछ भी प्राप्त करना मुश्किल है। बिना गुरू के हमें सद्मार्ग नहीं मिल सकता इसलिए जीवन में गुरू का महत्वपूर्ण दर्जा हैं जो हमे सभी कष्टों से उबारता है। हमें अच्छाइयों की ओर प्रेरित करता है।

[3]कबीर, गर्भ योगेश्वर गुरू बिना, लागा हरि की सेव।
कहे कबीर स्वर्ग से, फेर दिया सुखदेव।।
कबीर, राजा जनक से नाम ले, किन्ही हरि की सेव।
कहे कबीर बेकुण्ठ में उल्ट मिले सुखदेव।।
कबीर, सत्गुरू के उपदेश का, लाया एक विचार।
जै सत्गुरू मिलते नहीं, जाता नरक द्वार।।
कबीर, नरक द्वार में दूत सब, करते खेंचा तान।
उनतें कबहु ना छूटता, फिर फिरता चारों खान।।
कबीर, चार खानी में भ्रमता, कबहुना लगता पार।
सो फेरा सब मिट गया, सत्गुरू के उपकार।।
कबीर, सात समुन्द्र मसि करूं, लेखनी करूं बनराय।
धरती का कागद करूं, गुरू गुण लिखा न जाय।।
कबीर, गुरू बड़े गोविन्द से, मन में देख विचार।
हरि सुमरे सो रह गये, गुरू भजे हुए पार।।
कबीर, गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, का के लागू पाय।
बलिहारी गुरू आपने, जिन गोविन्द दिया मिलाय।।
कबीर, हरि के रूठतां, गुरू की शरण में जाय।
कबीर गुरू जै रूठजां, हरि नहीं होत सहाय।।

गुरू के लिए बताई गई बातें सत्य है और जीवन में गुरू जरूर होना चाहिए।[3]

[4]गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

गुरू ही ब्रह्मा है, गुरू ही विष्णु है। गुरूदेव ही शिव है तथा गुरूदेव ही साक्षात् साकार स्वरूप आदि ब्रह्म है। ध्यान का आधार गुरू की मूर्ति है, पूजा का आधार गुरू के श्रीचरण है, मंत्र का आधार गुरूदेव के श्रीमुख से निकले हुए वचन है तथा गुरू की कृपा ही मोक्ष का द्वार है। गुरू के बिना कोई भवसागर नहीं तर सकता।
गुरू–कृपा उसी पर होती है जो गुरू के प्रति सच्ची श्रद्धा रखता है।

गुरू की महिमा सभी से भिन्न एवं श्रैष्ठ है
गुरू ही मीत है , गुरू ही प्रीत हैं।
गुरू ही जीवन है, गुरू ही प्रकाश है।
गुरू ही सांस है, गुरू ही आस है।
गुरू ही प्यास है, गुरू ही ज्ञान है।
गुरू ही संसार है, गुरू ही प्यार है।
गुरू ही गीत है, गुरू ही संगीत है।
गुरू ही लहर है, गुरू ही भीतर है।
गुरू ही बाहर है, गुरू ही बहार है।
गुरू ही प्राण है, गुरू ही जान है।
गुरू ही संबल है, गुरू ही आलंबन है।
गुरू ही दर्पण है, गुरू ही धर्म है।
गुरू ही कर्म है, गुरू ही मर्म है।
गुरू ही मर्म है , गुरू ही प्राण है।
गुरू ही जहान है, गुरू ही समाधान है।
गुरू ही आराधना है, गुरू ही उपासना है।.
गुरू ही सगुण है, गुरू ही निर्गुण है।

गुरू ही आदि है, गुरू ही अन्त है।
गुरू ही अनन्त है, गुरू ही विलय है।
गुरू ही प्रलय है, गुरू ही आधि है।
गुरू ही व्याधि है, गुरू ही समाधि है।
गुरू ही जप है, गुरू ही तप है।
गुरू ही ताप है, गुरू ही यज्ञ है।
गुरू ही हवन है, गुरू ही समिध है।
गुरू ही समिधा है, गुरू ही आरती है।
गुरू ही भजन है, गुरू ही भोजन है।
गुरू ही साज है, गुरू ही वाद्य है।
गुरू ही वन्दना है, गुरू ही आलाप है।
गुरू ही प्यारा है, गुरू ही न्यारा है।
गुरू ही दुलारा है, गुरू ही मनन है।
गुरू ही चिंतन है, गुरू ही वंदन है।
गुरू ही चन्दन है, गुरू ही अभिनन्दन है।
गुरू ही नंदन है, गुरू ही गरिमा है।
गुरू ही महिमा है, गुरू ही चेतना है।
गुरू ही भावना है, गुरू ही गहना है।
गुरू ही पाहुना है, गुरू ही अमृत है।
गुरू ही खुशबु है, गुरू ही मंजिल है।

अतिथी के बिन आंगन बेकार है, प्रेम न होतो सगे–सम्बन्धी बेकार है और जीवन में गुरू न हो तो जीवन बेकार है। जीवन में गुरू जरूरी है, गुरूर नहीं।[4]

गुरू और शिष्य का सम्बन्ध बहुत ही गहरा होता है–

कईं कलाकार तो सिर्फ नाम के लिए शिष्य बनते है। मैं खुद इस बात से सहमत हूॅ। क्योंकि खान साहब जब–जब बीमार हुए तो उनकी खेर–खबर लेने वालों में जो नाम मुख्य रूप से आये है वे है–लता मंगेशकर जी, जगजीत सिंह जी एवं

चित्रा सिंह जी, दिलीप कुमार–सायरा बानों, तारी खान साहब, हरिहरन जी, हँसराज हँस जी और भी कई लोग तथा जो खान साहब, के क़रीबी रहे है राज वोहरा जी एवं अखिलेश झा साहब।

इस सूचि में तारी खान साहब, हरिहरन साहब, अखिलेश झा एवं राज वोहरा जी ने ही उनके प्रति संवेदना जताई है। बाकि के शिष्यों ने क्यों उनका हाल नहीं जाना। यहां तक कि खान साहब की मां की मज़ार को मैंने सही करवाया । क्या–मेरा ही ये दायित्व था। बाकि शागीर्दों के पास समय नहीं था या उन्होंने नाम के लिए ही खान साहब को उस्ताद बनाया था ।

तारी खान साहब ऐसे शागिर्द हुए हैं जिन्होंने उनको जितना चाहा और उनका साथ निभाया, ऐसा कोई दूसरा शागिर्द नहीं हुआ । आपने अपना एक कार्यक्रम खान साहब के गाँव लूणा में भी किया। वहाँ आकर वे अपने आंसूओं को नहीं रोक पाये। क्योंकि यह गॉव उनके उस्ताद का था। तारी खान साहब ने खान साहब की तन–मन–धन से सेवा की खान साहब की शिष्य परम्परा बहुत लम्बी है। आपसे जिन शिष्यों ने सीखा है उनके नाम निम्नलिखित हैः–

1– तारी खान साहब (तबलावादक एवं ग़ज़ल गायक)

2– परवेज़ मेहदी

3– ए. हरिहरन

4– भजन सम्राट अनुप जलोटा

5– राजकुमार रिज़वी

6– तलत अज़ीज

7– राज वोहरा जी

8– गुन्नू – (दिल्ली)

इन शिष्यों के अलावा एक और युवा ग़ज़ल गायक है जो रिश्ते में इनके भतीजे हैं और वो भी खान साहब को ही फोलो करते हैं– **डॉ. रौशन भारती।**

तारी खान साहब– आपका बचपन का नाम अब्दुल सत्तार खांन था। आपका जन्म 1953 में लाहौर (पाकिस्तान) में हुआ था। आपके पिता शास्त्रीय गायक थे। आप जब 6 वर्ष के थे तब से ही आपने तबला सीखना शुरू कर दिया । आपने तबला उस्ताद मियॉ

शौकत हुसैन खान से सीखा । आप बचपन से ही बहुत रियाज़ी थे। आपने कठिन मेहनत व परिश्रम करके तबला संगत करने एंव सोलो वादन में अपना नाम किया। आपने सभी नामी गिरामी बड़े–बड़े उस्तादों के साथ संगत कर रखी है। आपने मेहदी हसन साहब के साथ तबला खूब बजाया और गायकी में आप उनके शिष्य भी बने। आप जितना अच्छा तबला बजाते है उतना अच्छा गाते भी है। आप हू–ब–हू मेहदी हसन जी जैसा गाते हैं। आपकी आवाज़ और खान साहब की आवाज़ बहुत मिलती है। आप बहुत ही आस्था वाले व्यतक्ति है। आप हर धर्म में विश्वास करते है। आप बहुत ही उच्च कोटि के कलाकार होने के बावजूद भी आप में घमण्ड नाम की कोई चीज़ विद्यमान नहीं है। बहुत ही नेक इंसान है। इतना उम्दा गायक एंव वादक होते हुए भी आप बहुत सरल स्वभाव एंव विनम्र है। खान साहब को आप बहुत अच्छा फोलो करते है। ग़ज़ल गायकी में जो तबले पर आपने संगत की है वो बहुत ही क़ाबिल–ए–तारिफ है। ग़ज़लों में जो आपने संगति की है उसमतें चार चांद लगा दिये। दूसरी बात एक तिहाई दुबारा रिपीट नहीं करते हैं। आप के पास गाने का और बजाने का अनमोल ख़जाना है। रियाज़ भी रोज़ करते है। हर वर्ग के कलाकारों से बहुत ही प्यार से बात करना आपकी ख़ास आदत है। हमेशा मदद के लिए अग्रसर रहते है। असली में तो यही वह कलाकार एंव शिष्य है जिनके गाने में खान साहब की गायकी पूर्णतः समाई हुई है।

परवेज़ मेहदी– आपका जन्म सन् 1947 में एक संगीत परिवार में हुआ आपका असली नाम परवेज अख्तर था। आपने आपके पिता बशीर हुसैन से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली। बाद में आपको मेहदी हसन साहब ने संगीत की शिक्षा दी और आपके नाम के पिछे परवेज़ मेहदी लगने लगा। आप जो भी रचनाए बनाते उन सभी में मेहदी हसन साहब का प्रभाव नज़र आता था। व आप मेहदी हसन साहब के गन्डा बन्ध शागिर्द है। आपनें भी अपने गाने की शुरूआत रेड़ियो से की थी। आपके पाकिस्तान और भारत में कई एलबम बने। आपको सुनने के बाद लगता है कि आपने खान साहब की बहुत सी बाते अपने गाने में शामिल की।

तलत अज़ीज- आपके परिवार में शुरू से ही संगीत महफिलें होती थी। इनको देखकर आप संगीत के प्रति बहुत समर्पित हो गये। और आपने कम उम्र में ही संगीत सीखना शुरू कर दिया। प्रारंभिक संगीत की शिक्षा लेकर आपने बाद में ग़ज़ल के शहंशाह उस्ताद मेहदी हसन खान साहब से संगीत की शिक्षा ली। जब–जब वह बाहर गये तब एक ही मंच साझा किया। खान साहब के साथ आप 1986 में अमेरिका और कनाडा गये, वहॉ संगीत कार्यक्रम में एक ही मंच साझा किया।

राजकुमार रिज़वी:- आप भी खान साहब के शागिर्द है। आपने भी संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने घर से ली बाद में आपने खान साहब से संगीत की शिक्षा ली। ग़ज़ल गाने का अंदाज़ भी खान सा0 से ही सिखा। आपका जन्म भी झुन्झुनू जिले में ही हुआ। आपका जन्म 17 मार्च, 1955 में हुआ आपने अपने पिता नूर मुहम्मद रिजवी से संगीत की प्रारंम्भिक शिक्षा ली बाद में आप मुंबई में रहने लग गये। वहां पर आपने सन् 1982–83 में शहंशाह–ए–ग़ज़ल मेहदी हसन खान साहब से गण्डा बन्धन की रस्म पूरी की। आप के पिता भी संगीत के गुणी थे। आप के घर जब गण्डा बन्धन कि रस्म थी तो वहां पर पण्डित बिरजू महाराज, सितारा देवी एंव जगजीत सिंह जी भी मौजूद थे। आप ग़ज़ल के अलावा लोक संगीत ,सूफी और पुराने व नए हिन्दी गीत भी गाते है माण्ड गायन भी आपको अच्छा लगता है। राजस्थान में खान साहब के सबसे पहले शाागिर्द आप ही हैं।

आपकी पत्नी इंद्राणी रिजवी भी शास्त्रीय नृत्य की कलाकार है। आप दोनों ही समय–समय पर संगीत की सेमिनार करते रहते है।

ए. हरिहरन साहब- आपका जन्म 3 अप्रैल 1955 को त्रिवेन्द्रम केरल, दक्षिण भारत में हुआ। आपने संगीत की तालीम उस्ताद गुलाम मुस्तफा साहब से ली। गुलाम मुस्तफा साहब ने बम्बई में एक कार्यक्रम में जब मेहदी हसन साहब को सुना तो उनकी आँख नम हो गई। गुलाम मुस्तफा खाँ साहब से सीखने के बाद हरिहरन साहब ने मेहदी हसन साहब से भी सीखा एवं आप उनके गण्डा बन्ध शागिर्द नहीं है परन्तु उससे भी ज्यादा है। आपको उत्तरी भारत एवं दक्षिणी भारत का शास्त्रीय संगीत गाने में महारत हॉसिल है। आप दोनों ही शैलियों के ज्ञाता है। आप से कुछ भी गवाया जा सकता है

जैसे ग़ज़ल, ठुमरी, शास्त्रीय संगीत (उत्तर व दक्षिण भारत), भजन फिल्मी नॉन फिल्मी तथा वेस्टर्न म्यूजिक। आप भी ग़ज़ल गायकी में खान साहब को फोलो करते है। आपने कई फिल्मों में गाया है। और आप बहुत ही उच्च कोटि के ग़ज़ल गायक है। आपने लगभाग 200 हिन्दी गाने गाये है।

खान साहब जब केरल के अस्पताल में भर्ती थे तब भी आपने उनकी बहुत मदद की। आप जब–जब भी पाकिस्तान गये खान साहब से मिलकर आये। आपने बचपन में 13–13 घण्टे रियाज़ किया। आपने मुंबई में विज्ञान और कानून में स्नातक की डिग्री ली। आपने सन् 1977 में 'आल इण्डिया सुर सिंगार प्रतियोगीता' में शीर्ष पुरस्कार जीता है। आपने कई भाषाओं में गाया जैसे–मलयालम, तेलगु, कन्नड़, मराठी, बंगाली और हिन्दी आदि ।

मैं आपसे जयपुर में मिला उस वक्त मेरे साथ लोकेश कुमार, अनन्य पंवार भी साथ थे। आपने मुझे खान साहब के बारे में बहुत कुछ बताया। आप बहुत ही सरल स्वभाव है।

राज वोहरा :- आपका जन्म राजस्थान में 21 मई, 1956 को हुआ। आप संगीत सुनने के बहुत ही शौकीन रहें है। बचपन से ही रेड़ियों पर शास्त्रीय एंव उप शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम सुनते थे। 13–14 वर्ष की उम्र से ही आप परिवार सहित मुंबई में रहने लगे। एक दिन आप रेड़ियों सुन रहे थे कि अचाानक आपने मेहदी हसन साहब की ग़ज़ल रेड़ियो पर सुनी और उनके मुरीद हो गये। जब खान साहब का हिन्दुस्तान में पहली बार कार्यक्रम हुआ तो आप भी वहां पहुंच गये। खान साहब ने उसी समय आपको अपने साथ रखा। फिर खान साहब ने आपको भी शागिर्द बनाया। खान साहब का जब–जब मुंबई आना हुआ तब–तब खान साहब आपके घर पर रूकते थे। आपके पास तो खान साहब का उर्दू में लिखा हुआ पत्र भी है जो मैं इस अध्याय में लगाऊॅगा ।

खान साहब ने राज जी के लिए हिन्दी में भी लिखा–कि तुम्हें मेरी तरफ से ढ़ेर सारी शुभकामनाएं और आशीर्वाद ं।

आप बहुत ही सौभाग्यशाली है जिन्हें खान साहब का इतना साथ मिला। आपने हर समय अपने गुरू की तन–मन से सेवा की है। आपको खान साहब आपको बेटे जैसा ही मानते है। आपसे मेरी मुलाकात जोधपुर हुई थी।

मोहलीन कौर (गुन्नू)– मोहलीन कौर साहब की सबसे कम उम्र की शागिर्द है और जब यह मात्र 7 महिने की थी तब खान साहब ने इसको शागिर्द बनाया। जब मोहलीन को गंडा बॉधा गया तब मोहलीन हंस रही थी। उसे तो ये भी पता नहीं था कि जो उस्ताद उसके सामने खड़े है वो ग़ज़ल की दुनियां के शहंशाह–ए–ग़ज़ल है। ये खान साहब की ग़ज़ले ही सुनती है और उन्हें गुनगुनाती रहती है।

मनमीत सिंह रतन जी ने मेरी इस कार्य में बहुत मदद की। खान साहब जब भी दिल्ली आते थे तो मनमीत सिंह के यहां ही ठहरते थे। मनमीत सिंह जी खान साहब के बड़े बेटे आरिफ हसन जी के ख़ास दोस्त है।

भजन सम्राट अनुप जलोटा:–आप भी खान साहब के शिष्य है। यह बात मुझे खुद जलोटा साहब ने बताई। जब मैं और मेरे साथी सुरेन्द्र रावल उनसे मिलने मुम्बई गये, तब जलोटा सा. ने ये बात बताई। जलोटा साहब का पहला ग़ज़ल एलबम आया तो खुद खान साहब ने उन्हें फोन करके कहा कि अनुप बेटा तुम बहुत ही अच्छा गाते हो। जितना अच्छा भजन गाते हो उतनी ही अच्छी ग़ज़ल भी। जलोटा साहब यह सुनकर भाव विभोर हो गये इससे पहले कि वे कुछ बोलते अपनी ऑखें से आंसू रोक ना पाये और हिम्मत कर के खान साहब से बोले उस्ताद जी मेरा सादर चरण स्पर्श स्वीकार करें। मैं आपका बच्चा हूं और आपको ही गुरू मानता हूं। खान साहब ने कहा नहीं बेटा ये तुम्हारा प्यार है। खुश रहो, जीते रहो। जलोटा साहब ने बताया कि मैं खान साहब की ग़ज़लों को सुन–सुन के सीखता हूं।

–निष्कर्ष–

गुरू शिष्य परंपरा भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रमुख आधार स्तम्भ है। किसी भी कलाकार को सुनते ही प्रथम प्रश्न मन में सहज ही उठ पड़ता है यह किस घराने का शिष्य है। गुरू शिष्य परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है और चलती रहेगी। जो

अपने शिष्य को अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाता है वही गुरू है। इस अध्याय में गुरू शिष्य परंपरा का वर्णन स्पष्ट करूंगा।

किताब व समाचार पत्र :–

1. गीतानंद जी महाराज– पंजाब केसरी, धर्म–कर्म, दिल्ली/जयपुर, सोमवार 2 दिसंबर, 2013
2. सुधांशु जी महाराज–पंजाब केसरी, धर्म–कर्म, दिल्ली/जयपुर, 9 दिसंबर, 2013
3. (ज्ञान गंगा–संत रामपाल महाराज, सतलोक आश्रम, हिसार (हरियाणा), 2008 पेज नं. 6
4. (समय की सरगम–बालकृष्ण 'बीरा', डिम्पल पब्लिकेशन, जयपुर, 2011, पेज नं. 21)

उपसंहार

भारतीय संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को देखने पर पता चलता है कि यह अत्यन्त प्राचीन है। यह तो सभी जानते है कि भारतीय संगीत की वर्तमान छवि हिन्दू मुस्लिम संस्कृतियों का सुन्दर मेल है। भारतीय संगीत की सभी विधाओं अर्थात् गायन, वादन, नृत्य में हिन्दू संस्कृति तथा मुस्लिम संस्कृतियों का साफ–साफ सम्मिश्रण दृष्टिगत (परिलक्षित) होता है। चूंकि भारत के साथ अरब के व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध बहुत ही प्राचीन समय से रहे है और यही वजह है कि भारत के संगीत में अरब के संगीत का और अरब के संगीत में भारत के संगीत का अतिसुन्दर समन्वय हुआ है।

संगीत के क्षेत्र में ग़ज़ल की दुनियां अपने आप में एक अलग मुकाम रखती है। अरबी साहित्य से शुरू हुई यह काव्य विधा समय के साथ फारसी, उर्दू और हिन्दी साहित्य में भी काफी लोकप्रिय हुई। यूं तो आमतौर पर ग़ज़ल में जुदाई और कुछ खोने का दर्द होता है, लेकिन बावजूद इसके इसमें प्यार की रूमानियत होती है। एक ऐसी काव्यात्मक अभिव्यक्ति जो किसी न किसी मोड़ पर हमारे दिल को छू जाती है और हमें सुकून देती है। ग़ज़ल अधिकतर उर्दू या फ़ारसी भाषा में होती है। ग़ज़ल में आशिक–माशूक की बातों का वर्णन पाया जाता है। इसी कारण यह शृंगार रस प्रधान गायकी है।

ग़ज़ल ने अरबी साहित्य से फ़ारसी, फ़ारसी साहित्य से उर्दू साहित्य, उर्दू साहित्य से हिन्दी साहित्य तदुपरान्त अन्य भाषा साहित्य तक का सफर तय किया है। ग़ज़ल को सही मायने में उर्दू शायरी की आबरू कहा गया है। दिल को लुभाने और अपनी ओर खींचने की जो ताकत ग़ज़ल में है वह अन्य किसी भी विधा में नहीं है और न हो सकती है। पूरी ज़िन्दगी की कहानी को दो शेरों में बयां करने की शैली /विधा सिर्फ ग़ज़ल में है, वह अन्य किसी भी विधा में नहीं है।

प्रारम्भ में ग़ज़ल हुस्नो–इश्क तक ही सीमित थी। मगर अब धीरे–धीरे इसका दायरा बढ़ता गया और आजकल तो ग़ज़ल विश्व के अधिकतर मसाइल (अलग अलग विषय) की प्रवक्ता बनी हुई है।

इस शोध के अन्तर्गत मैंने सात अध्याय बनाये है, जिनके नाम क्रमशः (1) षडज (2) रिषभ (3) गंधार (4) मध्यम (5) पंचम् (6) धैवत (7) निषाद है।

षड़ज अध्याय में मैंने ग़ज़ल शब्द की उत्पत्ति से लेकर उसके आवश्यक तत्वों तक का वर्णन किया है। ग़ज़ल सभी विषयों पर गायी जा रही है। इस अध्याय में तमाम विषय मौजूद है।

रिषभ अध्याय में खान सा. ने किस तरह संगीत की शिक्षा ली एवं कैसा समय निकाला, आपका बचपन किस तरह बीता और आपने बचपन में किन–किन कठिनाईयों का सामना करते हुए अपने रियाज़ को निरन्त रखा। आपने खेल से ज्यादा रियाज़ को महत्व दिया और परिवार में किन–किन से संगीत की शिक्षा ली आदि जानकारी इस अध्याय में वर्णित है।

खान साहब स्वयं इस घराने की सोलहवी पीढ़ी के कलाकार थे और आपकी पन्द्रह पीढ़ियों से संगीत चला आ रहा है। आपके परदादाजी उस्ताद कलाम बख्शु खान साहब उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे। ये गायक और वादक (सांरगी वादक) थे। आप ज्यादातर ख़याल गाते थे। आपके जो सन्तान पैदा हुई वह भी संगीत में रूचि वाली हुई और उन्होने इस परम्परा को बरकरार रखा। वे सभी एक के बाद एक इस संगीत परम्परा में रमते गये और आज उसी का नतीजा है कि खान साहब जैसे दिग्गज गायक ग़ज़ल गायकी के फन से दुनिया कों मोहित किये हुए है। आप बचपन में ध्रुपद और ख्याल गाते थें। इसी वजह से जब आप गाते है तो वह पूर्णरूप से शास्त्रीय संगीत की झलक दिखाती है। क्योंकि आपकी अधिकतर रचनाएँ राग पर ही आधारित है। आपकी शास्त्रीय संगीत में काफी रूचि रही। आपके चाचा उस्ताद इस्माइल खान साहब ने आपको कई ध्रुपद और खयाल सिखाये थे।

मेहदी हसन साहब बहुत ही सरल व नेक दिल इंसान थे आपके बारे में जितना कहो उतना ही कम है, आपका सादा सरल व्यक्तित्व सबके दिलों को छू लेने वाला है, आप संगीत साधना के प्रति गहरी रूचि रखते थे और साधना के प्रति इनका जुझारूपन देखते ही बनता है। आपके प्रति महान् कलाकार, अभिनेता, अभिनेत्रियां व आमजन सभी किस प्रकार नतमस्तक हैं। यह इस अध्याय में प्रस्तुत है। इस अध्याय में मेहदी हसन सा. के व्यक्तित्व के बारे में बताया गया है तथा आप किस तरह अपने

साथ वालों से बोलते है, आपकी धर्म प्रवृत्ति आदि। आपके बारे में महान् कलाकार, अभिनेता, अभिनेत्रियां एवं आमजन क्या बोलते है। ये सब इस अध्याय में वर्णित किया है।

पंचम् अध्याय में खान सा. ने कहाँ–कहाँ कार्यक्रम किये तथा उन्होनें पहला कार्यक्रम कब और कहां दिया। आपके कार्यक्रम किस तरह सफल हुए और आपने किस तरह की शायरी प्रयोग में ली। आपने विभाजन के बाद बम्बई में पहला कार्यक्रम किस स्थान पर किया और वहां पर कौन कौन आये? यह सब इस अध्याय में प्रस्तुत है।

ख़याल गायकी मे गायकी की वजह से काव्य का असर गौण हो जाता है जबकि ग़ज़ल काव्य प्रधान शैली है, अतएव काव्य के भावानुरूप राग का चयन कर उसके मर्म के साथ राग में रहते हुए न्याय करना आपकी एक ख़ासियत है।

आपकी गायकी पूर्णरूप से शास्त्रीय संगीत से भरी थी। आपने शास्त्रीय संगीत की विधिवत तरीके से शिक्षा ली थी। आपके चाचा ने भी आपको सीखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आपने ध्रुपद धमार, ख़याल, ठुमरी, टप्पा आदि अपने चाचा से सीखे थे। आपके गाने में राजस्थान की पूरी–पूरी महक आती है।

निषाद में गुरू शिष्य परंपरा भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रमुख आधार स्तम्भ है। गुरू ही तो है जो गोविन्द का पता बता सकता है। किसी भी कलाकार को सुनते ही प्रथम प्रश्न मन में सहज ही उठ पड़ता हैं कि, यह किस घराने का शिष्य है। खान साहब के तमाम शिष्यों में उनकी कुछ न कुछ खुशबू विद्यमान है। उनकी गमक, ठहराव, शब्द को कहने का ढंग शब्दों के मर्म के अनुसार स्वर का बर्ताव आदि अनेक विशेषताएं उनके लगभग सभी शिष्यों के गायन में परिलक्षित होती है।

यह शोध प्रबन्ध आने वाली पीढ़ियों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। इस शोध में खान सा. के द्वारा रागों में गायी हुई ग़ज़लें और खान सा. के द्वारा उन रागों के तकनीकि बिन्दुओं का प्रयोग किया गया है जो तमाम इस शोध में वर्णित है। आशा है आने वाली पीढ़ी को यह शोध पसन्द आयेगा और इसका हर संगीत कलाकार को फायदा मिलेगा।

परिशिष्ट

दुर्लभ छाया चित्र

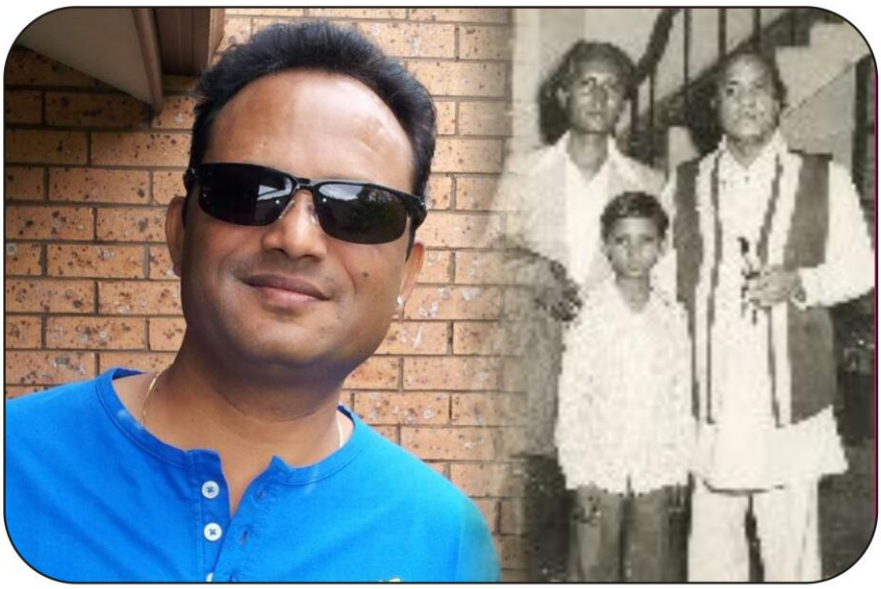

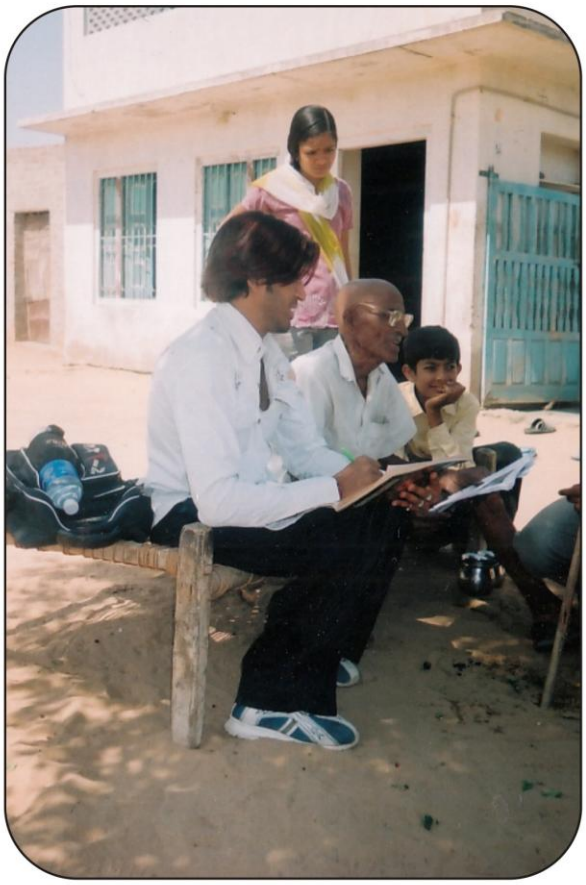

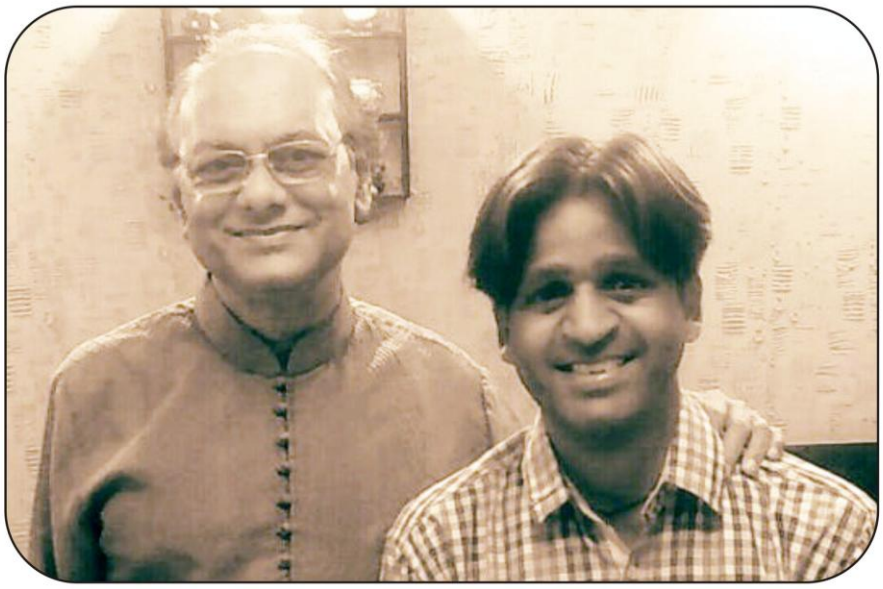

مرقد
زوجہ عظیم خان

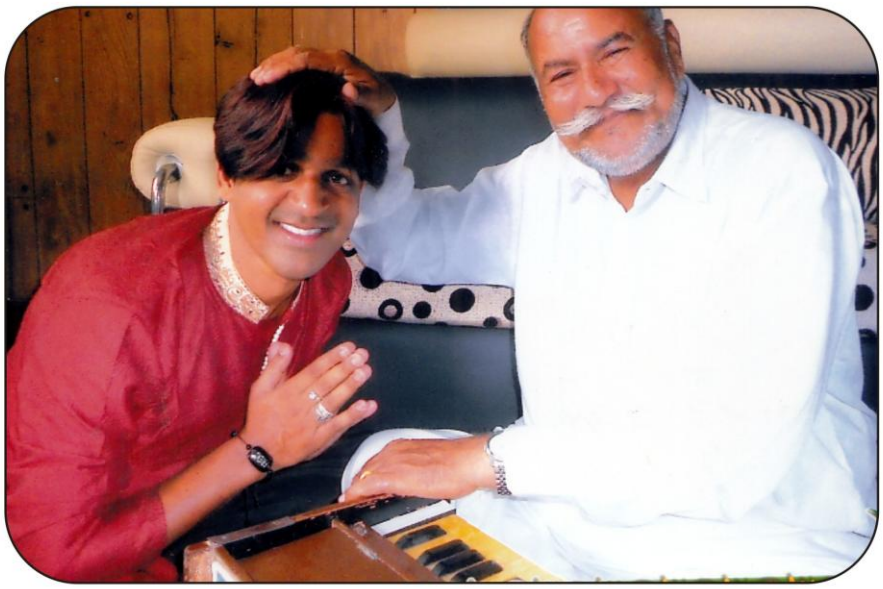

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. गीतानंद जी महाराज– पंजाब केसरी, धर्म–कर्म, दिल्ली/जयपुर, सोमवार 2 दिसंबर, 2013
2. सुधांशु जी महाराज–पंजाब केसरी, धर्म–कर्म, दिल्ली/जयपुर, 9 दिसंबर, 2013
3. (ज्ञान गंगा–संत रामपाल महाराज, सतलोक आश्रम, हिसार (हरियाणा), 2008 पेज नं. 6
4. (समय की सरगम–बालकृष्ण 'बीरा', डिम्पल पब्लिकेशन, जयपुर, 2011, पेज नं. 21)

किताबें, समाचार पत्र–पत्रिकाएं और शोधग्रन्थ :–

1. संगीत विशारद–वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 2002, 204101 पृष्ठ 234
2. रविवारीय पत्रिका–स्वप्नल–सोनल, 23 जून 2012
3. आचार्य बृहस्पति : मुसलमान और भारतीय संगीत, 1982, पृष्ठ 24 (शोध प्रबंध बेग़म अख़्त :व्यक्तित्व और कृतित्व –डॉ. रोशन भारती)
4. मुसलमान और भारतीय संगीत–आचार्य बृहस्पति, 1982 पृ. 83)
5. संगीत विशारत–बसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 2002, 204101 पृ. 237
6. संगीत ग़ज़ल अंक–डॉ. श.श्री परांजये, 1978 पृ. 7, 8
7. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी–डॉ. प्रेम भण्डारी–हिन्दी ग्रन्थकार, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 1
8. संगीत विशारद–वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 2002, पृ. 237
9. दर्द की लकीरें–विष्णुदत्त–विकल बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ.5
10. सृजन विश्व रविवारीय पत्रिका–साधना सोलंकी, बशीर बद्र, 23 नवम्बर 2008

11. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 2

12. सृजन विश्व रविवारीय पत्रिका–साधना सोलंकी, बशीर बद्र, 23 नवम्बर 2008

13. तो हम क्या करें–कृष्णा कुमार 'कमसिन' पंकज बुक्स–दिल्ली पृ. 1

14. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 1

15. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 15

16. उर्दू ग़ज़ल–डॉ. युसूफ हुसैन खानः 1974, पृ. 410, 11, 25, हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी

17. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 3, 4

18. गार्ली ओबिन्स–इण्डियन म्यूजिक, पृ. 45 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, पृ. 23)

19. मध्यकालीन भारत का इतिहास–डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ. प्रकाश व्यास, साहिल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 151

20. मध्यकालीन भारत का इतिहास–डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ. प्रकाश व्यास, साहिल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 192

21. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 22

22. आचार्य बृहस्पति–संगीत चिंतामणी, 1976 पृ. 75 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी–1992)

23. डॉ. मलिक मोहम्मद–अमीर खुसरो भावात्मक एकता के अग्रदूत, 1974, पृ. 140 से 141, (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी–1992)

24. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, पृ. 22

25. हिन्दलवली ग़रीब नवाल–मुन्शी अब्दुल हमीद बिहारी–बुक डिपो, छतरी गेट, दरगाह शरीफ, अजमेर पृ. 11, 1998

26. सुलोचना बृहस्पति : खुसरो, तानसेन तथा अन्य कलाकार, 1976, पृ. 89 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी–1992)

27. शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी–पृ. 35

28. सुलोचना बृहस्पति : खुसरो, तानसेन तथा अन्य कलाकार, 1976, पृ. 90, 91 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी–1992)

29. सोहनपाल सुमनाक्षर : खुसरो, व्यक्तित्व और कवि पृ. 18, (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

30. शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992 पृ. 87 व 88

31. रामनरेश त्रिपाठी : कविता कौमुदी, पृ. 124 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

32. आचार्य बृहस्पति : संगीत चिंतावणी, पृ. 74, 1976 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

33. डॉ. मलिक मोहम्मद : अमीर खुसरो भावनात्मक एकता के अग्रदूत, 1975, पृ. 141 से 145 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

34. मध्यकालीन भारत का इतिहास–डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ. प्रकाश व्यास, साहिल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 147

35. डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 9 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

36. डॉ. मलिक मोहम्मद : अमीर खुसरो भावनात्मक एकता के अग्रदूत, 1975, पृ. 147 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

37. आचार्य बृहस्पति : संगीत चिंतावणी, पृ. 71, 1976 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

38. सैयद सुलैमान नदवी : अरब और चिंतामणि, 1976, पृ. 72, (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

39. आचार्य बृहस्पति : संगीत चिंतावणी, पृ. 72, 1976 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

40. डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 8 व 9 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

41. आजकल, अगस्त 196, पृ. 5, (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

42. मुतख़बुत्तवारीख खण्ड 2, पृ. 105 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

43. डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 9 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

44. भगवती शरण शर्मा : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. 87 और 92 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

45. डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 9 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

46. भगवती शरण शर्मा : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. 96 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

47. ए शॉर्ट हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ म्यूजिक ऑफ अपर इण्डिया (हिन्दी अनुवाद) पृ. 38 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

48. भगवती शरण शर्मा : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. 100 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

49. डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 10 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

50. हमारे संगीत रत्न, पृ. 223 डॉ. श. श्री परांजये : ग़ज़ल अंक संगीत पत्रिका, जनवरी 1967, पृ. 9 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

51. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 5

52. अख़लाक हुसैन : फ़ने शायरी 1986, पृ. 23 व 24 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

53. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 45 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

54. नासिर काज़मी : दीवान–ग़ज़ल संग्रह, 1984, पृ. 39 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

55. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 44 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

56. अहमद फ़राज़ : जानाँ–जाना–ग़ज़ल संग्रह, पृष्ठ 80 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

57. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 43 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

58. क़तील शिफाई : अमोख्ता–ग़ज़ल संग्रह 1984, पृ. 10 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

59. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 44 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

60. असरार जवासी : दीवाना, 2011, पृ. 10 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

61. तो हम क्या करें : कृष्णा कुमारी 'कमसिन' पंकज बुक्स, दिल्ली पृ. 16

62. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 57 व 48 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

63. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 44 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

64. महमूद नियाज़ी : तल्मीहाते ग़ालिब, 1972, पृ. 5 व 36 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

65. अख़्तर अंसार : ग़ज़ल की सरगुजश्त, 1985, पृ. 52, (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

66. ग़ज़ल के बहाने : डॉ. दरवेश भारती, शिव मार्केट, न्यू चन्द्रावत, दिल्ली पृ. 8 व 3

67. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दी ग्रन्थागार, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 44

68. ग़ज़ल के बहाने : डॉ. दरवेश भारती, शिव मार्केट, न्यू चन्द्रावत, दिल्ली पृ. 8

69. बशीर अहमद कुरैशी : स्टेण्डर्ड ट्वंटीपथ सेन्च्यूरी डिक्शनरी, उर्दू इंग्लिश 1981, पृ. 102 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

70. अख़लाक हुसैन देहलवी : शमीमे बलाग़त, 1978, पृ. 26 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

71. ग़ज़ल के बहाने : डॉ. दरवेश भारती, शिव मार्केट, न्यू चन्द्रावत, दिल्ली पृ. 8

72. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दी ग्रन्थागार, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 44

73. मौलवी नज़मुल गनी खान : बहमुल फ़साहत, 1927, पृ. 127 (हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायक़ी–डॉ. प्रेम भण्डारी, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर)

74. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी–डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दी ग्रन्थागार, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर, 1993, पृ. 44

75. गुलाम रसूलः संगीत ग़ज़ल अंक जनवरी 1967, पृ. 23 से 26 (शोध प्रबंध–बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. रोशन भण्डारी– 1992)

76. ग़ज़ल के बहाने : डॉ. दरवेश भारती, शिव मार्केट, न्यू चन्द्रावत, दिल्ली 2008, पृ. 9

किताबें और समाचार पत्र–पत्रिकाएं :–

1. रविवारीय पत्रिका –गुलाब कोठारी, पृ. 2 – 4 जुलाई 2010

2. संगीत विशारद–वसंत–संगीत कार्यालय, हाथरस, 204101–2002

3. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 36–37

4. यश बावनी–नारायणसिंह शेखावत, म्यूजिक कमेटी, नई दिल्ली, 2012 110062, 2012 पृ. 3

5. यश बावनी–नारायणसिंह शेखावत, म्यूजिक कमेटी, नई दिल्ली, 2012, 110062, 2012 पृ. 11

6. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 13

7. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 41–43

8. रविवारीय पत्रिका–युधिष्ठिर पारीक, नौहर, श्री गंगानगर, 18.07.2014, पृ. 2

9. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 46–47

10. रविवारीय पत्रिका–युधिष्ठिर पारीक, नौहर, श्री गंगानगर, 18.07.2014, पृ. 2

11. इण्डिया टूडे–स्मृति, फ्रैंक हुजूर, स्वतंत्र लेखक, 2012, पृ. 58

12. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 51

13. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 49

14. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 53 से 55

15. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी–डॉ. प्रेम भण्डारी, राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर, 1993 पृ. 154 व 144

16. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 58–59

17. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 63 व 64

18. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 69

19. यश बावनी–नारायणसिंह शेखावत, म्यूजिक कमेटी, नई दिल्ली, 2012 110062, 2012 पृ. 12

20. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 69–70

21. मेरे मेहदी हसन–अखिलेश झा, रेमाधव आर्ट प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009, पृ. 72

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग़ज़ल गायकी के मसीहा : उस्ताद मेहंदी हसन

दीपेश कुमार विश्नावत (शोधार्थी)
कोटा विश्वविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

कला की साधना के लिए धैर्य, एकाग्रता, तपस्या, नियमित अभ्यास व गुरु भक्ति से ही कला मर्मज्ञ बना जा सकता है। भारत एक ऐसा देश है जहां कई वर्षो से कई जातियां आती-जाती रही हैं और इन विभिन्न जातियों का जब विलय होता है तो यह निश्चित है कि इस विलय की प्रक्रिया में एक-दूसरे की संस्कृति का आदान प्रदान भी होता है। ग़ज़ल गायकी को सभी गायक, गायिकाओं ने गाया है, किन्तु इस ग़ज़ल शैली को जो ऊंचाईयां मेहदी हसन सा. ने दी हैं, वैसी किसी अन्य गायक ने नहीं दी। प्रस्तुत शोध पत्र में ग़ज़ल के मुख्य बिन्दुओं को दर्शाया है और मेहदी हसन सा. के ग़ज़ल गायकी के क्षेत्र में दिए गए योगदान पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारत वर्ष सदा से ही कला एवं कला को जीवंत रखने वाले कलाकारों से परिपूर्ण रहा है और रहेगा। भारतीय संगीत तो हमारी धरोहर है ही, परन्तु यह एक संगीतकार की धरोहर है, संगीत शास्त्र, स्वर विज्ञान एवं संगीत प्रदर्शन। कला से ही देश की संस्कृति को जीवित रखा जा सकता है। "जीवन में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है, सांस्कृति आदान प्रदान से ही एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से प्रगाढ़ मैत्री स्थापित करना है।"

संगीत के क्षेत्र में ग़ज़ल की दुनिया अपने आप में एक अलग मुकाम रखती है। अरबी साहित्य से शुरू हुई यह काव्य विधा समय के साथ फारसी, उर्दू और हिन्दी साहित्य में भी काफी लोकप्रिय हुई। यूं तो आमतौर पर ग़ज़ल में जुदाई और कुछ खोने का दर्द होता है, लेकिन बावजूद इसके इसमें प्यार की रूमानियत होती है। एक ऐसी काव्यात्मक अभिव्यक्ति जो किसी न किसी मोड़ पर हमारे दिल को छू जाती है और हमें सुकून देती है।

भारतीय संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखने पर पता चलता है कि यह अत्यन्त प्राचीन है। यह तो सभी जानते हैं कि भारतीय संगीत की वर्तमान छवि हिन्दू मुस्लिम संस्कृतियों का सुन्दर मेल है। भारतीय संगीत की सभी विधाओं अर्थात् गायन, वादन, नृत्य में हिन्दू संस्कृति तथा मुस्लिम संस्कृतियों का सम्मिश्रण साफ-साफ दृष्टिगत होता है। चूंकि भारत के साथ अरब के व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध बहुत ही प्राचीन समय हैं और यही वजह है कि भारत के संगीत में अरब के संगीत का और अरब के संगीत में भारत के संगीत का अतिसुन्दर समन्वय हुआ है।

भारतीय काव्य जगत तथा संगीत जगत को जिसने सबसे ज्यादा प्रभावित किया है वह रचना 'ग़ज़ल' है। ग़ज़ल शब्द की उत्पत्ति 'ग़ज़ाल' शब्द से हुई है। जिसका अर्थ 'हरिण' और अपने महबूब की खूबसूरती का वर्णन करना है।

ग़ज़ल मूल रूप से फारसी भाषा की विधा है। उर्दू, फारसी और हिन्दवी की पुत्री है। उर्दू का अपना

एक काव्य शास्त्र है जो कुछ मुश्किल है। हिन्दी ग़ज़ल शिल्प विधान की दृष्टि से थोड़ी कमजोर होने के कारण अभी संघर्ष के दौर से गुज़र रही है फिर भी हिन्दी में ग़ज़ल कहने की परम्परा बढ़ रही है और काफी जानकार आगे आ रहे हैं। ग़ज़ल में ज़रूरी नहीं है कि वह हुस्न और इश्क पर ही आधारित हो, उसमें ईश्वर के प्रति प्रेम, आस्था और अपने आस पास के वातावरण एवं देश प्रेम, विश्व प्रेम आदि का वर्णन होता है।

उस्ताद मेहंदी हसन साहब : व्यक्तित्व

ग़ज़ल गायकी के क्षेत्र में ऐसी ही एक महान शख़्सियत हैं, जिन्हें ग़ज़ल गायकी के 'शहँशाह-ए-ग़ज़ल' कहा जाता है उस्ताद मेहदी हसन साहब। आपने जो ग़ज़ल की खिदमत की, वैसी खिदमत कोई नहीं कर सका है। आपका जन्म भारत के सबसे सुरीले राज्य राजस्थान के झुन्झुनू जिले से महज 17 किमी दूर लूणां गांव में 18 जुलाई सन् 1927 को हुआ। आपका गौत्र बाबर है और कहा जाता है कि इस बाबर गौत्र के कलाकारों का आज तक कोई सानी नहीं है। ग़ज़ल व मेहंदी हसन सा. यह दोनों एक दूसरे के पर्याय है। इस बारे में यह कथन दृष्टव्य है -

- फूल अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहंदी हसन खां सा.' उस फूल की 'महक'
- 'सूरज' अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहंदी हसन खां सा.' उस सूरज की 'किरण'
- चाँद अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहंदी हसन खां सा.' चाँद की 'चाँदनी'
- पक्षी अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहंदी हसन खां सा.' पक्षी की 'उड़ान'
- आकाश अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहंदी हसन खां सा.' 'पृथ्वी'

खां साहब की आवाज़ में एक गहरापन और गम्भीरता है जो ग़ज़ल गायन के लिए बड़ी ही उपयुक्त होती है। इनकी आवाज़ सुनते ही उनका रियाज़ उनकी गायकी में स्पष्ट झलकता है। आप बहुत ही सुरीला गाते हैं। स्वर लगाने का आपका अंदाज़ इस तरह का है कि श्रोता स्वरों के समन्दर की गहनतम गहराई में पहुंच जाते हैं। इनके स्वर लगाते ही श्रोताओं में असर होने लगता है। शब्द इनकी गायकी का सहारा पाकर अपने में छुपे भावों को खुद-ब-खुद प्रकट करने लगते हैं। खां साहब शब्दों को भावों का जामा पहनाने में खूब माहिर थे। वे शब्दों के उच्चारण को स्पष्ट रखते हुए शब्दों में स्वरों के माध्यम से ऐसा भाव भरते हैं कि शब्द का अर्थ तथा शब्द में निहित भाव स्पष्ट नज़र आने लगता है। एक ही शब्द को कई-कई स्वर संयोजनों के साथ गाने में उन्हें कमाल हासिल था।

इस तमाम जानकारी से नये ग़ज़ल गायकों को नये आयाम मिलेंगे। वह सब मेहंदी हसन सा. के पद चिह्नों पर चलेंगे। इस शोध से सभी ग़ज़ल गायक व गायिकाओं को मार्गदर्शन मिलेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. *रविवारीय पत्रिका-23 जून 2012, स्वप्नल-सोनल*
2. *मुसलमान और भारतीय संगीत, आचार्य बृहस्पति 1982, पृष्ठ 24*
3. *बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ.रोशन भारती, (शोध प्रबंध) 1992*
4. *हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दी ग्रन्थागार, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर*
5. *मेरे मेहंदी हसन, अखिलेश झा*